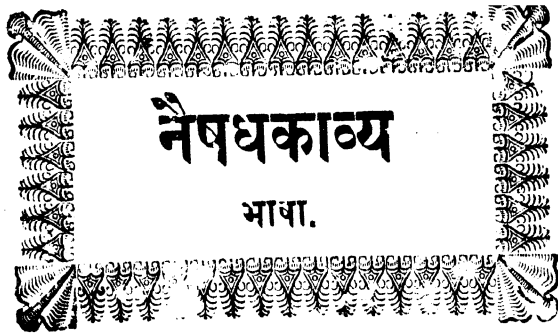


**TEXT FLY
WITHIN THE
BOOK ONLY
TEXT PROBLEM
WITHIN THE
BOOK ONLY**



नैषधकाव्य

भाषा.

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_186319

UNIVERSAL
LIBRARY

श्रीः ।

नैषधकाव्य ।

कविवर वरिष्ठ राजकवि गुमान
मिश्र विरचित ।

जिसमें

राजरानी महारानी दमयंतीके स्वयंवरकी कथा
अत्यन्त रोचक मनभावन परमसुहृदवनकवित्त
दोहा, चौपाई, कवितादिकोंमें वर्णित है ।

वही

विद्याविलासियोंके आनन्दार्थ

खेमराज श्रीकृष्णदासने

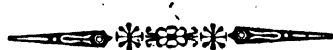
बंद्र्व

स्वकीय "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयमें
छापकर प्रगट किया ।

श्रावण संवत् १९५२, शके १८१७.

इस पुस्तकके सर्व हक यंत्रालयाधिपने स्वाधीन रखे हैं ।

नैषधकाव्यकी अनुक्रमणिका ।



संख्या

विषय

पृष्ठ

दोहा-

१	प्रथम सर्गमें वर्णिवी, नरपति नल अवतार ॥ सकलसुमति जनयइकथा, सुनियोचित्तसँभार ॥	१
२	सर्ग दूसरे में कथा, वर्णन नल अनुराग ॥ मिलिबो हेम मरालकी; लीलासों बिचबाग ॥	८
३	सर्ग तीसरे में कथा, हेम हंसकी गवनु ॥ वर्णनदेश विदर्भकी, कुंडिनपुर नृप भवनु ॥	२०
४	चौथे सर्ग मराल औ, दमयंती संवाद ॥ आगमदिग निषधेशके, भेटयो विरह विषाद ॥	३०
५	सर्ग पाँचवें में विरह, दमयंती संताप ॥ राजनकी बोलै पिता; व्याह उछाह प्रताप ॥	४०
६	छठे सर्ग नारद मिलन, वासव सदन समाज ॥ नल मारग छलसाज सुर, दूतकाज सुरराज ॥	४९
७	सर्ग सातवें में कथा, कुंडिनपुर नृपगौन ॥ रति पति विविध विलासमें; दर्शन रावर भौन ॥	५८
८	सर्ग आठवेंमें कथा, नख शिखरूप विचारि ॥ वर्णन राजकुमारिकी, नल दर्शन निरधारि ॥	६६
९	नवम सर्गमें. वर्णिवी, दूतकाज सुरराज ॥ कहिवो सुर संदेशकी, रचना चारु समाज ॥	७२
१०	पंच दूगुने सर्ग में, बहु वर्णन उर आनि ॥ उत्तर प्रति उत्तर वचन, द्वै है नल पहिचानि ॥	७८
११	कथा ग्यारहें सर्ग में, राज स्वयंवरठाट ॥ राजनकी आगमन पुनि, नगर ग्राम वनवाट ॥	८९

संख्या	विषय	पृष्ठ
१२	सर्ग बारहमें कथा, वर्णत हैं अति चारु ॥ द्वीप पुरी नरनाह सब, वर्णन करि निरधारु ॥	९६
१३	सर्ग तेरहमें कथा, देशपती नरनाथ ॥ तिनके गुणगण वर्णिवो, शुभ वाणी शुभ गाथ ॥	१०३
१४	सर्ग चौदहमें कथा, पंचनली को संग ॥ वर्णनऽश्लेष विलासमय, भैमी संशै रंग ॥ ॥	१०९
१५	सर्ग पंद्रहें वर्णिवो, वर्णमालको ठाट ॥ दै अशीष सब देवता, लौटे सहित उचाट ॥	१११
१६	सर्ग सोरहमें कथा, नल विवाहको रंगु ॥ दमयंती शृंगारिवो, अंग अंग परसंगु ॥	११६
१७	सर्गसत्रहें वर्णिवो, नलविवाह आचार ॥ दीवोदैजो दानको, भोजन सहित बढार ॥	१२२
१८	सर्ग अठारहमें कथा, देव गमन सुरलोक ॥ मारगमें कलिकालसों, है है भेट अटोक ॥	१३०
१९	सर्ग उनैसे में कथा, काम विहार विलास ॥ केलि अंग अंगनि सहित, द्वीपति पुंज प्रकास ॥	१३८
२०	सर्ग बीसयें में कथा, सूर उदैको रंग ॥ बैतालक मुख वर्णिवो, नलजागर परसंग ॥	१४२
२१	सर्ग इकैसमें कथा, दमयंती को मान ॥ उत्तर प्रतिउत्तर वचन, नलकरि हैं सन्मान ॥	१५१
२२	सर्ग बीसद्वैमें कथा, वर्णन वासर कृत्य ॥ पूजन हरिहर देवको, वंदन परिजन भ्रत्य ॥	१५९
२३	कथा सर्ग तेईसमें, शशिको उदै बखान ॥ वर्णन भूपति तिय करति, परिपूरण परमान ॥	१६८

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ

नैषधकाव्य ॥

प्रारम्भः ॥



श्लोक-सुमुखश्चैक दंतश्च कपिलो गजकर्णिका ॥

लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो पिनायकः ॥ १ ॥

छप्पय ॥ गानसरस अलि करत परस मद मोद रंग रचि ॥ उघटत
ताल रसाल करन चल चाल चोप सचि ॥ चिंतामणिमय जटित हेम
भूषण गण बज्जत ॥ चलत लोलगति मृदुल अंग नवतंड बसज्जत ॥
लखि प्रणति समय सुख तातको बिहँसि मातु लिय लाइ उर ॥ जय जय
मतंग आनन अमल जय जय जय तिहुँलोक गुर ॥ १ ॥

अथ राजवर्णन ॥

कवित्त-भूमिको तिलक द्वीप द्वीपनिके पालिबेको दुष्टनके घालिबेको
बाने बिलसतु है ॥ चारिहू वरण सुवरण साज साजत हैं सुवरण वाणी शील
सुधा वर्षतु है ॥ सुखनिकी सींव सोहै सुयश समूह फैलो मानो अमरावतीको
देखिके हँसतु है ॥ धरमके धाम नर नारी अभिराम जहाँ ऐसो महमदी
नाम नगर बसतु है ॥ २ ॥ खलनिको योग जहाँ नाजहीमें देखि-
यत माफ करिवेही माहँ होतु करनाशु है ॥ चौपरही खाली ग्राह हारै
सतरल तरवारै बन्ध मुष्टि सेवै कोषनिको बासु है ॥ बेलि नहीं फलै फूट
केलनहीके संग्रह ताज न लगत जहाँ बाजिन बिलासु है ॥ पवन
अगम गामी भीतैं बड़ी भवननही ऐसो गाइयतु महमदीको
प्रकाशु है ॥ ३ ॥ छप्पय ॥ नृप प्रथु दशरथ भरत भोज
नल नहुष भगीरथ ॥ इन समान सन्मान दान सब सोधि साधु

पथ ॥ उदय अचल रवितेज सुयश शशि सोहत सागर ॥ चातुरता मणि
 खानि रूप गुण आगर, नागर ॥ सुरतरु सुर सुमित्रनि निरखि दुवन भीम
 भीषम चली ॥ जहँ राजत नगर नरेश बर खाँ साहेब अकबर अली ॥ ४ ॥
 दोहा ॥ देखतही जाको बदन, सदन शिरी अधिकाइ ॥ देह न रूपाके
 राशि यह, मदनकान्ति यहि भाइ ५ ॥ कवित्त मनहरण ॥ दुर्जनकी
 हानि विरधापनोई करै पर गुण लोप होत यक मोतिनके हारही ॥ टूटे
 मणिमालै निरगुण गायताल लिखै पोथि नही अंक मन कलह विचारही ॥
 शंकर वरण पशु पक्षिनमें पाइयत अलकही पारै अरु भंग निरधारही ॥ चिरुचिरु
 राजौराज अली अकबर सुरराजके समाज जाके राजपर वारही ॥ ६ ॥
 धर धर हालै धर धर धुंधुकारनिसों धीर नर तजेंगे धरैया बलबाहके ॥
 फूटत पताल ताल सागर सुखात सात जात हैं उडात व्योम विहंग बला-
 हके ॥ झालरि झुकत झलकत झपे फीलनिपै अली अकबर खाँके सुभट
 सराहके ॥ अरि उर रोर सौर परत संसार घोर बाजत नगारे नरवर
 नरनाहके ॥ ७ दिग्गज दबत दबकत दिग्गपाल भूरि धुरिकी धुंधेरीसों
 अंधेरी आभा भानकी ॥ धाम औ धराको माल बाल अबलाको अरि
 तजत परान राह चहत परानकी ॥ सैयद समर्थ भूप अली अकबर दल
 चलत बजाइ मारू दुंदुभीधुकान्हकी ॥ फिरि फिरि फणनि फणीश उलटतु
 ऐसे चोली खोलि ढोली ज्यों तमोली पाके पानकी ॥ ८ ॥ विकट मतंग
 साजि सुभट चलत दल अली अकबर खाँ मुबारिक बखतसों ॥ दलत मलत
 खुरथारनि पहार हय धुंधुरिसों भयो भानु नभमें नखतसों ॥ कबहूँ बराह-
 कौहूँ कच्छप सुरभि कौहूँ कबहूँ गहत शेष बासुकि सखतसों ॥ छूटत
 गहत ज्यों कहार बार त्योंही धन्यो भूमि खंड खंड पातिशाहकि तखतसों ९
 दोहा ॥ कौनु भयो ऐसी नृपति, को है है यहि भाइ ॥ जाके डर गजये
 शकस, दिग्गज देत पठाइ ॥ १० ॥ कवित्त मनहरण ॥ साँचे अवतार
 करतार शुभ घरीरच्यो भूपर अनूपरूप देखि जीजियतु है ॥ नीति रीति
 प्रीति अरु नेक न अनीति लागै तेजसों तपतु शीलसुधा पीजियतु है ॥
 खान् बलि अली अकबर अद्भुत राज रावरो है अचल सुयश भीजिय
 तु है ॥ आडे आसमान भासमान गजराज दै दै गाडे वै बननि बीच

बाँधि लीजियतु है ॥ ११ ॥ दंडालय छंद ॥ जेबल प्रचंड उदंड शुंड
 गहि मर्तिड मंडल खंदै ॥ नभ कहलि परत पुरहूत हहलि मजबूत फूत
 कारै छंडै ॥ मननात भोर भूषण अमोल झननात झबा झूलनि सरसे ॥
 रणतेज वारि दिग्गज उदार अकबर नरेश दरबार लसै ॥ १२ ॥ आ-
 शीर्वाद ॥ छप्पय ॥ गुणक्षीर निधि ममलय सो बीची परिपूरं ॥ धीर-
 धर्म रुचि मेरु मुदित तर तेज ससूरं ॥ दान लघूकृत कर्णमुक्ति वर्णित
 बहु गाथं ॥ अली अकबर खाँ कामतरु द्युतिनाम सनाथं ॥ उदंड चंड
 भुज दंड युग खंडित पर नृप मंडलं ॥ त्वंरक्षरक्ष भगवति शिवे प्रभुता
 हसिता खंडलं ॥ १३ ॥ अन्यच ॥ वीर समर मागत्य शत्रु कदंन बहु
 कृतवति ॥ भवति भवस्य भवति मुंडि माला भुवि कति कति ॥ शिरसि विभर्ति
 शिवोपि कर्म युगलेपि गले पिच ॥ करमूलपि करेपि धारपाति शूल फले
 पिच ॥ राजाधिराज जगदीश तासु सुरगुरु रपिशंभुस्वयं ॥ अभिलखति शिसो
 रिव सर्वदा तव सुमिरे सततंजयं ॥ १४ ॥ अन्यच ॥ सुंदर शूर उदार सिंह
 बर विक्रम साजत ॥ अटल समरभट विकट कोटि गंजन छवि छाजत ॥
 शील सत्य सन्मान दान विद्या विनोदमति ॥ मनौ रचे करतार कामतरु
 मोहन मूरति ॥ आजानबाहुपरकी जरत स्वामिभक्त रसरंगनव ॥ तहँ
 आति उज्ज्वल मजलिसलसै सोमवंश सरदार सब ॥ १५ ॥ दोहा ॥
 पण्डित कवि मंडित लसैं, सभामंडली चारु ॥ गणक चिकित्सक चतुर
 चित, धर्म धुरंधर सारु ॥ १६ ॥ खाँसाहेबके हुकुमते, मिश्र गुमान विचारि,
 वरणी नैषधकी कथा, संस्कृतकी अनुहारि ॥ १७ ॥ मिश्र सर्व सुख सुक
 बिबर, श्रीगुरु चरण मनाइ ॥ वराणि कथाहौं कहतिहौं, हँ हँ वई सहाइ १८ ॥
 संयुत प्रकृत पुराणसे, संवतसर निरदंभ ॥ सुरगुरु सह सित सप्तमी, क-
 ह्यौ ग्रंथ प्रारंभ ॥ १९ ॥ प्रथम सर्गमें वरणिबो, निषध देश परकार ॥
 नगर राज मंदिरन पुनि, नल भूपति अवतार ॥ २० ॥ सोरठा ॥
 सोमवंश भूपाल, सकल पुहुमिमें तेजधर ॥ बीरसेनि गुणमाल, निषधदेशपर
 प्रीतिकर ॥ २१ ॥ हरिगीत ॥ सब देश मनि गुणखानि गनि धनि धनि सरा-
 हत हैं सबै ॥ सुखबास सीयनिवास संयुत शोभि ज्यों रवि छबिफवै ॥
 कछुकरी यों करतूति विधि निज ज्योति सुरपुरको हैंसै ॥ जगमगत जाहिर

जगतपर बर निषध देश सदा बसै ॥ २२ ॥ तारक ॥ उत्पत्ति थली
 जनु चातुरताकी ॥ विषम मही जनु है तपसाकी ॥ सित सागर ते छवि
 उज्ज्वल जाकी ॥ जनु बैठक सोहत है कमलाकी ॥ २३ ॥ अन्यच ॥ तहैं सोहत
 है सरिता कारी ॥ जनु क्षीर पयोनिधि भेदिनि कारी ॥ युत पद्म सु-
 नील कुबेर थलीसी ॥ द्विज गावत हैं महिमा शिवकीसी ॥ २४ ॥
 दोहा ॥ मीन मिथुन करकट मकर, चलत सुग्रह सुखपाइ ॥ राशि मा-
 लसी देखिये, उदित शोभ सरसाइ ॥ २५ ॥ तारक ॥ लहरी अति च-
 श्वल लेत लसी है ॥ तनु शीतल मानहु साँपडसी है ॥ विषुप्याइ जिया-
 वति है सबहीको ॥ रस बैदिनिसी विलसै जगतीको ॥ २६ ॥ अन्य ॥
 तहैं सोहत है यकु शैल सोहायो ॥ जनु मेरु मही द्युति देखन आयो ॥
 बहु बंशबड़े सुरगावत जामें ॥ बिलसै हरि हेम मई परभाँमै ॥ २७ ॥
 तोटक ॥ क्षिति केशरिके उपमा बिलसै ॥ अति सुन्दर कानन फूल
 लसै ॥ बहु रीक्षनकी सबही अवली ॥ शशिलोक विराजत भाँति भली ॥ २८ ॥
 अन्यच ॥ बहु राजत हैं गजराज बड़े ॥ नभ आडत बिंध
 मनौ उमड़े ॥ चहुँधा चमरी चम चौर करैं ॥ बट बंजुल मंजुल छत्र
 धरैं ॥ २९ ॥ अन्यच ॥ सब ओर पराग विभूति लसै ॥ बहु कोश
 निमें अलि आनि बसै ॥ क्षिति नायककी उपमा उपजी ॥ घनकी
 धुनि दुंदुभि दीह बजी ॥ ३० ॥ गवय ॥ सुरभीकेसरि
 बसै नील बन माँह ॥ मनौ नगर सुग्रीवकी सोहत सुन्दर छाँह ॥ ३१ ॥
 छप्पय ॥ त्रिभुवन भूषण भूमि भूरि बर नगर शिरोमणि ॥ झल-
 झलात छवि अच्छ अच्छ लखि भाषति धनि धनि ॥ सोहत विकट
 कपाट जटित पुरद्वार फटिकमय ॥ मनौ रच्यो कैलास शंभु निज
 बास भक्त दय ॥ जनु सजत सुमेरु प्रदक्षिणा चहुँ सुवरण प्राकार पर ॥
 सरिवरि जहानकी करिसकै सब नर बर नव नगरकर ॥ ३२ ॥
 कवित्त मनहरण ॥ तीनौ लोक रचना रचत हैं विरंचि यासौ
 अचल खजानौ जानौ राख्यौ गुण गचिकै ॥ रूपकी उपज सुखसु-
 कृतको विस्तार पारावार जाको कौन पावै पारु सचिकै ॥ याहीते
 कहायो अद्भुत करतार विधि भूतल नगर नरपर ऐसी रचिकै ॥ लखत

बनंतु है सहस्र नयननहीं सों कछु वर्णत न बनै सहस्राननसों पचिकै
 ॥ ३३ ॥ हरिगीतिका छंद ॥ दशकोश ते जहँ देखियत अवली-
 पताकनकी भली ॥ सबसौंधसीसनिधै लसै बिच बीच मोति-
 नकी कली ॥ सुर आपु गहि हित मानिकै पै बिंदुगण फबिसों फली ॥
 जनु क्षीरसागरते कढ़ी दिबि ओर जललहरी चली ॥ ३४ ॥ कलि
 कालको भय मानि जहँ युग सत्य आनि सदा बसै ॥ अति पुण्य पावन
 जानि शील सनेहं साँचु सुधालसै ॥ जनु भूमिमें सुरबास उत्तम बासु
 बासवको रच्यो ॥ बहु रत्न राजत श्री विराजत क्षीरसागरसों सच्यो ॥
 ३५ ॥ अन्यच्च ॥ मणिं हेमके कलशानकी द्युतिरातिहू दिन होति है ॥
 शिर ओक ओकनिमें रह्योरामि सुरलोक उदोतु है ॥ अति स्वक्ष
 सुंदर हेमफाटिक की शिला गसि कै गली ॥ शशिको समाज ल-
 ग्यो मनौ तल चंद्रिका चहुँधा चली ॥ ३६ ॥ प्रह्लादिका छंद ॥
 बहुभाव संघ सोहत बजार ॥ नवद्वीप चित्र चीजै हजार ॥ जनुहै कुबेर
 नगरी उदार ॥ मणि हेम चीर हय गज सुठार ॥ ३७ ॥ सुनि सोर परत
 नहिं बैनकान ॥ जनु भूपति बैठो करि दिवान ॥ छुटि चलतु कौन ल-
 हिये न छोर ॥ जनु मायाके बंधन अतोर ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ अचल
 अंग जोई जहाँ, लखतु तहाँ तेहि भेव ॥ मानौ साधि समाधि सब, ध्या-
 वत पूरण देव ॥ ३९ ॥ भुजंगप्रयात ॥ तहाँ राजको धाम यों शोभ
 साजै ॥ तिहूँ लोकमें रूप वैकुण्ठ राजै ॥ बने वेषरूरे घने तेज पूरे ॥
 सजीसंजमीलोग संग्रामसूरे ॥ ४० ॥ तोमर ॥ मुक्तानकी नव पाँति ॥
 रचिद्वारपै बहुभाँति ॥ सब सिद्धिको मुख येहु ॥ मुसुक्यात सुन्दर गेहु ॥
 ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ सुधर नीलमणिसों रचे, जालरंध्र रुचि ऐन ॥
 निरखतु निज शोभा मनौ, राजशिरीके नयन ॥ ४२ ॥ सवैया ॥
 खिरकीनके आनन सुंदर सोहत नयन गवाक्षनके अति नीके ॥ रोसन-
 दान मकान लसैं शुभ नासिका कोष सुरंग मनीके ॥ लालपनारेनकी
 रसना चहुँ ओर त्वचा रचि पुंज हँसीके ॥ सुन्दर देहनिगेहवने सुघने
 परिवारैहैं राजशिरीके ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ चहुँ ओर नौबति बजति, स्वर्ण
 शिखर बरजोर ॥ मेघ घने गरजत मनौ, कनकाचल चहुँ ओर ॥ ४४ ॥

॥ हालिक ॥ लालमणीन रची मुड़वारी ॥ रोजशिरी जावक अनु-
 हारी ॥ फैलिरहीं किरणै अतितासू ॥ केसरि फूलिरही सबिलासू ॥ ४५ ॥
 चौपाई ॥ बैंगला गजदंतनिके रचे । श्यामलाल मणिबेलिन खचे ॥
 मनौ हाँस रसके घर आजू । न्योति बोलायो रति रतिराजू ॥ ४६ ॥
 दोधक ॥ आँगन हीरन साजि संवारो ॥ छज्जनि में करिदंत सिंधारो ॥
 ऊरधहू अधते उनई है । श्वेत प्रभा पुनिरुक्ति भई है ॥ ४७ ॥ अन्यच्च ॥
 दोउनको प्रतिबिंब दुहूमें ॥ होत नहीं गहिरी छबिदूमै ॥ साध मनौ
 उपकार सयाने । आपुसमाहँ करें हित माने ॥ ४८ ॥ तारक ॥ बहु
 बेलिन बूटन संयुत सोहैं ॥ परदा सिदरीनलगे मन मोहैं ॥ हैं नव धूप
 सुगंधितनीके ॥ जनुबाग बिराजत राजशिरीके ॥ ४९ ॥ नाराच ॥
 चबूतराजराइके जहाँ तहाँ बने घने ॥ रचे विचित्र चारु रंग अंग संग
 सोसने ॥ लसै प्रभात रंगसौं न नीठि दीठिकै परै ॥ अपार भूमिदार सूर
 आरसी मनौहरै ॥ ५० ॥ अन्यच्च ॥ रचे विचित्र चारु रूप व्योम
 भूप तारके ॥ अनेक चित्रसारिका अगर हैं विहारके ॥ निहारिकै प्रभात
 रंग मोहि मोहि कैरहै ॥ मनौ त्रिलोक जीवहै विनीत बास संग्रहै ॥ ५१ ॥
 दोहा ॥ होत रंग संगीत गृह, प्रति ध्वनि उड़त अपार ॥ अरज करत
 निकरत हुकुम, मनौ काम दरवार ॥ ५२ ॥ कामतंत्रकी देवता, मोहन
 मंत्र स्वरूप ॥ नारीमय त्रैलोक जनु, राज तुरावर भूप ॥ ५३ ॥ रोला ॥
 ताने विशद वितान लाल झालरि झुकि झूमै ॥ मनौ सुधाधर बिंब प्रात
 रविकी छबि चूमै ॥ बैंगला बने अनेक लालसित श्याम सोहावन ॥ गृह युति-
 सागरमाहँ मनौ फूले सरोज बन ॥ ५४ ॥ दंडालय ॥ गाहै गज गाहैं
 पगनहि ठाहैं गढ़ गिरि दुगगन दाबिदरें ॥ डारै गहि डारैं ऐंचि उखारैं
 तरुन तरुन संहार करें ॥ सब द्वारन ठाढे संगर गाढे कद बल बाढे
 बिंद मनौ ॥ चौकी निज साजत दिग्गज लाजत गज राजत लखि
 लखत घनौ ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ तिनहीकी अनुसार रथ, हय ढलै
 तकी भीर ॥ सजे सबैलनयुद्ध थिर, रहत धुरंधर धीर ॥ ५६ ॥ छप्पय ॥
 कहूँ लरत गजराज बाघहरना कहूँ जूझत ॥ मल्ल युद्ध कहूँ होत मेष
 वृष महिष अरुझत ॥ कहूँ नटत नट कोटि भाट बरलावत गुण मनि ॥

कहूँ यज्ञके ठाट वेदगावत मुख मुनि भनि ॥ कहूँ गनक गनत योगी
जपत यन्त्र मन्त्र मत विरत नित ॥ कहूँ करत चारु चरचा भली
कबित चित्रकी चतुर्चित ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ चहूँ ओर सब नगरके
लसत दिवालय चारु ॥ आसमान तजि जनु रह्यो, गीरवानु परिवारु
॥ ५८ ॥ मनौ रची निज बासको, और भूमि भगवंत ॥ खाई मिस चहुँ
ओर जनु, सोहत सिंधु अनन्त ॥ ५९ ॥ प्लवंगम् छंद ॥ होंमन
जहूँ धूम कुटिल मति देखिये ॥ जहूँ मणि मालनि माहूँ भेद अवरे
खिये ॥ कोकनके द्विजराज विरोध बखानिये ॥ मूलहानि
तिथि पत्र प्रगट पहिचानिये ॥ ६० ॥ गोपल ॥ दया बेलिकी ललित
निकुंज ॥ गुंजत सुख पक्षिनके पुंज ॥ गुरुकी हानि मिठाई माह ॥
पाप रचित भोजनकी चह ॥ ६१ ॥ तोटक ॥ सिगरी क्षिति हीरन
जोरिगसी ॥ तिनमें शशिकी प्रतिमा बिलसी ॥ चलनयननके मुख
देखि डरयो ॥ नभते जनु भूतल टूटि पयो ॥ ६२ ॥ अन्यच ॥ सुर
लोकनकी उपमा छहरी ॥ उठती सब ओर सुधालहरी ॥ परनारि
मनौ छबि भार छई ॥ बहु भीतर है अनुराग मई ॥ ६३ ॥ कबित्त
घनाक्षरी ॥ नीलमणि भवननिमें तम गहि राखि मनौ मोतीके महल
मिली तारेन बनाइकै ॥ फटिक भीतिनमें जोन्हाईसों जटित मिली
धुज पट क्षीर धिति रंगनि समाइकै ॥ सुंदर वदन युवतीनके मिलत
लह्यो प्रफुलित पंकज पराग सुख पाइकै ॥ लाल कलशानिमें लहत
निजरससे सुसूरकी किरण प्रात परती लखाइकै ॥ ६४ ॥ दोहा ॥ सदा
नीलमणि भवनमें, बसत निडर तमराज ॥ प्रगटत रसना गतनिको, अभै-
दानके साज ॥ ६५ ॥ छप्पय ॥ तिनो भुवन विख्यात नामवर कीरति
मूरति ॥ दया क्षमा शुचि शील दान धीरज सुधर्मरति ॥ सकल देव
व्योहार विदित बोलत मुखहँसि हँसि ॥ निडर समरडरलोक लाज साजत
मुख गसि गसि ॥ रामानुराग लक्ष्मण मनौ मित्र मुदित सब दिवस
सब ॥ जहूँ बसत मुनेश्वरसे सकल आनंदमय संयम नियम ॥ ६६ ॥
अन्यच ॥ धर्म धुरंधर वीर धीर कलिकाल विहंडन ॥ तपत तेज बरवंड
साधु गन मंडल मंडन ॥ पुण्य सलोक पवित्र चित्रमति मित्र मोहतम ॥

रूप मनोहर राशि वेदपरकाशित हरिसम ॥ नृप वीरसेनि नंदन नवल
सोमवंश सब गुण सच्यो ॥ क्षिति भाग्य प्रजाके पुण्यफलनि नलराजा
करता रच्यो ॥ ६७ ॥

इति श्रीमत्प्रचंड दोर्दंडप्रतापमार्तंडभूमंडलाखंडलश्रीखॉ
साहब अली अकबरखॉ प्रोत्साहित गुमान मिश्र विरचि-
तेकाव्यकलानिधौनलावतारो नाम प्रथमस्सर्गः॥१॥

दोहा-सर्ग दूसरेमें कथा, वर्णन नल अनुराग ॥ मिलिबे हेम मरालको,
लीलासों बिचबाग ॥ १ ॥ सोरठा ॥ जासु कथा करि पान, विबुध
सुधानहि आदारीहि ॥ तेजराशि बलवान, श्वेतछत्र मंडल सुयश ॥ २ ॥
वंशतिलक ॥ जाकी कथा रसभरी निदरै सुधांको ॥ सोई नरेश नल-
राजत सम्पदाको ॥ साजे सुवर्ण नवदंड सितातपत्री ॥ पूरेप्रतापागनसों
धरित्री ॥ ३ ॥ हरिगीतिका ॥ जगमाहँ जे छिन चिंतिये कलिका-
लकी महिमा घटी ॥ अघ ओघ धोवत ज्यों कथा जिमि दिव्यसाबुनकी
बटी ॥ निज सेवनी पहिंचानिकै वहई अनुग्रह आनिहै ॥ करिहैं पवित्र
चरित्र मेरी जीभ अवगुण बानि है ॥ ४ ॥ तारक ॥ करि अंशदिगीश-
निके इक ठौरै ॥ विरची नलमूरति रूप न थोरै ॥ तिसरी ऋषि आशिष
वेद मई है ॥ सब लोक देखावन काज भई है ॥ ५ ॥ दोहा ॥ घालतु
है कुल मदनमद, वहै आँखि सुखपाइ ॥ मन लै तिलोचन अवतरचौ
यहौ बतावत आइ ॥ ६ ॥ चंद्रमाला ॥ चारो चरणा समेत सुखी
करि धर्म धरामें थाप्यो ॥ चारौ वर्ण सुखी जहँ विकसैं पाप पुंज तहँ
काँप्यो ॥ एकपाँइ छिगुनीसे क्षितिछै निराधार होइ गाढ्यो ॥ तनु अनूप
दुर्बलसों दीसत मनौ तपोबल बाढ्यो ॥ ७ ॥ घनाक्षरी ॥ बिकट
कटक सजि नलके चलत दल धुन्धुरि प्रताप शिषी धूम मलिनाई है वहै
परिपूरणपयोनिधि सुपंक भई अंक द्वै शशीमो दरशतु बहु धाई है ॥
दिपत धनुष घन आसुगबरषि अरि तेज तेप्रचंडचंड अनल बुझाई है ॥
लगत अमैनक अशुभ अति शत्रुनको कोइ लासो कुयश लुल तुव बहु

धाई है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ईति भीति राखी न नल, जग न लहै
 कहूँ अयन ॥ अतिवर्षा छोडति न छिन, अरि रमनिनके नयन
 ॥ ९ ॥ मनहरण ॥ संगर धरामे जाके रंगसों सुभट निज
 निज चातुरीसों यश पटनि बुनत हैं ॥ करि करवाल व्योम कोरि कोरि
 जोरि जोरि चन्द्रते विशद जाके गुणन गनत हैं ॥ अमल अमोल ओसु
 डोल झल झल होत कबहुँ घट न जन देखत सुनत हैं ॥ आठौ दिशि-
 रानी राजधानीके शृंगारिबेको आठौ दिगराज जानि चीरन चुनत हैं
 ॥ १० ॥ तारक ॥ जिमि वैरिन छाँडि विरोध दयो है ॥ तिमि धर्म
 विरोध नहीं उनयो है ॥ जित मित्र अभिन्न प्रताप प्रहारी ॥ दृगचारि
 विचारि दृगै निरवारी ॥ ११ ॥ तोटक ॥ नलके यश तेज विराजत हैं ॥
 शशि भानु वृथा छबिछाजत हैं ॥ जबहीं जबयों विधि चित्त धरै ॥ तब
 छेकनको परिवेष करै ॥ १२ ॥ अन्यच ॥ विधि भाल दरिद्र लिख्यो
 जेहिके ॥ नहिं कीजत अंक वृथा तेहिके ॥ नल येतिकु ताहि तुरंतदयो ॥
 जिमि टारि दरिद्रको दूर कियो ॥ १३ ॥ अन्यच ॥ कवितान सुमेरुन
 बाँटि दियो ॥ जलदानन सिंधुन सोंकि लियो ॥ दुहुँ ओर बँधी जुलफें
 सुभली ॥ नृप मानतुओ यशकी अवली ॥ १४ ॥ अन्यच ॥ कवि
 औ बुध जासु समीर रहें ॥ सब वंदनकै जयदेव कहें ॥ दिनहीदिन ओज
 उदय बिलसै ॥ रविकीसिगरी छबि आनि बसै ॥ १५ ॥ स्वागता ॥
 अंबुजात द्युति मूगन दूखै ॥ राज शीशमणि ऊपर मूखै ॥ हेतु जानि वि-
 धि मंगल वेषा ॥ साजि भूपपद ऊरधरषा ॥ १६ ॥ दोधक ॥ जी-
 तिलिये जग शत्रु घनेरे ॥ सातौद्वीपनके नृप चरे ॥ गाइनमें मिलि बाध
 बसै जू ॥ चोरनमें मिलि साह हँसै जू ॥ १७ ॥ हरिगीत ॥ नवरंग
 संगर माहँ दिग्गज अंधकार समेटिकै ॥ छतधार दुरदिन घोरमें भटकौंच
 दुर्गम भेटिकै ॥ करवाल निर्मल दूतिका वश जोर योवन सों भरी ॥
 अभिसारिका सम आइकै जगजीयकेसिय पाँपरी ॥ १८ ॥ दोहा ॥
 लसत सुमित्रो पेत नृप, दशरथके परभाइ ॥ क्षमा भार गुरुसे
 सज्यो, मधु सुगंध सरसाइ ॥ १९ ॥ घनाक्षरी ॥ पूरुब पुनीत
 उदयाचल अवधिबासी उत्तरहू सेतुबंध पारनि परत हैं ॥ पश्चिम

अमंद मंदराचल चलत नीके दक्षिणजे अंत गंधमादन तरत हैं ॥ जोरि
 जोरि कोरि कोरि शीशन छुवत क्षिति भूपति अनेक झुंड मंडल भरत हैं ॥
 कहि कहि देत दूरिहीते चोपदार निज गहि गहि नामनि प्रणामनि
 करत हैं ॥ २० ॥ तोमर ॥ तेहि राजको यहु राज ॥ वरणै सुसाधु
 समाज ॥ मुकुरै सकै समुहाइ ॥ गिरि है विपच्छ बनाइ ॥ २१ ॥
 अन्यच ॥ दुर्गानिकी सतसंग ॥ इक ईश राखति अंग ॥ इक मेघ
 धारत चापु ॥ ध्वज वीर उन्मत आपु ॥ २२ ॥ अं० ॥ जहँ पाग बाँधन
 योग ॥ दुख दीहका तन लोग ॥ असिधार तीक्ष्ण जानु ॥ मधुपान
 भौरन मानु ॥ २३ ॥ दोहा ॥ हस्त श्रवणको नाश यह, पत्राही में होत ॥
 दानहानि यक करिनमें, रवि शशि ग्रसत उदोत ॥ २४ ॥ बढन न पावत
 हैं जहां, फेस करज मलदीन ॥ वरषकै बासर धरतही, अंबर अधिक
 मलीन ॥ २५ ॥ तारका ॥ इमि राज्य लयो सबुलै सबही में ॥ जय रूप
 थप्यो सिगरी धरणी में ॥ ऋतुराज मनौ वनमें उदयो है ॥ तनुयो
 बनको परबेसु भयो है ॥ २६ ॥ दोहा ॥ पद छवि लव पल्लवनही
 कमल मलीन बनाइ ॥ ताके मुखको दासु है, शरदशशीन लखाइ ॥ २७ ॥
 प्रह्लाटिका ॥ मिसि रोम राज रेषा सुवेष ॥ विधि गनत मनो गुण गण
 अशेष ॥ थल रोम कूप लखिकै प्रभाव ॥ जनु दिये विंदु दूषण अभाव
 ॥ २८ ॥ अरि दुर्गलूटि अरगल अखंड ॥ जनु धरी बडाई बाहु दंड
 गोपुर कपाट विस्तार झारि ॥ गहि धरचो बच्छ थलमें सँवारि ॥ २९ ॥
 घनाक्षरी ॥ लीला विहँसनि सो हरायो हिमिकर ज्योंही कोलनिकी
 कांति हरी नयन रतनारेसों ॥ अमल कपोल गोल आरसी अमोल
 ओप उपरे रहति श्रुति भूषण सितारेसों ॥ ताकी समताकी कहूँ उकुति
 युगति होति उपमा बनति कैसे सुकवि विचारेसों ॥ दूसरो न कमल मुकुर
 शशिजेतवारु वदनसों वदन बखानतु निहारेसों ॥ ३० ॥ लक्ष्मीधर ॥
 भूपको देखिकै बामकी काँतिसों ॥ आपने अंगके रूपकी भाँतिसों ॥ ती-
 नहु लोकनकी सुन्दरी सबै ॥ मोहिकै आपुते प्रीतिको संभवै ॥
 ॥ ३१ ॥ चौपाई ॥ मोही इमि देवनकी नारी ॥ इकटक देखत तन-
 मन वारी ॥ वही टेव अजहूँ लागि धारै ॥ निशि दिन अनिमिष नयन

निहारै ॥ ३२ ॥ अ० ॥ नलको सुनत जन्म फल लेखै ॥ रूप लखे
 बिन अफल विशेषै ॥ उरगीनेहरंगी इमि धरैं ॥ स्तुति निन्दा
 नयनाकि करैं ॥ ३३ ॥ अ० ॥ मनुजबधू नयनन सुख
 गहैं । धीरज धारि विलोकत रहैं ॥ मोहि मोहि
 तनमय है जाहीं । पलक विघ्न पारत कछु नाहीं ॥ ३४ ॥
 अ० ॥ जवनि नारि सपने कछु देखै ॥ तब नल भूप रूपरस पेखै ॥
 जब जब भूलि कछु मुख कहै । तबै नाम नलही को गहै ॥ ३५ ॥
 दोहा ॥ निजनायक संग सुरतिमें, ध्याइ ध्याइ नलरूप ॥ नयन मूँदि
 बनिता सबै, करतीं केलि अनूप ॥ ३६ ॥ तोटक ॥ निज बदन शुति
 समता लखति ॥ नल देखि दर्पणमें तकति ॥ लजि रहहिं तिय निज
 रूप बिन ॥ इक भीमकी तनयाहि बिन ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ देश विदर्भ
 नरेश वर, भीम भीम अनुहारि ॥ दमयंती कमनीय तन, ताकी राजकु-
 मारि ॥ ३८ ॥ सुनि सुनि नलके शील गुण, दान स्वरूप पवित्र ॥
 दमयंती मनु मिलिगयो, क्षीर सुक्षीर विचित्र ॥ ३९ ॥ चौबोला ॥
 तात सदन जब जाइ सयानी, वंदि पढ़ति नल गुणनिघने ॥ सुनि
 सुनि मदन पीर सरसानी, तनु कदम्बके तूल बने ॥ ४० ॥ दोहा ॥
 नरहूके परसंगमें, कहै सखी नल कोइ ॥ सुनि शरीर पीरी परै, पलमें
 पीरी होइ ॥ ४१ ॥ सवैया ॥ रंगकोभौन फुहारेनके ठिग नेक खड़ी तहँ
 आनि भई ॥ काहूसों काहू सहेली कहो नल देइ मिलाइ तबै चितई ॥
 सब अंगमरोरि मुरी मनमें झरि पूरि रही रस मैन भई ॥ दृगछाइ रहे
 मुक्ताजलके नलके सुनतै कुम्हिलाइ गई ॥ ४२ ॥ तारक ॥ सब चित्र
 चितेरनसों रचवावै ॥ तिनमें जुव सुंदररूप बनवै ॥ लखि कामको
 चित्र कहै यहु कैसो ॥ नहिं भावत और लिखै किन कैसो ॥ ४३ ॥
 दोहा-ऐसे छलबलकै लखत, नल मूरति लिखवाइ ॥ दुसह प्रथम अनुरागहै
 क्यों हूँ कह्यो न जाइ ॥ ४४ ॥ चौपाई ॥ चरचा निषध देशकी करै ।
 नरवरकी वाणी मुख धरै ॥ बीरि सदा नरवर की खाइ ॥ ४५ ॥ नलको नामुलेत
 मुसुकाइ ॥ कवि पण्डित याचक जे आवैं ॥ ते निज नरवर नगर बतावैं ॥ तिन्हें
 देइ अनगन धनभारा ॥ सुनत सुयश नलकेर सुखारा ॥ ४६ ॥ सारावती ॥

चित्र लिये नलको करमें ॥ भवन अकेली व्है भरमें ॥ संग सखीनहुसों
 चंकिकै ॥ यों समता मिलवै तकि कै ॥ ४७ ॥ सवैया ॥ रतिको मुख
 स्वादु नयो उनयो पति सोवाति नयनन आनि औरै ॥ करु झारि झुकै
 नरहै हँसिहेरि हरे करुलै छतिया पधरै ॥ बरजोरी करै जब और कछू
 करमीजि पसीजि चलै थहरै ॥ अनुमानती है सखि आवतही तजिसेज
 जहीं अकुलाइ परै ॥ ४८ ॥ प्यारे बढे पहिले अनुरागके कांति हजार
 गुणी सरसानी ॥ याहू कि ऐसी चली चरचा परवीननलै तिहुँलोक
 बखानी ॥ कौनु न रीझि गयो सुनिकै पुनि रूप चितै न भयो अभिमानी
 साँसन साँट मनोभवकी नवला नलके हिय माहँ समानी ॥ ४९ ॥
 दोहा ॥ निज छबिकी रतिकी विमल, मुक्तावलिके योग ॥ दमयन्तीके
 गुणसुने, नल वर्णत बुधलोग ॥ ५० ॥ तोमर ॥ तब पाइ औसर काम ॥ नलसों
 रह्यो कछु बाम ॥ करि ताहि मूरति आपु ॥ किय जीतको परतापु
 ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ दमयन्तीके गुण जबै, कानधरे नृप आनि ॥ काम
 आपने चापको, कान धरयो गुणतानि ॥ ५२ ॥ मनहरण ॥ ऐसे
 धीर साहसीके जीतिबेको ठाढो भयो संकित मदन मन धीर न धरतु
 है ॥ तीनि लोक जीतके सुयशढभरे हैं दर्द सोहे है सकतु नाही लाजन
 मरतु है ॥ जाको योग जासों करयो चहतु करतु तासों विधिको वि-
 लास कछू कह्यो न परतु है ॥ धीरजको कौच याको फूलनिके बातनि
 सों टूक टूक डारयो करि कौतुक करतु है ॥ ५३ ॥ सवैया ॥ सोइ
 रहै उठि जाइ अटापर मीतनसों न मिलै छलकै ॥ चौपरिकै सतरंज
 रचै कबहुं रस रंग लखै बलकै ॥ थल एक लगै न कहूँ चितयों हितकी
 सरिता उमडी ललकै ॥ खरकै छबि आनि गडी उरमें नृपरावरमैन
 रमै कलकै ॥ ५४ ॥ मोदक ॥ लोगनसों विरहागिनि गोवत ॥ धी-
 रजको सजि कानन जोवत ॥ जानत जागतके गुण साथिनि ॥ सेज
 शशीकर सुन्दर यामिनि ॥ ५५ ॥ सवैया ॥ मैनके बान लगे तनमें
 न बच्यो तिल अंग अभेद बनाइ कै ॥ पै नृप भीमसों आपनी ओरते
 व्याहकी बात कहै न चलाइ कै ॥ भूपति माननकी यह रीति है याँचतही
 किन जाहि पराइ कै ॥ आपनी ओरते माँगत नाहिं न माँगतही सबु देत लु-

टाइकै ॥ ५६ ॥ मोदक ॥ छूटत हैं मुख साँसनके गन ॥ भूप बतावत आ-
लसहै तन ॥ पीत भई छबि है सब अंगन ॥ डारत टेर कपूर बिलेपन
॥ ५७ ॥ दोधक ॥ बोलि उख्यो दमयंति कहाँ है ॥ कोऊ न वैन
सुन्यो न तहाँ है ॥ पंचम राग कलाँवत गायो ॥ राज समाज सबै समुझायो
॥ ५८ ॥ तुंगाछंद ॥ परिजन सब ठाढ़े ॥ लखत विपति बाढ़े ॥
कछु न मन विचारै ॥ नयननि जलढारै ॥ ५९ ॥ प्रद्धटिका ॥ ज्यों खु-
लत जात मन्मथ विकार ॥ त्यों लहत भूप लज्याअपार ॥ सब धर्म धाम
धीरज निधान ॥ जेहि शिवसमान गावत जहान ॥ ६० ॥ गुण निफलभये
सब वेद वैन ॥ अनुराग रह्यो भरिपूरि ऐन ॥ रति संग पाइ मन्मथ अराल
अनिरुद्ध तहाँ उपजतु विसाल ॥ ६१ ॥ अन्यच्च ॥ विन मैन चिह्न
बैख्यो न जाइ ॥ करि यत्न भूप मनमें लजाइ ॥ जब लगन लगी
मजलिस उदास ॥ तब चित विहारकी करी आश ॥ ६२ ॥ प्रद्ध-
टिका ॥ सब कामरूप मित्रनि समेत ॥ मनु करौ बगीचाके नि-
केत ॥ परिजनन ओर देख्यो कनेखि ॥ साजौ तुरंग यहु हुकुमलोखि ॥
६३ ॥ अ० ॥ करि करि प्रणाम दौरे अपार ॥ तुरतै तुरंग साज्यो शृंगार ॥
छबिइवेत जासु जिमि तरुनिहाँस ॥ जबमान अधिक पौरुष प्रकाश ॥ ६४ ॥ अ०
अतिचपल पुष्ट पुटटाय टोर ॥ जो खूंदत मंदर सकल छोर ॥ थिररहत न
छिन जिमि तरुणि नयन ॥ ठहरत नडीठि जिमि मुकुर नयन ॥ ६५ ॥ सोरठा
केंसरिरूप अनूप, झल झलात छुति वदनतल ॥ लसतहिये शुभरूप
मनौ देवमणिकी किरानि ॥ ६६ ॥ मरहट्टा छंद ॥ चंचल खुरखूंदै गिरिगण
गूंदै लसत रेणुकणजाल ॥ सीखाति गति वेगनि लगे अनेगनि जनु जनि
चित्त रसाल ॥ मुख ओंठ चलांकी निजगति बांकी नृपसों कहत सुनाइ ।
यहु जानत हयके सब गुण रयके यासों रहत चुपाइ ॥ ६७ ॥ रसिका ॥
परम पुरुष नल चहत ॥ जनु रवि रथ हय सहत ॥ यहि सुयशहि जग
लहत ॥ दशनि किराणि मुख लहत ॥ ६८ ॥ तोटक ॥ सित केसर
चंचल पूछलसै ॥ मुक्तागण गूंदनि सों सरसै ॥ नीकी हय राजु बतावतु
है ॥ जनु चौर दुहूँकरवावतु है ॥ ६९ ॥ घनाक्षरी ॥ महाराज
नलको विदित बरबाजी सुख गीरवान पति अभिमानिन गिरावई ॥ गरुड

समान गर्व कहा कहौं मन गति दौरतमे तेज गवन पौनही सिखावई ॥
 मेरी जानि गहनु नहोइ जो ये वारवार भानु महताब माँगि रथन ल-
 गावई ॥ अंबरके खेतय उदेत नेक बाग लेत राहु केत नाहि कहूं छांह
 छुइ पावई ॥ ७० ॥ दोहा ॥ आस्रय ऊँचो थल विना, छुवत न जाकी
 पीठि ॥ बाजिसाजि ठाढो कियो, मुख सन्मुख नृप दीठि ॥ ७१ ॥
 दौरि चले परिजन सकल, वंदि सौरु संभार ॥ बाजि उठे इकबार
 ही, दुंदुभि दीह हजार ॥ ७२ ॥ तारक ॥ संगसाजि चले बहु भूपति भारे ॥
 रवि किंकर ज्यों रवि संग निहारे ॥ तुरकी हय साजि चले नृप आगे ॥
 सब दूरिहि देखति पाँयनि लागे ॥ ७३ ॥ दल संयुत भूपति बाहर
 आयो ॥ सम भूमि विहार बिनोद बनायो ॥ असवार तुरंगन दाबि घ-
 नेरे ॥ छलसों परिहास करें बहुतेरे ॥ ७४ ॥ दोहा ॥ दौरावत चहुँ
 ओर हय, देखत बात लजात ॥ छूटत मानौ फुलझरी, जरी जीन सरसा-
 त ॥ ७५ ॥ दौर हमारीको धरा, अल्प अधिक यह जानि ॥ मनौ करत
 अंभोधि थल, खुरन खूँदि रजसानि ॥ ७६ ॥ दौरत शत्रु दिगंत लौं, लंघत
 सिंधु सुजासु ॥ ता नृपके हय जानि यह, करत मंडली लासु ॥ ७७ ॥
 प्रह्लाटिका ॥ यह लखत ललित लीला विलासु ॥ नृप गयो बाग जहँ
 सुख निवासु ॥ वनपास पहुँचि सब नगर लोग ॥ फिरि चले मुदित मन
 योग योग ॥ ७८ ॥ संगके नरेश उतरे समीप ॥ तेद्वार खड़े राखे म-
 हीप ॥ गहि एक एक मित्रनि अनूप ॥ माधि बाग गयो अनुराग भूप ७९ ॥
 तोटक ॥ वनपाल प्रधान प्रणाम करै ॥ करजोर विलोकत प्रेमधरे ॥
 फल फूलनकी महिमां विनई ॥ वनकी सब शोभ दिखाइ दई ॥ ८० ॥
 तोमर ॥ फल फूल पत्र प्रकासु ॥ जनु है वसंत निवासु ॥ चहुँधासु
 जासु हजार ॥ जनुहै सुगंध बजार ॥ ८१ ॥ बहु भाँति फूलत फूल ॥
 अलि संचरै रसमूल ॥ सजिकै धरे ऋतुराज ॥ मनमत्थ
 आयुध साज ॥ ८२ ॥ चौपाई ॥ कहूँ तरुवर पण्डितसे राजें ॥
 फैले पत्र पुराण विराजें ॥ कहूँ महीपति शोभा धरै ॥ नवदलसे सबको
 मन हरै ॥ ८३ ॥ उडत पराग धुंधि चहुँ ओरी ॥ ऋतुराजा खेलत जनु
 होरी ॥ कल गाननि कोकिल कुल गावैं ॥ भवन बीन परवीन बजावैं ॥ ८४ ॥

दूत विलंबित ॥ छूटत हैं जलयन्त्र तहाँ बने ॥ गरजि कै जल
 चादरि सों सने ॥ परम मोरनिको जहँ लासु है ॥ मानहु साँवन
 भादों मासु है ॥ ८५ ॥ लसत केतकिके कुल फूलसों ॥ रमतु भँवर भरे
 रसमूलसों ॥ शिव सुपूजन माँह मने करे ॥ मनहु सो अपकीरति सों
 भरे ॥ ८६ ॥ मौक्तिक दाम ॥ दुरव्यो हिय केतकि देखत भूष ॥
 करचो तब तापर रोष अनूप ॥ वियोगिनिके उरभेदतु रोजु ॥ करै
 तुमको निजबाण मनोजु ॥ ८७ ॥ सकंटक रूप न काटन योग ॥ गिरै
 विरही तिहि लागत लोग ॥ महेश यही तुमको निदह्योजू ॥ आरासम
 पत्रनिहै विदरचोजू ॥ ८८ ॥ दोहा ॥ मधुसों गीले हाथ है, ऐंचो ध-
 नुष न जाइ ॥ ते पराग मालि कुसुम शर, बेधत मोहि बनाइ ॥ ८९ ॥
 सुखदायक ॥ देखे फल सँभारि सुहाये दाडिमनि ॥
 धूपे तललै धूपनवाय आनननि ॥ चहै सप्तता होन दमयंतीके
 कुचनि ॥ छूटै घटै धूम मानौ हू काननि ॥ ९० ॥ दोहा ॥
 लखी वियोगिनि दाडिमनि, कंटक अंग निदान ॥ फुलत नविन दरको
 लग्यो, शुकमुख किंशुकबान ॥ ९१ ॥ मनहंस ॥ विरहिनिके पल
 खातहौ यहि नामसों ॥ यहिते पलाश प्रसिद्ध हौ गति वामसों ॥ कछु
 फूल लागतलाल हैं तेहि हेतसों ॥ इमि दूखिकै पुहुमी पुरंदरचेतसों ॥ ९२ ॥
 नील ॥ नव लता पुनि सुंदर नृप दीठि परी ॥ चुंबित मंद समीर सुसी-
 कर सों भरी ॥ कंपित अंग अनूप कलीमुख हांसु लसै ॥ कूजत कंठक-
 पोत विलोकत जीव त्रसै ॥ ९३ ॥ चंपकी कलिका लविलोकत जानि
 परी ॥ भँवरनकी अवली उमहीं सिगरी ॥ पूजत काम बसंत सुदीपक
 वारि धरी ॥ चित्त वियोगिनके सुपतंगम तूलकरी ॥ ९४ ॥ कबित्त ॥
 बांचति कोकिल हैं विरहीनकी दुःखदशा अलि देत हुकारै ॥ फूलि रह्यौ
 करुणारसबाग वियोग संयोग विहार बिहारै ॥ या जगमें कछु नाहिनहै
 कहती सबसों कर फूल पसारै ॥ देखत है टरि भूष तहां भरि नयनन
 आंब गुलाबकी डारै ॥ ९५ ॥ भुजंगप्रयात ॥ विलोके तहां
 आंबके शाखि मौरै ॥ चहूंधा भ्रमैं हुंकरैं भौरै बौरै ॥ लगै पवनके झूंक
 डारै झुकावैं ॥ विचारे वियोगीनको ज्यों डेरैवैं ॥ ९६ ॥ शशिवदन ॥ पिक

द्विज देखे ॥ कुपित विशेषे ॥ नयननिराते ॥ वचननिताते ॥ ९७ ॥
 दोहा ॥ दिन दिन तनु तनुतागहैं, लहौ मूरछा तापु ॥ पिकद्विज ये
 बोलत न जनु, विरहिनि देत शरापु ॥ ९८ ॥ सोरठा ॥ लसत धूम
 अलिशीश, चम्पकके गुच्छा दिपत ॥ धूमकेतु विसवीस, उयो वियोगि-
 निको अहित ॥ ९९ ॥ दोहा ॥ चहुँ दिशि मिटत पराग कन, शीश लगी
 अलिपाँति ॥ लखी नागकेसरि चलित, मदन सानकी भाँति ॥ १०० ॥
 तोमर ॥ चहुँओरते अलिधाइ ॥ नलके सुगन्ध लोभाइ ॥ तजिदेत
 फूल बनाइ ॥ सब ओर गुंजत आइ ॥ १०१ ॥ दोहा ॥ बारनारिके
 कुचन संम, तके पके फलबेल ॥ पवन चलित कंटक दलित, चन्दन
 सुरभि समेल ॥ १०२ ॥ सवैया ॥ गूँदि रहे गन गुच्छनिके नवरंगित
 रंग सुरंग बखान्यो ॥ मोहन बान बसी करके औ उच्चाटनको वहु
 ठीक ठिकान्यो ॥ नृप मयनको अक्षय बाण निषंग बन्थो निहिचै पचिभै
 पहिंचान्यो ॥ विरहीनके हीय हुलास विडारन पाँडर डारन देखि
 डरान्यो ॥ १०३ ॥ दोहा ॥ कोरक सहित अगस्तिया, लख्यो राहु
 अवतार ॥ कला कलाधरकी गिली, जनु उगिलत यहि बार ॥ १०४ ॥ चं-
 द्रमाला ॥ सित तुषार दलबसन दूरि करि हठसों अंग उघारै ॥ कंपतु तनु
 लै नवल लतासों सुघर समीर विहारै ॥ झरिझरि परत कुसुम श्रम सीकर
 सुखसनेहसों सोहैं ॥ लोचन मूँदि रह्यो पुहुमी पर निरखतही मनमोहैं ॥ १०५ ॥
 सवैया ॥ शीतल डोलत मंद समीर भयो तेहिते अति शीतल नीको ॥
 फूलनके रससों मिलिके प्रगट्यो सबु स्वादु सुधाधरहीको ॥ केतकीके
 नव पीत परागसों पीत भयो रँगु सोहनोजीकी ॥ द्यौसहुमें विरहाकुल
 भूप लह्यो सुख तोहूँ सजी रजनीको ॥ १०६ ॥ दोहा ॥ विरहबिथाहू
 में लख्यो, भूपति आनन चन्द ॥ कुहूकुहू टेरन सरिस, कोकिलदै दुख
 द्वंद ॥ १०७ ॥ प्रमाणिका ॥ अशोकनाम जानिकै ॥ लख्यो
 सुसाखि आनिकै ॥ लसै सुरंग फूलसों ॥ मनौ जवान तूलसों ॥ १०८ ॥
 सवैया ॥ बावली विभ्रम वीचिनसों तटलागि चढी मिरदंग बजावै ॥
 गावतु हैं पिक पञ्चमताननि मोर मिले वनितान चलावै ॥ रंग बन्थो
 वनमें सब अंगनि चोपसों भूपहि मोरि रिझावै ॥ भागके भाजन जात

जहाँ चहुँ कोदनि माँह विनोदनि पावै ॥ १०९ ॥ तारक ॥ फहरैं
नवपात निसान घनेरे ॥ नृप आवतु हैं जनु मयन अहेरे ॥ गुलक्यारि-
नमें अलि बोलत मानौ ॥ वह काम नफीरिनिकी ध्वनि जानौ ॥ ११० ॥
दोहा ॥ शिवपूजन हित कनकके, कुसुमरसत अलिजाल ॥ मयन
नृपति जगजीतकी, बजी मनौ करनाल ॥ १११ ॥ दोधक ॥ जो
गुलकेसके फूल सराहैं ॥ मयन तुरीनके जीन झवा हैं ॥ सोहतु रौ-
सनिमें गुल्लाला ॥ मानहुँ कामके आशव प्याला ॥ ११२ ॥ सवैया ॥ अलि
कोकिल बीन बजे बजने बन वेलिन केलिसों नाच रचायो ॥ संगम मंत्र
मनोज महा ऋतुराज लस्यो गुललालन मायो ॥ तजि मान मिलै
मनभावन को तिय यों लिखि आइ सुबागनि आयो ॥ आमिल
हू छिन पौन प्रबीनलै ना फरमा फरमानु पठायो ॥ ११३ ॥
संयुत ॥ शुक सारिका गुण उच्चरैं ॥ नृपकी सुकीरति सुंदरैं ॥ सुनि
होत ही न हुलासु है ॥ दमयंति प्रीति प्रकाशु है ॥ ११४ ॥ विरहागि है
दुगुनी जगै ॥ मन बाग देखत नालगै ॥ पग नेकु आगुहिको दयो ॥ इक
ताल देखत मोहियो ॥ ११५ ॥ दोहा ॥ लैकै सब संचित रतन
मंथनको भयमानि ॥ मनौ बगीचा बीच गृह, वस्यो क्षीरनिधि आनि ॥
॥ ११६ ॥ जलतल विषधर दंड बहु, झलक श्वेत सरसात । मनौ बसत
वासव दुरद, रदनावलि संघात ॥ ११७ ॥ चंचल तरल तरंग तट, प्रति-
बिंबित जल होत ॥ लगत वीचि ता जन मनौ, सुर वाजिनके गोत ॥
११८ ॥ पुंडरीक विकसत लसत, बसत कलंक मलिंद ॥ मनौ उदित
यामें मुदित, दिपति अनेकानिचंद ॥ ११९ ॥ चलत चक्र करकमल
बल, मधुकर शुति दरशाइ ॥ विषधर पै राजत सदा, सवरण हरिके भाइ
॥ १२० ॥ लपझी अंग तरंग बहु, सरिता रंग अनूप ॥ नव पंकज अं-
कुर जहाँ, धरत प्रवाल स्वरूप ॥ १२१ ॥ सित सरोज फूले उतै, इत
इंद्रिय बरनोर ॥ शशि मंडल उहि ओर जनु, विष मंडल यहि ओर ॥ १२२ ॥
चलती लता सिवारकी, चलत रंगके संग ॥ बडवानलको जनु
धरचो, धूमधूमरे रंग ॥ १२३ ॥ मित्रसंग कंटकित तन, सीग्रहपै परवीन ॥
जासु कमलनी अपसरा, शुचि सुगंधसों लीन ॥ १२४ ॥ जाके जलमें

प्रति फलत, सब तट तरु इक आंक ॥ पर्वत परचो सपच्छ है, मनौ
 लसत मैनाक ॥ १२५ ॥ गीत ॥ मणि दीह दर्पण है मनौ जलदेवता
 रमणीनको ॥ मुकुतानि हीरनिसों रच्यो घरु धौजलेश प्रवीनको ॥ जनु
 सात सिंधुनको यहै उत्पत्तिको थलु मानिये ॥ जलराशि रूपधन्यो मनौ
 शशि जोन संयुत जानिये ॥ १२६ ॥ चौपाई ॥ मुनि जन मन सज्जन
 गुण जेते ॥ मुकुतपुण्य शुचि सत्व समेते ॥ सुधासार चंदन घनसार ॥ इनसों
 मनौ कन्यो शृंगार ॥ १२७ ॥ चक्र कमल कर चिह्ननि धरै ॥ महापुरु-
 षकी शोभा भरै ॥ नीलकंठ पीवत विष याको ॥ सागर मंथन समय
 सुताको ॥ १२८ ॥ सोरठा ॥ तेहि तडाग तट ओर, अद्भुत देख्यो
 स्वर्ण तन ॥ कलहंसन शिरमौर, मोहि गयो भूपाल तब ॥ १२९ ॥ चों
 च चरण युग लाल, अंकुर दल द्वौ रागके ॥ नवल प्रगलभावाल ॥ तिन
 तिनके अनुरूप जनु ॥ १३० ॥ लक्ष्मीधर ॥ देखि ता रूपको भूप
 मोह्यो महा ॥ देहमें मैनाकी पीर रोकी हहा ॥ आजुलों मैं न ऐसी विलोके
 उँकहूं ॥ देवके लोक कोहै यहै सांचहूं ॥ १३१ ॥ दोहा ॥ चलत देव इच्छा प्र
 बल, जितै तितै समुदाइ ॥ दौरत सुर नर नाग मुनि, ज्योति नगन बसवाइ
 ॥ १३२ ॥ निशिपाल ॥ एकु धरि पाई इकु पाँइ उरमें लयो ॥ धीच
 फिरितेकि शिर टाकि छदसों दयो ॥ तीर सर आइ अरसाइ खगुसो
 दयो ॥ दूरि टुकलाइ नल भूमिपति जोइयो ॥ १३३ ॥ दोहा ॥
 निज मुख छवि जीत्यो नयो, मनौ स्वर्ण जलजात ॥ किधैं वरुण जलराज
 को, हाटक छत्र सोहात ॥ १३४ ॥ प्रह्वटिका ॥ उतरचो तुरंत हयते
 नृपाल ॥ पग दिपति जरी जूता रसाल ॥ वनके प्रवाल सह अंबुजात ॥
 जनु युद्धकाज सन्नद्ध गात ॥ १३५ ॥ छलसों स्वरूप बावन बनाइ ॥
 दुरि चलत हरे नहिं बजति पाँइ ॥ पहुँच्यो समीप जब भूमिपाल ॥
 करझंपि झपटि पकरचो मराल ॥ १३६ ॥ तब तरफराइ फरकै अतूल ॥
 उठि चल्यो चहतु नहिं चलतु मूल ॥ तब कंठ फारि बोल्यो अराल ॥
 कर काटत चोचनि सों मराल ॥ १३७ ॥ भ्रमरावली ॥ तबहीं भह-
 राइ भजे खग सरसों ॥ बहु सोरनि साजत हैं मिलिके डरसों ॥ लगिमारुत
 चंचल पंकज सुंदर सों ॥ सर मानहु भूपतिको बरजै करसों ॥ १३८ ॥

दोहा ॥ जाको पति निरद्वैतही, वास योग नहिं भूमि ॥
यहै कोसि मानहु चले, गगन विहंगम घूमि ॥ १३९ ॥ चौपाई ॥
निरखि भूप बोल्यो हँसि यही ॥ हाटक हंस अनूपमसही ॥ तब
बोल्यो धरि धीर मराल ॥ उक्ति अनूपम वैन कराल ॥ १४० ॥
अ० ॥ कौन चाल भूपाल तिहारी ॥ निरखि गह्यो हाटक छदधारी ॥
कनक रत्न धनभार तिहारे ॥ सागर सीक रहोत सुखारे ॥ १४१ ॥
मेरे वधे एकु वध पापु ॥ पुनि विश्वासघातको तापु ॥ तोहिं देखि
सज्जन ह्याँ आयो ॥ हौंसोयो संताप सतायो ॥ १४२ ॥ जो कछु
करयो पराक्रम बूझ्यो ॥ तौ किनजाइ सु समर अरुझ्यो ॥ हमसे
अबल वधेको नामु ॥ सब संसार हँसै कहि बासु ॥ १४३ ॥ फलदल
वृत्ति मूल वन फरै ॥ स्तुति निंदा सम चित धरै ॥ मुनि समान
खग तिनहि सतावत ॥ पति कहाइ पुहुमीह लजावत ॥ १४४ ॥
दोहा ॥ कहि कहि ऐसे वचन तब, चकित किये भूपाल ॥ करुणारस
में सरस वर, बोल्यो हेममराल ॥ १४५ ॥ सवैया ॥ हौंही भयो वि-
रधापनमें इक बालक सों जननी अति जीरन ॥ हैं अबहीं चिकुला
जनमे वरटा तनमें छिनु धारत धीरन ॥ हों प्रतिपालक हों तिनको
नहिं आजु अहार मिल्यो अरु नीरन ॥ मेरी भई यह आनि दशा
निघरे विधि तोहि अरे यह पीरन ॥ १४६ ॥ चौपाई ॥ पुनि पुनि
निजतरुणी सुधिकरै ॥ कहै वयन करुणारस भरै ॥ चिकुलनको कैकै
पछितायो ॥ नयन मूँदि परवाह बहायो ॥ १४७ ॥ नायकाप्रति-सवै-
या ॥ मैं फरमायसिकीने मृणाल सुलावतु है मगमें अरि हैगी ॥ बूझहिंगी
पुनि साथिनसों निज नयनननीर नदी भरि हैगी ॥ उत्तरही कि अचान कमैस
सवाइके धीर नहीं धरिहैगी ॥ वे जब देइंगे रोय महा तो हहा मृगनयनी कहा
करिहैगी ॥ १४८ ॥ कबित्त ॥ यहि शोकसों प्राण तजैगी बरंगिनि
तौ निहचै पतिको व्रतुपारै ॥ नहिं नयननते कबहूँ छिन ओट भई
मिलि जोट विहार विहारै ॥ आजु लग्यो इकवारही आनि बड़ो दुखदानि
सुभाग्य हमारे ॥ तौ मारेहूँ पर मारे उदै मरिहैं चिकुला लफिकै सब
बारे ॥ १४९ ॥ दोहा ॥ बडे मनोरथसों लहे, पूजि पूजि ब्रजनाथ ॥

ते चिकुला व्हैहैं दई, कैसे आज अनाथ ॥ १५० ॥ चम्पकमाला ॥
 ज्यों करुणाको वैन सुनायो ॥ भूपतिके जीमें दुखछायो ॥ छोडि दियो
 ताको कहि ऐसो ॥ देखिलियो तेरो तनु जैसो ॥ १५१ ॥ दोहा ॥
 जाइ मिल्यो निज गोतमें, आनंदरव सरसाइ ॥ घेरि लियो चहुँ ओरते
 सब हंसन मिलि आइ ॥ १५२ ॥

इति श्री मत्प्रचंडदोर्दंड प्रतापमार्तंड भूमंडलाखंडल
 श्रीखाँसाहब अलीअकबरखांप्रोत्साहित गुमान मिश्रवि-
 रचिते काव्यकलानिधौ हंसग्रहणोनाम द्वितीयस्सर्गः ॥२॥

दोहा ॥ सर्ग तीसरेमें कथा, हेमहंसको गवनु ॥ वर्णन देश विद-
 र्भको, कुंडिनपुर नृप भवनु ॥ १ ॥ सोरठा ॥ पाइ मुक्ति द्विजराज, प्रभु
 पुरुषोत्तमसों सुगति ॥ लह्यो ब्रह्म सुखसाज, बनत न वर्णत वचनसों ॥२॥
 दोहा ॥ पाँख हलाइ फुलाइ तन, चोंचुनिचुनि सुख ज्वाइ ॥ गयो दैरि
 उड़ि नीडको, मिल्यो सबनि सुखपाइ ॥ ३ ॥ परचो पाँइ तब माइके
 करवायउ आहार ॥ पुनि निज तरुणीसों मिल्यो, बाढेउ विविध
 विहार ॥ ४ ॥ चिकुलनिकी सब खबरि लै, समाधान करि माइ ॥
 उड़ि आयो पुनि ताल तट, मिल्यो हंस समुदाइ ॥५॥ प्रह्वटिका ॥ बहु
 सै बल क्षमताको निधान ॥ युत रुद्र अक्ष मधुकर निधान ॥ जनु कमल
 जानि उड़िकै मराल ॥ बैक्यो भुवालके कर रसाल ॥ ६ ॥ विश्वास पाइ
 पहिलो निदान ॥ मनमुदित हंस बैक्यौ सुजान ॥ बोल्यो पियूष समचार
 वैन ॥ मनुकान लग्यो नृपको सुऐन ॥ ७ ॥ हंसदोधक ॥ राजन
 काज शिकार बनायो ॥ खेलनि में नहिं दोष बतायो ॥ भूपति जो तुममो
 कहँ छाँडेउ ॥ तौ निज धर्म दया पर माड़ेउ ॥ ८ ॥ जे अपने कुल-
 दीन निहारैं ॥ ते निजकाज अहार विचारैं ॥ मीननकी यह रीति बखानी
 मारत होत न दोष निसानी ॥९॥ जापर जे निज बासु सँवारै ॥ तात-
 रुपै मल मूत पखारै ॥ ते खग खेल अखेटक मारैं ॥ राजनिको नहिं
 दोष विचारैं ॥ १० ॥ जे तिनुकान चरैं विन दोसे ॥ आपुरहैं तिन
 संग भरोसे ॥ वेझतहैं नृपते मृग ऐसे ॥ लागत पाप तिन्हें न अनैसे ॥११॥

में तुमसों कटु बोलानि बोल्यो ॥ सो अपराध चैहाँ अब छोल्यो ॥ चाहत
 हों कछु काज सँवारचो ॥ जो हिय आपने होइ विचारचो ॥ १२ ॥ आ-
 पनते शुभ आवत जाने ॥ तौ न अनादर देत सयाने ॥ जो विधि देत
 कछु फल जीसो ॥ तौ जगजीवहिके करही सो ॥ १३ ॥ हो प्रभु हों
 बलहीन पखेरू ॥ हौ तुम राजन माँह सुमेरू ॥ अंतर आपुसमें अवगाहौ ॥
 पै उपकार करचो कछु चाहौ ॥ १४ ॥ जो उपकार करै जग
 माँही ॥ तौ बदलो सजिये निज याही ॥ आपुनके बलके अनु-
 सारै ॥ नाहिन घाटि न बाढ़ि विचारै ॥ १५ ॥ भूप सुनौ विनती ब-
 हुतेरी ॥ यद्यपि मूरुख है मति मेरी ॥ ज्यों शुकवैन स्वहावन जानौ ॥
 त्यों यह बात करौ परमानौ ॥ १६ ॥ देश विदर्भ सुवेद बखान्यो ॥
 सुन्दरता मणि आकर मान्यो ॥ है रमणीय रमा परभासों ॥ सुन्दर
 सौध सुधा वसुधासों ॥ १७ ॥ मयन मनौ निज लोक बसायो ॥ भूप
 श्रृंगारको देश सुहायो ॥ पद्मिनि जाति जहाँ सब नारी ॥ मानहु बैठि
 विरंचि सँवारी ॥ १८ ॥ दोहा ॥ जहँ दुर्वासा तप करचो, कंटक लाग्यो
 पाँइ ॥ शापदियो ता देशते, डारचो दर्भ नशाइ ॥ १९ ॥ सुखसों
 विहरत वननमें, विद्याधर सुर सिद्ध ॥ तबते त्रिभुवनमें भयो, देश
 विदर्भ प्रसिद्ध ॥ २० ॥ तोटक ॥ जगतीपति भीम तबै तेहिको ॥
 अरि काँपतनाम सुने जेहिको ॥ जिन षोडशदान अनेक दिये ॥ बार
 महा हयमेध किये ॥ २१ ॥ रणजीति शिरी बहु वार वरी ॥ सँगकी-
 रति नौल सखी सुथरी ॥ भुजदंडनसों जिन दैत्यहने ॥ पठये उपहार
 शची सघने ॥ २२ ॥ कुल भोज सरोजनको रविहै ॥ लखतै तमजात
 महादवि है ॥ सत मारगसों विचलावत है ॥ द्विज चक्रनि चैन बढावतुहै २३
 दोहा ॥ वीति गयो बहुकाल कछु, भयो न ताके बाल ॥ जऊ सुचित सब
 दुखनिसों, दुचित भयो भूपाल ॥ २४ ॥ पटरानीसों कैमतो, लैपरिजन
 कछुसाथ, आश्रम गयो नरेश तब, जहाँ दमन मुनिनाथ ॥ २५ ॥ प्रमि-
 ताक्षरा ॥ जहँ वेद घोष नितपाप हरैं ॥ शुक सारिकानि मुख ब्रह्मररैं ॥
 बक हंस सारसनि वाद परैं ॥ मत द्वैत भेद निर्वेद करैं ॥ २६ ॥
 सवैया ॥ बाघ बछानिको गाइ जियावत बाघिनिपै सुरभी सुत चौबै ॥

न्योरनिको सहरावत सांप अहारनि दै वेडहै प्रतिपोखै ॥ व्याधिकथा
 नहिं में सुनिये अपलोक सबै जल कुंडनि बोखै ॥ नयननिराग भई
 पिकके अरु विग्रह वै न शरीरके घोखै ॥ २७ ॥ बंधनहै मनहीको जहीं
 अरु संयममें यमको यमुना है ॥ दैत्यकथा अधकी सुनिये जहां सीग्रह-
 सों अलि राखतु कामुहै ॥ ढेर विभूतिनके चहुँ ओर रजोगुणयो अभिराम
 विरामहै ॥ आश्रम देखि मुनेश्वरको अतिपावन पुण्य कन्यो परणामु है २८
 चौपाई ॥ कहूँ बिछे सोहत मृगछाला ॥ कहूँ गूंदति मुनि अच्छानि
 माला ॥ कहूँ मूलफल दल मिलि कूटत ॥ कहूँ कहूँ पके निवारनि जूट-
 त ॥ २९ ॥ सुकुमारी तन मुनि जन नारी ॥ घट भरि भरि सींचततरु
 वारी ॥ थकी जानि मारुत गतिमंद ॥ परसि परसि तनु करत
 अनंद ॥ ३० ॥ बलकल चीर चुनै दिन मूदे ॥ कोउ फूलनिहै अलकनि
 गूदे ॥ भूषण तन फूलनिके करै ॥ देखतही मुनिजन मनहरै ॥ ३१ ॥ श्रुति
 नाघत तिनहीके नयन ॥ चिकुरै वक्रगतिनके ऐन ॥ खेलत मुनि कुमार
 छविछाया ॥ मानहुससत्यलोकते आया ॥ ३२ ॥ मुनिजन निज संयम
 जप साधै ॥ धरि धरि ध्यान ब्रह्म आराधै ॥ चम चमात रुचिके
 तनजाल ॥ बनत न देखत रूप विसाल ॥ ३३ ॥ घनाक्षरी ॥ बलकलौ
 धरें तजैं बरत अनेक भरैं जनपद गहत लहत मंत्र मतहैं ॥ येसे बलतपै
 परलोकनते अरियाते कोसनि अचलतैते केवरो लगत हैं ॥ सुवसनभामै
 साधैपौन नय तन आनि अदभुत मुकुतौ करनकौ सजतहैं ॥ दंड विगहत हैं
 सबन एक मंडललै राजशी रहित राजै तापसी जगत हैं ॥ ३४ ॥
 दोहा ॥ एक एकते सरस सब, तप पवित्र अवतार ॥ तिनमें राजत
 दमनमुनि, जनु जगको करतार ॥ ३५ ॥ हरिगीतिका ॥ शिरते छुटी
 छिटकी जटा मृदुवेलि ज्यों शुचि शीलकी ॥ जनु शृंगशैल सुमेरुते बहु
 धार गंगसलीलकी ॥ तिरपुंड राजत भालपै शुभभस्मको रचिकै कियो ॥
 जनु हेमकी नव पट्टिका तिहुँ देवका आसन दियो ॥ ३६ ॥ चहुँ
 ओरते लपटी छटा छवितेज पुंज समानसों ॥ जनु सूर मण्डल में लसै
 तडितानके शुभ साजसों ॥ असरापकी रसनावली समरेण भूयुग पाँति
 है ॥ गुणतीनि तीनिहु देव तिहु मनु काललोचन काँति है ॥ ३७ ॥ वि-

उजूहा ॥ पुण्यके पालेहैं ॥ दीनके घालेहैं ॥ सीयके हेतहैं ॥ नयन-
 सों भेतहैं ॥ ३८ ॥ सवैया ॥ पुण्यनिके जल घोरिघने घनसार मिले
 मृगमेह दहावत ॥ कंजनिके किधों पुंजनि सों नखते शिख अंगसबै
 सियरावत ॥ बोरत स्वादु सुधारसमें बसुधा महुँ सो द्विज धन्य
 कहावत ॥ जापर नेक दया दग आवत तातनके त्रयताय नशावत ॥ ३९ ॥
 सुलक्षण ॥ अति ललित लंबित कानहैं ॥ जहँ सुनत मन्त्र विधान हैं ॥
 चहुँ श्रुतिन जनु युग तनुधरे ॥ मुनि मुखाहि सेवतु हैं खरे ॥ ४० ॥ शुभ
 वंश उन्नत नासिका ॥ तपकी ध्वजा द्युति हाँसिका ॥ जहँ छुटत पवन सुहा
 सुहै ॥ तिल फूल के तन त्रासु है ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ इडा पिंगला सुषुमणा
 नारिनको रंग भौनु ॥ पूरक कुंभक रेचकनि, मिलि रमती रसरौनु ॥ ४२ ॥
 लीलाछंद ॥ कमल सों मुसुक्यात आनन पूरि दंत मयूष ॥ स्वच्छता
 हियकी मनौ प्रगटी पवित्र मयूष ॥ स्वर्णको उपवीत राजित कंध लंघित
 बाम है ॥ सकल इंद्रिय जनु सुचंचल रोकिकेकी दाम है ॥ ४३ ॥ दृढ़पद ॥
 बाहु बंध कर मूलमें आछावलिराजै ॥ लपटे फणि श्रीखंडकी लतिका
 जानि राजै ॥ कुंड जुरच्यौ सुहोमको जनु नाभि सोहाई ॥ रोमावली
 मिसि धूमकी रेखा चलि आई ॥ ४४ ॥ धोती सोहत श्वेत है जनु जोन्ह
 सोहाई ॥ मनहु जरा दुगुनी करी तनुकी छवि छाई ॥ कैधों कटि लौं-
 न्हात हैं गंगाजल ठाढ़े ॥ किधों चरण नख अंसुके पटसों द्युति
 ठाढ़े ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ सकल भूष शिर मुकुट मणि, मिलत ओष सर
 सात ॥ चरण कमल मुकुतावली, लसत नखनकी पाँत ॥ ४६ ॥
 घनाक्षरी ॥ विकसत सुंदर अशोकतर वेदिकापै मृदुल सु दर्भ नयो
 आसनु सँवारचो है ॥ तापर विराजत दमन ऋषिराज आस पास ऋषि-
 राजनको मंडल सुधारचो है ॥ सनक सनंदनसे विदित परम तत्त्व
 नरम कठोर वैनयाके विबवारचो है ॥ देखतही मुनिनको जन्म फल लह्यो
 भूष उमह्यो उदधि उर आनंद में पारचो है ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ फटिक
 माल कोपीन पट, दंड कमंडलु चारु ॥ आनि सत्वगुणको बस्यो, सुख-
 पावत परिवारु ॥ ४८ ॥ अति दुर्बलतनहूँ बढ्यो, झलक पुंज परकाश ॥
 सेवन हित जनु ब्रतिनि मिलि, करचो शरीर निवास ॥ ४९ ॥ त्रिभंगी ॥ स

न्मुख तब आयो क्षिति शिरनायो टेरिसुनायो करजोरे ॥ मुनि भूपति
 जान्यो उठि सनमान्यो गुणनि बखान्यो मनु भोरे ॥ सादर उरलायो आ-
 सन लायो बैठायो सुखमानि सही ॥ हँसि पुनि बूझी प्रेम अरूझी तपबल लूझी
 कुशल सही ॥ ५० ॥ दोहा ॥ न्हान उपासन कै सकल, वंदि यज्ञ
 थलबास ॥ कंद मूल फल सरसदै, भोजनके सविलास ॥ ५१ ॥
 आगम कारण भूप तब, मुनिसों कह्यो सुनाइ ॥ मुनिवर दई
 उपासना, परम दयालु दयाइ ॥ ५२ ॥ प्रह्लादिका ॥ तब विष्णुभक्ति
 दीन्ही दयाल ॥ तुम नारिसंग लेवौ भुआल ॥ सब होत तुरत
 अभिलाष सिद्ध ॥ यह विष्णुभक्ति देवन प्रसिद्ध ॥ ५३ ॥ गहि
 पाँइ चलयो घरको नरेश ॥ ह्यां आइ कन्यो व्रतको विशेष ॥ तब प्रगट
 भये भय भूरिहारि ॥ वरदयो दुहुँको मन विचारि ॥ ५४ ॥ नृप धन्यो
 पुत्र मनमें सुधारि ॥ रानी सुलई कन्या विचारि ॥ ता गर्भ युगल जन
 म्योस्वरूप ॥ यक तनय चारु तनया अनूप ॥ ५५ ॥ दम कन्यो नाम
 दमघोष आनु ॥ सुंदरु वोदारु बलकी निधानु ॥ दल मल्यो रूप तिहुं
 लोक वाम ॥ दमयंति कन्यो तनया सुनाम ॥ ५६ ॥ तेहि सरि न और
 तिय तीनिलोक ॥ मैदेखि फिन्यो सब ओक ओक ॥ अब है कुमारि
 बयमननवीन ॥ कलु वर्णत ताकी छवि प्रवीन ॥ ५७ ॥ तारक ॥ वह
 सांचेहु रूपवती लक्ष्मी है ॥ गुणसिंधु धराधिपते न नमी है ॥ सब लोगन
 चारु कथा चरचाकी ॥ जिमि मेघ छपी छवि चन्द्रकलाकी ॥ ५८ ॥ अ० ॥
 तिन केशनिकी समता कत पावै ॥ केतिकौ किन चामर चित्त चलावै ॥
 शिर राखत दंछ सनेह भरे हैं ॥ पशु जीवनि पीठिन दै निदरेहैं ॥ ५९ ॥
 दोहा ॥ नयन मृगनको बागुरा, मन मीननको जाल ॥ काम अहेरी
 केलसै, चाबुक नील बिसाल ॥ ६० ॥ हारे हरिनीके नयन, लगे पलक
 मुरझाइ ॥ समाधान तिनको करत, मनौ खुरन खुज्वाइ ॥ ६१ ॥ पड़ता।
 ताके दोनों कुल गनिये ॥ औ दोनो लोचन मनिये ॥ जोते नारी गुण
 गनियौ ॥ सो हैं लागे श्रुति सुनियौ ॥ ६२ ॥ सोरठा ॥ नलिन
 मलिन है जात, हरिन होत छबिहीन तब ॥ खंजन गंजन गात,
 अञ्जन रञ्जन मंजुछवि ॥ ६३ ॥ बिंब ॥ फल अधर बिंबजासो ॥

कहि अधर नामतासों ॥ लहत द्युति कौन मूँगा ॥ वर्णि जग होत मूँगा
॥ ६४ ॥ रोला ॥ दमयंतीके बदन काज शशिसों हरि लीन्हो ॥ सुधा-
सार महुँ चाहि विविधविधि परम प्रबीन्हो ॥ बडो भयो विल बीच झलकन-
भ साँवलताई ॥ हरिन कहत कोउ ताहि शशा कोउ भूमि सोहाई ॥ ६५ ॥
मुख ॥ तामे कहा तिरछी दृग कोर अँभोह मिरोरनिकी चतुराई ॥
गूँदि चुनीन कनी रमनीनसिमै न कहा अलकै छहराई ॥ ओढनिको सुक
हा रसुमै जुकडयुत एक सुधाकी बडाई ॥ वा मुखकी सर चाहत चंद्रमा
क्यों कलंक पलै बहुधाई ॥ ६६ ॥ कमल ॥ धुकुटी कुटिल धनुष
मानौ रति मनमथहित बनौ ॥ सकति सहित जगलसो सरधि तिलकसो
शुभकसो ॥ ६७ ॥ नीलस्वरूपक ॥ रावरेके समहै बाह बालौ ॥
जीताते है द्युतिवंत जहाँलौ ॥ जो गिरि दुर्गनि माहँ बसैजू ॥ जाभुज
चंदन डार त्रसैजू ॥ ६८ ॥ सवैया ॥ कंचुकी सूही कसे मोहरा अति
फैलि चली तिगुनी परभासी ॥ माणिकके भुजबंद चुरी मणि कंचन
कंकन वोष प्रकाशी ॥ रावरे कंठकी माल मनौ निचुरयो जुनु रंगभिली
मृदुतासी ॥ बाल अबाल मयंकमुखी की लसै भुजबाल प्रबाल लता-
सी ॥ ६९ ॥ दोधक ॥ कमल वसै जल कोटिन माही ॥ लेतशिरी
करसों चितचाही ॥ मित्र प्रताप सहाइनि आनै ॥ पय तिहिसों
सब होत डिरानै ॥ ७० ॥ दोहा ॥ रोम रेखदै बीचमें, बाँटिलयो
निज अंग ॥ तऊ दबावत तरुणई, लरिकॉईको रंग ॥ ७१ ॥ सुपथ ॥
जासु देह द्युति सागर माही ॥ खेलिकेलि सजिके बहु धाही ॥ काम जोव
नु दुऔ नृप आय ॥ कुंभ स्वर्ण कुच गोल बनाय ॥ ७२ ॥ दोहा ॥
झरतप्रभा चहुँआर झर, झमझमात छविजाल ॥ रचत चक्र धरि कनक
घट, मानौ काम कुलाल ॥ ७३ ॥ लालकंचुकी में लसत, कुच कंदुक
नारंग ॥ फैली प्रभा तरंग जुनु, अंग अनूप सुरंग ॥ ७४ ॥ सुमुख ॥
उदर मनोहर सुक्षमकै ॥ झलझलात सुखमा झलकै ॥ विधिकरि मूति
सुमायनिको ॥ त्रिबलीप्रवली उपजीतनको ॥ ७५ ॥ कटि ॥ शीनीसिता
ननि काननि में रसनावतसी रसना झननातै ॥ नाचत सी लहकै चलते
मृदु सीखति सी विपरीतिकी वातै ॥ देखतही कटि लोचन जात गई

घाटिकै कटि आडत यातै ॥ छाइरही छवि घाँघरो छानि पिछानि लही
उलही छतियातै ॥ ७६ ॥ सोरठा ॥ बिंब नितंब सडोर, छहरत छवि
पट ऊपरहु॥रचे चक्र रथ जोर, जनु जगजीतन कामके॥७७॥ सुसमा
रंभा तरुकी जंघा निदैरै ॥ रंभातरु नीकेही विदैरै ॥ लज्जा करि हस्ती
के ललना ॥ गुँडागहि धारहि कुंडलना ॥ ७८ ॥ सोरठा ॥ गुंजन
मणि मंजीर, चरण लसत सेंदूररंग॥बोलत हंस अधीर, शरदभोर अंभोज
जनु ॥ ७९ ॥ सरिता सरनि अन्हाइ, एक पांइ रविको विनय ॥ लही
सुगाति तब आइ, दमयंती पगहै कमल ॥ ८० ॥ सवैया ॥ छूटत
वार न भारसहै लचके कटि औ भुकुटी चढि आमै ॥ छूटी अ-
भूषणकी किरणें जनु राजत दामिनिके पिंजरामै ॥ लोचन
कोरनसों तिरछे लखि टोननकी करतूति बतायै ॥ सोकुशची
रति रंभ हजारन खालन लच्छि लखी नहि भायै ॥ ८१ ॥ अमृतग-
ति ॥ सरवर गाहत नितही ॥ चतुर रहो बहु तितही ॥ तब देखी दृग
भरिकै ॥ सफल सजीवन करिकै ॥ ८२ ॥ इन्द्रवज्र ॥ देखी जबै वह
राजरानी ॥ भूली सबै शुद्धि चलै न बानी ॥ येहो विधाता यह जो
बनाई ॥ है है कहाँ या पति सुंदराई ॥ ८३ ॥ अन्य० ॥ देख्यो
तुम्हें अद्भुत रूप शाली ॥ आई हमें शुद्धि वाहौ भुआली ॥ तारूपके
लायकु एकु तोही ॥ छोड़ेउ सबै सशय आजु मोही॥८४॥ दोहा ॥
दमयंतीको रोष रस, हँसी मान तुम योग ॥ नवल वधूतन पैदिपति
लालमाल मणि भोग ॥८५॥ गंगाधर ॥ भूषरूप नव सुन्दरतेरो॥ ता
विहीन नहिं रोचतुहेरो ॥ यामिनिहीमिलि चंद्र विराजै ॥ बिज्जु संग
घनकी छवि छाजै ॥ ८६ ॥ अ० ॥ चित्तचारि सुरराज सराहै ॥ और
देवगण वात कहाहै ॥ तो संग योग जु सहज नहानो ॥ भेषवोट शशिरेख
प्रमानो ॥ ८७ ॥ प्रमाणिका ॥ समीप जाइ तासुके ॥ कहौ सो यों
प्रकाशिके ॥ तुम्हें धरै सुचित्तमें ॥ टरै न बात नित्तमें॥ ८८ ॥ अ० ॥
जो इंद्रमेढिहूचहै ॥ नतौ मिटै सही रहै ॥ यहै सुकाज में गन्यो ॥ जो
होइ आपहू मन्यो ॥ ८९ ॥ दोहा॥ तुमसों बृझतुहौं वृथा, निजपौरुष
परिमान ॥ काजहि सों कहि देतहैं, जेहैं जगत सुजान ॥ ९० ॥ अमृत

वचन द्विजराजके, पीवत भूप अवाइ॥ लई मनौ उदगार तिहि, मृदु वि-
हँसनि मिसि आइ ॥ ९१ ॥ बना ॥ करकमलनपोंछो पच्छ अँगौछो
बार बार मनुहारि करी॥ पीयूष निसानी यों मृदुवानी बोल्यो अंतर धीर
धरी ॥ ९२ ॥ नल ॥ कुंडलिया॥ तेरी आकृति की नहीं, उपमा या
जगहंस ॥ वर्णत नहिं बाचा बनत, तेरो शील प्रशंस ॥ तेरो शील
प्रशंस अवतरचो आइ आनिहारि ॥ किधौं हंसके नाम रहे रवितेज
पुंजभरि ॥ जहँ जहँ शुभ आकार तहाँ शुभगुणकी ढेरी ॥ सामुद्रिकको
उदाहरण पायो तनु तेरी ॥ ९३ ॥ सुलक्षण॥ तनुहै न इक सुवरण
मई ॥ तुअ वचनद्युति तैसी भई ॥ नहिं पच्छपात शरीरसो ॥ तू करति
है परपीरसो ॥ ९४ ॥ मदलेखा ॥ में संतापित देही ॥ तैं पायो नव-
नेही ॥ जैसे मारुत लागे ॥ अंभो बिंदुनि पागे ॥ ९५ ॥ अ० ॥ द्रव्यै
और बखानै ॥ ताहीको निधि जानै ॥ साधूको सतसंगा ॥ साधूको नि-
धिरंगा ॥ ९६ ॥ सवैया॥ बार हजार सुनी हम हूँ वह मोहनी मूरति
जीवन ऐसी ॥ पै अब तेरे कहे निजकै पुनि देखतिहों निज नयनन
जैसी ॥ मित्रनिकी निज हीयकी आँखिन देखति दूर भली यों अनैसी ॥
तीरहू सूक्ष्मको नलखै इन आँखिनते मुख माहँ लसैसी ॥ ९७ ॥
दोहा ॥ चर्चा ताके रूपकी, निपटि परी मम कानु ॥ अग्रि ऋचा
जनु प्रज्वलित, जासो काम कृशानु ॥ ९८ ॥ यम युवती दिशिते चल्यो
अहि फुकार विषघोरि॥ लगै पवन विरहागि जगि, तन ईंधन गन जोरि॥
९९ ॥ कमल ॥ दरश मिलत रबिसों ॥ तपति गहत छबिसों ॥ पर-
सि परसि हमको ॥ शशि बहवत तमको ॥ १०० ॥ तोटक ॥ रति
नायक केसर फूल बजे ॥ विषकी लतिका नित नव उपजे ॥ उर लागत
मोहत है मनको ॥ अति तापित आनि करै तनको ॥ १०१ ॥ चामर ॥
हों वियोग सिंधुमें अथाह बूडिकै रह्यो ॥ भाग्यसों लह्यो तुही जहाजबाँ-
हसों गह्यो ॥ तोहिं प्रेरणा करों जो पिष्टको सुपीसनो ॥ आपुही सुजानि जाहि
ज्ञान जो थुरौ घनो ॥ १०२ ॥ दोहा ॥ तो मगमें सब सुभग सुख, तुरित मि
लन पुनि सोहि ॥ सिद्धि करौ अभिमत लहौ, समय सुमिरियो
मोहि ॥ १०३ ॥ विदा कियो नृप हंस तब, नृपकीरति ध्वज वंश ॥ वचि

बगीचाके महल, दाखिल भयो प्रशंस ॥ १०४ ॥ सौरठा ॥ सुफल
 करों दिन आज, लखि दमयंतीको वदन ॥ उड़्यो हंस शिरताज, महि
 मंडल कुंडिननगर ॥ १०५ ॥ सवैया ॥ हाटक हंस चलयो उड़िकै
 नभमें दुगुनी तनु ज्योति भई ॥ लीकसों ऐंचि गयो छिनमें छहराइरही
 छवि सोनमई ॥ नयननसों निरख्यो न बनाइ कै कै उपमा मन माहँ
 लई ॥ साँवल चीर मनौ पसरयो तेहि पै कल कंचन वेलि नई ॥ १०६ ॥
 मोदक ॥ दीठि परयो प्रथमै मग सोहन ॥ नीर भरयो कलसा मन
 मोहन ॥ ता कहँ कारज सिद्धि बतावत ॥ भागनसों समुंदे लखि पावत
 ॥ १०७ ॥ दोहा ॥ भयो पक्ष झंकार रव, झमकि चलयो खगराज ॥
 लसि लसि नीचे खग लखत, ऊपर जान्यो बाज ॥ १०८ ॥ मगमे लखि
 वन बाग नग, खग विलंब नहिं कीन ॥ जाको मन जासों लग्यो, तासों
 रुकत प्रवीन ॥ १०९ ॥ पहुँचो देश विदर्भमें, हेमहंस समुहाइ ॥
 रजधानी नृप भीमकी, नगिचानी तब आइ ॥ ११० ॥ मोहि रह्यो द्युति
 देखिकै, कुंडिनपुर पुर राज ॥ वचन रचनसों चतुर वर, वर्णत शोभ
 समाज ॥ १११ ॥ उल्लल ॥ गृह फटिक रचे शशिखण्ड सम फैलि
 रही छवि शित सरस ॥ निज कंत संग क्षिति युवति जनु करत मुदित
 चितहाँसरस ॥ ११२ ॥ तारक ॥ मणि लालनसों रंग भौन बनायो
 विच वीचहि नीलम गेह सोहायो ॥ रविके चित नेह मनो अधिकायो ॥
 निज लोकहिमें सुत लोक वसायो ॥ ११३ ॥ लँगडी ॥
 साज आलै अबजमें, तेहि प्रकाश चहुँ ओर ॥ सब तिथि निशिमें,
 अतिथि सी राकी कन्यो प्रकाश ॥ ११४ ॥ वसंततिलक ॥ न्हाती
 जहाँ सुनयना नित बावलीमें ॥ छूटे उरोज तल कुंकुमनीरहीमें ॥
 श्रीखंड चित्त दृग अंजन संग साजै ॥ मानौ त्रिवेनी घरही वि-
 राजै ॥ ११५ ॥ तोमर ॥ चहुँ ओर कंचन कोत ॥ रचि योग पट्ट
 अंगोत ॥ छिन एक नीर बहोत ॥ लखि भौन जागत जोत ॥ ११६ ॥
 अ० ॥ सब ओर खाँइ तेहि माँह ॥ प्रतिबिंबकी छवि छाँह ॥ जनु
 आइ लोक अकासु ॥ सुखु जानि मानि सुपासु ॥ ११७ ॥ दोहा ॥
 तुंग पताका पटल गत, चाबुक चलत सुगाम ॥ रवि रथके बाजी जहाँ,

अरुण लहत विश्राम ॥ ११८ ॥ लक्ष्मीधर ॥ तीनिहू लोकके वास
 वासी जिते ॥ दीठि आमै भले काज साजै तिते ॥ देहधारी मनौ विश्व-
 रूपी यहै ॥ वेदगाई बड़ाई बडी जो लहै ॥ ११९ ॥ चौपाई ॥ मुड-
 वारी रवि मणिन सँवारी ॥ अनल झार छूटी छबिवारी ॥ दिनमें अति
 अद्भुत गति रहै ॥ बाणासुर पुर शोभागहै ॥ १२० ॥ अ० ॥ शंख
 शुक्ति मुक्तामणिभरे ॥ अम्बुज रंग चीर बहु धरे ॥ सागरसों जहँ
 लसत बजार ॥ मुनि सोख्यो सब सलिल अपार ॥ १२१ ॥ सवैया ॥
 शशिकी मणि उच्च अगार पगारनि चन्द्रहि लू श्रवती जल धारै ॥ पूर
 प्रवाहनसों सुरसिंधु बड़ी उमड़ी तरुतोरि किनारै ॥ सागर इंदु उदोत
 बढै यह मानि मनौ पतिके अनुसारै ॥ धन्यतिहूँपुर वे रमणी तजि जे
 क्रतु आन पतिव्रत पारै ॥ १२२ ॥ चुलिआल ॥ अस्तसमय
 सूरय तजत निजरुचि पुंज सुरंग सुहावन ॥ केसरिके बाजारमे रहत
 इक अंग रुचिर तन ॥ १२३ ॥ सरसी ॥ गुंजत भौर मिल्यो केसरिमें
 तोलत सहज सुभाई ॥ जहँ बजार जनसोर संग गाहक है शुद्धि भुलाई ॥
 दिनमणि मणि गसि गली सँवारी तपत दिवस सरसाई ॥ ता मारग
 सब शिशिर शीतमें चलत भले सुख पाई ॥ १२४ ॥ अहीर ॥
 मुख लोचन करि पाइ ॥ कमलन रचे बनाइ ॥ चम्पकके दल अंग ॥
 दमयंती तनरंग ॥ १२५ ॥ अ० ॥ स्मर अरचाकी हित माल ॥
 ताको कहत विसाल ॥ तेरे कंठ सुयोग ॥ देत सकल रस भोग ॥ १२६ ॥
 दोहा ॥ शिखर नील मणि कीर्तिमिलि, श्यामध्वजा पट ज्योति ॥ दिन-
 करकी गोदी चपल, जहँ यमुनासी होति ॥ १२७ ॥ मनहरण ॥ आपने
 महल रंग अटासों विलोकि वाम तडित छटासी करयो चहै अभिसारको
 नीचे नीचे चलत विपुल जलधर देखि तापे चढ़ि चलिगहे पीतमके
 प्यारको ॥ गतिकी तरलतासों नयन न लगत पल झल मल होत रूप
 विमल विहारको ॥ सोहत शचीसी बैठी जलद विमान आसमान ते उतरि
 आई नगर उदारको ॥ १२८ ॥ अ० ॥ केलिके महल दमयंतीके
 शिखर वर मर्कत किरण छूटी ऊपरको छरीसी ॥ लागी ब्रह्मांड खण्ड
 खण्ड कैन डारयो याते नीचेकै वदन फिरी मानौ लाज भरीसी ॥ ऊ-

रध मुखी है चरतहै सुर सुर भाँति सुनिके वदन परी झावै द्युति हरी-
सी ॥ पुण्यको वगर धन्य कुंडिननगर जग जगर मगर कीर्ति जाकी
सोन जरीसी ॥ १२९ ॥ दोहा ॥ विधु रतननि कर हारचे, रजनि
नीर भरि होत ॥ विफल सीचनो लखि रच्यो, भैमी बाग उदोत ॥ १३० ॥
मालिनी ॥ उपवन विच देखी राजपुत्री विराजै ॥ सरिस
वय सहेली वै चहूँ ओर छाँजै ॥ दिपत नखत माला मध्य ज्यों
चन्द्ररेषा ॥ ललित सुर मृगाक्षी लक्षिज्यों चारु वेषा ॥ १३१ ॥ दोहा ॥ इंद्रा
नी निज सखिन सँग, नंदनवनमें आइ ॥ क्रीडति हैहैं ऐसही, ऐस यही
दरशाइ ॥ १३२ ॥ बैठक हित थल लखनको, कनक पंख फहराइ ॥
प्रभाचक्र भूपर लसत, ऊपरही मड़राइ ॥ १३३ ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड पंडित भूमंडला
खंडल श्री खाँसाहब अली अकबर प्रोत्साहित गुमान
मिश्र विरचिते काव्यकलानिधौ हंस गमनं नाम
तृतीयस्सर्गः ॥ ३ ॥

दोहा—चौथे सर्ग मराल औ, दमयंती संवाद ॥ आगमढिग निषधेशके,
मेढ्यो विरह विषाद ॥ १ ॥ सोरठा ॥ बाजू दुऔ समेटि, नभते उतरचो
जूठसो ॥ दमयंती ढिग भेंटि, बैढ्यो पाँख हलाइ क्षिति ॥ २ ॥ भयो
अचानक सोर, लगत जोरसों पंखक्षिति, फिरि चितई ओहि ओर, कहा
कहा यह कहतही ॥ ३ ॥ दोहा ॥ दमयंतीकी सहचरी, छोडि विषय रस
ओर ॥ देखिरही तारूपको, मुनि ज्यों हरि सब ठौर ॥ ४ ॥ चंचला ॥
हंस देखिकै अनूप आपके शरीरतीर ॥ लेनकाज तासुके यहौ भई अकं-
पधीर ॥ ज्यों मुनीश चित्त चारु लै समाधि साधि आनि ॥ हंसके मिला-
पको हलै चलै न ध्यान मानि ॥ ५ ॥ पृथ्वीछंद ॥ विलोकि दमयं-
तीको गहन घात आकारसों ॥ उढ्यो न नभको तबै कनकहंस संचारसों
हरेहरषि हेत सों कर चलाइलायो चहै ॥ तबै फरकि फूलसो तनिक जाइ
आगे रहै ॥ ६ ॥ त्रिभंगी ॥ ज्यों ज्यों सँगावै गहन न पावै झपटि

चलावै हाथ जही॥ आली दै ताले कुहँकि रसालै सरस उतालै हँस तही॥
 ॥ दम०॥ चहती उचटायो सोरु मचायो सब मिलि यासों बीचु हरै ॥
 पीछे जनि आयो तेज न गायो कहा खिझावो जाहु घरै॥ ७ ॥ दोहा ॥
 कपट कोपसों सखिनको, विदाकरी सुकुमारि ॥ छायासी पाछे लगी
 हाटक हंस निहारि ॥ ८ ॥ स्वागत ॥ एक एक पगपै यह जानै ॥
 हंस हाथगत होत सुजानै ॥ दूरि दूरि छलसों यह धायो ॥
 अंधकार कुंजनलै आयो ॥ ९ ॥ संग आइ पहुँची न सहेली ॥
 देखि राजतनयाहि अकेली ॥ अंगमाहँ जलबिंदु विराजै ॥ फूल
 लोल लतिका जनु छाजै ॥ १० ॥ अ०॥ वैन चारु नर लौ तब बोल्यो ॥
 ज्यों पियूषरसको मग खोल्यो ॥ राजपुत्रि जनि दौरो ऐसो ॥ पाँइ
 कमलपसुरी नवजैसो ॥ ११ ॥ अ० ॥ येसरोज मुखि यौवन देखे ॥
 क्यों न डरै हिये कौन विशेषे ॥ पात कंप करसों तरु जेते ॥ तोहि बार
 राखत जनु तेते ॥ १२ ॥ दूतविलंबित ॥ चलति तू गजगामिनि
 भूमिमै ॥ धरणि औ नभ आवत घूमिमै ॥ गहन चहति मोहि कहा करमें
 फसै ॥ अहहबालपनो अजहूँ लसै ॥ १३ ॥ कमल आसन वाहन हंस
 है ॥ स्वर्गलोक निवास प्रशंस है ॥ चरत हाटक कंज मृणालहै ॥ धरतदे
 ह सुवरण विशाल है ॥ १४ ॥ प्लवंग ॥ विधिको आयसुपाइ मराल
 विहारको ॥ नभतजि आये भूमि सरोवर चारको ॥ नल नृपलीला ताल
 न्हाइगे ओकमै ॥ कौतुकसो हो एक भ्रमतु भूलोकमै ॥ १५ ॥ दोहा॥
 बाग तडागरु जगत, सों, देत देव फल भोग ॥ ज्यों तरुवर दोहद
 दिये, विना समय फल भोग ॥ १६ ॥ प्रह्लाटिका ॥ हम देवलोकवासी
 मराल ॥ नहिं पकरत हमको फांसजाल ॥ नल एक मोहिं पकन्यो
 अनूप ॥ सुरलोक भोगके भाग रूप ॥ १७ ॥ जब करत केलि लीला
 विहार॥ जिमि चलत चौर चहुंधा अपारा॥तिमि करत जाइ हम पक्षवात॥
 सुरसिंधु सलिलसों शीतगात॥ १८ ॥ दोहा॥ साधु विभक्ति विचारमें, प्रथमा
 व्यक्ति सुजासु ॥ सुऔ यसै मिलि शुभ समै, साधन क्षमा प्रकासु॥ १९ ॥
 उपेन्द्रबज्र॥ दरिद्रदिवान बोरिडारै॥ अमोघ वरषै सुनीर धारै ॥ तासोंनको
 याचक हाथ ओढै॥ कहूँ पपीहा घन संग छोढै ॥ २० ॥ अन्यचा॥ सुनी

जु मोसों नलरूप वानी॥ भई सुरंभा रसरंग सानी ॥ सुन्यो जो ताको
 नल नाम जैहीं ॥ मिली सु येती नलकू बरैहीं ॥ २१ ॥ मनहंस ॥
 हम भूमिते सुरलोककी पगु देतहैं ॥ नलकेलिके कलगानतौ सुनि
 लेत हैं ॥ जब इंद्र किन्नर गीत गावत चोजके ॥ हमको न भावत नेकहू
 सुर ओजके ॥ २२ ॥ दोहा ॥ हाहाकरि निदरचो तबै, हम हरि गा-
 यन हेरि ॥ तबते ताको नाम जग, हाहा भाषत टेरि ॥ २३ ॥
 घननंद ॥ नलके गुण अभिराम सुनत सकाम होत शची कंटकिततन॥
 लखत न बासव तास पुण्य प्रकाश प्रेमसलिल पूरित नयन ॥ २४ ॥
 चितदै सुनत महेश वर्णत शेष नलके गुणगण मन हरन ॥ करि कंडू
 मिसि आन मूदत कान तब गिरिजापति व्रत धरन ॥ २५ ॥ विधि
 सजि धरम विधान सब परिमान रोकतबीमिहि मौन मिस ॥ मिलि
 कंठ लगि तासु जग परकाश जानतु ता जड़ वेदति ॥ २६ ॥ अ० ॥
 लक्ष्मी मिलि सुभाइ हिय अकुलाइ नृपति व्रतकी विरति ॥ समय करत
 निवास निज परकाश गति अदृभुत अति तासु पति ॥ २७ ॥ सवैया ॥
 सो विधिको कर कूर कहावत पूरण चंद्र रच्यो द्युति हीनो ॥ जा नलको
 मुख देखि तज्यो शिवशीशपै आधिकसो परवीनो ॥ निज जीतन हार
 सुन्यो हमसो तबते अति इंदुरहे भय भीनो ॥ चलि सूरयसागर मोहिं
 छपै कतहूं घन पुंज परै नहिं चीनो ॥ २८ ॥ आपने वाहनको हरि
 आयसु देत यहै रसरंग मचावत ॥ आपने मीतनसों नलको मुखकीरति
 के गुणक्यों नर चावत ॥ ज्यों वरणो हम चोजु कछू मुदि नाभिसरोजगयो
 सकुचावत बूडि विरंचि गये उतआपु गहे उर माह रमा लल चावत २९ ॥
 अ० ॥ नलको मुख कोलमें केसरिसे शुभवांति सदा तनुके छवि
 छाजै ॥ रचि मानौ करी गुणकी गणना करतार सुकंचनरेष
 विराजै ॥ हीरनकी कलपैं तलपैं यहि भाँति न काँतिकी ज्योति समाजै ॥
 चौदह और अठारह भेदसों विघननकी पदवी सुखसाजै ॥ ३० ॥ सो०
 निरखि शिरीद्वै तास, काम पुरंदर तनकसे ॥ द्वै विधि क्षमा निवास,
 जिय न लगत अहि शेष जिन ॥ ३१ ॥ चंचरी ॥ पाँखसों इक हीन है
 बिनतातनूज प्रमान है । रूप देत नयनसों परिय समीर समान है ॥

देह दीप्ति दीपै महामणि मानिये गति रूपके ॥ कौन दिशि जो न जातहैजू
 अश्व नैषध देश के ॥ ३२ ॥ शत्रुके रमणीनकी दृग अश्रुकी सरिता
 चली ॥ युद्ध भूमिनमें भई उत्पत्ति अननकी भली ॥ बाण पन्नग
 जासुके फहरातहैं जहैं दोसुसो ॥ वैरि प्राणन पौनसों छकि जात हैं
 निरजोसुसो ॥ ३३ ॥ शार्दूलविक्रीत ॥ तीनौलोकनिवासी जे
 जन घने ते जोगमै ज्ञातसो ॥ आयुर्दाय घटै नहीं सुनिनको जो बु-
 द्धिके मानसो ॥ बाडै आनि परद्वसों जुगननी क्यों हूँ वनै आइ कै ॥
 तौ ताके गनकी चलौ सुगनना संसारमें गाइकै ॥ ३४ ॥
 तारक ॥ तहैं पक्षिनको नहिं रोवत द्वारे ॥ हम मंदिर
 भीतर जात सुवारे ॥ तिनकी रमणी गणको सिखरामै ॥ गतिके
 कलु मंजुल भेद बतायै ॥ ३५ ॥ तिन संग शृंगार कथा हम भाषैं ॥
 रतिरंभ शची सुखमा अभिलाषैं ॥ नवकाम प्रतीति धरोहरि धारी ॥
 यह जानि खरीदतहैं नवनारी ॥ ३६ ॥ दोधक ॥ देखतुहैं नलको
 मुख जौलों ॥ जीवनको फल जानतु तौलों ॥ मोहि रही युवती
 रसभीनी ॥ नयनन लाज विदाकरिदीनी ॥ ३७ ॥ सवैया ॥ कौलसे
 नयननसों विहँसै झमकै तनु भूषणकी परभासी ॥ विद्रुम रंग तरंगलसे
 अधरान मिली मुसक्यान सुधासी ॥ वैननिमें निज मोहनीके कछु
 आखरसे पढि आवतहासी ॥ प्राणनवारि निहारि रहे सब मोहि रँहे सब
 नागरिवासी ॥ ३८ ॥ तेरे लसै शिररंगित ओठनी ऐसिय वाकी लखी हम
 पागै ॥ जैसी बुटी तुव कंचुकी पै इमि पैंधतु है उरमें मृदुबागै ॥ ऐसि
 य रीझ सुभाव सबै रुचि ऐसोई बाहूको सोहतु बागै ॥ है समतां अतिही
 उनते तुम क्यों न तिन्हें सुनते अनुरागै ॥ ३९ ॥ तेहि राजके योग
 रची हि तुही विधि ऐसी न और तिलोक सँवारी ॥ कै रबिनी बिन कौ-
 न लसै शशिइंद्रलहै यह मैं निरधारी ॥ जो कबहूँ नलसों न मिलौ फल-
 हीनतौ रूपकी राशि तिहारी ॥ भौरनको मुख संगन तौ लगि नूतन
 तान वसंत शृंगारी ॥ ४० ॥ अ० ॥ व्याह किधौ नलही सों रच्यो
 चिधिकी चित पैठिके कौने निहारो ॥ व्याहके योग्य भई अबहौ अरु
 भूपर रूप अनूप तिहारो ॥ श्रीहरिको गिरिजा हरको रतिकाम कोयों

जिन योग सँवारो ॥ योगसों योग मिलावनको मति संचित हो तु वि-
 रंचि विचारो ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ पंकज मुखि नलराज विन, और न
 योग लखाइ ॥ को गूंदत गुणदर्भसो, माल मालती पाइ ॥ ४२ ॥ जो
 जडता वश विधि तुम्हें, नहीं मिलवै नलराज ॥ जग कलंक सागर तरन
 पावै कहा जहाज ॥ ४३ ॥ सवैया ॥ नाहकही वकवाद बढ्यो सुकहा र-
 समों कह या चरचामें ॥ राजकुमारि थकायो तुम्हें मैं सरोजसे पांइ कठोर
 धरामें ॥ सो अपराध अगाध गन्यो अब ताकहँ कैसेहु मेट न यामें ॥ जो कलु
 आपुनके मनमें अभिलाष कहौ तुरतै करि आमैं ॥ ४४ ॥ सोरठा ॥
 हेम हंस नरनाह, गह्यो मवन ये वचन कहि ॥ दमयंती मनमाह, अभि-
 प्राय जान्यो चहत ॥ ४५ ॥ सवैया ॥ लोचन ऐंचि लजाइ गई ति-
 रछी मुरिकै मुसक्याति छबीली ॥ राजकुमारि विचारि कलू मनबोलि
 उठी मृदुबात रसीली ॥ आपुनको धृगमानति हो खगंचापलता वशहै
 गरबीली ॥ तोहि उड़ाइ दियो तटते जिमि बात लगे लहरी झुकिझीली ॥
 ४६ ॥ चर्चरी ॥ स्वच्छराजत रावरी तनु आरसी परभाइकै ॥ है लग्यो
 अपराध मोतन माँह यो सरसाइकै ॥ रावरे समुहै भई जब हों नहीं चि-
 तलाइकै ॥ सोपरचो प्रतिबिंब ता महुँ पाप है नसुभाइकै ॥ ४७ ॥
 मल्लिका ॥ पाप में करचो विचारि ॥ जानहीनहौ कुमारि ॥ सो क्षमा
 करौ मराल ॥ देव रूपसी विसाल ॥ ४८ ॥ सवैया ॥ तेरे स्वरूप
 सुधारस पानते प्रीति न ओर बड़ी जिय मेरे ॥ ज्योंजगके सिय रावत
 लोचन चंद्र पियूष मयूषन हेरे ॥ जो जियते निकसै न मनोरथ सो न क
 ह्यो परबैन घनेरे ॥ कौन कुमारि कहै द्विजराज सों व्याहकी बात नि-
 लाजके घेरे ॥ ४९ ॥ मालाधर ॥ वचन सुनिकै तहीं कनक हंस मो-
 ह्योमहा ॥ सरस नहिं दाखयो पिक नवीन वाणी कहा ॥ बदनलचिला-
 जसों नृप कुमारि जानी जहीं ॥ मुदित मन है तहीं चतुर चारु वाणी
 कही ॥ ५० ॥ हंस ॥ सोरठा ॥ अति दुर्लभ जगजानि, धरचो मनो-
 रथ तैं जो मन ॥ परत नमोश्रुतिआनि, श्रुति अक्षर अंतिमवरण ॥ ५१ ॥
 जहँ चित पहुँचत आनि, होत लाभ ताको सुचित ॥ जहँ न चित पदि-
 चान, वहौ ब्रह्मयोगी लहत ॥ ५२ ॥ सवैया ॥ सुंदर सोन स-

रोजमुखी तिरजंच सों लाजै सजै विनकाजै ॥ ब्रह्मपुरी महँ
 वास करै शुचि सत्य विलासिनिके रस राजै ॥ प्रेम महा पर कै
 उपकारमें नेमवहै छलकै बल भाजै ॥ जो चरचा चित माहँ धरै किन
 प्राणटै मुखसों नहिं साजै ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ मृगलोचनि तजि
 सोच चित, औ सकोचु कछु नाहिँ ॥ कहहु मनोरथ करि कृपा, त्रास
 त्यागि मन माहिँ ॥ ५४ ॥ सोरठा ॥ यह कहि हेम मराल, मौन-
 गह्यो गुण भौन तब ॥ बोली वैन विसाल, हरष लाज लीला ललि-
 त ॥ ५५ ॥ दमयंती ॥ दोहा ॥ सखि जे मनसों मिलि रहीं,
 लखि न रहै मोजीय ॥ सो तोसों कैसे कहों, और न चाहों हीय ॥ ५६ ॥
 सवैया ॥ कुल शील सुशैलते छूटि चली उत लाज नदी उमडी अति
 भारी ॥ जहँ मज्जतु नाग अनंग बली लहरी जहँ सोच सँकोच सँवारी ॥
 बूडि गये नखते शिखतामें रही चपिकै चुपि भूपकुमारी ॥ हाट-
 कहंस हरै हँसिके निज चोंचसों चोज कथा विस्तारी ॥ ५७ ॥ हंस ॥
 सवैया ॥ हौ चतुरे चितकी कविता असलेष विशेषनकी रचनामै ॥
 जानि गयो हौं मनोरथ रावरो उत्तरकी गति व्यंग्य दशामै ॥ राजसों
 व्याहकी बात भली नलहैं जियमें यह भेद बतायै ॥ तो हियकी थि-
 रता निहचै विन क्यों तिनसों हम जाइ जतायै ॥ ५८ ॥ यौवनकी यह
 वानि वनी छिनही छिन ज्यों बदलै बहुधाई ॥ चाहत हैं तुमको सुर
 पन्नग राजकुमार चितै चतुराई ॥ औरसों व्याह करै तुअतातु
 जो कै चलिक्कै तुमही ललचाई ॥ ठीक करे विन क्यों कहि
 ये सरदारसों बूझि गवाँरकी नाई ॥ ५९ ॥ दोहा ॥ और न या संसा
 रमें, लाज हँसीके योग ॥ ठीक करत निज बदनसों, फेरि टरत जे
 लोग ॥ ६० ॥ जो जाकोकीबे कहत, काज न कीजै सोइ ॥ जीतबभरि
 ताके कहौ, कौनु सामुदे होइ ॥ ६१ ॥ तैं अधीन निज बापके, आप
 तरुण वै बील ॥ महाराज नलराजके, हमहैं मीत मराल ॥ ६२ ॥ सब-
 विधि हैं असमंजसै, हिय संशय नहिं जाइ ॥ और काज जो कछु सुमुखि
 मोहिँ देहि फरमाइ ॥ ६३ ॥ शिर कँपाइ कुँहकी कपी, कोमल
 राजकुमारि ॥ मनौ परे श्रुति कटु वचन, तिन्हें निकारत झारि ॥ ६४ ॥

दमयंती ॥ हरिम्रियाछंद ॥ वीर हेम हंसराज धीरबुद्धिके समाज
 मोहिं और राजयोग कल्पना जुतेरो ॥ याहि जानि वेद थाँभ रविसों
 निशि संग आनि संशय पहिचानि ताहि प्रणव पांठ पेरौ ॥ ज्यों सरोजिनी
 बिहाइ रविको शशिसों मिलाइ गिरिजा तजि गिरीश जाइ तौ यहै बनि-
 आवै ॥ भरे जिय है अंदेश तोसों चातुर सुंदेश ऐसी बलि विरस वैन
 कैसे कहि आवै ॥ ६५ ॥ सवैया ॥ साँच विचार करी तुमहूँ खग झूठ
 न तेरो कहो करिहौंगी ॥ जो न मिले नल मोहिं अबै तजिदेह तबै अनलै
 बहिहौंगी ॥ गातको पालकहै इकतात जो और सों व्याहै न तौ डरि हौंगी
 आनको पीतमहै वह राज हिये धरि जीतब क्यौं करिहौंगी ॥ ६६ ॥
 सोरठा ॥ यहै मनोरथ सार, दासी हौं नलराजकी ॥ चित चिंतामणि
 छार, वहै सकल निधि पदुम मुख ॥ ६७ ॥ सवैया ॥ भूपको रूप अ-
 नूप मनोहर श्रौन सुधारस पान करचो ॥ चित्रमैं बारहजारलख्यो अब तौ
 रहतै चहुँ ओर खरचो ॥ तब हौहूँ भई तनमै धनमै छनमै मनमै अर-
 राइ परचो ॥ अब ताको संयोग औ प्राण वियोग तिहारे दुहूँकर माहँ धरचो
 ॥ ६८ ॥ दीपक ॥ हैं दीनमो प्रान ॥ देमोहिं जीदान ॥ सो छोड़ि जं-
 जाल ॥ संदेशकी चाल ६९ जो काज आवश्य ॥ तामें न आलस्य ॥ हेहंसभू-
 पाल ॥ आधीन हौं बाल ॥ ७० ॥ ककुभ ॥ जानति हौं यहि भूमि लोक
 बसिं मोह बुद्धि सरसाईहै ॥ पर उपकार रीति तौ जानी जहँ ऐसी चतु-
 राईहै ॥ प्राणदान दीबिको पनमें कहा सुमहै बैक्यो है ॥ वचन अधीन
 एक तेरेहौं कौन दोष है पैक्यो है ॥ ७१ ॥ सोरठा ॥ देत आपने जीव-
 सब सज्जन आरतन हित ॥ कहाहोत गुण सीव, मोज्यो मोको देत तुम ॥
 ७२ ॥ सारंग ॥ जो जीवके दानको देत संसार ॥ तौ आपनो जीव
 देहौं तु उद्धार ॥ तू देतुहै मोहिको जीवते बाढ़ि ॥ हौं देउंका तोहिं दारिद्रसों
 डाढ़ि ॥ ७३ ॥ सवैया ॥ मोललै जीव तैं मेरो मराल जु और न लाभ
 तौ पुण्यमहा है ॥ पीतम प्राणको दानि तुहीं यश गान करौंगी सुजान सरा
 है ॥ एकहूँ कौड़ीके मोल सुने नहिं अज्ञ कृतज्ञनको चित चाहै ॥ प्राण
 दै मोल खरीदत साधु तिनहै सहते तबहूँ निरबाहै ॥ ७४ ॥ कटुक ॥ वहै
 भूपहै आठ लोकेशको अंश ॥ धरचो बुद्धिसों ध्यान में चित्तमें हंस ॥

करीयों कृपातैं मिल्यो मोहिं आचान ॥ भयो आनि मध्यस्थ मो ज्यों स-
माधान ॥ ७५ ॥ सोरठा ॥ करौ न और विचार, बासर नाहिं बिलंब
को ॥ कहा समय निरधार, जे आरत आसकत हित ॥ ७६ ॥ मनह-
रण ॥ निज रमणीनसों करतुहै बिलास जब तब ये वचन खग भूलहूं न
भाषने ॥ जलसों अघात ताहि अमृत सोहात नाहिं दूजे कोई कलह करन
लागै ताखने ॥ जब काहूं दोष रोष करै नलराज तब हूं ये रसराज बैन चित्त
रोकि राखने ॥ मोहित गरज ऐसे भूपसे अरज बड़ी बरजत याते हंसमौस-
मकुराखने ॥ ७७ ॥ प्रामिताक्षरा ॥ बहुविज्ञ आपु तिहिलोक गैन ॥ शुभकाल
पाइ करिये सुवैन ॥ कहुं है बिलम्बकरि सिद्धि जहां ॥ बरहै असिद्धिसन
जानि तहां ॥ ७८ ॥ दोहा ॥ कहे वचन ये लाज तजि, नहिं अचरज
जिय जानि ॥ काम साखि उन्मत्त करि, जो कहवावत आनि ॥ ७९ ॥
सोरठा ॥ लहत जबै उन्मत्त, गहत चैन तब ढर समर ॥ प्रथम पुहुप
अनुरुत्त ॥ विरह विथा युत दूसरो ॥ ८० ॥ सुनि ये बैन विसाल, दमयंती
के प्रेम दृढ ॥ फांसी नल गुण जाल, तब बोल्यो सुर हंस हंसि ॥ ८१ ॥
हंसमोदक ॥ जो यह सांचिय बात बखानति ॥ तौ वह संदेश प्रथा
उर आनति ॥ जो तुमको नलको तनु तापतु ॥ काम यहै सुसंयोग
बतावतु ॥ ८२ ॥ तो संग बांधिदई गति ओमति ॥ भोजन भूषणकी
नरही रति ॥ ध्यावत तोहिं कहे उपहासनि ॥ ओठ सुधारस आस हुला-
सनि ॥ ८३ ॥ दोधक ॥ सुंदरतासम मूरति मेरी ॥ जारि सुछार करी
हरटेरी ॥ क्यों नल मूरति यों सुख पावै ॥ तो सह पाइ अनंग सता-
वै ॥ ८४ ॥ दोधक ॥ तेरिये मूरति एक लिखावै ॥ सो कुचि तेरेनको
सिखरावै ॥ देखत आंखुनकी झरिलावै ॥ सो छवि देखतही बनिआ-
वै ॥ ८५ ॥ सवैया ॥ तेरे वियोग भयो कछु ऐसा उदासी नलै न परै
नहिं चीनो ॥ तेरोइ चित्र लिये निशि वासर बैठो रहै रंग भौन प्रवीनो ॥
चानक भूमि झुक्यो तकिया लगि घूमि गिरचोत्यो खवासिसि लीनो ॥ पाटि
लयो घनसारनित्यो यकवारही नाइ गुलाबनिदीनो ॥ ८६ ॥ दोहा ॥
लसत कमल दृग अधखुले, अचल अंग टकलाइ ॥ तेरी चिंतासों रह्यो
चिंताहरण भुलाइ ॥ ८७ ॥ सवैया ॥ राहै विचारनकी छलि दौरत

साजि मनोरथ तैं सरसाइकै ॥ श्वासनिकी वरषै बहु भूपाति ध्यानसों
तेरो स्वरूप मिलाइकै ॥ जागतही सब वीतत रैन रचै किन सुंदर
सेज बनाइकै ॥ तेरे वियोगते नयनन लागत नवल बहू जि-
मिनीद न आकि कै ॥ ८८ ॥ दोहा ॥ ज्यों ज्यों अति कृशता बढ़ति,
त्यों त्यों द्युति सरसात ॥ दग दगात त्योंहीं कनक, ज्योंहीं दाहत
जात ॥ ८९ ॥ मनहरण ॥ तेरे पाइवेकी सोय यतन करतु तामें पाप
न गनत कछू ऐसो आसक्त है ॥ व्याह चरचामें तेरो नाम कहि कहि
उठत ऐसो महाराज कहूँ ऐसो मसकतु है ॥ मयनके लगत पैनेवान सुल-
गत विरहागिनि जगत जरी लाज ससकतु है ॥ भौन भौन याहीके करत
अफसोस सब कौन कौन देखत करेजो कसकतु है ९० ॥ सवैया ॥
बोलत जानि कहै कछु उत्तर डोलत मोहिं लखै तित धावै ॥ आवत
जानिकै आगे चलै उठि गावत तोहि गनै मिलि गावै ॥ रूसती
हौ विनकाज कहा बलि या कहि वारहि वार मनावै ॥ वीरसों तोहिं न
पीर अरी सुनि तीरखरी हंसिकै वहरावै ॥ ९१ ॥ ॥ सोरठा ॥ तेरो विरह
अपार, जनु यम अनुजाकी लहरि ॥ पंक मूरछा सार, हायपरचो कुंजर
नृपति ॥ ९२ ॥ दोहा ॥ दुहुंकर छोड्यो पंचशर, भई दशा दश ताश ॥
सदा जाइ दशई दशा, वैरी सदन निवास ॥ ९३ ॥ प्रह्लादिका ॥
जब भयो काम तापित महीप ॥ तब मोहिं पठायो तो समीप ॥ किय
सफल काज गजगौनि तैंजु ॥ मुख उदित भयो नल संग मैजु ॥ ९४ ॥
धनि धन्य देवि गुरतन रवानि ॥ जेहि करचो भूप नल वश सुजानि ॥
यह बडो बडाई चन्द्रिकाहि ॥ अति तरल होत लखि सिंधु
जाहि ॥ ९५ ॥ सवैया ॥ नलसों विलसों मिलि चन्द्र ज्यों यामिनि
त्यों तुमसों मिलि सो सुखपै है ॥ बलिये रचना कुच कंचुकीपै सब वेलि-
नईकर कौल वनै है ॥ निज लोचन चारु चकोरनिसों जब वा मुख
चन्द्र सुधाहि अचै है ॥ तब और सबै सुधि भूलि हैगी परि नेसुक मे
रोकह्यो सुधिपै है ॥ ९६ ॥ अ० ॥ नलके तपको तुम कामलता नव
अंकुर सों नखराजतु हैं ॥ द्वैदलनीलनई भ्रुकुटी नव पल्लव अँठ समा-
जत हैं ॥ हाँसलसै कलिका मुख भूषण फूलनकी छबि छाजत हैं ॥

सोहि रहे कुच कंचनके फल पेखसीके फल लाजत हैं ॥ ९७ ॥ दो-
हा ॥ स्वेद सलिल मधुसोंसने, नल कर कमलनि भेटि ॥ तो कुच रचना
जितरची, ले हैं वये समेटि ॥ ९८ ॥ चौपाई ॥ नलको मन तेरे मन
माही ॥ हिलिभिलिके सेवत बहुधाही ॥ मनौ मदन तन फिरि विधि
साजै ॥ द्वैपरमान जोरिकै राजै ॥ ९९ ॥ सवैया ॥ फूलनके धनु
सों नलको जब जीति सक्यो नहिं मयनमवासी ॥ चापलता तुमको
नवकै शुभवंश भये गुणराशि विलासी ॥ फूल हराके झवा झुकि झूमति
पीठि सुरंगित रेख प्रकासी ॥ ईशुर रंग रंगी विलसै कहि मूँठि दिये तनु-
तोल क्षमासी ॥ १०० ॥ मनहरण ॥ तेरी कंठशिरिके नवल मुकुता
फलें तिनके गिलोला काम करतु बनाइकै ॥ तेरी तनु सुलगि लतासी
लहलही मंजु लसतु धनुष बेलि वाके करलाइकै ॥ रोम रेख बलित पन-
चहै ललित नाभि सोहत गिलोला थल गहिरे सुभाइकै ॥ नलराज हंस-
को अहेरो करि करि रोज इनति मनोज निज ओज सरसाइकै ॥ १०१ ॥
रूपके समर नल राजसों समर जब सरवरि करिकै सक्यो न समुहाइकै ॥
तेरे चिकुरनिके शरनिकरे वान धरयो भालमें धनुषटूकद्वै करि बनाइकै ॥
हरके नयन कुंड अनल वरततामें आपनो शरीर धीरहोम्यो हरषाइकै ॥ सुवर-
ण शैल कुच रावरे मकर पत्र ताही की परणशाला रही ठहराइकै ॥ १०२ ॥
पद्मावती ॥ बातन रस भीनो हंस प्रबीनो सरस भेद निज भाषि कहै ॥ त्यों-
हीं सब आली अतिचल चाली आइ गई पग खोजगहे ॥ हंस ॥ में
वार लगाई देह विदाई निषधराज ढिग जान चहौं ॥ सबसुखनि विलासौ
प्रेमप्रकाशौ राजकुँआरि तो चरण गहौं ॥ १०३ ॥ सवैया ॥ मोहन
मयनके बाननके मधुसों मिलये अतिही सरसाइकै ॥ माखनसे कहे वैन
मराल वे काननि बाल पिये न अघाइकै ॥ स्वादही स्वाद विषाद बढ्यो
बहु वाद पन्यो पियकी रुचि पाइकै ॥ तापर रंग चढी तनमाहँ रही मनमें
छन मूरछा छाइकै ॥ १०४ ॥ सोरठा ॥ गयो गगन मग खूँदि, छिन
मोहाटक हंस तब ॥ ऊरध मुख दग मूँदि, रही सबै छबिकी चमक ॥ १०५ ॥
मोदक ॥ पांखनि अग्र उठावति आवति ॥ कारजकी जनु सिद्धि बता-
वति ॥ यों नल पास बतावनको खगु ॥ नैषधदेश चल्थो गहिकै

उरोजनि मांदि सरोजनि आन्यो ॥ लागि रही विरहागि चहूँ दिशि सेजपै
 सोवति है रति मान्यो ॥ २९ ॥ विरहागिनिकी महिमा अजहूँ लगि
 जानति है न हियो अनुरागी ॥ निज आननिको तिन तूल तहाँ करि
 ताहि बुझावनके रसपागी ॥ जहूँ फूलकी साँट नहीं है लगी चित कोमल
 राजकुमारि सभागी ॥ तहूँ कामके शूल सहै समुहे उर गाढ उरोज स
 रोजनि आगी ॥ ३० ॥ मूँदि दरीचिन्दै परदा सिदरीन झरोख
 रोंकि छपायो ॥ नेकु परै न कहूँ लसिकै शशिकी किरणै परवेशुन
 पायो ॥ भौमके भीतर आवनकी विषहारनिके मिस रूप बनायो ॥
 लावत ही तनमें जुरझार विकार हजार गुणी सरसायो ॥ ३१ ॥ तोटक
 निशि द्योसरहैं यह ग्रीवनये ॥ अरि तुंग उरोजनि अश्रु छये ॥
 प्रतिबिंबित लोचनि ओट भये ॥ जनु काम सुरंगित बान हये ॥ ३२ ॥
 अन्यञ्च ॥ अँसुआ दृग उज्ज्वल जात ढरे ॥ अतिलाल कपोलनि आनि परे
 प्रतिबिंबित होततहाँ शशि है ॥ अपनो सम जानि रहो वसि है ॥ ३३ ॥
 नाराच ॥ कपूर चूर छानिकै मलैजपंक सानिकै ॥ करचो सुअंग
 राग खेत शीत हेत मानिकै ॥ छुटे रहैं महाघने भुजंग केश साँवरे ॥
 मनो मनोजसों ढरे महेश स्वाँगको करैं ॥ ३४ ॥ गल्यो सरोज हाथसों
 चल्यो उरोजपैधरै ॥ लहीं उसाँस सों जरचो सुछार है गिरो परै ॥
 नरेश प्राणनाथके सु हाथलागि हैं जहीं ॥ प्रलेपुसे कुसोहिये सँतापु
 जाइ गो तहीं ॥ ३५ ॥ मोदक ॥ हों हियहू नहि चाहति ॥ एक
 नलै मनराखि उमाहति ॥ सौंह करै विरहागिनि में तापि ॥
 शुद्ध शरीर सचौटी करी कँपि ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ विरह ताप तनुमें
 लगत, कमल कली है त्रात ॥ मानौ भरि मूठिन विथा, गहि डारत सर-
 सात ॥ ३७ ॥ रूपमंजरीसखी ॥ सोरठा ॥ अरौ कहौ कित जाहिं, कहा करै
 कैसरहैं ॥ जिय आशा कछु नाहिं, देखतही याकी दशा ॥ ३८ ॥ लगि अनंग
 अहि बान, विष फैलो तनुमें बिबस ॥ देखत रहत न प्राण, करुणासिंधु
 बूडतनको ॥ ३९ ॥ सवैया ॥ पिकै बोलत काँपत है हियरा तहूँ लोल
 सिवार लता लपिटाई ॥ हिय कामके केत धन्यो तनु मानहु कै तेहि ता-
 पर धूम मचाई ॥ मुख साँचु शशीमणिसों वरणो यह भूपतिकी तनया

छबिछाई ॥ लखि होत उदोत सखी जबही तब नयननसों जलधार
 बहाई ॥ ३० ॥ आजुलौं आशरही हुतीजो अबतौ कछु सांस चलै ढंग
 औरै ॥ नेकु परै न रह्यो घरमें यह देखि दशा भरमै मति बौरै ॥ ऐसी
 भई नित आन महा चलि हेरि हहा कछु मोहिय औरै ॥ ठाढ़ी करै परि
 चारिकतौ घरि चारिक लौं पियरो रँगुदौरै ॥ ३१ ॥ मान मंजरी
 दीहा ॥ ज्यों रति पतिको बान, त्यों मोहन यह नृपसुता ॥ चाहत
 कन्यो निदान, यहू याहुकी पंचता ॥ ३२ ॥ सोरठा ॥ कीजै दारि
 गोहारि, समर करन आयो समर ॥ लीजै याहि उबारि, याके जीवत
 जीवनो ॥ ३३ ॥ सवैया ॥ पावक बाण कन्यो शशिको पहिले करि
 ओज मनोज चलायो ॥ त्यों जलधारनिको अंशुआ इन अंबुद बाणनि
 बोरि बहायो ॥ वारुन बाण चलयो नवनीरद ज्यों उतते इतको झुरि
 आयो ॥ दीरघ सांसनिसों इनहूँ तजि तीर समीरनि मारि भगायो ॥ ३४ ॥
 दोधक ॥ दक्षिण पवन चली तरवारे ॥ दूकाहि दूक हियो करि डारै ॥
 ताकहँ सांप मृणाल धरे हैं ॥ पौननके जिन कौर करे हैं ॥ ३५ ॥
 चौपाई ॥ द्वैदुख दुस्सह दै विधि याकों ॥ विरह एक औ जीतबताको ॥
 ऊपर दाबि दये कुच ठाढे ॥ वेनट सांस गढे उरगाढे ॥ ३६ ॥
 दोहा ॥ दीन्हे तीर चलाइ सब, समर समर धरि धीर ॥ गहि
 मारे द्वैताल फल, तब छाती पर वीर ॥ ३७ ॥ नेहमंजरी सखी ॥
 सोरठा ॥ सुनि सुनि सखिकलाप, विकल सखी जन जे करहि ॥ बरी
 विरह संताप, पल उठाइ चितई कुँअरि ॥ ३८ ॥ बार बार शशिहेरि, करन
 लगी ताको कुयञ्ज ॥ राहु बड़ाई देरि, बोली उभकीहें नयन ॥ ३९ ॥
 दमयंती ॥ तोमर ॥ सखि नेह मंजरी लेह ॥ शशिसों तपीसबदेह ॥
 नहिं रैन अंतु लखाइ ॥ युग चारिसों छिनु जाइ ॥ ४० ॥ नरगीरबान
 विरंचि ॥ युग होतु है जिमि संचि ॥ रमियुक्तको छिनु जौनु ॥ युगहै
 वियुक्तनि तौनु ॥ ४१ ॥ हिमवान मो जनु लीन ॥ गिरिजा तहाँ तप की-
 न ॥ उर कामको डेरुमानि ॥ नहिं सैलकी शुचि जानि ॥ ४२ ॥
 शिव भालपै नहिं आँखि ॥ जैहें तहाँ सबु साखि ॥ विरहागि जागत
 जोर ॥ विछुरीं प्रिया तेहि ठौर ॥ ४३ ॥ नेहमंजरी ॥ दूतविलंबि-

त ॥ अग्रिकी लपटें इमिहैं नहीं ॥ क्रिहकी झार विषमें ज्यों कहीं ॥
 विरहसों युवती अतिही डरै ॥ मृतक लैहंसि पावकमें जरै ॥ ४४ ॥
 दमयंती ॥ सोरठा ॥ राखी हिय घरघेरि, कलाकलुष विरहिनि-
 त-पन ॥ दई निकारि नवेरि, जे जग उज्ज्वल पाप शशि ॥ ४५ ॥ लक्ष्मी-
 धर ॥ दौरिकै चंद्र सों बूझि आली इहा ॥ दाहके दानकी शक्ति पाई
 कहा ॥ सिंधुमें कालकूट मिली है जही ॥ बाढ़वाअग्निसोंकै सिखी
 तैयही ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ दै मारयो विधि चंद्र को, श्याम शिलान मझो-
 र ॥ फैलि रही किरणमनौ, तारागण चहुँ ओर ॥ ४७ ॥ दमयंती ॥
 दोहा ॥ अरी जरी सब अंगमें, घरी वरष ज्यों जाइ ॥ चहुँ ओर दौरी
 फिरै, जोन्ह पिशाची धाइ ॥ ४८ ॥ शृंगार वेलि सखी ॥ सवैया ॥
 चंदन चारु चवारेन माँह तुषार मिलै घनसार निसानो ॥ मेह महा
 बड़िसे वर्षे चहुँ ओरनि नीर गुलाब निसानो ॥ कैगच गीरिनके नियरे
 सियरेनव कमल पतान वितानो ॥ लैचलि राखहु याहि इहाँ राचि माहकीरै
 निनयोनसखानो ॥ ४९ ॥ लक्ष्मीधर ॥ जाइके बासको साज साज्यो
 जहाँ ॥ याहिलै हाथही हाथराख्यो तहाँ ॥ मैनके बानको ल्यो निसान्यो
 भयो ॥ सूरज्यों घाइ पैघाइ सामूल्यो ॥ ५० ॥ दमयंती ॥ सोरठा
 दौरि सखी समुझाइ, चंदहि मेरी ओरते ॥ येर कूर सुभाइ, कहा करत ऐसे
 करम ॥ ५१ ॥ सवैया ॥ सागरमें गिरि मंदर सों दबिक्यों न कलंकित चूर
 भयो ॥ कुंभज क्यों न तुरंतहि तै जलघोरि गेंदौरासों लीलिलयो ॥
 मन मेरेको चाहति है अपनायो मैं प्राणपयान विचारि ठयो ॥ नलके
 मुख चन्दहि जाइ मिलौं यह पंडित काम बताइ दयो ॥ ५२ ॥ तारक ॥
 जगमें यशको बजवाइ नगारो ॥ करि सागरके कुलको उजियारो ॥
 बध पौरुष लेगहि प्राण हमारो ॥ शशिलक्षणदै अवकै निरवारो ॥ ५३ ॥
 यौबन बेलि सखी ॥ सुलक्षण ॥ जब चंड अंसु अथोत हैं ॥ तब
 आनि ये रवि होत हैं ॥ अतिताप अंगनि करत हैं ॥ दिन होत रविछवि
 धरत हैं ॥ ५४ ॥ दमयंती ॥ दोहा ॥ करान भरत तमाल दल
 शशिकुरंग मुख देह ॥ ताहि चरण लागत थकै, तनक सम्हारो नेह ॥ ५५ ॥
 यौबनबेलिसखी ॥ सोरठा ॥ समय चूकि माति होइ, आइहाथ

कोकहसखे ॥ गहिराखौ अब सोइ, शशिको मुख नहिं देखिये ॥ ५६ ॥
 दमयंती तोमर ॥ कर एकमें धनु लेह ॥ इक आइ आरसि भेह
 प्रतिबिम्बमें विधु देखि ॥ गहि मारु ताहि विशेषि ॥ ५७ ॥ मधुमालती
 सखी ॥ दूताविलंबित ॥ करत पूरणचंद्र बड़े परतापको ॥ शुभ
 गभाषत ज्योतिष पापको ॥ उहतु नाहिन छीन सुधा करौ ॥ गनत
 पाप कुबुद्धि न आदरौ ॥ ५८ ॥ दमयंती सोरठा ॥ लियो राहु
 जब लीलि छोरयो निज रुचिसों न यह ॥ पहियासों ठुरि ठीलि
 गिरयो गेरेके छिद्र है ॥ ५९ ॥ रूपमालती सखी ॥
 झूलना ॥ चक्र कर आयुधरि राहुशिरकाटि हरि पायु यह
 आनि विरहीनदीन्हो ॥ जडर विनसतासुके पंचतनहि जासुके त-
 वहीं यह आनि इत दै उदै लीन्हो ॥ ६० ॥ दमयंती ॥ गगन-
 ग ॥ सहचरि बूझौ जरासो विनति वचन मम सुनिये ॥ जैसे जरा-
 सिंध तनु तमसिर सिखि युत गुनिये ॥ ६१ ॥ दमयंती ॥
 सोरठा ॥ कहि तमसों शशि ठेरि, ब्राह्मण गणि वैरिहि तजतु ॥
 पतितु शशिहि निरवेरि, नितप्राति सेवत वारुणी ॥ ६२ ॥ दोहा ॥
 द्विजपति ग्रसि कोढ़ी भयो, श्वेत राहु यहु ऐनि ॥ विरहिनि मुख शशि
 ग्रसनको; भ्रमतु न शशि भ्रम मैनि ॥ ६३ ॥ काममालती सखी ॥
 सोरठा ॥ उवतु इंदु अति दूरि, उपालंभ ताको कहा ॥ निकट काम
 हिय भूरि, ताहीको कहिवो उचित ॥ ६४ ॥ दमयंती ॥ नाराच ॥
 भले मनोज कौन चालि रावरी कही बनै ॥ रहौ हिये जहाँ तहाँ
 सुदाइ देत हौ घने ॥ सुजात वेद ज्यों सुआनि आसरो करै जहाँ ॥
 रजाइ देत ताहि नाशु आपहुं गहे तहाँ ॥ ६५ ॥ तोटक ॥ रतिके सह-
 चारि सदा तुमहौ ॥ परि मोतन मै रति क्यों न लहौ ॥ विरही
 तनको अति तापितहौ ॥ तियहूँ यह जानि सराहित हौ ॥ ६६ ॥
 झूलना ॥ हर नयनसों छुटि ज्वालसों जुटि जरत जब तन देखि ॥
 तब दौरिकै विरहीनके हिय पैठि जात विशेषि ॥ मिलि ताहि दाहत हौ
 तहाँ तुम थे मनोज कठोर ॥ पल एकहूँ न परै कहूँ कल पीर जागत
 जोर ॥ ६७ ॥ चित्रतीसखी ॥ सरसी ॥ फूलनिके करि बानि लरे

तुम शिवसों सो फलु लीन ॥ फूलहूँको समर मने है नीति प्रकाशित
 कीन ॥ पियो पियूष सकल देवनमें अमर भये क्यों नाहिं ॥ रतिके
 अधर स्वादुरसमात्यो पियो नैंते चित चाहि ॥ ६८ ॥ दोहा ॥ देत
 न मीचु अनंग शठ, गिरत धनुष नहिं पानि ॥ मृतक मूँठि ज्यों द्रष्ट
 गही, मूँठि रह्यो गुण तानि ॥ ६९ ॥ दमयंती ॥
 सरसी ॥ ज्योति हेतु दृगमीचु बचै तनु रूप प्रकाशित होइ ॥
 काहू सुर सेवाके कीन्दे तुरत यहै फल सोइ ॥ धनि धनिदेव
 तिहारी सेवा फूटिजात चषचारु ॥ अतिविरूप द्युति देहमें अरु
 चलत मीच परिवारु ॥ ७० ॥ चित्रकलासखी ॥ तोमर ॥ विधि जानि
 तोहिं नृसस ॥ किय फूल आयुध अंस ॥ दृढ़चापसों शरहोत ॥ तब तीनि
 लोक निसोत ॥ ७१ ॥ दोहा ॥ हर ज्यों हारे तीन पुर, तीनों लोक
 मनोज ॥ जानिपरै विधि जानिशर, मधुसों सींचतु रोज ॥ ७२ ॥ सवैया ॥
 रावरे बाणनके विषमेषु विरंचि रच्यो सजि कै सुनिसान्यो ॥ ज्यों विरही ज-
 नको परमानु दयो अति चंचलता सरसान्यो ॥ ताकाहि टूक हजार कन्यो
 छिन एकहि में करि क्रोधरिसान्यो ॥ केसरिसी मृदुमेरी सखीरी भई छतिया
 छतिया उपमान्यो ॥ ७३ ॥ मधुनार ॥ विधि पुहुप आन ॥ दिये
 पंचवान ॥ तेहि जरत जोइ ॥ सब जगतरौइ ॥ ७४ ॥ दमयंती ॥
 सोरठा ॥ तेरे देखि सुभाइ, छीनि लयो धनु दै विधिहि ॥ कुटिल भु-
 कुटि नल पाइ, फेरि धनुर्द्धर तैंभयो ॥ ७५ ॥ दूतविलंबित ॥ छऋतुसों
 तुम माँगतु जाइकै ॥ पुहुपलै यकु यकु बनाइकै ॥ करतु बान तिनैं तुम
 पंचसों ॥ धनुष एकु कन्यो परपंचसों ॥ ७६ ॥ अतनुहौ जो तुम हरके
 किये ॥ परम आनंदसें सबके हिये ॥ सतनुहै जो धनु धरते कहूँ ॥
 शरनितौ को सकतो कहूँ ॥ ७७ ॥ गिरीश पै रिसकै शर जो तजौ ॥ तुम
 समेत सुभस्मदशाभजौ ॥ करतु मोहनमंत्र विधानु है ॥ अपिक स्वर
 पंचमबानु है ॥ ७८ ॥ विमुख होत शशी लखिकै उयो ॥ विरहिनी जन
 जे हियरातुयो ॥ लगतु दक्षिण मारुत वाम है ॥ पनच ऐंचति जो भु-
 जकामु है ॥ ७९ ॥ मदन अंध वियोगिनि मीचु है ॥ वज्रसें हियो
 निरदै नीचु है ॥ तुमै एकै जीति शिवै लयो ॥ मदन अंधक मृतु

जैमी भयो ॥ ८० ॥ मोहनमाला सखी ॥ सवैया ॥ एकतौ अति को-
मल हुती बिरहागिनिसेँ अतिछीन भई हौ ॥ पुनि बारहि बारके बाद
किये अधरामृदु सूखि गये कुँभिलाइ गई हौ ॥ चौर करौ उत बीजनटो-
रोरी घोरो तुषार कहा सुईहौ ॥ बोलौ न आपु कहौ कर जोरिकै देख-
ति हौ कछु भैनमई हौ ॥ ८१ ॥ पाँइ परों बलिजाउ हहा तुम ऊपरलै
इन प्राणन वारौ ॥ क्यों न कठोर फटै छतिया यह तेरी दशा निज नयन
निहारौ ॥ ज्यों अकुलाइ उठै अतियों उठिकै नभ नैषधदेश सिधारौ ॥
सौ छलके बलसों नलको गहि चांदनी सों तुअपायन पारौ ॥ ८२ ॥
बैठी कहा चहुँ ओर सबै उठि मंजुल कंजनसेज विछावौ ॥ चन्दनसों
लिपिरावटी दै परदा चहुँ ओरन चंद दुरावौ ॥ बीजनकी इतडोरीगहौ
उत बोरि गुलाब सिसी ढरकावौ ॥ फूलन काज पठै उनको तुम बैठि इ-
तै तरवा सहरावौ ॥ ८३ ॥ एक अली नल वेष करी रंग केशरिसों सब
अंगन वारी ॥ एक दमयंती स्वरूप बनी चुनि रंगित चीर सजी चहुँ
ओरी ॥ लै पिचकारी चले इतते उतते लै गुलाब मुठी वह दौरी ॥ हेरि
हहा सखि तो मनभावतो भावतीके संग खेलत होरी ॥ ८४ ॥ सवै-
या ॥ छिनही छिन सेज हजार सजै छिनही छिन सेज करै चरचाको ॥
छिनही छिन बीजन वै हरिकै छिनही छिन स्वांगनकी चरताको ॥
छिनही सखियां सिगरी सिगरी गहि पायन लौटि पलौटतीवाको ॥
उपचारनको न सरै कछु काजु कहूँ न परै कल नेकहूँ वाको ॥ ८५ ॥ दूँदत
सेजपै जानि परै पहिंचानि परै नहिं आंखिन आगे ॥ दौरि उपाउ करें सखि
याँ सब भाँइ खरी निशि वासर जागे ॥ पानी उतारि उतारि
पियें उर धाई बलाइ लै लै यह मागे ॥ जीवनमूरि तू मेरी जिये
यह तेरीदशा लखि मोहिय लागे ॥ ८६ ॥ अनंगमाला सखी ॥ दोहा ॥
राजकुँआरि सुनि हित वचन, यतनन जीवो राखि ॥ दमयंती ॥ जीतवु मे
रो शत्रुहै ताकी कुशल न भाखि ॥ ८७ ॥ कंचन लता सखी ॥
दोहा ॥ अमृत किरणि सखि हैं उयो, यासों कहा डिराइ ॥ दमयंती ॥
होइ कहूँ जो मृत किरण, तौ न ताप नियराइ ॥ ८८ ॥ रंग विरं-
गिनी सखी ॥ दोहा ॥ विधि विरोध तिथिको रटै, पिकसों दिक

वनि लेह ॥ दम्भयंती ॥ कहा अर्थ टूटे यहै, बोलि जरावत
 देह ॥ ८९ ॥ रंगिनी सखी ॥ दोहा ॥ तेरो मन भावन अहै, है
 तेरे उर माँह। दम्भयंती ॥ यहै बड़ो सन्ताप नहिं, मिलति गरे गहि
 बाँह ॥ ९० ॥ सोरठा ॥ लगे देह उसास, मन मन्मथ पावक
 बन्यो ॥ बड़ी मूरछा तास, कहत कहत आधे वचन ॥ ९१ ॥
 सवैया ॥ आनन श्वेत हरो पियरो रँग नयनन रूप रहै विलखानी ॥
 अंगन तोरि मरोरि मरी अलकैं खुलि फैलि रहीं सरसानी ॥ ज्यों त-
 किया ते झुकी उतको इत हाथही हाथ लये ठकुरानी ॥ सेजपै पारि
 कुमारि सबै तब टेरि उठी अति आरत वानी ॥ ९२ ॥ प्रहटिका ॥
 कोउ दौरि सलिल मुख सींचिदेइ ॥ कोऊ सरोज दल झाँकि देइ ॥
 कोउ गहे विजन कर करत पौन ॥ कोउ सहरावत कर चरण
 तौन ॥ ९३ ॥ अ० ॥ बहु किये सरिस उपचार शीत ॥ सखियाँ
 विलाप अति करैं भीत ॥ कछु कर्म कर्म कै देव योग ॥ तनु भयो
 चेत निज भाग भोग ॥ ९४ ॥ सखी ॥ सवैया ॥ देखि कले कछु
 साँस चलै मुख नयन हने सु चले पहिचानौ ॥ काँपत ओंठ तके तुम
 मेनके बोलति कोमलते सुनि कानौ ॥ चारुमती तनु अंचर झाँपहि
 कोसिनिकेसनिको गहि आनौ ॥ पोंछि तरंगिनि नयननिसों जल धार
 बहै सरिता शरतानौ ॥ ९५ ॥ सोरठा ॥ कमल
 कली सरसात, आली जन आरत करत ॥ सुनत विकल भोगात,
 भीम भूप भीतर चलयो ॥ ९६ ॥ मनहरण ॥ द्वारिका महल द्वार ब्यो-
 ठीपै अचल रहैं भूरि दोष दूरि दोष करतु बनाइकै ॥ एकुरहै
 नाजिर औ दूसरो सुअंगकरु भूपतिपै एकै बात कही शिरनाइकै ॥ सु-
 श्रुत चरकताकी उकुति युगुति जोर जानत हैं हम सबभेदनि सचाइकै ॥
 नलद सों याँकी बिथा जाइगी छिनकमाहिँ सुनि चितुलाइ राजुरह्यो अकुला-
 इकै ॥ ९७ ॥ आवत हैं तात यों कहत दौरि पौरि जन सुनत ही तौहीं राज-
 कुँअरि सकाइकै ॥ दूरिहि सों धरणि छुअत तसलीमकरि सीम कुलकानि
 विरहागिनि छपाइकै ॥ चितकी चलनि चरचतु हैं चतुर तिन जानी-
 न्याह योग यों उछाह सरसाइकै ॥ आशिषयों दीन्ही नख शिखते सुखि

तरहौ लहौ अभिमत रहौ सुमन सुहाइकै ॥ ९८ ॥ दोहा ॥ सुनि
आशिष नृप जो दर्ई, व्याह उछाह उमाह ॥ आनंद अंबुधिमें में भई, मगन
सखी चितचाह ॥ ९९ ॥ बाहर आयो भूप पुनि, बूझि मंत्र वरवेगि ॥
राज बोलावन काजको, भेजे चारन नेगि ॥ १०० ॥ नव द्वीपन पति
पुरिन पति, सकल देशपति जौन ॥ अमर पंचछ अहिराज सब, बोलि
पठाये तौन ॥ १०१ ॥

इति श्रीप्रचंड दोर्दण्ड मंडित भू मंडलाखंड श्रीखाँ
साहब अली अकबर खाँ प्रोत्साहित गुमान
मिश्र विरचिते काव्यकलानिधौ दमयंती
विरहवर्णनं नाम पंचमस्सर्गः ॥ ५ ॥

दोहा-छठे सर्ग नारद मिलन, बासव सदन समाज ॥ नल
मारग छलसाज सुर, दूत काज सुरराज ॥ १ ॥ सोरठा ॥
जौलौं राज समाज, जुरै आइ कुंडिननगर ॥ तबही श्री ऋषिराज,
नारद सुरपति गृह गये ॥ २ ॥ पर्वत चलयो सपक्ष, तेहि पछार
अचरज नहीं ॥ नारद गुरु जग अक्ष, अति अद्भुत नभ जो
चढ्यो ॥ ३ ॥ प्रह्वटिका । मुनि चलयो गगन विनही विमान ॥ बहु
भयो भानु ज्यों भासमान ॥ जन और चहत साधन बनाइ ॥ तपसीन
होत तप सिद्धि आइ ॥ ४ ॥ मुनि चलयो नघत सुरपर विमान ॥ तिनकरी
प्रणति बहुधासमान ॥ किय अतिथि हेत आदर अपार ॥ नाहिं करचो
तहाँ कछु अंगिकार ॥ ५ ॥ लिय ऐंचि तेज जितनो दिनेश ॥ मुनिदेह
लगत नाहिं घामलेश ॥ रवि हरीसोभ मुनिराजलेखि ॥ द्विजराज हरी रवि
सोभ लेखि ॥ ६ ॥ तररक ॥ सुरसिंधु तहीं बहु आदर कीन्हो ॥
तट दूबनि दर्भनि आसन दीन्हो ॥ जलसों चरणोदक दै सुखपायो ॥
सरसीरुहको मधुपर्क बनायो ॥ ७ ॥ सुनतै सुरनायक जू उठि धाये ॥
बहु दूरिहि सोय गये शिरनाये ॥ मुनि सादरही हंसिकै उरलाये ॥
गहि पाणि दुऔ प्रभु आसन आये ॥ ८ ॥ मौक्तिकदाम ॥ सिंहासन
उच्च तहाँ मुनिनाथ ॥ करे थिति पूजन की विधि साथ ॥ गह्यो लघु

आसन और सुरेश ॥ कंरी विनती कर जोरि सुदेश ॥ ९ ॥ मिलें जब
 मित्र समाज अनूप ॥ चलै तब चारु कथा बहु रूप ॥ न आवत क्यों
 इत सूर महीश ॥ चहै यह बूझनको सुरईश ॥ १० ॥ इंद्र ॥ दोहा ॥
 अब नृप वंशन में नहीं, उपजति बीर करीर ॥ जे परहारिनि सों समर
 छोडति धीर शरीर ॥ ११ ॥ माटी में गुर देह सो, ऊरध गति नहिं होइ ॥
 तजि आवत मेरे निकट, आदर गारव जोइ ॥ १२ ॥ तोटक ॥ अब
 वे इतको नहिं आवत हैं ॥ रण क्यों नहिं तेज उपावत हैं ॥ नहिं भावत
 इंद्रपती मनिकै ॥ अपने इक कारज की मनिकै ॥ १३ ॥ बहु संपदते
 विपदा नितही ॥ निज पूरब पुण्य मिली कितही ॥ जब पानि
 सुपातरके दिजिये ॥ तबही लक्ष्मी सुखको लजिये ॥ १४ ॥
 दोधक ॥ संशय दूर करौ प्रभु मेरो ॥ हों नित सेवकहों
 प्रभु तेरो ॥ बैन मनोहर रावरे ऐसे ॥ पाप हौं अघमर्षन जैसे ॥ १५ ॥
 तोमर ॥ यह भाषि वासव आपु ॥ तब है रह्यो चुप चापु ॥ दशसै
 सरूह नयन ॥ मुनि ओर हेरत ऐन ॥ १६ ॥ लखि इंद्रकी मति धीर ॥
 मुनि बैन ज्यों गिरिकीर ॥ तबहीं भये मुनिराव ॥ परसन्न शुद्ध
 सुभाव ॥ १७ ॥ मुनि ॥ तोटक ॥ शत यज्ञनसों तुम इंद्र भये ॥
 तिनके श्रम तौ तुम जानि लये ॥ तेहि पै तुम दानैको उमहौ ॥ धनि
 धन्य सदा वासव तुमहौ ॥ १८ ॥ तारक ॥ नहिं बैन न आवत ऋद्धि
 तिहारी ॥ अति आदरकी पदवी निरधारी ॥ सब देखिपरी निज नयनन
 जैसी ॥ अभिलाषन राजशिरी पर ऐसी ॥ १९ ॥ हंसी ॥ श्रीको
 चाहौ औरे दीनो अतिथिन पर अति करुण करी है ॥ इच्छाही सों
 भोगै सागौ नयन सहस सब सिधि सिधरी है ॥ तेरी बातें भीठी मीठी
 मुनि मुनि तरल सुचित गति तेरी ॥ तीनौ लोकें पालौ नीकै धनि धनि धनि
 हरि मति तेरी ॥ २० ॥ सोरठा ॥ समर शस्त्र तनु त्यागि, इत
 आवत नहिं राज ज्यों ॥ सो मुनिये चित लागि, कारण में वर्णन
 करौ ॥ २१ ॥ चर्चरी ॥ भूमिमें तुमसों लसै यक भीम भूपति
 भागसों ॥ ऋद्धि सिद्धि विदर्भ देशनि जोग जाग विराग सों ॥
 कन्यका तेहिके भई इक ताहि रूप अमोलहै ॥ नाम है दमयंति यौवन बैस

राजति सोलहै ॥ २२ ॥ लीलागति ॥ मन माहँ चाहतिहै युवा
 वह जानिये नहिं कौनहै ॥ परमाणसे नहिं मान राखति मूँदिकै गुण
 भौनु है ॥ अब है भई वह व्याह लायक चारु बेलि शृंगारकी ॥ तासु
 तात चाहत स्वयंवर करचो ठीक विचारकी ॥ २३ ॥ पृथ्वी ॥ मनोज नृप फेरि
 कै हुकुमराज जीते सबै ॥ भये वश दमयंतीके समर वात चलै कबै ॥ सुनै जुरु-
 चिता तासुकी जित गुनै रुआ भूषनै ॥ करे तित अभ्यास यों सकल सिद्धि
 ताही गनै ॥ २४ ॥ दोहा ॥ जे आभूषण दान गुन, वह तिय करै
 पसंद ॥ तिनमें तनिको जो चतुर, सो सबमें सुखकंद ॥ २५ ॥
 तोटक ॥ जबते वह योवन बैस भई ॥ रणकी सुधि राजन भूलि गई ॥
 तिनमें मनमथ सिकार करै ॥ तिनके मृग नयनन बाँधि हरै ॥ २६ ॥
 तिनके घर दूतिनकी अरचा ॥ नितही नित ता गुणकी चरचा ॥ यहि ते
 इहँ भूप न आवतहैं ॥ तुमसों नहिं आदर पावत हैं ॥ २७ ॥ चर्चरी ॥
 भीम भूप सुर दूरि सों अति दूरि अंतर जानिकै ॥ हौं चलयो इतको इहाँ
 रण रंग आनंद मानिके ॥ कोन जानति है तुम्हें बहु युद्ध करत सुभाइसों ॥
 है रहे चुप चापु बोलि मुजीश यों सुरराइसों ॥ २८ ॥ सौरठा ॥
 मुनि ये वचन विशाल, महा मुदित मधवा भयो ॥ होत सुभग रस वास
 वचन रचनमें प्रभुनकी ॥ २९ ॥ इंद्र ॥ दोहा ॥ मुनि ह्यो राजत हैं
 सदा, ममसु अनुज दनुजारि ॥ संगरकी चरचानहै, सोवत पाँइ पसारि
 ॥ ३० ॥ चौपाई ॥ विश्व रूपता ताकी ऐसी ॥ रीति रची जैमुनि
 मुनि जैसी ॥ सुर विग्रह जो सहत न नेको ॥ व्यर्थ करौ मम वचन वि-
 वेकौ ॥ ३१ ॥ विनय समुद्र सुधा रस सानी ॥ चुप कि रह्यो हरि कहि
 मृदुवानी ॥ तजि उसास मुनि भयो उदासी ॥ तब बोल्यो रण रंग
 बिलासी ॥ ३२ ॥ मुनि ॥ सवैया ॥ सुरलोक रसातल युद्धकी
 आशते भूमि निवासन चैन गहों ॥ अरु भूमि पतालके संगरसों नभमें
 नहिं हौं निहंचित रहों ॥ तुमको लखि मोद लख्यो सुरनायक भूत-
 लको अब जायो चहों ॥ करिये किरपा करि ओष सुमोहिं
 बहोरि इहाँ सुख आनि लहों ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ दमयंतीके व्याह
 क्रो, है है राज संमाज ॥ ते कुरि हैं संग्रामको, भूतलमें मम काज ॥ ३४ ॥

प्रद्धटिका॥यह भाषि चले तुरतै मुनीश॥पगरोकि रह्यो बहुधा सचीश ॥
 मंघर्व कन्यो पर्वत प्रणाम ॥ ऋषि विदा कियो तब शक्र धाम॥३५॥अ०
 घर आई कियो इंद्र साँच येह ॥ केहि भाँते होइ दमयंति नेह॥ करगह्यो
 वज्र अति कठिन जानि ॥ मृदु गह्यो चहत दमयंति पानि ॥ ३६ ॥
 नरनाह कामको हुकुम मानि ॥ सुरनाह चल्यो क्षिति और आनि ॥
 शिरनायशची विलखी अपारं ॥ जनु चहै चल्यो अबहूँ पतार ॥ ३७ ॥
 स्वागत ॥ इंद्र देखि क्षितिको अनुरागे॥ रंभ श्याम द्युति आननलागे ॥
 श्याम जीभ गति ऊपर भाषै ॥ आपुहानि मनमें अभिलाषै ॥ ३८ ॥
 दीह साँस मुख छोडि घृताची ॥ प्राण मुक्तिके मारगराची ॥ मैनाका
 मुख मवावत रूखी ॥ शीत बेलि जनु पंकजं सूखी ॥ ३९ ॥ कह्यो
 तिलोतमहूँ तब ऐसे ॥ गिरेहाथ ते चामर जैसे ॥ सुरपुर बास न योग
 हमारे॥ सुरपति आपु भूमि पगुधारे॥४०॥अ०॥ काहूँसों कोऊ यों कहै॥
 बैठी कहा विचारति रहै ॥ कश्यपको सुत इन्द्र कहावै ॥ कश्यपसुता
 और को धावै ॥४१॥ दोहा ॥ अग्नि वरुण यम जो चलैं, तीनौ संग
 दिगीश॥ चलत एक आगे चले, पाछे सब किसवीस ॥ ४२ ॥ शिख-
 रिनी ॥ पीछे भेजी दूती सबानि दमयंतीके निकटको ॥ बड़ी
 भेजी भेटें विदरभनाथ सुभटको॥ करैं ऐसे सेवा सकल सुर देवाधिप मिले॥
 चले चारौ भूको हरषि हियहूको मिलि हिले ॥ ४३ ॥ जवै आये भू-
 मै तरलछन हूमै सुगति सो ॥ करी ऊँची ग्रीवा रथ धुनि सुनि एक म-
 तिसो ॥ चलै पारावारै चपल लहरी मेघ गरजे ॥ तले आगे देखो नरपति लसै
 स्यंदन सजे ॥४४॥ सौरठा॥ दयो सारथी टारि, रथहाँकत कौतुक सन्यो ॥
 लीन्हो-ताहि निहारि, नयन जन्मको फल लह्यो॥ ४५ ॥ दोहा ॥ देखि
 तरुण वय तासुकी, वरुण भयो जल रूप ॥ जलपतिको यह उचित है
 सीसम सरस अनूप ॥ ४६ ॥ हाकली ॥ सूरयको सुत ताहि निहारी ॥
 श्यामल रंग भयो निरधारी ॥ आजहुलौ तेहिको जग जालू ॥ भाषत
 ताहि रुबै कहि कालू ॥ ४७ ॥ पावक ताप गह्यो तेहि देखी ॥
 तासमता अभिलाष विशेषी ॥ रूप निरूपितकै गुणगेह ॥ आजु
 लगे तेहि तापित देह ॥ ४८ ॥ कौशिक देखतही तेहि रूप ॥ जासच

द्वारत काम अनूप ॥ कौशिक रूप भयो मन माह ॥ नयन सहस्र
 न.सूझत नाह ॥ ४९ ॥ मोदक ॥ मूरतिवंत शृंगार सोहावन ॥
 सुन्दरता तेहिको मनभावन ॥ विस्मित देखि दिगीश भये सब ॥
 सोचि रहे मन माहँ सबै तब ॥ ५० ॥ रूप विशेषणकी परभा जब ॥
 भूषण वेश बने सुखमा सब ॥ स्यंदन साजि चढ्यो इत आवत ॥ देश
 विदर्भको समुहावत ॥ ५१ ॥ ॥ दोहा ॥ अति उदार सुकुमार वय
 तरुन नयसी ओर ॥ कुंडिनपुरको जात हैं, साज स्वयंवर जोर ॥ ५२ ॥
 चौपाई ॥ धर्मराज सलिलेश हुतासन ॥ भये हर्ष चल ताप प्रकाशन ॥
 प्राण रूप जलको नल देखे ॥ आय महा बोले सविशेषे ॥ ५३ ॥
 दुता ॥ झूलना ॥ लाभ नाहिं दमयंतिको हमको परी यह जानि ॥
 छोडि सुन्दर राज भू यहि वरैगी सुर आनि ॥ जो वरै तजि याहि हमको
 तौन वह हम योग ॥ रूप और कुरूपको नहिं भेद जानत भोग ॥ ५४ ॥
 वरुण ॥ कुमार लहरी ॥ हमै तब वरै यहै ॥ प्रभुत्व जब तौ लहे ॥
 न दीठि यहुधों परै ॥ सुकौन चरचाकरै ॥ ५५ ॥ यमराज ॥
 संयुत ॥ हमहूँ दुहूँ दिशिते गये ॥ घरके न बाहेरके भये ॥ दम-
 यंति याहि विवाहि है ॥ यहिके स्वरूप सराहि है ॥ ५६ ॥ दोहा ॥ बा-
 हिर पंचनमें हैंसी, द्वैह आठो अंग ॥ घरमें नयन न सामुहे, द्वैह रमणी
 संग ॥ ५७ ॥ सवैया ॥ यहि मांति रहे झुकि कै सुरतीनौ कहा करिये
 कलु और न आवै ॥ तब शोचि कलू मनमें मघवा मति सञ्चितसों परंपच
 बनावै ॥ बोलि उठ्यो छलसों नलसों यह रावरी मूरति मोदबढ़ावै ॥ सो
 सुखसों तुम क्षमसोंहौ तुमै देखतही चित इच्छितपावै ॥ ५८ ॥ दोहा ॥
 अर्धासन में जेहिदियो, करि आदर संभार ॥ वीरसेनि नरनाहसम, रेखा
 लसत लिलार ॥ ५९ ॥ तोमर ॥ तुमहौ सुपूत सुजान ॥ तेहिराजके
 कुल भान ॥ कितको करचो श्रमआनि ॥ बहु देशहैं गुणखानि ॥ ६० ॥
 हमहूँ चले शुभ काल ॥ जेहिको मिल्यो फल हाल ॥ यहि राह अधिक
 आनि ॥ तुमसों भई पहिचानि ॥ ६१ ॥ नल ॥ तोमर ॥ यहतौ
 परस्पर बात ॥ गुरुरूप आपु लखात ॥ हम अज्ञहैं बहु भाइ ॥ तुम
 आपु देहु बताइ ॥ ६२ ॥ चम्पकमाला ॥ दण्ड धरे याको यम जा-

नौ ॥ ज्वालबरै याको शिषि मानौ ॥ फांस डरै याको जलनाथौ ॥
 शेष रह्यो सो इंद्रसनाथौ ॥ ६३ ॥ याचक है तेरे हम आये ॥ देखतही
 चारौ फल पाये ॥ ॥ मारगको आयासु वितामैं ॥ कारज को तौ आपु
 बतामैं ॥ ६४ ॥ सवैया ॥ याचक नाम सुने इष्यों तनु फूलि
 उठे भुजदंड सोहाये ॥ फूल कदम्बके तूल भयो तिन पाँयन धाइलसो
 शिरनाथे । जो अति दुर्लभ देवनको बहु मेरे अधीन कहौ केहि भाये ॥
 जानि विरोधपरै यहिमें तबसंशय यों नलके उर अये ॥ ६५ ॥ नल ॥ नील
 सरूपक ॥ जीवितलों अब अर्थिन दीजै । तामहँ नेकु न नाह करीजै ॥ जो सुर
 नायक मांगन आवै । तौ कहदेइ हियो सुखपावै ॥ ६६ ॥ जानिपरै कह चाहत
 येहँ ॥ तौ विन याँचतही हम देहँ ॥ जानत हूँ रुचि अर्थिन केरी ॥
 देत न जे तिनको धिग टेरी ॥ ६७ ॥ अ० ॥ जे अति आप सुशा-
 मदि चाहें ॥ मांगत वार न नेह निबाहें ॥ निष्ठुर बोलनमें उतसाहें ॥
 दातनमें तिन कौन सराहै ॥ ६८ ॥ दोहा ॥ तिन समान लै दीजिये
 जीवन अर्थिन हाथ ॥ दर्भ युक्ति जलदान विधि, वहाँ बतावत
 गाथ ॥ ६९ ॥ सारथ ॥ पंक कलंकित कौल गनै ॥ लच्छि निवास
 तहाँ न बने ॥ जावक पाणि सरोज नयो ॥ आसन ता कहँ आनि
 दयो ॥ ७० ॥ याचकके मनकी भरिकै ॥ देत न जे करणा करिकै ॥
 भूतल भार भयो तिनको ॥ पर्वत सिंधु नरुखनको ॥ ७१ ॥ भुजंग
 प्रयात ॥ सबै दान संसारके छोडि दीन्है ॥ हमै आइकै एक यों याँचि
 लीन्है ॥ बडी कीर्ति दीन्ही हमें वेद चारयो ॥ कहा होइगो काजमो
 सों सँवारयो ॥ ७२ ॥ सोरठा ॥ छोडि जात यहि लोक, दाता धनदैं
 आपनो ॥ अरथि बधू विन टोंक, पहुँचावत परलोक हूँ ॥ ७३ ॥
 गोपाल ॥ एक गुणो धन दै संसार ॥ देत स्वर्ग पर गुणो हजार ॥
 अर्थी सौ अधमन उद्धार ॥ साध करत तासों वैपार ॥ ७४ ॥ प्रह्व
 टिका ॥ यहि भाँति भूप सोचत अपार ॥ बोल्यो विचारि मन वच
 उदार ॥ प्रसन्न बदन लखिकै दिगीश ॥ अति हर्ष भयो चित विसे
 वीस ॥ ७५ ॥ ॥ राजा ॥ जैसो जाकी अन्न तनु, तैसी ताकी होत ॥
 आपनकी देखत नयन, सुधा स्वादु उहोत ॥ ७६ ॥

चौपाई ॥ मेरो अल्प सुकृत वरु केतो ॥ कहा होत ताको फल
 येतो ॥ अतिदुर्लभ दर्शन तुम देखो ॥ पुरिखनके ये तप फल लेखो
 ॥ ७७ ॥ सर्वसहन व्रत जो क्षिति राख्यो ॥ ताको आज सफल अभि-
 लाष्यो ॥ जो तुम चरण सरोजनिपूजी ॥ याते धन्य और नहिं दूजी ७८ ॥
 गंधाना ॥ जीतबहुँते अधिक आप चित जो कछु चाहै ॥ मोको सेवक जानि
 कृपा करि मुखहि सराहौ ॥ हौं कह कीवै योग आप समझत सब नीके ॥ पूजौ
 चर्णन अबहिं हीहिं अभिलाष जुहीके ॥ ७९ ॥ चित्रप ॥ भूपतिकी सुनि-
 वानी ॥ सत्य सुधारससानी ॥ वासवतौ छल कीनी ॥ कारजमें चितदी
 नो ॥ ८० ॥ इंद्र ॥ तारक ॥ दमयंति विवाहनको हम आये ॥ सब
 अंगन माँह अनंग सताये ॥ अब आपुन दूतपनो यह कीजै ॥ सिद्धि-
 कार्यकरि जगमें दीजै ॥ ८१ ॥ दोधक ॥ भूतलमें नल भूपति भारे ॥
 सिंधु तुहीं सब कूप निहारे ॥ जागतहैं नभमें ग्रह जोऊ ॥ भान समान
 प्रकाशत कोऊ ॥ ८२ ॥ तीनिहु लोकनको हम देखे ॥ तो गुणसिंधु
 अगाध विशेषे ॥ कारजमें तुमको परचायो ॥ तो हमहूँ चितमाँ सुख
 पायो ॥ ८३ ॥ सोरठा ॥ शुद्ध वंश गुण थान, सायक-सौ राजाकरचो ॥
 चहै चलायो आन, शक्र वक्र धनुसो भयो ॥ ८४ ॥ सुनि ये छल बल
 बैन, जानि भेद भूपति गयो ॥ किये रुखौहिं नयन, कुटिलनमें मृदुता न
 हित ॥ ८५ ॥ राजा ॥ छप्पय ॥ जगमें जेते जीव चित तिनके तुम
 जानत ॥ निजमति दर्पण माहँ तत्त्व सन्मुख पहिचानत ॥ मुख न मोनु
 हौं सजो, काजनाशै जेहि कीन्हे ॥ जो कहिके नहिं करै लाज ताको
 मनहीन्हे ॥ जो करन योग नहिं जासुके ताकी फरमायसि करत ॥ तुमही वि-
 चारि समुझौ सकल कहा लाभ यामें धरत ॥ ८६ ॥ मनहंस ॥ हम जात हैं तेहि
 व्याहको उत्साहसों ॥ तेहिसंग दूतपनो करै केहि राहसों ॥ तुमहूँ बड़े सुरनाहजू
 सरसातहौ ॥ हमको छलौ बिनलाभ क्यों न धिनातहौ ॥ ८७ ॥ तो-
 टक ॥ मनमोहत नाम सुने जेहिको ॥ चहुँ ओर न रूप लखै तेहिको ॥
 तेहिसंग करौं किमि दूतकथा ॥ केहिभाँति बनें यह योग यथा ॥ ८८ ॥
 सचैया ॥ राजे मनोरथमाहँ चटी निशि योसरहै तेहिकी छवि देखे ॥
 आस छुटै मुखपीरीपरै विरहागिबुरै सरकै सु विशेषे ॥ सो परतीति नि-

हारत ताहि न ज्यों रहिहै उर एक निमेषे ॥ कौन समर्थ विषैरस जी-
 तत रीतियहै जगकी अनलेखे ॥ ८९ ॥ ज्योतिनमें छरिया बरजैं जिनके
 डर जान न पैयत नेरे ॥ जैहों तिन्हें हनि भीतर तौ नहिं सों मिलिहै भयकै
 घरघेरे ॥ प्राणनलैं प्रणदान कोहै कहिदेत दधीचिहि आदि घनेरे ॥ प्रा-
 णनहूँते हजार गुणी दमयंति दिये न चहौं यशहरे ॥ ९० ॥ यांचतहों
 तुमसों करिपूजन मोहिं मिलै दमयंति सयानी ॥ लाज न आवतहै तुम-
 को अब सो विपरीति करौ ममवानी ॥ मोकहूँ तो पहिलैहि बरचो तिन
 जो तुम राजकुमारि बखानी ॥ देखतही हमको लजिहै भजिहै न तुम्हें
 यह मैं पहिंचानी ॥ ९१ ॥ दोहा ॥ ताते खेद न कीजिये, कृपाकरौ सुर
 नाथ ॥ हँसी होइगी काजनिहि, बिन उपाइ जनसाथ ॥ ९२ ॥ सोरठा ॥ सुनि
 नलके ये बोल, है अडोल गति देवपति ॥ कपट हरचो अतिलोल, रौरके
 मुख देखिकै ॥ ९३ ॥ इंद्र ॥ दोहा ॥ कहा कहउ ऐसे वचन, चंद्र
 वंश तुम भूप ॥ अंगीकृत करिकै फिरत, कौन धर्म कोहि रूप ॥ ९४ ॥
 मनोहरण ॥ यह जो विलोकतु है जगत ॥ निजकाल नाशहिको भगत
 तहँ धर्म यशको को तजत ॥ यहि भाँति तू हमको भजत ॥ ९५ ॥
 प्रद्धटिका ॥ जे वंशभये तेरे महीप ॥ तिन दान दिये बहु कुल प्रदीप ॥
 यक इंद्र आदि उपज्यो कलंकु ॥ तुम हूँ न गहौ तेहिरीति अंकु ॥ ९६ ॥
 जोकै कुदीठि मुख मूँदिलेहु ॥ लखि अर्थिन सों मानहु न नेहु ॥ तुमसे
 महीपको सो कलंकु ॥ जि मिशीत भानुमें शशक अंकु ॥ ९७ ॥ प्रद्ध-
 टिका ॥ तैं पद्म्यो वर्णन भैनवर्न ॥ कै भूल्यो पढ़िकै भूप कर्न ॥ यहि
 भाँति अर्थि जन चित्त चार ॥ सो करत आनि दोला विहार ॥ ९८ ॥
 इंद्रवज्र पायो घनो यौ यश शुभ्र तेही ॥ छोड़ौ न ताको सिखवो जो मैही
 कौने लह्यो ॥ यांचक और ऐसो ॥ सो देवराजा सुरवृक्ष जैसो ॥ ९९ ॥
 उपेन्द्रवज्रा ॥ मिटै न क्यों हूँ अभिलाष दैवी ॥ करै सदानंद सदा बनै
 बी ॥ तहूँ गन्यो है तेहि भाँतिको कै ॥ चहै तहाँ जाइ कोऊ नरोकै ॥
 १०० ॥ नामराज ॥ दोहा ॥ वीरसेनि कुलदीप तुम, तहाँ लग्यो
 तम आनि ॥ सोम वंश उत्पत्ति सम, तहाँ करत पहिंचानि ॥ १०१ ॥
 कामधेनु पशु कल्पतरु, कठिन महा तेहि पाश ॥ याचक विमुख

न होतहैं, कहा विचारत आस ॥ १०२ ॥ अन्यच्च ॥ मांगतदीजै
तुरतही, जीतबमें संदेह॥ खुलत मुदत फल व्यंग्यमें, यहै कहत गुणगेह॥
१०३ ॥ वरुण ॥ सवैया ॥ दाननिके जलधारनिसों सुक्तागण भूषण
संयुत जोहैं ॥ पूरण सादर चन्द्रमुखी बहु कीरति नौल बहू तुमसोहैं॥
कँवच अभेद तु चामयहौ अरु वज्रके स्थिन जो अवरोहै ॥ तेउरहे नहिं
कर्ण दधीचि कहा तुम धर्महिं त्यागिदियो है ॥ १०४ ॥ दोहा ॥ सत्य
पाश गुणसों बँधे, अजहूं चलत न नेक॥ विंध्याचल बलिराजये, धरे धर्म
की टेक ॥ १०५ ॥ हमपै मांगत और बर, ते हम मांगत तोहि॥ पूरिमनो-
रुथ एकुनहिं, सुयश सकल दिशि सोहि ॥ १०६ ॥ दूतबिलम्बित ॥
चलतबार सुमिरै तुम्हें कहूं ॥ मिलत मंगल ताहि अनेकहूं ॥ अफल
गौनु जोहोइ तुम्हें सुनौ ॥ निखिलमंगल तौ अफलै गुनौ ॥ १०७ ॥
मनहरण ॥ इष्टपै हमारी ते छु प्रतिकृत श्रुतिकरी यह श्रुतिके समान
ताहि जानियें बनाइकै॥धर्म अर्थ ताहि साजि अब महाराज आज अमितस-
कत अभिधान पांद पाइकै ॥ कीरति तिहारी तीनौलोकन पुनीतकरै एक
सेतताइको-हुकुम सरसाइकै॥ वस्तुनमें नील पीत हरितसुरुखरंग तिनमांह
रही अन्नतदात छबिछाइकै॥ १०८ ॥ छप्पय ॥ सहसचरण जे भानुपूत
तिनको शनि सोहै ॥ भयो पंक केहिदेत तासु छवि सुत अवरोहै॥याको उत्तर
आजलख्यो हमतो कह देखे ॥ नाघत तेरे तेज भयो रवि पंगु विशेषे ॥ यहि
भाँति चाटु वचना वचन मोहि लयो भूपाल मनु॥ वरजोर बिगारी पकरि
कै, पेदि धरी शिर पोठ जनु ॥ १०९ ॥ दोहा ॥ अंगीकार करयो जबै, दूत
भार नरनाह ॥ तब बोल्यो सुरनाह हँसि, मुदित भयो मन
माह ॥ ११० ॥ जहाँ तहाँ नृप रावरी, इच्छा ऐसी होइ॥ तहाँ तहाँ सब
लोकमें, तुम्हें न देखे कोइ ॥ १११ ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मंडित भूमंडला
खण्डल श्री खाँ साहब अली अकबर खाँ प्रोत्साहित गुमान

मिश्र विरचिते काव्यकलानिधौ सुर संगमो

नाम षष्ठस्सर्गः ॥ ६ ॥

दोहा ॥ सर्ग सातयेंमें कथा, कुंडिनपुर नृप गौन ॥ रतिपति
 विविध विलास में, दर्शन रावर भौन ॥ १ ॥ सोरठा ॥ नैषधपति
 सुर मित्त, रथ हँकवायो वेगिसों ॥ दूतकाज धरि चित्त । कुंडिनपुर
 सन्मुख चलो ॥ २ ॥ वसंत तिलक ॥ रोंके वियोग चल पावक
 ज्वालही में ॥ आन्यो दिगीश गण कारज साँचजीमें ॥ जैसे अगस्त्य
 जल सागर पानकीनो ॥ डबारा दीह वडवानलको न चीनो ॥ ३ ॥
 सवैया ॥ नलकी परनालि मिल्यो तियको रस पूर सवाद पियूषहि
 चाहैं ॥ अति प्यास भरे तेहिके सुर चारौ तहाँ नलको बहुबार सराहैं ॥
 लाइ रहे टकसी अनिमेष मनोरथ कैकै करें उतसाहैं ॥ भूषण आप भये
 तेहि देशके आगमकी पुनि हेरत राहैं ॥ ४ ॥ सोरठा ॥ कुण्डिनपुर मिसै
 आइ, भूमि इंद्र अमरावती ॥ रथ पहुँच्यो नगिचाइ, साधु मनोरथ सीवि ज्यों
 ॥ ५ ॥ हरिगीत ॥ दमयंतीके पगनि सो हैं कृतारथ गली यहि ग्रामकी ॥ मुख
 श्वास छाँडि उदास है सुधि आइकै सुर कामकी ॥ चषबाम अश्रु प्रमोद कंटक
 पद्मनू तनु भोगसों ॥ दृग दाहिनी फरक्यो तहाँ पुरदेखि नेहसँयोगसों
 ॥ ६ ॥ रथसों तहीं उतरयो महीपति वेगि कुंडिनपुर गयो ॥ जिमि सूर-
 मंडलते कढ़्यो चपतेज चंदहिमें रयो ॥ नलको स्वरूप अदृश्य है तब
 नेक नहिं लाखिकै परै ॥ तन माहँ आवत सकल छवि निधि ज्यों अनंग
 कला धरै ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ देखि देखि कुंडिनपुरवासी ॥ चातुर
 सुंदर विविधि विलासी ॥ भाँति भाँतिके भवन निहारे ॥ आश्चर्य नलके
 उरभारे ॥ ८ ॥ गाहत सुघर नगरकी शोधा ॥ छूटे मणि किरणनिके
 गोभा ॥ महामुदित मनमें तब भयो ॥ राजा राजद्वार जब गयो ॥ ९ ॥
 लीला ॥ चोरसों छिपिहीं चलो यह जानि चित्तलजाइ ॥ देखि द्वार
 ढलैतगण तब रहे मोह चढ़ाइ ॥ लालसा दमयंति संगम मानि होत
 हुलास ॥ दूतकाज विचारिकै करिलेत चित्त उदास ॥ १० ॥ मृदुगति
 नृपचलो सब नाधिद्वार ॥ निरखो न केहूँ तेहिबार ॥ चहुँ ओर देखत
 जात ॥ मनमें न नेकुसकात ॥ ११ ॥ सोरठा ॥ कौन जात यह ले-
 खि, काहूँ सों काहू कह्यो ॥ ग्रीव फेरि तेहि देखि, राजसिंधु विस्मित भयो ॥
 १२ ॥ कवित्त ॥ रावरमै उबटावतही इक अंग उधारि कछू मृग नयनी ॥

देखतही चब मूँदि लिये नृपत्यों इक आइ गयो पिकबैनी ॥ तासों अ-
चानक भेट भई छुटि औरु गंहो थलुकै मति पैनी ॥ लालच सों परस्यो
चहेताहि तहाँ बहु बार कटै मृगनयनी ॥ १३ ॥ तारका ॥
सब ओर खरी दमयंतिहि देखे ॥ यह कामप्रपंचनको फल लेखे ॥
तेहिते मन औरु लगै न कुमारी छवि तासु रही भरि नयनन भारी ॥
॥ १४ ॥ अ० ॥ तिन ओर निराशकरचो हियराहै ॥ सुरकाजहिको निह
चौ चितचाहै ॥ विरहागिनसों तनु छीन भयोहै ॥ तेहि देखत स्वाद विषाद
लयोहै ॥ १५ ॥ सवैया ॥ भ्रमकी दमयंति लखै जबहीं तब देव संदे-
शनको मृदुभाषै । सुनि वचन अद्रश्य तबै युवती मनमें डरि सोरु सबै
करिराखै ॥ लगि मारुत मन्द उडै अचरा झमकै कुचर्किकर नैसलखै ॥
मुख फेरिरहै नृप धीर धुरन्धर चोपचितै न चहूँ चष चाखै ॥ १६ ॥ बाल
नकी अवली गुणसों पुर अन्तरजाल मनोज पसारचो ॥ पै नृप नयन दुऔ
करसायल फांसिसक्यो न कितीकहि हारचो ॥ बांधिके केश हुती तेहिको
भुजमूल अतुल सुल्यो झमकारचो ॥ लेपति केसरी नाभिलिखी तब मूँदि
रह्यो दृगदूऔ विचारचो ॥ १७ ॥ अ० ॥ इतते इक जातिहुती उतते
इक आवतही तिन बीचगह्यो ॥ कुचकंचन डोल अडोल गड़े सुखसिंधु
सुवारि समाइरह्यो ॥ कछु चेततही अलगाइगयो निज अंगनको परितापल-
ह्यो ॥ पुलकी उत दोऊ मयंकमुखी सब देह प्रस्वेद प्रबाह बह्यो ॥ १८ ॥
तारक ॥ जितही जित भूपति होत खरचोहै ॥ तितही अद्भूत प्रकाश
भरचोहै ॥ तहई तहई युवती जुरिआवैं ॥ चकि मोहितहै कछु भेद
न पावैं ॥ १९ अ० ॥ युवती ॥ अलि लागत है गृह आजु
सोहायो ॥ जितही तित आनंदसों छबिछायो ॥ नहिं जानिपरै दुरि
कै सुर कोऊ ॥ विहरै इत यों कहूँ उत्सव होऊ ॥ २० ॥ दोहा ॥ मूँद-
ति बनै न खोलतै, नयन रह्यो अकुलाइ ॥ लखि बिलास यह आपनो,
आपुहि माँह लजाइ ॥ २१ ॥ तोटक ॥ तिय औरु जहीं दृगकोर करै ॥
तबहीं शर मारत मार और ॥ फलहीन न फूल भयो तेहिके ॥ करि धी-
रज पूजनको यहिके ॥ २२ ॥ प्रह्लाटिका ॥ यहि नारि संग नहिं भे-
ट होइ ॥ तहँ चलयो आप थल देखि कोइ ॥ चौपथह मध्य ठान्यो

महीप॥सब साध दरश परसन्न दीप ॥ २३ ॥ सोरठा ॥ तरुणी मुख-
 की ओर, हेर नयन मूँदे दुऔ ॥ प्रगट करी तेहि ठौर, सो शशि आप
 सरोज जहँ ॥ २४ ॥ हरि गीतिका ॥ चहुँ ओरते तरुणी चले नल
 कोगहँ न बनाइकै ॥ लगि अंग लौटि झुकत झहरत भाजती डरुपाइकै॥
 बहु बार कंदुक सोहन्यो नख रोटलै तिनहूँ तन्यो ॥ तिनहूँ घस्यो कुच
 चित्र कुंकुम सुरति जनु तेहि संग सज्यो ॥ २५ ॥ दोहा ॥ लखों
 हार हीरा ललित, प्रतिबिंबित नृप रूप ॥ हेरि रही हियरामनौ, करचो
 प्रवेश अनूप ॥ २६ ॥ तारक ॥ नृपके प्रतिबिम्ब न देखत मोहै ॥
 रमनी रतिसी सब सुंदर सोहै ॥ उमग्यो तनु आइ अनंग बिलासी ॥
 अलसाइ रही थकि नयननहाँसी ॥ २७ ॥ अब तौ तिनको डर छूटि
 गयोहै ॥ बिन देखतहूँ सब जीव भयोहै ॥ चहुँ ओरन दौरत ताहि निहारै ॥
 निज प्राणनकी तेहि ऊपर वारै ॥ २८ ॥ दोहा ॥ जहाँ लखै पद चिह्न सब
 दौरि जाइ तेहि ठौर ॥ चूमि चूमि आगे कहै, दे दर्शन शिरमौर ॥ २९ ॥ सोरठा ॥
 भ्रमत भ्रमत गृह माहँ, थक्यो भूप क्रश विरह वश ॥ शोधनिपै नर जाह, उच्च
 शिखर बैठक करी ॥ ३० ॥ सवैया ॥ हेम मराल तबै तसबीर दई
 हि नलै पहले लिखि जैसी ॥ आपु अटा पर हीनखसों दमयांति लिखी अति
 सुन्दर तैसी ॥ लालकी माल उतारि हरे तेहिको पहिराई दई उर वैसी ॥
 देखत झुंड जुरे युवती करमीजि पसीजि कहें यह कैसी ॥ ३१ ॥
 दोहा ॥ खेलत बालक पूर रज, राजत तहाँ सुवेष ॥ परत चित्र चित
 दोखे ते, चक्र वराति पट रेष ॥ ३२ ॥ सवैया ॥ द्वै तरणी नव आप
 समें अवलोकि सराहतीहैं सुघराई ॥ चानक बीच कळ्यो तेहिके छिन
 एक भई अति ओट सोहाई ॥ देखि परचो न कळू तिनको उमडी यक
 कौतुककी सरसाई ॥ हेरि हँसै हरषें ससवाहि डेराहि भजें इमि धूम
 मचाई ॥ ३३ ॥ अ० ॥ एक खरी उत ओर करी तेहिको इतते यक
 गेंद चलाई ॥ आनि परचो तेहि बीच महीप गिरी लागि अंगनसों उल-
 टाई ॥ लागि अकास गिरी यह गेंद रंगी रंगकेसरिसों छबि छाई ॥
 हाहा अचम्भो बडो सजनी जन लागत पूर पियूष नहाई ॥ ३४ ॥
 दोहा ॥ द्वै अदृश्य पुर पुर फिरत, मणि प्रतिबिंब अनेक ॥ योगीसों

राजत तहाँ, बडों वियोगी एक ॥ ३५ ॥ युवती ॥ सवैया ॥
 मैं तौ छुयो सखि कोऊ युवां हम छाँह लखी इत मानुष कैसी ॥ बोलतसो
 परख्यौ हमहूँ मणिमें प्रतिबिंबत मूरति तैसी ॥ आपुस माहँ करैं चरचा चित
 अद्भुत भाँति भई यह ऐसी ॥ बेगि बराइ चलयो तितही जितहीं जितको
 रुचि सों मतिपेधी ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ राजसदन सो नृपसुता, आव-
 तही तेहिवार ॥ हेमछरी कर सहचरी, सोहत संगहजार ॥ ३७ ॥
 सवैया ॥ कोऊ गुलाबलै लै छिरकाउ करै समुदे मणि मारग झारै ॥
 कोऊ करै चहुँ ओर निचोरनि भौरनकी कोउ भीर निबारै ॥ चोसरिचीरु
 सुगंधि लिये सखियाँ संगराज सुता सरदारै ॥ आवैं अनूप गलीमें चली
 तेहि प्राणपियारी अली परवारै ॥ ३८ ॥ देखि समाज छक्यो नृपछैल
 रहो तेहि गैल लोभाइ अकेलो ॥ देखत है भ्रमको यौ ठाट उचाट करै
 चितमो अलवेलो ॥ भ्रमको नलदेखि (दमयंति) जहीं निजहार उतारि
 नयो गहिकै गल मेलो ॥ बहु आइ छयो नृपके हियमें परि यों तिनमें
 अति कौतुक फैलो ॥ ३९ ॥ सोरठा ॥ साँचमाल हियलागि, सुख
 अद्भुत भूपति छक्यो ॥ जागि उठी विरहागि, मनौ कुंड आहुति परी ॥
 ॥ ४० ॥ लसत एकही ठाम, लसत दुऔ तिसैरतसो ॥ करत अचंभो
 काम, दइय काम कैसो भयो ॥ ४१ ॥ सवैया ॥ दमयंति यही नृपको
 परस्यो सरस्यो उत अंतरसेकुसोहान्यो ॥ थहरी नवबाल ज्यों ताल
 मृगी चितई चहुँधा न कहूँ ठहरान्यो ॥ सुखसिंधु अथाह परचो पुहुमी
 पिउछाह भरचो छिन एक वितान्यो ॥ लखिचेत लग्यो झखकेत जग्यो
 तब स्वादुभरे उनमादु बखान्यो ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ साँच मिलहिं झूठो
 गनहिं, साँची भाँति लांभाहिं ॥ दोऊ द्वै ता बाट रत । टरत तहाँते नाहिं ॥
 ४३ ॥ प्रह्लाटिका ॥ इमि करतकला अभिराम काम ॥ धरि धीर गई वह
 बाम धाम ॥ नृप भ्रमत लह्यो ताको अवास ॥ मणि लसत कँगूरा
 लगिअकाश ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ जरी चंदवाके तरे, मखमल गदी
 विशाल ॥ आस पास झालरि लगी, हीरा मोती लाल ॥ ४५ ॥ उच्चसिं-
 हासन पै शची, सोहत राजकुमारि ॥ खरी खवासैं रसभरी, जनु उतरी
 सुरनारि ॥ ४६ ॥ तोटक ॥ सखियां सतलाख तहाँ थितहैं ॥ रसरंग

विलासनमें चितहैं ॥ नृप मोहिंरह्यो लखिकै परभा ॥ रतिकी सरसै रनि-
 वास सभा ॥ ४७ ॥ सवैया ॥ बाजत तार पंखाउज वीन नवीन प्र-
 बीन सबै मदमाती ॥ गावती गीत सनेहसने करिनाच कला अतिही इत-
 राती ॥ भौंहनिमें दृगकोरनिमें मुसकयानिमें भायनिको सरसाती ॥ डो-
 लत बांह चुरीखनकैं चमकैं अचरा झमकैं खुलीछाती ॥ ४८ ॥ तोमर ॥
 पिकवेणु वीन निहारि ॥ यहि कंठसों गहिहारि ॥ धरि तीन रेख अनूप ॥
 वरणी तबै यह भूप ॥ ४९ ॥ अ० ॥ दमयंति ले नल राज ॥ तुमको मि-
 लै वह आज ॥ सुनि सारिका मुख यह ॥ नलको कँप्यो सब देह ॥ ५० ॥
 हमको लयो इन जानि ॥ नहिं है मृषा सुरवानि ॥ तहँ बैठिकै नृपवीर ॥
 तब यों धरयो हियधीर ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ आलीजन ये सीखये, मेरो
 नाम सुनाय ॥ समाधान यों करतहैं, वेई बैन पढ़ाय ॥ ५२ ॥ भानमती
 मालिनि तबै, आइ बेलि शृंगार ॥ दूरिहिते क्षिति शीशङ्खै, किये हार उप-
 हार ॥ ५३ ॥ सवैया ॥ स्वांग स्वयंवरको सखियां करि एकहि लै नल
 वेष बनाई ॥ एक करी दमयंति खरी सुथरी किनहूँ नलकीरतिगाई ॥ मो-
 हितहैं उमड़ी उतको वह ह्यां यह राजकुमारि लजाई ॥ घूँघटही मुख
 फेरि हरे झिझिकातही माल पियै पहिराई ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ शशि
 बदनी अभरक तिलक, कह्यो शशी तिय एक ॥ लखत सखी मुख चन्दु
 जहँ, राजत चंद्र अनेक ॥ ५५ ॥ मालिनी ॥ अति चतुर चितेरी
 चित्रनी नारि राजें ॥ सब मिलि दमयंती रूपको चित्र साजें ॥ कर
 लिखत न आवैं कोलको लेखि डारें ॥ कुबलै लिखि पारै नयन के ला-
 खहारें ॥ ५६ ॥ नित नित परबीनै किन्नरी साजि आवैं ॥ मिलिमिलि
 दमयंती संग वीणा बजावैं ॥ रचि रचि सिखरामै नाचकी चालचोखी ॥
 कुहँकि कुहँकि गावैं रागिनी लै अनोखी ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ अरध चंद
 नखचुंबिकुच, लखी सखी यकतासु ॥ बन्यो नेवारा काम जनु, छति-
 यां सब रसबासु ॥ ५८ ॥ लक्ष्मीधर ॥ कामके चापको योगु पामें
 जहीं ॥ आनिकै आलिको ह्यो बिदारें तहीं ॥ हारके व्याजसों फूल आ-
 ने जिते ॥ सूचिसों भेदि डारै सहेली तिते ॥ ५९ ॥ तोटक ॥ दमयं-
 ति उरोजनपै रचना ॥ यक आलिकरै मतिकी सचना ॥ नलके करकी

तसबीर नई ॥ लखि पंकजकी उन खैंचि दई ॥ ६० ॥ चंचरी ॥
 खेल चौपरिमें कह्यो इनि सारिका यहि चाहसों ॥ सारिका विनती करी
 सुनिकै हँसी सब आँइसों ॥ पान दान सुवर्णको दमयंतिके अति
 पासहै ॥ हेमहंसरह्यो इहाँ करि दूतका जु निवासहै ॥ ६१ ॥ दोहा ॥
 ललित लुनाई की लहरि, राजत सभा अनूप ॥ दमयंतिहि प्रगटित करै
 वई अलौकिक रूप ॥ ६२ ॥ तारक ॥ नलकी तसबीर लिखी सब
 ठाई ॥ तिनमें प्रतिबिम्ब परै बहुधाई ॥ तिनते कछु सुंदर
 आजुहि सोहै ॥ कहती यह देखि तिया मन मोहै ॥ ६३ ॥ दोहा ॥
 दहन शमन सलिलेंशकी, दूती दई निकारि ॥ वचन रचनसों तिन जऊ
 करी बडी मनुहारि ॥ ६४ ॥ देखि अनादर आपनो, दूती भई निराश ॥
 नल दमयंती व्याहकी, फेरि धरी चित आस ॥ ६५ ॥ प्रह्लाटिका ॥
 दमयंति लखी जब सुचित धाम ॥ उठि इंद्र दूतिका किय प्रणाम ॥
 कर जोरि करी विनती अपार ॥ मन मुदित भई सखियाँ हंजार
 ॥ ६६ ॥ दूती ॥ अ० ॥ लिपि देवलोककी भूमि थान ॥ पठि सकत
 कौन ऐसा सुजान ॥ यहिते मोहिं पठयो है सुरेश ॥ तेरे समीप कहिकै सँ
 देश ॥ ६७ ॥ करिकै कृपा दग कोरहेरि ॥ धरि काननेकु यह विनति
 मेरि ॥ कहि कंठ अंग मिलिकै सुरेश ॥ तुअ कुशल क्षेम बूझी
 सुदेश ॥ ६८ ॥ तन जग तेरे अनुराग तोम ॥ संदेश कह्यो इक
 रोम रोम ॥ तुव विरह शचीपति भयो दीन ॥ निशि झौसरहै तन मन
 मलीन ॥ ६९ ॥ सवैया ॥ ज्यों अकुलाइ उठै जबहीं तबहीं लगि
 आइ कहै यह जासो ॥ भीम महीपतिको चलिकै नहिं माँगत क्यों
 दमयंतिहि तासो ॥ ह्याँ लगि आइ सकै नहिं लाजसों है न परै
 कल बागतमासो ॥ साइ गरो पुरहूतको प्रेमिनि बंधि स्वयंवर
 फूल इरासो ॥ ७० ॥ दोहा ॥ क्षीरधि मधि सुरसी कटी, या
 अनुराग निमित्त ॥ फेरि मथन जन वै करें, याके व्याह सुचित ॥ ७१ ॥
 चंचरी ॥ तीनि लोकनमें बढ्यो दिवहै तहाँ सुर जानिये ॥
 है बडो तिन माहँ बासव वेद बात बखानिये ॥ दास होन
 चहै चहौ तुव रीतसों अनुरागकी ॥ धन्य राजकुमारिदू ठकुरायनी अनु-

रागकी ॥ ७२ ॥ सोरठा ॥ शत मखको पदपाइ, करत खुशामदि
 राखरी ॥ मानिलेहु करि भाइ, भौंहलास लीलाललित ॥ ७३ ॥ कवित्त ॥
 देवनदीतट नंदनवागमें जाइ सोहाग विहाग विहारौ ॥ घौर जेठानी मिलौ
 लक्ष्मी तुम पैन्हिके फूलनके बलिहारौ ॥ चातुर सुन्दर चोपभरचो तहां
 देवरु कान्ह हँसोरु तिहारौ ॥ मान मरौरि शचीको अहै तुम ये मुखराज-
 कुमारि निहारौ ॥ ७४ ॥ मायाछंद ॥ लीलाहीसों बासवजीमें अनु-
 रागौ ॥ तीनौ लोक पालत नीके सुखपागौ ॥ जो जो चाहौ तुम वासों
 लीजौ ॥ कीजै मेरीओर कृपासो सरभीजौ ॥ ७५ ॥ प्रमिताक्षरा ॥
 नित पूजि चित्त परणामकरौ ॥ जिनको सुध्यान जियमाहँ धरौ ॥ करिहैं
 प्रणाम तुमको सुरवै ॥ विधि इंद्रसंग जबतौ जुरिवै ॥ ७६ ॥ दोहा ॥
 करीबिनति करजोरिकै, रचि रचि बैन विशाल ॥ गुदरानी तेहिदूरिते,
 पारिजातकी माल ॥ ७७ ॥ अतिआदरसों नृपसुता, पासै धरी उठाइ ॥
 पूरी सब आशासुरभि, नल आशा बहिराइ ॥ ७८ ॥ ॥ दमयंतीकी
 सखी ॥ सवैया ॥ और विचार करौ न कछु अब आपुबड़ी तुमहौ
 सुखदायनि ॥ काहूँ कह्यो यहुतौ समयोगहै मानु सखीहैं गहौं तुवपायनि
 काहूकह्यो यह उत्तरहै हँसिकै अबहीं कहिये ठकुरायनि ॥ कोऊ कहै यह
 मंगलकाज कहा मनमौन गह्योहै गोसायनि ॥ ७९ ॥ दमयंती ॥
 इंद्रमाला ॥ हौंतो वचन अधीन तिहारे मोहिं कहा कहिआवै ॥ सुनिकै
 मुदित भई सब सखियाँ दूती मोद बढ़ावै ॥ देखत खड्यो तमासा भूपति
 रूप अनूप लोभान्यो ॥ मिली न प्राणाप्रियामोंको सुरदूत काज नहिं
 आन्यो ॥ सोरठा ॥ दमयंती मुसुक्याइ, अधरकोर उज्ज्वल करी ॥ ऊतरको
 समुहाइ, मालाको परिणाम करि ॥ ८१ ॥ दमयंती प्रहटिका ॥
 तुअवर्णै बासव गुण उदार ॥ यहु कह्यो परम साहस अपार ॥ को इन्द्र
 बढ़ाई करन योग ॥ कछु देव बखानत वह प्रयोग ॥ ८२ ॥ जोर्जतु
 जालके चित्त होइ ॥ सब जानि जात सर्वज्ञ सोइ ॥ तेहि उत्तरदीजै
 कौन भाँति ॥ जेहि होइ आनि मम चित्त शांति ॥ ८३ ॥ दोहा ॥
 जो आई सुरनाहको, नाहिं करै जग कौन ॥ मै अज्ञान अपमानवच, कहत
 समै सुर तौनु ॥ ८४ ॥ सवैया ॥ दिगपालनके सब अंशमिलैं बहु भू-

पति देव स्वरूप सोहायो ॥ तेहिको मिलिहों करि व्याह उछाह भयो यह
 वासवको मनभायो ॥ कहि चाटु उचाटु करें कत तैं चित शैल सतीनको
 कानै चलायो ॥ नरको बरिहों डरिहों न तऊ नलको बरिहों यह भैं ठहरायो
 ॥ ८५ ॥ रथोद्धता ॥ में विचारि पहिलोहि जासुको ॥ चित्त माहँ पति
 मानि तासुको ॥ इन्द्रव्याह हमको न भावतो ॥ धीरज सुख जग ज्यौं न
 लावतो ॥ ८६ ॥ चौपाई ॥ भरतखंड नव खंडन माहीं ॥ पर पावन
 वर्णत बहुधाही ॥ में गृहस्थ आश्रम निरबाहों ॥ पति सेवाको धर्म सराहों
 ॥ ८७ ॥ स्वर्ग लोक केवल सुखसाजै ॥ धर्म कर्मकी रीति
 नराजै ॥ घरनि माँह पावत वै दोऊ ॥ तजै जानि तिनको नहिं कोऊ
 ॥ ८८ ॥ दोहा ॥ दान दया मष सत्य शुचि, शील साधु संतोष ॥
 इन हूँ ते सुर मुदित द्वै, उदित करत नहिं रोष ॥ ८९ ॥
 संयुत ॥ सुरलोकते क्षितिको गिरे ॥ निज छीन पुण्यनिसों घिरे ॥ नर
 भूमिते उतको चले ॥ निज वारु कर मणि सों फले ॥ ९० ॥ दोहा ॥
 गिरत चढत यहि भाँतिसों, सुर नर सब संसार ॥ परत दुओ कर
 सरकरा, हानि लाभ अनुसार ॥ ९१ ॥ प्रह्वटिका ॥ कहि दूति संग
 इमि अर्ध वयन ॥ सहचरिन ओर लखि कोर नयन ॥ तब बोलि
 उख्यो बातें उदार ॥ जनु बाजि उठी वीणा सितार ॥ ९२ ॥ यह है
 अनादि संसार सिद्ध ॥ तिय पुरुष योग यामै प्रसिद्ध ॥ तुम सबै बडी
 ही हौ अधीन ॥ यासों विचारि चित कहा कीन ॥ ९३ ॥
 तारक ॥ सब जीव अदृष्ट अधीन बखानौ ॥ केहिकूमहि काहि
 उराहन आनौ ॥ जड रूप अदृष्ट झुकै तेहि कोऊ ॥ मुख के समको
 फल पावत सोऊ ॥ ९४ ॥ मोदक ॥ कोमल ईष न ऊँटहि
 चाहति ॥ ऊँटन कोमल ईष सराहति ॥ आपनकी रुचि जामहँ पावत ॥
 प्रीति तहाँ हठिकै उपजावत ॥ ९५ ॥ मनहंस ॥ गुण इंद्रके हियेको
 हरै बहु भाइसो ॥ नलको सनेह बढै तऊ चित चाइसो ॥
 जिमि ब्रह्मको सुखपाइ पूरण मानिकै ॥ नहिं चित्त लागत लोगके
 सुख आनिकै ॥ ९६ ॥ दोहा ॥ कीट आदि कैटभ मथन, लघु जगमें
 यह रीति ॥ निज रुचिके अनुसार सब, करति सबनसों प्रीति ॥ ९७ ॥

प्रह्वटिका॥यहि भाँति करचो सबको प्रबोध॥ तजि दयो सब न मनको
 विरोध ॥ उठि इंद्र दूति शिर धुनि अपार ॥ फिरि चली विलखि मनमें
 हजार॥१८॥ सुनि छिपे रूप ये वचन चारु॥ उर फिरिकि रह्यो नृपकी शृंगार
 मम मुदित भयो सुखसिंधु न्हाइ॥ दमयंति नेह गुण सों लोभाइ १९॥
 इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड पंडित भूमंडला
 खंडल श्री खाँ साहब अली अकबर खाँ प्रोत्साहित गुमान
 मिश्र विरचिते काव्यकलानिधौ दमयंती दर्शन
 नाम सप्तमस्सर्गः ॥ ७ ॥

दोहा—सर्ग आठयेंमें कथा, नख शिखरूप विचारि ॥ वर्णन राज
 कुमारिको, नल दर्शन निरधारि॥१॥ सौरठा॥ दर्शन मिलन विचारि,
 प्रथम मनोरथ बल्लवित ॥ देखत राजकुमारि, सो नृप हिय फूल्यो
 फल्यो ॥ २ ॥ तोटक ॥ पहिले तिय अंगनमें मिलई ॥ पुनि आनंद
 सिंधु समाइ गई ॥ फिरिकै सुखके अँसुआनि छई ॥ यहि भाँति भई
 नृप दीठि नई ॥ ३ ॥ मनहरण ॥ भावतीको आनन सुधाधर निहा-
 रतही उमळ्यो उदाधि उर भारि अनुरागको ॥ उंचे कनकाचल कुचन
 चढि गई दीठि पायो अवलंब थलु फलु भाले भागको ॥ मगन भई धौं
 रूप पानिप पियूष महा उरजद बीच दबी देखि मगु लागको ॥ गिरति
 गिरति चढि तटते गई लिपटि लखत लखत रंगरूपरस रागको ॥४॥ तोटक
 कुचके चहुँ ओरन दीठि फिरै ॥ परभा झर चक्रन आनि फिरै ॥ सब
 ओर लिप्यो मृगमेदमहा ॥ तम हेत भयो दिग भेद कहा ॥ ५ ॥
 भ्रमचक्र नितंबिनिसों ढरकी ॥ नलकी तब दीठि हिये उरकी ॥ युग
 जंघनि रंभ सु थंब बने ॥ थिर है गहिकै अवलंब घने ॥ ६ ॥ भुजंग
 प्रयात ॥ धरचोको नाम है नित्र जैसो ॥ कहै मेरहूँ नामयो नेत्र
 तैसो ॥ मिलै अंगमोसों न क्यों भाति बाकी ॥ लगी पाँइ याते मनौ-
 दीठि ताकी॥७॥ दोहा॥ नयननसों पीवत छक्यो, आसव रूप अनूप॥
 आनंद अद्भुतसों भरचो, तब वर्णन मन भूप॥ ८ ॥ चुलिया ॥ होइ
 विरंचि मनोज जो कैधौ मेरो चित्त मनोरथ॥ बनै न तौ या भांतिको रूप

अनूपमनो हांस पथ ॥ ९ ॥ गीत ॥ उपजी धराधरसों तरंगिनि है
 पिषूष शृंगारकी ॥ यह पूर योवनको लसै कुच कोकलोक विहारकी ॥
 यहि मांहराजत कामहै निज काय व्यूह बनाइके ॥ अति अंग मूरति दे-
 खिये बहु रंगकी छबि छाड़के ॥ १० ॥ सवैया ॥ कनकाचलकी स-
 रिता सर कंचन कमलके साँचेनसो भरि काढ़ी ॥ सब राकासे अंग अनूप
 लसै छहरै छबि एक घटीनहिं बाढ़ी ॥ विधि और स्वरूप तिया जे रची
 यहि ते तम सौदनिकी मति गाढ़ी ॥ तरुणी सुघरै अब जे रचिहै तिन जी-
 तनको यह ऐंठति ठाढ़ी ॥ ११ ॥ सुंदर जे उपमान नये इन अंगनसों
 सब हारिगये ॥ ये न मलीन भये मनमें तनिकौ अतिही परसन्न ठये ॥
 याको बखान करैं कविता युतिके रस अद्भुत भाव छये ॥ देहैं बड़ाई
 बड़ी हमहीं ते यही ते महा सुख मानिलये ॥ १२ ॥ दोधक ॥ देखत
 मोह करैं बहुतेरे ॥ या उर अवगुण जातन नेरे ॥ देखनके भय डोर नपामै
 आनि बसै सिंगरे गुणयामै ॥ १३ ॥ तोमर ॥ करहाटक काँति कठो-
 र ॥ धिनसी लगै तेहि ओर ॥ केतकी की युतिमूल ॥ मुखमेलि छार
 समूल ॥ १४ ॥ तारक ॥ शिखिपक्षनि सोहत चंद्र घनेरे ॥
 याके कच जीतत ताकहैं हेरे ॥ मुख जीतत है शशि एक सोहायो ॥
 तेहिते निज ऊपर बास बनायो ॥ १५ ॥ दोहा ॥ याके मुख शशिशो-
 भज्यों, अन्धकार चहुँओर ॥ राख्यो पीछे बांधिजनु, केशपास छलजोर ॥
 १६ ॥ मनहरण ॥ सघन तिमिर घन तार मरकतहार सोहत शृंगारधार
 सरससमाजके ॥ छहरतछबिलूटि छूटत छुवतक्षिति मोहकैसे मारग विमल
 सुखसाजके ॥ बेलिकी सुवास फैलिरही आसपास दौरि भौरि गुंजरत पुंज
 लोभ चोज चाजके ॥ मोतिनसों गूंधे प्राणप्यारीके चिकुरचारु चाबुक
 लसत तुरि मयन महाराजके ॥ १७ ॥ सवैया ॥ कामको चाप कलूक
 जरयो लखि ईश कह्यो युग टूक नवीने ॥ वेगहि आप विरंचि रची भुकुटी
 कुटिलै अतिही चितदीने ॥ कामके चापको कामकरै तिसहूँपर ये तेहिको
 मत लीने ॥ देखतही हियको हठिबेझहि झूमतिघूमि गिरैं परबीने ॥ १८ ॥
 दोहा ॥ या मुखहै कर शशितजी, सांवल रेख सुभाइ ॥ काम चाप गहि
 विधु दुऔ, भौहैं दई बनाइ ॥ १९ ॥ चर्चरी ॥ तीनिबाणनसों तिहंपुर

जीतिकै बहुभाइसों ॥ द्वै सरोजनसों रचे दमयंतिके दृग चाइसों॥ भौंहको
 धनुपाइ कांड कटाक्षकोरनिसों कदै ॥ भेदिकै तन ज्ञान धीरज चित्तमोह
 महाबदै ॥ २० ॥ दोहा ॥ पूरिरहत मोतेमनौ, राते कोर सोहात ॥
 याकेसे याके लसत, नयन सांवरे गात ॥ २१ ॥ हरिगीत ॥ जेहिभां-
 ति खैंचत रंभकेदल लेत सार सुहाइकै । तेहिभांति कमलनसों लयो
 गहि रूपसार बनाइकै ॥ तेहिसों रचे यहिके विलोचन लोकनाथ
 लोभाइकै ॥ २२ ॥ दृग भौर देखतही रहैं छकि मोह सों सरसायकै ॥
 सवैया ॥ या दृगते जनु नयनशिरी हरिनीन उधार लई
 सविलासै ॥ मांगिलई तिनको डरपाइ करी कछु चंचल
 भौंह प्रकासै ॥ व्याजसों बाढ़ि अनेक बढीं तब जाइ चढी
 लगिदीठि अकासै ॥ कोरनसों विहँसै बतराइ लजाइ करै जुरि जोर त-
 मासै ॥ २३ ॥ दोहा ॥ याके दृग मृग अति चपल, दोरन मिलत स-
 प्रीति ॥ करण कूपकी भीति इत, उतनासीकी भीति ॥ २४ ॥ सवैया ॥
 सिंसुक फूल न तूललगै शुभ उन्नत वंश जगे गुण भारे ॥ छूटि सुगंध रहे
 चहुँ ओरन भौरनके गण होत सुखारे ॥ मोरत कोरत चैनथुनी मुक्तागण
 भूषण संग सितारे ॥ मानिकी वानिसजै अबही यह नासिका देखतही
 हम वारे ॥ २५ ॥ दोहा ॥ संध्या जनु मुख चंद दृग, राजत अधर
 सुवेष ॥ फूलेपंकजमें मनौ, युग ईशुरकी रेष ॥ २६ ॥ दोधक ॥
 ओंठनकी समता नहिं पावैं ॥ विम्बके तीरन चित्त चलावैं ॥ बिंबसदा
 द्रुम देश विराजै ॥ विद्रुम ओंठनिकी छविछाजै ॥ २७ ॥ सवैया ॥
 लालजरी पट ओढ़नी सों सब ओरन बेनी झमी सुथरी है ॥ मानहु सूरयकी
 परभातम पै यक बारहिं आनि परी है ॥ मालती माल मिलै मुकुताबि
 चबीच लरी गुंदिनेह भरी है ॥ शीशसुमेर समीप मनौ रस हासभृंगारकी
 धार अरी है ॥ २८ ॥ शीशते बेनी छुटी यक वारजुंसाँवरी नागिनिसी
 लहकारी ॥ फैलि गयो अँग अंगनमें विष ज्यों मिसुकै हमनेकुनिहारी
 लालनकी गुंदि मालनसों मन लागत साँचहु हेम निहारी ॥ ज्यों मुख
 चंद्रसुधा चुहकी कुहकी बतियाँ त्यों भगी भय भारी ॥ २९ ॥ छूटि
 लिलाट रहीं अलकैं झलकैं विच वीचकली मुकतानकी ॥ रैन अं

ध्यारी मनौ मिलि तारेन चंदपै वारत है सुखदानकी ॥ वेसं
रिसों उरझी लट एक चलाचल चौर समीर निधानकी ॥ मोर
मनौ बरजोर जुरचो गहि ऐंचत नागिनि बैरनिधानकी ॥ ३० ॥ बोरे तैंबो-
ललसैं अधरा मनमोहतहै दुगुनी परभाहै । आननओप सुधारससागर
विद्रुमरंग तरंगचलाहै ॥ लालनकी किरणें सब सूधि सुहावनीरेख सुवेषरही
है ॥ याकी गुणी चतुराई विरंचि विचारिरची अनुरागमईछै ॥ ३१ ॥
ऊपर हाँस लसै झलकै छबि ओंठन भीतर म्यान तहीसी । हीरनकीद्युति
जीरणहोति निहारत सुन्दर रूपवतीसी ॥ माणिकरंग रंगीरसना सुख
मानिकै आनि सुवानि वतीसी ॥ दौरति श्वास सुगंधिनसों सब ठौरनि
भौरनि भीर भरीसी ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ सिरस कुसुम कोमल अमल, याके
अंग सँवारि ॥ मृदुताकी रचनाकरी, पूरी वचन विचारि ॥ ३३ ॥
सवैया ॥ कंठमेंबैठि वजावत वीन प्रवीन सुधारस गावतिवानी । वेईकहैं
मुखहै अखरा सुवशीकर मोहन मंत्र निसानी ॥ कोकिल मोर मल्लिंद
मराल लजावनकी जुगुतै पहिंचानी । मूरछना उघटैं उतवे इतमोहिद्य
मूरछना सरसानी ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ सुखदेख्यो विधु चिबुक गहि,
याकोरच्यो बनाइ ॥ अंगुलिगाढ़ गड़ीमनौ, साँवलविंदु सुहाइ ॥ ३५ ॥
सवैया ॥ फूल्यो मनौ परभातको पंकज अंजनविंदु लग्यो तलताके ॥
रेखकलंक समेटि मनौ शशि बैठिरह्यो हाँसि ऊपर वाके ॥ मोहन
मंत्र लिख्यो किधौं मैन सुवीच विराजत रूपरसाके ॥ नीलमकी
किरचीसम साँवल ठोढ़ीम विंदु लसै नवलाके ॥ ३६ ॥ दोहा ॥
मोमन मत्त गयंदको, गह्यो चहतचितचाड़ ॥ रूपखेतमें हेतसों, मयन लगाई
गाड़ ॥ ३७ ॥ सवैया ॥ श्रवण झुकैं झुमका अतिलोल अमोल जराइ
जरे जरबीले ॥ गोलकपोलनपै झमकैं समकैं न सकैं करहाटकुचीले ॥
मोहि गयो मन देखतही उपमा अवरखत चित्तरसीले ॥ पूरणद्वै शशिसों
मिलिकै उदये जनु द्वै रविरंग रंगीले ॥ ३८ ॥ मनहरण ॥ हेरे सुरति
हरत मन मोहितकै मोहनीकै आयरसे बोलत सुभाइकै ॥ हाँसीकी झ-
लक लखियतु है सुभग छबि भरचो अभिमान रह्यो हारन सोहाइकै ॥
श्रुति सुखदेनी गीत गमक प्रवेनी तेरी कंठकी सहज हित ध्वनि सुनि

पांइकै॥ बाणीबीन तोरै तार नरद मिरोरै नहिं बोलै करि सोरै कहूँ कोकि
 ल बनाइकै ॥ ३९ ॥ सवैया ॥ तैसी नचैं भुकुटी लट छूटत साँटचलै
 मिलि मैन गुनीकी॥ रंगभरी विहँसैं अँखियाँ निरखैं दुरि औ झलकैं वरु-
 नीकी ॥ नेक मिरोरतही थहरैं गतिलै छहरैं छबिलाल चनीकी ॥ वैनन
 मैनको बैनबजै यह नासिका रासथली नथुनीकी ॥ ४० ॥ कैसे विरंचि रचे
 कुचये नहिं दीठिसकै तकि पुंज प्रभासों ॥ लालजरी अँगिया पहिरी
 बरनी न परै गहिरी छबिवासेँ। बाहुलतानमें आनिकसे मोहरान लसैं भु-
 जबंद झबासों ॥ साँझ समय शशिभोरके भान समान छुटैं किरनै छति-
 यासों ॥ ४१ ॥ बंदन विंदु लिलार लसै रसको बरषे सरसै रँगदून्यो॥भाग सु
 हागकी लालगदी जगदी विचकुं कुमकी चित चून्यो ॥ औरन ऐसी लखीन
 सुनी रतिसी तरुनी हियमानाति ऊन्यो ॥ केशनसेँ उतहोत कुहू इत आन-
 न सों मन लागत पून्यो ॥ ४२ ॥ फूलि रहे दल पंकजपै जनु इंद्र
 वधूनकी पाँति घनेरी ॥ चूनरि चारु मनौ रतिकी रँगि रंग कुसुम बुटी
 बहु तेरी ॥ बैठक लाल गदी मनौ कामकी जोरि गुनीन चुनीन
 चितेरी ॥ वुंदनसों मेहँदी बिलसै मनहाथ रहै नहिं हेरि हँथेरी ॥ ४३ ॥
 माणिकसे नख कोरनकी किरणें सम हीरनके परमानो ॥ विद्रुम अंकुर
 अंगुरि पानि चुरै रँग सुन्दरता सरसानो ॥ छाप छला मुँदरी झमकैं
 दमकैं पहुँची गजरा मिलि मानो ॥ जाहिर या कर माँह करचो रतिको
 सब जीति जवाहिर खानो ॥ ४४ ॥ गोरे उड़ान रही खुभिकै चुभिकै
 चित माँह बडी चटकीली ॥ नीलम तार मिही सुकुमार रँगी रचि कंचन
 बेलि रँगली ॥ चञ्चल है मिलि कंकन संग कहै रति पावति यानि
 रसीली ॥ मूरति सी रसराजकी राजत नवलबहू कि चुरी नवनीली
 ॥ ४५ ॥ काम विरंचि विचारि रचे सिंगरे रँग चम्पक अंग सँवारे ॥
 विद्रुम बिम्ब बधूकनसों अधरा नख औ तरवा छविवारे ॥ कोमल पाँइ
 मनोहर हाथ औ आनन सुंदर लोचन भारे ॥ फूलेइ फूले सरोजन सों
 सजि कै कुचमें कलिका करि डारे ॥ ४६ ॥ फूली रसाल लता तनुता
 पर पाँति मिलिदनिकी छबि छाई ॥ कुंदनकी पटुली मृदु ऊपर मानहु
 अंजन रेख सुहाई ॥ बीस बिशेविषफैलि गयो दग रोम लता उरमी

दरशाई ॥ पीछे परी छुटि वेणी मनौ उर आरसी में प्रति बिम्बित पाई
 ॥४७॥ चंचल अंचल होत जहीं सजनी जन वीजन पौन डोलाई ॥ केस-
 रि रंग तरंग बढी दुहुँ ओर कढ़ी कुचकोर सोहाई ॥ कंचुकी ऊपर जाहिर
 होति जवाहिरसी छतियाँ छबिछाई ॥ द्वै शशिखण्ड मिले रविमण्डल
 मानहु फैलिरही अरुनाई ॥ ४८ ॥ चौंसरि हीरनकी उरराजत राछनि-
 सों मुक्ताविचसाजै । कण्ठसों हांसी परी छन मानहु फैलिरहे सब बिंदु
 बिराजै ॥ छविक्षीरधिते निकसीयह सीतन क्षीरके छोटनकी छबिछाजै ॥
 पटिमंत्र बशीकरसों छिरके किधों सीकरमयन स्वरूप समाजै ॥ ४९ ॥
 ईश विलोचन पावकसों लपटयो अंगअंग अनंग परान्यो । नाभि सुधा-
 रसकी सरसीलखि झंपिपरयो यहिमांह बुझान्यो ॥ ताते कढ़ी यह धूम-
 लता अति सूक्ष्म सुंदर रूप बखान्यो । सोइ वरंगिनिके बरनी नवरोमबली
 मन हेठ हेरान्यो ॥ ५० ॥ बावलीएक अकाशपै राजत कञ्चनतीनि सिठोन
 सँवारी ॥ नीलमणीनकी राहलसै अतिसूक्ष्म मानहु नागिनिकारी ॥ कं-
 चन कंज कलीयुग तापर है परभा रबिकी छविवारी ॥ शारद इंदु समीपरहैं
 निशि वासर फैलिहै उजियारी ॥ ५१ ॥ हंसक नाम कहावतहौ तुमपै
 मधुरीध्वनि बोलि न ऐहै ॥ काननजाइ लगौ विछुआ किति किंकिणियों
 रसवाहु मचैहै ॥ द्वैरहिहै चपवेरनिकै यहतौ विपरीति कला सरसैहै ॥
 श्रवणनिमांह सुधारसनैहै जिती रसना रसना ठहरैहै ॥ ५२ ॥ घांघरे में
 मखतूल झबाझुकि झूमति डोरि अतूल सुहाये ॥ नीबीकी गांठि गुलाबक-
 लीसम सौरभ छूटतहैं सरसाये ॥ छोरनकोर किनारिनकी किरणै चहुँ ओर
 छुटैं छबिछाये ॥ घूमतघेर घनो गहि फेरत काम मनौ चित चाकू चढा-
 ये ॥ ५३ ॥ द्वैशशिबिम्ब नितंब बने सु झँपे झमके लहँगा लहकारे । जं-
 घनकी झुति संघनको लखि कंचनकी कदली गनवारे ॥ चारुकुसुंम
 पिडीपिडुरी घन घँघुर नेवर हैं झनकारे ॥ ईगुर गोल बढी गुलफैं दुरि
 दीठिपरे जब नीठि निहारे ॥ ५४ ॥ मोकर कौलनि लाइक जावक बेलि
 लसै गहिरी परभासों ॥ नूपुरकी ध्वनिको सजिकै सुर गावत गीत संगीत
 कलासों ॥ मंदउठाइकै जौलों छुवै क्षिति छावति तौलों प्रवाल लतासों ॥
 राजकुमारिके राजतहैं पद इंदुकला नख बिंदु सुधासों ॥ ५५ ॥ अं-

बुजचिह्न लिखेबिधिसुन्दर सेवत पांयनको हरषाने ॥ बासरहै सियको
निशि बासर है सरमें सब कमल डेराने ॥ याकहँ तौ पगुकै न गनों गति
के अतिमंजुल भेदवखाने ॥ मत्त गयंद गनौ यहिको यह अंकुश अंकु
कहैं सरसाने ॥ ५६ ॥ कमलनके दल सारलिये पुनि रंग कुसुंब घने
बहुबोरे ॥ आरसी सेउजरे छबिवार विरञ्चिरचेतरवा अतिकोरे ॥ बांधत
बाँक न सांकरहै मनौ वाकेहिये बहुवार निहोरे ॥ या गजगौनिके पाइँलसैं
धुनिपायलकी कहती कछुओरे ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ शिखते नखलौं
वरणि इमि, धरणि अधीश लुभाइ ॥ निज प्रत्यक्षता होनकी, इच्छा
करी बनाइ ॥ ५८ ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मण्डित भूमंडला
खण्डित खंडल श्रीखांसाहब अलीअकबरखां
प्रोत्साहित गुमानमिश्र विरचिते काव्य
कलानिधौ दमयंती वर्णनं नाम
अष्टमस्सर्गः ॥ ८ ॥

दोहा ॥ नवम सर्गमो वर्णिवो, दूतकाज सुरराज ॥ कहिवो सुर संदे-
शको, रचना चारु समाज ॥ १ ॥ सोरठा ॥ दमयंती टकलाइ, सखी
सहित अद्भुत भई ॥ आनंदसिंधु समाइ, देखतही वा तरुणिको ॥ २ ॥
दोहा ॥ देवकाजकोलौ रहै, छिप्यो विरहसंताप ॥ ज्येँ पलालके जा-
लमें, अनल झारगति आप ॥ ३ ॥ जौलौभैमी नयनशर, नल उर लगैं
बनाइ ॥ तौलौं तामें काम शर, शिरलौ गयो समाइ ॥ ४ ॥ तोमर ॥ तेहि
देखिके दमयंति ॥ नलकी भई मतिवन्ति ॥ वह ह्यौ कहाँ यह जानि ॥
चुप है रही पहिंचानि ॥ ५ ॥ दोधक ॥ देखतही केतिकौ सकुचानी ॥
मोहिगई बहुतै मृदुवानी ॥ छाइरह्यो रस अद्भुत ऐसो ॥ दीठिपरचो न
जुवा यहु जैसो ॥ ६ ॥ तोटक ॥ तुम कौन कहाँ कित आवत हौ ॥
नहिं बूझिसकीभय मानियहौ ॥ लखिकै न रह्यो मनहाथ मुठी ॥ सखियाँ
सिगरी भराइ उठी ॥ ७ ॥ दोहा ॥ बैठी राजकुमारि तहँ, साहस शील
सुभाइ ॥ देखि कृतारथ होति नृप, दूत विचारि लजाइ ॥ ८ ॥ तारक ॥

भरि दीठि लख्यो जहँ प्राणपियाही ॥ लगि दीठिरहै तेहि अंगन माही ॥
जब और निहारनको अँगपावै ॥ पहिले निखर्यो तब अंगलोभावै ॥ ९ ॥
दोधक ॥ छाँडिसकै न लखै अँग जेई ॥ और निहारनको उमड़ेई ॥
देखतही नल होत तमासे ॥ चंचल नयन चलै नटवासे ॥ १० ॥ दोहा
नयननिसौं पीवत छकी, आशव सुधास्वरूप ॥ आनंदकी लहरी ललित,
अवलीकत नल रूप ॥ ११ ॥ तारक ॥ नलकी सुथरी अति सूक्ष्म
भौहैं ॥ गुणजाल मनौ भवके समसोहैं ॥ तिन माँह फँसे दृग खंजन
वाके ॥ तनकौ न डरें न टरें रस छाँके ॥ १२ ॥ लुवंगम ॥ आनन
लोचन पाँइ हाथ जल जोतहैं ॥ नयन मिले अकुलाइ देखि निज
गोतहैं ॥ छाड़ रह्यो मन मोह महा सुखसों भरयो ॥ जीवत मुक्त अमुक्त
स्वाद चितमें धरयो ॥ १३ ॥ सोरठा ॥ आवतही उत कोंद, सिंह चालि
चातुर नृपति ॥ अद्भुत भरी विनोद, आदरको उद्दित भई ॥ १४ ॥
दोधक ॥ जानत आदरकी परिपाटी । रीतियहै तिन उत्तम ठाँटी ॥
जो परणाम करै पग धोवै ॥ सुंदर बैनन ताप विगोवै ॥ १५ ॥ तोटक ॥
निज नयननको तिनका करिये ॥ तहँ आसन भूमि हिये धरिये ॥
बुझिये सुख बैन भले कहिये ॥ इमि पूजन आगतको लहिये ॥ १६ ॥
दमयंती ॥ संयुत ॥ इत आइ आसन लीजिये ॥ तुम और देखत
जीजिये ॥ छिन एक ह्यौ पगु धारिये ॥ श्रमको अयासु निवारिये ॥ १७ ॥
नव कमल कोमल पाँइहैं ॥ कहिये कहाँ लगु जाइहैं ॥ बहु देश पूरण
भाग है ॥ जहँ रावरो अनुराग है ॥ १८ ॥ पतिझारसों बनमें भयो ॥
बहुदेश जो तजिकै दयो ॥ तुमको कहे गुणधामहैं ॥ बहु कौन धन्य
सुनाम हैं ॥ १९ ॥ हरि गीतिका ॥ निजबाहुके बलसों तरयो तुम
सात सागर चाइसो ॥ सब भाँति भट रक्षित इहाँ पहुँचे तहाँ
परभाइसो ॥ यह करयो है अति विमल साहस शूरसार अपारकै ॥
वह कौन इच्छित काजहै हमहूँ सुनै निरधारिकै ॥ २० ॥
भुजंगप्रयात ॥ फले भाग्यसों पुण्यते नयन तेरे ॥ सुधास्वादुलै
रावरी ओर हेरे ॥ लख्यो है न यों मयन में देह धारी ॥ भई हीन ऐसी
भई ज्यों सुखारी ॥ २१ ॥ लख्यो रावरी चारु है रूप जैसी ॥ अदृश्यै

फिरो है पराकर्म तैसो ॥ चहुँ और छायो तपै तेजनीको ॥ करचो वास
 है देवके लोकहीको ॥ २२ ॥ सुपथ ॥ दस्र दोइ नहिँ एक बखाने ॥
 कामदेह नहिँ धारण आने ॥ चिह्न चारु तिनते छाबि छाये ॥ रूपरा-
 शि सविशेष बताये ॥ २३ ॥ तोमर ॥ जेहि वंशमें जनु लीन्ह ॥
 तेहिको कृतारथ कीन्ह ॥ बहु सिंधुसों अधिकातु ॥ जेहिको भयो शशि
 तातु ॥ २४ ॥ दोहा ॥ अक्षबन्ध विद्या निरखि, जान्यो देश स्वरूप ॥
 आदरके कलु वचन कहि, वर्णन करचो अनूप ॥ २५ ॥ आपुहि उठि
 आसनदयो, करगहिकै बैठारि ॥ अरघादिक पूजन करचो, उदयाचल
 रविवारि ॥ २६ ॥ दमयंती ॥ गीत ॥ हर नयन कुंड हुतासमै
 निज देह होमि बनाइ कै ॥ अब मयन है तुम अवतरे तेहि पुण्यके
 फल पाइके ॥ विधिको मनौ द्युति कोष अक्षय येकठो करि-
 कै धरचो ॥ सियरात देखत रोम रोम विनोद यों उरमें धरचो ॥ २७ ॥
 दोधक ॥ नयन दुऔ कर सायल तेरे ॥ कोटि करें गतिके अति फेरे ॥
 राखतहैं शशि आनननेरे ॥ वाहनके हित चाहत नेर ॥ २८ ॥ सोरठा ॥
 राशि करी यक ठौर, तुम सब जग परभानकी ॥ भ्रमत भ्रमत चहुँ और
 शिलाबीन विधुकर सजै ॥ २९ ॥ चौपाई ॥ महीसफल नरवर तुम जोहौ ॥
 स्वर्ग भाग अति जो सुरसोहौ ॥ उर्गवंश भूषण तुम जो तौ ॥ सब ऊपर
 पाताल गनौ तौ ॥ ३० ॥ या संसार सिंधुमें दूजो ॥ नल प्रतिबिम्ब रावरो पूजो
 दोई एक रूप अति रूरे ॥ विधिके शिल्प अचितित पूरे ॥ ३१ ॥
 उपेंद्रवज्र ॥ बडे भये संसारव चित्त मेरे ॥ तुम्हैं प्रभा पाटल रूप हेरे
 पीयूष संवाद कलूक बातें ॥ सुन्यो चहैं कान तृषालु यातें ॥ ३२ ॥
 दोहा ॥ दमयंतीके अधर नव, जपा कुसुम धनुतानि ॥ वचन काम
 शर ये हने, विध्यो भूप मनआनि ॥ ३३ ॥ सरसी ॥ निज अनुराग
 सुधा श्रवणनसों पीवत रह्यो अघाइ ॥ दुर्जन मुख जो वेणु भावतो हित
 सुख क्यों न सुहाइ ॥ विरह भार संताप दावि हिय धरम धुरंधर
 धीर ॥ खोल्यो सोतु पीयूष सरसरस बोल्यो नल गंभीर ॥ ३४ ॥ नल ॥
 नीलस्वरूप ॥ देव समाज हते हम आये ॥ चारि दिगीशन ठेलि
 पठाये ॥ आपुन कोजु संदेश कहे हैं ॥ ते हिय माँह बनाइ लहे हैं ॥ ३५ ॥

जोकिरपा करिके सुनियेजू ॥ मोहिं कृतारथ कै गुनियेजू ॥ आदर एक
 यहै बहु तेरो ॥ वैन प्रमाण करै जब मेरो ॥ ३६ तोटक ॥ जबते तुम
 बैस कुमारि भई ॥ सुकुमारि महाराति रूप छई ॥ तबते सुर चारिन
 चैन गहैं ॥ तुव सेवकता चित माँह चहैं ॥ ३७ ॥ सुरनायक औ सलि-
 लेशसही ॥ यमराज हुताशन प्रीति कही ॥ शर पंच प्रपंचनमें परि-
 कै ॥ अब तौ शरणागति हें डरिकै ॥ ३८ ॥ तारक ॥ नवयौवनसे
 सबये नृप दोऊ ॥ अबतो तन राज करै बलि ओऊ ॥ अवलोकि दुराजु भयो
 मनभायो ॥ तिनको चित धीरजमैन चुरायो ॥ ३९ ॥ अब रावरीय तिनके मन
 आसा ॥ नहिं पालत हैं अपनी तिय आसा ॥ तुव यौवनके संघहीन उयोहै ॥
 अनुराग बढ्यो अति वासवकोहै ॥ ४० ॥ सवैया ॥ इकबार महानिशिमैं
 अकुलाइ गयो दिशि पूरबकी रजधानी ॥ पूरणचंद उदोतकरचो चहुँ ओर लुटी
 किरणें सरसानी ॥ देखतही विरहागिबही उरसूखत सूरयकी मतिआनी ॥
 कैकै हजार विलोचनलाल कराल चितौनि तके अभिप्राणी ॥ ४१ ॥
 दोहा ॥ तीनि नयनके वरसों, काम भयो यहि भाइ ॥ सहस्रनयनके
 वरसों, कौनदशा हैजाइ ॥ ४२ ॥ स्वागता ॥ इंद्र रीझ नहिं नंदन
 माहीं ॥ शूल तूल पिकबोल सुनाहीं ॥ भाल इंदु अपराध विचारे ॥
 ज्योंडिरात शिवऔर निहारे ॥ ४३ ॥ अन्धकार चहुँ ओरन छायो ॥ काम
 बाण रजसों उपजायो ॥ हैहरही सुरैनि उजेरी ॥ सांचुकीन पिकवानि
 घनेरी ॥ ४४ ॥ लक्ष्मीधर ॥ शक्रको हाथही हाथराखै जहीं ॥ और
 ते औरलै सेजसाजैतहीं ॥ औरके दारिदैं जेहरैं वातसों ॥ तेभये दारिदी
 रूखहे पातसों ॥ ४५ ॥ भुजंगप्रयात ॥ जबै कामके चाप टंकार
 लूटै ॥ तबै आइकै इंद्रके कानफूटै ॥ प्रबोधै भलीभांतिषों जीव जैसे ॥
 सुनै कौन निर्वाण संवाद ऐसे ॥ ४६ ॥ मालिनी ॥ मदन अनलपीड़ा
 क्षेमको तोरिलीजै ॥ कमल नवकलीलै सेजको साजकीजै ॥ सरस मधुर
 मेंहूँ स्वर्णदीमें प्रकाशी ॥ शिशिरऋतु सरीखी छाय रीषी उदासी ॥ ४७ ॥
 भुजंगप्रयात ॥ सुनासीर यों भांतिहै देहछामें ॥ रहै रोजसंतपसों
 मूरुछामें ॥ न जानै सुखौ दुःख औ शीत घामे ॥ रहै प्राण जोरावरी रीझ
 यामे ॥ ४८ ॥ दोधक ॥ याचक जा तनुको निजपूजे ॥ मूरति जो

शिवकी कहि दूजे ॥ सोड दिगीश तुम्है चितचाहै ॥ जाजग पावक नाम
 सराहै ॥ ४९ ॥ तोकहँपाइ मनोभव ऐसो ॥ ताप करचो तियको तनु
 तैसो ॥ आपुन तापहिको दुख पावै ॥ वा उर औरन को नसतावै ॥ ५० ॥
 दूती ॥ झूलना ॥ हर नयनमें वसि आगिही इन देहह्यो जब मार ॥
 तेहि कोपसों तिन शुद्ध है तब कह्यो वैर विचार ॥ अबरावरे तिरछे-
 विलोचन में वस्यो सुखसार ॥ तनु जारि छार करचो हुतासन यों भयो
 उद्धार ॥ ५१ मोदक ॥ काम खस्यो शर फूलन मारत ॥ भेदिहि
 पोसत टूक न पारत ॥ होमहुमै कोउ फूल चढ़ावत ॥ दीखिशिषी हिय मो ड-
 रुपावत ॥ ५२ ॥ सवैया ॥ ईधन कामकरचो हियरा तेहि माहँ मृणाल
 लता लपिटाई ॥ आगि अनंग मनो सुलगी निकसी नवधूम शिखा छाबि-
 छाई ॥ ऐसे जँजाल परचो विरहावश वेहद व्याकुलता सरसाई ॥ बार
 हजार करी विनती पर रावरी मैन कछू रुचिपाई ॥ ५३ ॥ नीलस्वरू-
 पक ॥ चंदनकी दिशिको मन भौतौ ॥ जासह सूरय है युतरौतौ ॥ वा
 यमराज धरचौ चित तोमै ॥ धीरजकामसिखी हम होमै ॥ ५४ ॥ सेवत हैं
 मलयाचल ताको ॥ नौल प्रवालनकै रचनाको ॥ जे दुखहू नहिं छाँडत
 सेवा ॥ जानत प्राण तिन्हें नरदेवा ॥ ५५ ॥ अंग सब तेहिके हित
 लागे ॥ मानहु काम सुकीरति जागे ॥ कैतेहि बाहु प्रतापनिछायै ॥ तो
 विरहानल जोर सताये ॥ ५६ ॥ तोमर ॥ इमि है भयो यमदीन ॥ निशि
 द्यौसचैन नलीन ॥ अब रावरी मति पाइ ॥ तेहि सों कहे हम जाइ ॥ ५७ ॥
 सवैया ॥ केसरसी जहँ फूलत साँझको वा दिशिको पति सुंदरु जो है ॥ चेतु
 प्रचेतहुको तुमहीमें लग्यो निशि वासरही मनमोहै ॥ यों बड़वानल तापक
 रै न सदा बिच सागरके बसिबोहै ॥ ज्यों परताप करै जल पालक पंक
 भयो सब सूखत सोहै ॥ ५८ ॥ प्रमाणिका ॥ मृणाल दंड जो धरचो ॥
 हिये विचारसो करचो ॥ मनोज बाण जे भरे ॥ हजार छिद्र ये करे ॥ ५९ ॥
 हरिगीत ॥ यहि भाँति देव त्रिलोकके पति शरनि आवत रावरी ॥
 निज चरण सेवकताचहें तुव रूप सोभ सुधाभरी ॥ तुव नयन बंक इथ्या-
 रलै अति दर्प दर्प कुर्यों करें ॥ सुरलोक माँह अलोकलागत कौन
 को न हियो जरै ॥ ६० ॥ चर्चरी ॥ भोर रावरहै स्वयंवर लोकमें

चर्चाचली ॥ सारधार सुधापरी चहुँ देवका नभिमै भली ॥ रावरे मृदु
 ओठके रस स्वाद लोभहिसां भरे ॥ देवलोक विमान मारग त्यागिकै
 क्षिति अवतरे ॥ ६१ ॥ हे नजीक वहौ जहाँ क्षितिमे विभूषित हैं खरे ॥
 मोहि भेजि दयो इहाँ ढिगरावरे निहचे धरे ॥ हे संदेश कहे कलू तिनको
 कहों अब चाइसों ॥ आपहू सुनि लीजिये करि प्रेम पूरण भाइसों ॥ ६२ ॥
 सवैया ॥ पीन उरोजनिषां मिलिकै इक एक करी विनतीहै जुतरी ॥ मैनकी
 मूर्छा आनि जगै जब एक तू जीवनमूरि घनेरी ॥ केतक दिवसनि लों त-
 रसै दृगप्यास स्वरूप रहे भरि तेरी ॥ हे परसत्र भुजागल मेलि सजौ
 परिवेषकी रेष सुफेरी ॥ ६३ ॥ चर्चरी ॥ काम ताप तुषारसे दृगको
 रसों हंसि हेरिले ॥ दूरिकै तन तापको उर मैन पीरनिबेरिले ॥ देविरा-
 जति है वृथा हम काम बाणनिषां जरे ॥ और ठौर नहै हमे अब रावरेतकिपाँ-
 परे ॥ ६४ ॥ सवैया ॥ यांचतहैं तुमको नृपकार हजारनकी विनती अनुरागे ॥ पै
 हमको यह आशरो एक जु आइ तिहारे हैं पाँयनलागे ॥ जो चलचूक ग-
 नौ कलु यामहैं तौ यह न्याउ अनंगके आगे ॥ ज्योंजियमाँह रही मिलि
 त्यों अब आइ मिलो छतियाँरसपागे ॥ ६५ ॥ गीतिका ॥ जियमाँह
 तों कलु हृदया दिवलोकको सुखलीजिये ॥ क्षितिमाँह जो रुचि रावरी
 सुखवासतौ क्षिति कीजिये ॥ उपहार फूलनके करो तुमपै न भावति है
 हमें ॥ पग कमल सुन्दर रावरे हम शीश छावनको क्षमें ॥ ६६ ॥
 सोरठा ॥ सुधासरनि कलनाहिं, सुख कैसे अपसरनिमें ॥ रीझ न
 चन्दनमाहिं, रुचि वन्दन तुव भालपै ॥ ६७ ॥ मदन अचानकमीच,
 वचि न सकत पीयूषहू ॥ अहे अधर रस सींच, स्वादु सुधासों सौ
 गुण्यो ॥ ६८ ॥ घनाक्षरी ॥ केतुसो सहित धरे धनुषमकरजरयोहरके
 प्रबल नयनानलमें परिकै ॥ अब अवतार तेरे मनहींसों पायो पुनि काम तब
 वैई षटठड़े धीर धरिकै ॥ भोंहनि को चाप गान ताननीके बान तेरे नयननि
 सों मीन ध्वजाराखति फहरिकै ॥ कंचन अडोल गोल कुचन गाढ़ोईभयो
 भेदतु तिलोकजोर जीरन जजरिकै ॥ ६९ ॥ सवैया ॥ शोचतमे निर-
 खी तनुकी द्युति मोहिरहीं अँखियां अतियेसी ॥ गानमें कानि अलिंगनमें
 तनु नाक सुबासु छुटै मुख जैसी ॥ तुव ओठसुधारसमें रसना गुण

रावरमें मनकी मति येसी ॥ तुम जालकरी करसायल अक्षनि
मार शिकारकी रीति अनैसी ॥ ७० ॥ तोटक ॥ यहिभाँति
सँदेशनकी अवली । रसना तलमे लिखि मै सवली ॥ फल
मोहि कृपाकरिकै करिये ॥ इनमें सुर एक हिये धरिये ॥ ७१ ॥
दोहा ॥ सुरपति पति द्वे उचित अति, शमन संग समभोग ॥
अनल अमंगल सों सुमिल, वरुण तरुण तुअ योग ॥ ७२ ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मंडित भूमंडला
खंडल श्रीखाँसाहब अलीअकबर खाँ प्रोत्साहित
गुमान मिश्र विरचिते काव्यकलानिधौ सुर
संदेश कथनो नाम नवमस्सर्गः ॥ ९ ॥

दोहा-पंच द्रुगुने सर्ग में, यह वर्णन उरआनि ॥ उत्तर प्रति-
उत्तर वचन, हैहै नल पहिंचानि ॥ १ ॥ सोरठा ॥ सुनै भौंहके
भाइ, प्रगट उदासीको कहत ॥ सुनत तऊ चितलाइ, पिय मुख निकरत
सुर गिरा ॥ २ ॥ सुनी अनसुनी कीन, वाणी प्रगट अनाकनी ॥ भैमी
परम प्रवीन, नृप सन्मुख नयननिहँसी ॥ ३ ॥ दमयंती ॥ तारक ॥
हमतौ तुमसों कुल नामहि बूझे ॥ तुम औरहि और कथान अरुझे ॥
कहिये यह कौन बडी चतुराई ॥ छलकी रचना रचि आपु चलाई ॥ ४ ॥
दोहा ॥ कहूँ प्रगट अप्रगट कहूँ, उत्तर दयो बनाइ ॥ चतुर सरस्वाति
रावरी, नदी सरस्वाति माइ ॥ ५ ॥ तोमर ॥ इमि रावरे सुनि वैन ॥
निहचै भयो चित चैन ॥ अब आपनाम पियूष ॥ तेहिकी रही भरि
भूष ॥ ६ ॥ लीला ॥ रत्ननायक हो भये यह कौन है वह वंशु ॥
दूरि भागत है तमोगुण देखि ज्यों रवि अंशु ॥ छाँडिकै छल स्यान ये
कहिये कृपा करि हेरि ॥ है रही चुपचाप आपन नई नयनानि फेरि
॥ ७ ॥ नल ॥ नंद ॥ कुल अभिधान हमारे बूझहि जौन ॥ कहि
यतु है नहिं जानि प्रयोजन कौन ॥ ८ ॥ फल न होइ वह वैन कहे बकवादु ॥
अल्पवचन फल अधिक सुवाणि सवादु ॥ ९ ॥ नाम जानिकै करियतु

जग व्यवहार ॥ हम तुम यह साधारण सनसार ॥ १० ॥ भेरो जो कुल
समल सुन्यो कोहि काज ॥ कुल उज्ज्वल हम दूत बड़ी यह लाज ॥ ११ ॥
मनहंस ॥ यह जानिके नांहें में कही कुलनाम है ॥ तुम हूँ हठो न
तुम्हें कहा यह काम है ॥ रुचिरावरी बहुते बड़ी निरधारिये ॥ शशि वं-
शके हम हैं करीर विचारिये ॥ १२ ॥ इंद्रवज्र ॥ आचारकी बात बड़े
बतामें ॥ लीजै न क्यों हूँ मुख आप नामें ॥ राजारह्यो यों अहितापकारी ॥
मानौ शिखी शारद मौनधारी ॥ १३ ॥ दमयंती ॥ सवैया ॥ जो तुम
हो शशिवंश विभूषण संशय तो नटरे चितमेरे ॥ बोलौंगी हौं हूँ नतौ
लों सुनौ नहिं जौ लगि नामके आखर तेरे ॥ साधनकी पदवी तुम दोरत
ओरत बैन कहे हम टेरे ॥ जासन है न पिछानि कछू मिलि ता संग कौन
करै हित हेरे ॥ १४ ॥ तोमर ॥ सुनि बैन ये नलराज ॥ मनमें लहे सुख
साज ॥ दृग सामुहे करिलेतु ॥ मुसुकाइ उत्तरदेतु ॥ १५ ॥ नल ॥
प्रह्लाटिका ॥ सुनि जलजनयनि मृदुसुधावैनि ॥ अनुरागराशि ममवच
नयेनि ॥ करिदेवि सफल भेरो अयासु ॥ सजिये दिगीश संग रम नि-
वासु ॥ १६ ॥ कहिये संदेश चितमें विचारि ॥ जेहि होहि मुदित मन
दानवारि ॥ चहुँ देवनके मन शांति होइ ॥ कहिये विचारि अब वचन सोइ १७
सोरठा ॥ ज्यों ज्यों लागत ढील, करत खुशामदिरावरी ॥ त्यों त्यों होत
कुचील, चारौसुर चिंताविकल ॥ १८ ॥ वासव नयन हजार, हेरत है हैं मम
डगर ॥ धिकमोको संसार, परकारज में शिथिलता ॥ १९ ॥ तोटक ॥
पुहुमीपति मौन गह्यो रहि कै ॥ सब देव संदेशनिको कहिकै ॥
दमयंति रही सुनते रसिकै ॥ चहुँ देवनकी मतिको हंसिकै ॥ २० ॥
दमयंती ॥ चौपाई ॥ जलपतिमो ढिग तोहि पठायो ॥ औ परेत
राजा पहुँचायो ॥ अरु कौशिकके कारज काजे ॥ ऊरध मुख सिखके
हित साजे ॥ २१ ॥ दोहा ॥ देव कुमति अति व्यंग्यमें, प्रगट करी
सुकुमारि ॥ अब प्रकाश बोली वचन, रचना चारु विचारि ॥ २२ ॥
दमयंती ॥ संयुत ॥ यह कौन सों शुभ योग है ॥ जगमें हँसी अरु
सोगहै ॥ जहँ ताल हंसनसों सने ॥ बगुलीनको तहँको गने ॥ २३ ॥
झमकैं जहाँ तिय ईसुरी ॥ तहँ मानुषी कत वा पुरी ॥ नहिं स्वर्णतो जेहिको

जुरै ॥ तहँ पीतह्यो गहनो फुरै ॥ २४ ॥ तारक ॥ सुरभाणतही अपनी
 मन भाई ॥ उपजीं मेम काननमें वधिराई ॥ समही सम योग संसार स-
 राहै ॥ हरनी कहुँ मत्त गयंदहि चाहै ॥ २५ ॥ सोरठा ॥ कहि कछु
 ऐसे बैन, कह्यो सखीसों कानलगि ॥ दूत ओर करि नयन, कहि सखि
 मेरी ओरते ॥ २६ ॥ दोहा ॥ देवदूत तुम अति चतुर, पतिव्रतकी
 गति जोइ ॥ लाजभरी मेरी सखी, कहति सुनै अब सोइ ॥ २७ ॥
 तोटक ॥ मैं तौ विचारि चितमें नल राज राख्यो ॥ चाहों न और
 विबुधै यह साँच भाण्यो ॥ येही सतीन महाँ रीति चली सुवेषा ॥ जैसी
 चले नघन पाथर पुंज रेषा ॥ २८ ॥ मेरो हियो जो कबहुँ नल छाँडि
 औरै ॥ चाहै अयान पनमें जब नींद दौरे ॥ तो जानिकै वरन काज
 हमै अरुझै ॥ चारौ दिगीश अपनी मति क्यों न बूझै ॥ २९ ॥ दूतवि-
 लम्बित ॥ करहिं देव अनुग्रह आपनो ॥ मनुजदेह करैं हम जापनो ॥
 सहिभीख हमहि यह आशही ॥ नलमिलें हमको सबिलासही ॥ ३० ॥
 प्रह्वटिका ॥ सुनि और प्रतिज्ञा ममकठोर ॥ दृढ़ करि चित्तमे जानि
 जोर ॥ जो होइ न व्याह नलसंग माहँ ॥ तनु त्यागकरों तौ अनल
 माहँ ॥ ३१ ॥ गल बांधि फांसिकै अन्त लेउँ ॥ कै जलअगाधमें जीव
 देउँ ॥ जब होत जंतु आपदा वृद्धि ॥ नहिं दोष होत कारज निषिद्धि ॥
 ३२ ॥ जब वर्षामें होतहै, मारग जल संयोग ॥ बाटछाँडि ऊबट चलत
 सकल सयाने लोग ॥ ३३ ॥ सारवती ॥ मैं तियजानि न ज्ञानलहो ।
 का विधि उत्तर देनकहो ॥ हौ तुमही सबभाँतिभले ॥ सो कहिये जेहि
 माँह फले ॥ ३४ ॥ चम्पकमाला ॥ दूतभयो यासों मनहीनो ॥
 बोलिकहो तौ बैननबीनो ॥ प्रीतिसमैं तैं रीतिप्रकाशी ॥ आनि कछु तामें
 रिस भासी ॥ ३५ ॥ नल ॥ सोरठा ॥ अहो नारि सुकुमारि, तुम
 चतुरै सब जगतपर ॥ मैहूँ लई विचारि, जैसी मति कछु राखरी ॥ ३६ ॥
 चर्चरी ॥ देवता तुमको चहैं निज प्राणसों सरसाइकै ॥ आपहो उनते
 उदासिल कौनसों गुण पाइकै ॥ दारि दीरघमें कहुँ निधिजातिहै न विचा-
 रिकै ॥ मूँदिकौन कपाटतामहँ रोंकिलेत निवारिकै ॥ ३७ ॥ स्वैया ॥
 मानुषजाति न देवहि चाहति आप नवीन कही यह वानी ॥ दूरिक-

री गुरुहू दितते नहिं तो हियते ग्रहदोष निशानी ॥ देवनकीगति पावत
मानुष देवकृपा सबहीते बखानी ॥ पारसके परसेबिन लोह न हाटक कां-
तिगहे मनमानी ॥ ३८ ॥ सर्भ ॥ सुरपति तजि तुम नलकाचदती ॥
पुनि निजमति तुम अतुरसरदती ॥ कदलि तजत मुख धरि बद बदरी ॥
करम सरतु अकुमति निरदरी ॥ ३९ ॥ मनहंस ॥ तप आगिमें तनु
होभिकै सबसंतहै ॥ सुरलोकके फल लेनको बिलसन्त है ॥ सुरलोकसों
तुम ओर आवत चाइसों ॥ तुम ताहि क्यों न चहौ कहो केहि भाइसों ४० ॥
सवैया ॥ जो तुम बंधनके तनुतजिहौ तौ तुम बासवके घर जैहौ ॥
जो जरिहौ किरिआ करिहौ सब अंग हुतासनके सियरैहौ ॥ जो परिहौ
जलमांझ अगाध तबै हियरा वरुणै हुलसैहौ ॥ और उपाय कैकैमरिहौ
तबतो यमराजहीलै सुखलैहौ ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ हें निषेधके विधिवचन,
यह नहिं जानीजात ॥ व्यंग्य वचन सुनि रावरे, चित चिंता सरसात ४२ ॥
तौ सरस्वाति रत्नभौरपरि, भ्रमतु महा ममचेतु ॥ कहिदीजै अब लाज
तजि, केहि दिगीश सन हेतु ॥ ४३ ॥ चौपाई ॥ ऐरावत करि
कुंभ सयोगी ॥ जो पूरब दिशिको रसभोगी ॥ सहस नयनसों
देखन लायक ॥ तो समान सुन्दर सुरनायक ॥ ४४ ॥
सोरठा ॥ तेरो संगम पाइ, सजै सकंटक अंगहरि ॥ रहे शची बिल-
खाई, मनौ नयन कंटक लगे ॥ ४५ ॥ तोटक ॥ हमतौ अपने
जिय जानि लही ॥ तुम पावकसों अनुरागि रही ॥ कुल क्षत्रिय तेजवती
तुमहौ ॥ तेहिके अति ओजहिसों उमहौ ॥ ४६ ॥ प्रह्मटिका ॥ तनु
ताप जानि तासों उदास ॥ जनि होहु सती तुमहो प्रकाश ॥ जब लेत प-
रिक्षा बारवार ॥ शिषि होतु सखी करमें तुषार ॥ ४७ ॥ तुम धर्मशील
गुण ज्ञान गेहु ॥ किय धर्मराजसों अधिक नेहु ॥ भैं कह्यो देखि मनमें विचार
यह भयो योग संयोग सार ॥ ४८ ॥ तारक ॥ मलयाचलमें निज
जाइ बसौजू ॥ मृदु चंदनके वनमें बिलसौजू ॥ ऋषिराज अगस्त्य अ-
शीशन पावो ॥ कल या विधिहौ मिलि मीचनशाको ॥ ४९ ॥ सोरठा ॥
सिरस कुसुम सुकुमारि, पति जलपति तोको उचित ॥ ज्यों रजनी विर
धारि, मिली शीतकरसों हरषि ॥ ५० ॥ चंद्रमाला ॥ तजि बैकुंठ

धामै हरिमिलि कमला संगसोमै ॥ सुर नर नाग सिद्ध किन्नर मुनि हाथ
 बाँधि पग जोमै । तारत्नाकर माहँ रैन दिन होइहै बास तिहारो ॥ लहरी
 ललित केलि जल साजौ मिलिकै प्राणपियारो ॥ ५१ ॥ भुजंगप्रया-
 त ॥ कही दूतवाणी महानेहकारी ॥ दमयंती भई नाहि नेकौ सुखारी ॥
 धरै हाथपै आरसी से कपोलै ॥ सुनीकै सुनी नाहि यों चित्त डोलै ॥
 ॥ ५२ ॥ सोरठा ॥ दमयंती अति दीन, भई सुनत ये वचन
 कटु ॥ दीह सांस दुख लीन, करुणाकी तसबीर जनु ॥ ५३ ॥
 दमयंती ॥ छप्पय ॥ भेदत हो ममकान बोल बोलत कटु जैसे । कहि क-
 हि सुर संदेश सुई मन लागत जैसे ॥ अर्धजीवमै हुती करी ताहूते छीनी ॥
 साँचे तुम यमदूत दूतता साँची कीनी ॥ तुव वदन कटु अखराबिरसप्रगट
 रूप ओरे धरै ॥ परकान कीट ज्यों काटिकै अति प्रचंड पीडा करै ॥
 ५४ ॥ सोरठा ॥ अली ओर करि नयन, ता मुखसों उत्तरदयो ॥ फेरि
 रुखोंहैं नयन, ऐंचिकरी भुकुटी कुटिल ॥ ५५ ॥ दमयंतीकी सखी ॥
 तोटक ॥ यहिके जिय लाज करी कसना ॥ निहचै यहिकी हमहीं रसना
 सुनिये सुरदूत बनाइ कहैं ॥ हमहीं यहु उत्तर देनचहैं ॥ ५६ ॥
 दंडालय ॥ निहचै चित जानौ ठीक बखानौ भोर स्वयंवरसाजिभले ॥
 चहुँ ओर सभागे उत सब लागे ऐहैं राजकुमार चले ॥ भूपति नलप्यारो
 निरखतिन्यारो वरन माल तेहि गेरिगरे ॥ युगसों दिन बीतत चित चितु-
 चीततु आपुकरत उपहासखरे ॥ ५७ ॥ चर्चरी ॥ आपु आजु बसौ
 इहाँ तुम और देखत जीजिये ॥ जाइगो दिनबीतिकै भिस प्रीतिको रस-
 लीजिये ॥ ही लिखी तसबीर ज्यों खगराज जो नलराजकी ॥ सो मिलै
 छबिरावरी सम एक शीलसुभाइकी ॥ ५८ ॥ नीलस्वरूपक ॥ साँचुठगे
 विधि लोचन तेरे ॥ जो तुव आनन ओर न हेरे ॥ भोर विलोकि नलै
 फल लेहौ ॥ भूतल चंद्र सुधादि अचैहौ ॥ ५९ ॥ हंसगति ॥ अब देव
 संदेश न भाषौ ॥ यह दंतकथा धरिराखौ ॥ हम माँगत अंजलि
 जोर ॥ यह बोलिरही मुख मोरे ॥ ६० ॥ सोरठा ॥ ज्ञान दया
 अरु धर्म, तीनि रत्न जिनहूँ कहे ॥ कहौ कवन यह कर्म, ताहि तजे पावे
 नरक ॥ ६१ ॥ सुनत सुधा से वैन, मदन अनल आहुति परी ॥ करि सकु-

चौहें नयन, गनत आपुको अदय अति ॥ ६२ ॥ दोहा ॥ बिध्यो
मर्म आरत वचन, दूत धर्म थिरनेहु ॥ दीह साँस मुख छोडि नृप, कं-
पुकंटकित देहु ॥ ६३ ॥ देवदूत ॥ प्रद्धटिका ॥ सुर रूख रहत
सब इंद्रधाम ॥ वे देत सदा अभिलषत काम ॥ तुमको सुरेश माँगै
पुकारि ॥ गहि देंइ तुम्हें तौही विचारि ॥ ६४ ॥ हिय तो विवाह अभि-
लाष आनि ॥ रचि अग्नि यज्ञ विधि साँचु जानि ॥ निज माँह होमि
निज अंश भाग ॥ गहि लेइ तुम्हें निहचै सभाग ॥ ६५ ॥ तोमर ॥
यमराजकी दिशि ईश ॥ नित हैं अगस्त्य मुनीश ॥ वरदानको संभाव ॥
जगमें प्रसिद्ध प्रभाव ॥ ६६ ॥ दोहा ॥ तुमको याँचत जाइ यम, जो ति
नसों कर जोर ॥ ता तोंको ऋषिराज गहि, देहि तुम्हें बरजोर ॥ ६७ ॥
तारक ॥ जलपालक सुरभी बहुतेरी ॥ तुमको तह याँचत जो कर
जोरी ॥ तबतौ वहिके घरही तुम जै हो ॥ सुर शोक करे नलको नहिं
पै हो ॥ ६८ ॥ जब इंद्र मन करि हैं निजनारी ॥ करिहैं न शची मखकी
रखवारी ॥ तब जूझ स्वयंवर में भरि है जू ॥ नहिं माल गरे नलके
परिहैजू ॥ ६९ ॥ गनि हैं न अचारजकी बहु फूँकै ॥ कहिये अपनी
नहिं आगि भभूँकै ॥ विनहीं शिषि साखि न व्याह बनैगो ॥ नलसों
मिलनो केहि भाँति सनेगो ॥ ७० ॥ जलनायक जो यहि भाँति
रुठै हैं ॥ क्षिति ते सिगरे जल ऐँचि उठै हैं ॥ केहि भाँति संकल्प पिता
करिहैगो ॥ करतौ नलके करपै धरिहैगो ॥ ७१ ॥ इन बातनहीं यम-
राज हठैहै ॥ अपनो इक किंकर मीच पठैहैं ॥ तुमही कहँकै नलको
हरिलेहै ॥ सबही दुखसागरको भरिदेहै ॥ ७२ ॥ दोहा ॥ ताते मो
हितकी कही, चित धरि राजकुमारि ॥ करिये आप दिगीश यक, चारौ
माहँ विचारि ॥ ७३ ॥ जहांहोत सुर विघ्नकर, करत चित्तमें रोष ॥
करमें धरो न पाइये, है करमेको दोष ॥ ७४ ॥ नल मिलापकी हानि
गनि, सुनत दूतके वैन ॥ वर्षावन लागी कुँअरि, साँवन भादों नयन ॥
७५ ॥ सवैया ॥ कप्रलनसों अलिनी आलि ज्यों दुहुँनयननसों अँसुआ
युग टूटै ॥ काजर नीर मिले झमके परिपीन उरोजनपै छबिलूटै ॥ नील
मणीन से चंचल चारु लसैं छिन आछिनसों नहिं छूटै ॥ द्वै रावि बिम्बधरे

जनु भालपै बालशनीचरसे चितचूटे ॥ ७६ ॥ प्रद्धटिका ॥ चहुँओर
 भ्रमत जोवतु अपार ॥ अतिधुनत शीश बगराइबार ॥ तनु उठी लपट
 बर मदनझार ॥ पियराइगई तजिकै सम्हार ॥ ७७ ॥ हग बेठेगई सू-
 झत न आन ॥ मतिभई मूढ़ जिमि विगतप्राण ॥ नहिहोत जानि नल-
 को मिलाप ॥ तब करनलगी बहुतै विलाप ॥ ७८ ॥ दमयंती ॥
 दूतबिलम्बित ॥ अनलमैन करी अभिलाषमै ॥ सजहि बेगि हमै किन
 राखमै ॥ निषधदेश चलों उड़ि बायुसों ॥ समैपाइ मिलों नलपाँइसों ॥ ७९ ॥
 ऐविरंचि बडे तुम धीरहौ ॥ परमनोरथ भंजन वीरहौ ॥ जियहु कोटि
 बरीषन जाइकै ॥ पियहु मोतन प्राण अघाइकै ॥ ८० ॥ तारक ॥ क-
 हि तूहिय जो तुमलौ हम येहौ ॥ विरहागिनसों कुंभिलाइ गये हौ ॥
 शर फूलन भेद तुमै न अनैसो ॥ अब आपन वज्र केहो तुम कैसो ॥ ८१ ॥
 भतिता यह मान भयो हिय राहै ॥ अजहूँ जिय ताहि न छोड़न चाहै ॥
 यह कौन विचार सजोवसनोहै ॥ युग चारि सती व्रतमै हँसनोहै ॥ ८२ ॥
 मनहरण ॥ नयन हमारे पूरे पातक अयनसाँचे जिनके मनोरथ विफल
 भये आईकै ॥ अँसुआ प्रवाहनसों धोवत रहत नित तऊ जरत हजार वार
 वार अकुलाइकै ॥ चारिहूँ दिगीशनके दयाको समुद्र सूख्यो जासों मि-
 टि जात ताप तीनहु बनाइकै ॥ जिनके कटाक्ष एक मोहूँ ते सरस कोटि
 तरुणी तुरंग तिनहैं मिले सरसाइकै ॥ ८३ ॥ सवैया ॥ ये युगसे छिन
 बीततहैं दिन मीच मनोहि कहा सहिहौगी ॥ प्राणपियारो छुटै मन ते
 न छुटै मन मोरयहै चहि हौगी ॥ अँसुअनके झरसों निशि द्योस बड़ी
 वर्षाऋतुकै रहि हौगी ॥ हेरि यहै सुर सोइ गये बिन काज विलाप कहा
 करिहौगी ॥ ८४ ॥ ये नलराज तुम्हें चितमें धरि दासी भई निहचे-
 हम तेरी ॥ देखतु हौ निज नयननसों अब होति है ये कछु जात न
 मेरी ॥ बागके ताल तलायनमें नित हँडिं फिरी बहुतै करि फेरी ॥
 सोऊ विरंचिलये हरिकै खग डारि दई जिन पाँयन बेरी ॥ ८५ ॥ तेरे
 वियोग गई तजिकै तनु एक तिया दमयंती बखानी ॥ रावरे
 काननमें परिहै नल यों चरचा चलिकै सरसानी ॥ आप दया
 तब तौ करिहौ सुनिकै करुणारसकी यह वानी ॥ अंजलि जोरि कहौं

तुमसों सुधिकै सजियो भरी अंजलिपानी ॥ ८६ ॥ अम्बुज नयनि वि-
योग भरी विरहाकुल बैन कहे दुखभीने ॥ सो मुनिकै उरलागि उड़ी
विरहागिनिकी लपटें अतिपीने ॥ वासवकाज सबै बिसरचो नल राजभये
सुमहामनदीने ॥ बैठिरह्यो तेहि ठौर ठग्यो जनु बावरो सों पियरोरै-
गकीने ॥ ८७ ॥ नल ॥ सवैया ॥ कारज कौन विलाप करै मृग
लोचनि सोचनि को तंजिदीजै ॥ पंकज सों मुख छाड़ रह्यो मुक्तागण आँ-
सुन विंदुन भीजै ॥ आगे खड्यो नल है यह तो तसलीम करै किरपाकारि
दीजै ॥ करि तिरछी दृगकोर निहारि सुधारसप्यास बुझै तब जीजै ८८ दोहा
विंदुमतीकी चातुरी, तैं जुकरी निरधार ॥ तोहीते संसार यह, निहचैभंयो
संसार ॥ ८९ ॥ जलजपातपै इंदु ज्यों, करपर धरे कपोल ॥ अंसुअ-
निके मुक्तानि सों, लसत हार हियलोल ॥ ९० ॥ नयनन जल कंजल
मिलित, होंपोछाँ निजहाथ ॥ पग पराग रजभूरि हौ, नयननेसाँ घसि-
माथ ॥ ९१ ॥ त्रिपदी ॥ मानकरौ तुम जोपै ॥ दोष कछू लखि-
मोपै ॥ तो बहुतै अनुरागों ॥ हों तुअपाँयन लागों ॥ ९२ मनहरण ॥
रूप अभिमान भरी बोली धाँ न बोली बैन नयन साँ निहारे होत कौन
सुअयासुहै ॥ कलपलता है तैंहीं पावक सपा है सब मोको दीठिदान में कृप-
णता निवासुहै ॥ मधुर अधरकोर कीजिये विहँसि सित भौंहकी ललित लोल
लीलागति लासुहै ॥ कीजिये दुकुम मोहिं अरज महेशजूकी चरचाको करौ-
नेह चरचा प्रकाशुहै ॥ ९३ ॥ सवैया ॥ आसनकी वर्षाऋतुको तजि
सादरकै मुसकयानि जुन्हाई ॥ लोचन खंजन खेलकरैं मुखपंकज कांति
चढै सरसाई ॥ सारसुधारस केलि कथा कहिये ममकाननि मानि मितार्ई ॥
चम्पकसे तनु अंक अभूषण हैमिलि कण्ठकी मालसुहाई ॥ ९४ ॥ काम
नराचनिको ठगिबो सबु तैं मृगनयनि सिख्यो सरसान्यो ॥ ज्योंमिलती
हियभीतर त्यो तनु बाहिर भेंटनको अकुलान्यो ॥ तेरोइ रूप अनूपछयो
मन नयननको बहुकोचु बखान्यो ॥ मार न मार लगै किन बाणनि प्राण-
नि में नकहूं डर आन्यो ॥ ९५ ॥ हंसगति ॥ तुअ ओंठनको रसचाहों
मधु सीध सुधाहि सराहों ॥ गिरिशृंग उरोज बिलासों ॥ नय इंदुकला
परकाशों ॥ ९६ ॥ मनहरण ॥ मनमथ मानको निरतु तैं करति नित

रोमावलि नवल ललित सूतधारीहै॥ तेरे अंग हारमें सरसरुचि नायककी
 शीशफूल द्विजैराजहूँको हाँसकारीहै ॥ नवरसभाव अनुभांवके भवननीके
 लोचन अनतगति चतुर सचारीहै ॥ अभरनतार सुकुमार ये बजतवीन
 मोहत प्रवीन तैं नवीन बैस खारीहै॥९७॥ शोभनसुरेश अठवरगुसुबेष लि-
 ख्यो मृदुलअधरपर तेरेविधिचाइसो॥ लगनभली मै लयो तोतनमनोजराज
 भयो मनभायो काज सरल सुभाइसो॥ लगत दशनछत रोचना तिलक
 ताहि करोंमें बनाइ सब अंगनि बनाइ सो ॥ जीतिकै सुरतरौनि
 प्रीति कै मुदित मन गहि गहि पाँइ जाइ मिलौ रसराइसो ॥ ९८ ॥
 मृदुंगति ॥ बलि हँसि मृदु वैनि ॥ हम पै करुन करि ऐनि ॥ रस
 अधर चाखि अभेव॥हम करैं उरसिजसेव ॥ ९९ ॥ दोहा ॥ ज्यों
 गिरिजा गिरि शयनकी, शीत करिनकी रैनि॥ हों नल हों ताकी तुही
 प्राणसजोवनिऐनि ॥ १०० ॥ तारक ॥ विरहाकुल बोलि चुक्यो
 यह वानी ॥ पुनि चेत भयो मनमें मति आनी ॥ मुनि ज्यों लगि चित्त
 विकारही जाने ॥ तब रोंकि रहे मनमें पछिताने ॥ १०१ ॥ नल ॥ प्रह-
 टिका ॥ मैं करयो कहा ऐसो अकाजु ॥ यह जानि जाइगोदेव
 राजु ॥ मैं दयो हाइ आपुन बताइ ॥ बहुभाँति रह्यो अवलोकि
 पाँइ ॥ १०२ ॥ सुरकाज गयो सिंगरो नशाइ ॥ सकिहों न तिन्हें
 आननं देखाइ ॥ हनुमान आदि जस सेत दूत ॥ उपहास सेत हमहें
 अभूत ॥ १०३ ॥ झूलना ॥ नहिं आपनी मतिसों कहे हम बोलि वैन
 असाध ॥ निज जानि हैं यह देवता निज बुद्धि बूझि अगाध ॥ अब
 देखिये कहिये कहा जंगलोग ये यहि काम ॥ सब कहत पालक सों
 जनर्दन हरति तेहि शिव नाम ॥ १०४ ॥ सोरठा ॥ फट
 तु हियो भरि लाज, सुरसँचोटि याकीलमें ॥है न ओरसों काज, जन मुख
 पेकोकर धरे ॥ १०५ ॥ होत ज्ञानसों काम, सोई विधि पाहिले हरयो
 देव होत जब बाम, तब सुरहूँ सो होत नहि॥१०६॥तोमर॥ यहि भाँति
 सोचि नरेश ॥ करि चित्तमाहँ कलेश ॥ तिनको प्रबोधन काज ॥ तब
 आइयो खगराज ॥ १०७ ॥ दोहा ॥ भयो पक्ष झंकार तब, ऊपर
 लख्यो महीश ॥ आयो हाटक हंस यह, सोई है विसबीश ॥ १०८ ॥

हंस ॥ भुजंगप्रयात ॥ महिपाल तोमें न नेकौदया है ॥ निराश
करचो याहि ऐसो कहा है ॥ सहै कामके शूल यों अंक ओढ़े ॥ तिहारे
विना साँचेहू प्राण छोड़े ॥ १०९ ॥ सारंगिका ॥ यतन करीही
रचिकै ॥ सुरपति काजे सचिकै ॥ तेहि पर यों सोचति हो ॥ तुमन
मृषासों रोचति हो ॥ ११० ॥ मल्लिका ॥ बोलियो मरालराज ॥ सा-
जिकै दुहूँ सुकाज ॥ माँगिकै विदा विनोद ॥ जातिभो विरांचि कोद ॥
१११ ॥ करहंस छंद ॥ नल सुरनि जानि ॥ किय हृदय मानि ॥
करि करि प्रणाम ॥ लखि मुदित बाम ॥ ११२ ॥ नल ॥ नाराच ॥
दिगीशकाज लागिकै कुबोलमें महाकहे ॥ सुधन्य धन्य देवितें विनीत है
सबैसहे ॥ वियोगकीजु आगिसों वच्यो हिथे बनाइकै ॥ भली भयो प्रमादु मोहिं
भागसों सुहाइकै ॥ ११३ ॥ सौरठा ॥ दोष होत गुण आइ, काहू
मिलि काहूसमै ॥ जो लघनु सरसाइ, बड़ी बड़ाई, व्रतनमें ॥ ११४ ॥
सवैया ॥ याँचतु है तुमको सुर चारौ बड़ी करिकै मनमें अनुहारचो ॥
भोहूँ कसेवकपाँयनको अब चाहत है करचो चित्त तिहारचो ॥ हो चतुरै
परवीननिमें तुमसों करिये निरधार विचारचो ॥ शूल अतूल बढ़े पछितात
जबै सहसा कलुकाज सँवारचो ॥ ११५ ॥ बिंब ॥ सुनत नल वैन ऐसे ॥
सरस पिकराज जैसे ॥ नृप मुकुटभीमजाके ॥ सुकृत तरु फूलपाके ॥ ११६
दोहा ॥ उमडिं मोद हर्ष्यो हियो, मधुर बोल सुनि कान ॥ ज्यों मधुऋतु
शोभा बढ़े, कूकत पंचमतान ॥ ११७ ॥ सवैया ॥ छूटतही नलके छलकों दम-
यंति तजी चितकी दुचिताई ॥ जातिभयो भय भूल्यो विराग भई अनुरागहि की
सरसाई ॥ ता संग बैठिहि आननखोलि औ बोलि करी बतियाँनि नढाई
नारिनबेली कि नारिनई नखते शिख लाजके सिंधु समाई ॥ ११८ ॥
दोहा ॥ आनंदके अँसुआनिसों, उमहे रोम अतूल ॥ वर्षाऋतु विकसत
भयो, ज्यों कदम्बके फूल ॥ ११९ ॥ दोधक ॥ उच्च उरोजनिपै शिर-
नाये ॥ कन्धर कन्धन नेक उठाये ॥ जानिगई मनकी मति आली ॥
आपनते चरचा हँसि चाली ॥ १२० ॥ दोहा ॥ सकल भूप शिरमुकुट
मणि, महाराज गुणभौन ॥ सत्यसिंधु सुखसिंधुशशि, तुमसमान जगकों-
न ॥ १२१ चौपाई ॥ सुनी आप मुखते निजबानी ॥ पूरीलाज रावरी

आनी ॥ हों याकी अब कथों बखानो॥ सो सुनि सुखद साँच मन मा-
 नो ॥ १२२ ॥ मूरति लिखी रावरी जहां ॥ खड़ीरहै निशि बासर तहां॥
 बार बार पांयन शिरनावै ॥ नयननराखि प्रवाह बहावै ॥ १२३ ॥
 पृथ्वी ॥ तुम्है सुरमरा लही वराणि बात मेरी कही॥ वियोग दुःख की दशा
 दुसह दीह जैसी रही ॥ सुधानिधि सुवशमै जन्मरावरो है सही ॥ मली
 मस नृसंसता कहौ आप कासों लही ॥ १२४ ॥ छप्पय ॥ तुमसों हारचो
 काम सरसतनु काँति प्रकाशौ ॥ मुखसों हारचो चन्द्र चारु चन्द्रिका
 बिलासौ ॥ यह ताकी है तिया मोहिं जानत वै दोऊ॥ देत मीनु नियराइ
 तापतन पाप समोऊ॥ यहि भाँति भयो मेरो भलो, मोहि तिहारी कै गन्यो
 सब अमर सत्य संकल्प है तौ बनाव मेरो बन्यो ॥ १२५ ॥ सवैया ॥
 मोहिं रजाइ सुधाधर अंशनि राखलै चाहत कालिका मेथ्यो ॥
 यों अकलंकिक है मिलि है मुख रावरो भै सुवृथ^१ मुख मेथ्यो ॥ हों भरी
 हों सुवधू वध पातक तो मुख माँह कलंक लपेथ्यो ॥ जो करै पातकसे
 बढती उतपातनिसों नित होत ससेथ्यो ॥ १२६ ॥ मनहंस ॥ निज
 बानदे परसन्न है रतिराइसों ॥ बहु आनि मोहिं हनै तहीं अति चाइ
 सों ॥ तुम माँह प्राण मिलाइ कै तजि देहको ॥ तब जीतिहौ तुम रूप
 पाइ विदेह को ॥ १२७ ॥ सवैया ॥ देवनके गुण वेद बखानत
 भेदिनसों शुचिकी चरचामैं ॥ ये तुमसों अनुरागि रह्यो जनु ताहि
 कहातनिकौ मन भामै ॥ प्रातबढाइ करे करजोरि सबै तपसी रविकी
 महिमामै ॥ चन्दहि देखि अनन्दित होत कुमुदिनीके कछु कामन
 आमै ॥ १२८ ॥ वंशस्थ ॥ हथियार धारी व्रत ये सदा धरें ॥
 डरै सुनासीरहुसों तिहैं भरें ॥ प्रसून नाराचन काम जो हनै ॥ न
 मोहिको राखत हो कहाँ गनै ॥ १२९ ॥ मनहरण ॥ हमतौ तिहारे
 चर्णनकी शरनि गहि ताहि मारचो चहत मदन निर्दई है ॥ ताहि कहा
 छोडत हौ देवता स्वरूप जानि देवतानि जानै वा चंडार गतिलई है ॥
 ताहीके बनावत विषम ये विशिष मधु कुटिल कठेरो मतितासों मिलि
 गई है ॥ दोषी औ अदोषीसों भलाई औ खोटाई करे होत अनरथ बात
 वेद निरमई है ॥ १३० ॥ छप्पय ॥ स्वयंवरकी राति आप रुचिसों

अनुरागै ॥ करचो साँच तुम दूत पाप तनिकौ नहि लागै ॥
 तुम मोसों मिलि यज्ञ साजि देवन सुख देहौ ॥ पूजन दान विधान
 गान गुण वेद बने हौ ॥ यहि भाँति हरषि हिय सकठ सुर सुरपुरसीह
 त समाजसों ॥ नहिं देहैं तोहिं उराहनो वदन मौनधरि जालसो ॥ १३१ ॥
 शार्दूल विक्रीडित ॥ आवैं क्यों न इहां स्वयंवर बने चारा देवता ॥
 हौं तोको बरिहौं बनाइ उनकी कैके बडीसेवता ॥ आवेंगे करुणानिवान
 उनको मोको दुखीजानिकैं ॥ वेनाही तुमहौ काम तिनहो येसी करा खाने-
 कै ॥ १३२ ॥ प्रह्लादिका ॥ यहि भाँति देखि तेरी सबीह ॥ इमि करति
 विलापनि दीह दीह ॥ बिच बीच मोन मर्याद ओलि ॥ दिय सुधासार
 भूषणहिखोलि ॥ १३३ ॥ दोहा ॥ मन्मथ अनुवर रावरो, साँचो चोर
 चँडार ॥ वनबासी मधु मित्रकरि, चित्त चुरावन हार ॥ १३४ ॥ भैन
 उपनिषदमें दयो, याका तुम्हैं सुनाइ ॥ आवैं इच्छा रावरी, सोई बने
 बनाइ ॥ १३५ ॥ दोधक ॥ दमयंति यकंत कहीं यह बानी ॥ विश्वास
 सुधारससों लपिटानी ॥ तुम देवनसंग स्वयंवर आवो ॥ तिनको नि-
 हचं करि वैन सुनावो ॥ १३६ ॥ प्रह्लादिका ॥ तब करचो नृपति यह
 अंगिकार ॥ शिरनाइ सकुचि यह बार बार ॥ पुनि विदाभयो करिकैं
 विनोद ॥ रथसाजि चलयो सुरपथ निकोद ॥ १३७ ॥ युग चारभये सब
 रैनियाम ॥ अति दुसह विथा तनु करीकाम ॥ यहिते दयाइ मानौ विरं-
 चि ॥ सब रैनि त्रिजामा कीन संचि ॥ १३८ ॥ सौरठा ॥ भयो
 जो कछु व्यवहार, आइ नृपति बिनयो सकल ॥ जानिगये तब सार,
 भये उदास दिगीश सब ॥ १३९ ॥

इति श्रीप्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मंडित भूमंडला
 खण्डल श्री खाँ साहब अली अकबर खाँ प्रोत्साहित गुमान
 मिश्र विरचिते काव्यकलानिधौ नलपरिचयो
 नाम दशमस्सर्गः ॥ ६ ॥

दोहा ॥ कथा ग्यारहें सर्गमें, राजस्वयंवर ठाट ॥ राजनको आगमन
 पुनि, नगर ग्राम वन बाट ॥ १ ॥ सौरठा ॥ स्यंदन साजि कुमारै

सब कुलीन आयेघने ॥ सुन्दर शूर उदार, चतुरस्वयंबरको सरुचि ॥ २ ॥
 सवैया ॥ कौन न मैनके बान बिँधो अरु कौन कुमार चलयो अकुला-
 इकै ॥ कौन न मारग पूरि रह्यो हय मत्त गयंदन सों सरसाइकै ॥ कौन
 पहारन चूर भयो दलिकै न गयो वन कौन बनाइकै ॥ कौन न सागर सूखि
 गयो अरु कौन दिगीश उख्यो हहलाइकै ॥ ३ ॥ तारक ॥ तेहि लायक
 व्याहनको मतिचाली ॥ हठसों हरिलेन चले अपचाली ॥ जन औरतमा-
 सेहिकी रुचि दूनी ॥ पहिचानि परं दशहूँ दिशि सूनी ॥ ४ ॥ गीत ॥
 यहि भाँतिसों सबही भरी नृपसैनभीरन सों भली ॥ छुटे शोशते तिल नाल
 है तल यों रही गसिकै गली ॥ तेहि माहँ जो तनिकौ चलयो कोउ आगेही
 सरसाइकै ॥ दमयंति व्याहिलई मनौ बहु यों रह्यो सुख पाइकै ॥ ५ ॥
 दोहा ॥ नगर बड्यो कौतुक भयो, उठीं नारि भहराइ ॥ लखैं दरीचिन
 में दुरी, तब वर्ण सब भाइ ॥ ६ ॥ दोधक ॥ रोंकि रहे मग लोग अगारी ॥
 देतधका बहुतै पिछवारी ॥ अंगन अंगगये मिलि ऐसे ॥ यंत्रन दीच
 चपे जन जैसे ॥ ७ ॥ मनहरण ॥ दिशि दिशि हूँ ते दिनकरसे दिपाते दीह
 राजनिके दल चले कुंडिननगरको ॥ धुँधुरिके पटल सघन परि पूरि रही
 समुद्र सुखाने सोच बढत सगरको ॥ तजिकै दिगीशन दुहागिलकै दीनी ॥ दिशि
 मेले है वदन सहैं शोककी रगरको ॥ डगर डगर पुरवासिनसों मिलि
 रहे जाने न परत गये बगर बगरको ॥ ८ ॥ सवैया ॥ भीर भरी चहुँ
 ओर खरी थकि राजनकी सब फौज घनेरी ॥ उच्च पताकनसों नगरी
 करु फेरि बुलावत है बहु तेरी ॥ हाथिनके हलका गण मंडि भई नभ ज्यों
 बसुधा घन घेरी ॥ चञ्चल वाजि खुरीन किये न भयो बसुधातल ज्यों
 नभ येरी ॥ ९ ॥ दोहा ॥ आखंडल ओ दंडधर, शिषी वरुण दिगपाल
 गये चारि येई तहाँ, गये न और उताल ॥ १० ॥ सखीसों सखी ॥
 सोरठा ॥ कहो सखी केहि हेत, आये और दिगीश नाहि ॥ तीनौ
 लोक समेत, कौन रह्यो उत्सव सुने ॥ ११ ॥ सखीको उत्तर स-
 खीसों ॥ मारक ॥ नृप भीम पुरोहित जे ऋषि आये ॥ दिग बन्धन
 के सब मन्त्र सुनाये ॥ बहुतैरनि जो दिगपाल कहावैं ॥ तब क्यों
 करि ता महुँ वे पहुँ आवैं ॥ १२ ॥ दमयंति बिलोचन देत हरे ॥ समुहें नसकैं

चलि ये विषरे ॥ मृगवाहन पौन जु हे दिगराजै ॥ यहि हेत तहाँ
 वह आवत लाजै ॥ १३ ॥ सोरठा ॥ स्वच्छ शैल माणे देखि, अति
 कुभाँति तन आपनी ॥ पुण्य जने सुविशेषि, नहिं आयो दिगपाल
 तहँ ॥ १४ ॥ दृढपद ॥ राजत आधे अंगमें बनिता छबि छाई ॥
 ताके अगे होति है केहि भाँति ठिठाई ॥ ऐसी भाँति विचारिके नहिं
 देखन आये ॥ महादेव परसन्न ह्वै तहँ आशिष गाये ॥ १५ ॥ धरें कहाँ
 क्षिति भारको अहि शेष सयानो ॥ नागी दिशि दिगपाल ज्यों सब देव
 बखानो ॥ खोलि विलोचन वीससै उत्सुक अतिभारी ॥ हेतु बनै नहिं ता-
 सुको पुर कुंडिनचारी ॥ १६ ॥ सोरठा ॥ लोक वेद मत जानि, आये
 तहां विरश्चि नहिं ॥ काहु कह्यो बखानि, व्याह पितामह संग करु ॥ १७ ॥
 नीलस्वरूपक ॥ आलिनके मुखकी सुनि बातें ॥ आप अनादरकी
 चरचातें ॥ दूखत चित्त गये मुख मेलें ॥ चारि दिगीश चलेतेहिगैले ॥ १८ ॥
 सवैया ॥ नलके भ्रमसों दमयंति कहूँ बरिहै हमको इन आसन यागे ॥
 सब चातुर चारि दिगीश तबै नलके सम रूप बनावनलागे ॥ कोटि उपाय
 करें श्रमकै क्रमकै न शिरी तनिकौ तहँ जागे ॥ झूठनकी छबितौ लगिहै
 नहिं जौलगि आवत साँचकेअगे ॥ १९ ॥ तोटक ॥ पहिले मुख पूरण
 चन्द्रकरचो ॥ परफुलित पंकजकै निदरचो ॥ तब दर्पणमें लखिकै न
 बन्यो ॥ सुर चारहुके उर शोचघन्यो ॥ २० ॥ सोरठा ॥ करि करि
 थाके गोहि, लही न तामुखकी प्रभा ॥ नलमुख कैसे होहि, कहेवेद सुर
 अनल मुख ॥ २१ ॥ दोहा ॥ देवनकी छविसों बड़ी, नलतन छबि
 नित नूत ॥ यहै जनावन काजविधि, मनौ करे यकसूत ॥ २२ ॥ चारौ
 भये अलीक नल, पहुँचे राज समाज ॥ सबै आपनकाजको, लजत न
 छोडतलाज ॥ २३ ॥ तारक ॥ पहुँचे सुर वे नलके कछु आगे ॥ नहिं
 नैसिक देखत सुन्दरलागे ॥ परिजात जबै हरिजू हरिलाये ॥ नहिंचारि
 सुरद्रुम होत सुदाये ॥ २४ ॥ सोरठा ॥ महादेव हियहार, आये बासुकि
 सेत छवि ॥ करत शोर संभार, सेना अनुचर रंग सब ॥ २५ ॥ मनहरण ॥ मदन
 अनल झूँक झूँकन झुलाये तूला येतूलतुलनआये आनंदके मूलहै ॥ सातौद्वी-
 प द्वीप दीह दीपति अवनीदिपाति अवनीपाति समूह राजभौननके कूलहै ॥

सुन्दर सदन सौंध बैंगला विचित्रबाग आसन सँवारे उपवन फूल फूलहैं।
 आदरसों आग है है लै राज भागलोग भागन सयोग राखे मन अनु-
 कूलहैं ॥ २६ ॥ वंधूक ॥ कुंडिन बासव आपुहि आये ॥ राज समाजनको
 शिरनाये ॥ आदरकें विनती बहुकीनी ॥ इच्छित वस्तु सबै भरिदीनी
 ॥ २७ ॥ सोरठा ॥ कीरति तिया सलील, नृप सदन नृप भावती ॥
 दान दया शुचि शील ये रखवारे कंचुको ॥ २८ ॥ तोटक ॥ जिनसों
 पहिचानि हुती पहिली ॥ तिन संगरही मतिहीन मिली ॥ नृपभीमकरी
 इकसी अरचा ॥ सब भाषतु वा गुणकी चरचा ॥ २९ ॥ दोहा ॥
 कहा राउ कह रंक सब, सन्माने नृपभीम ॥ यथायोग सब है मुदित, गहे
 आपनी सीम ॥ ३० ॥ नीलस्वरूपक ॥ राजसमाज सबै नृप मंदिर माँ-
 हगये ॥ विस्तृत भौन सुपासन संकटलेश लये ॥ ज्यों मुनिको करसंगत
 सागर आनि लसै ॥ ज्यों हरिके प्रतिरोम अनेक त्रिलोक बसै ॥ ३१ ॥
 दोहा ॥ द्वार द्वार उत्सव लगै, चित्रित करे अपार ॥ नभौ भयो भूषित
 मनौ, नृप भूषण संभार ॥ ३२ ॥ सवैया ॥ बोल विशाल विभूषण सुन्दर
 हैं जिनकें सब चाकर ठाढ़े ॥ जानतहैं अबला जन बालक मा-
 नहु ये नृप हैं श्रुति बाढ़े ॥ चामर पौन प्रस्वेद चले नहिं देखि समाज रहे
 लिखि काढ़े ॥ छत्रनिशों कुम्हिलात न फूल यों देव नृदेव गये मिलि गाढ़े
 ॥ ३३ ॥ संयुत ॥ निशि मांह सोचाति देखिकै ॥ दमयंतिको अवरोखिकै
 सब होत पूरण काम हैं ॥ अभिलाषसों अभिराम हैं ॥ ३४ ॥ सोरठा ॥
 भोर भये नृप भीम, पठये राज बोलाइ सब ॥ गहैं स्वयंवर सीम, नर
 भूषण भूषित भये ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ बैठतही नल राजके, भये राज
 छबि छीन ॥ सकल कलानिधिके उदै, ज्यों तारा श्रुति दीन ॥ ३६ ॥
 सवैया ॥ राज समाज किदीठि परी नलके पहिलेइ उछाह भरी ॥
 बानकें देखे अचानकही पुनि भ्यानक भोह मरोरि करी ॥ इन्दु उयो प-
 हिले पुहुमी महँ मूरति दूसरी काम धरी ॥ दस भयो तिसरो निहचै छ-
 लकी महिमा बहु भौंति भरी ॥ ३७ ॥ दोधक ॥ बोलि उठे उर बुद्धि
 कुचाली ॥ राजति ह्यौ कीतिकौ श्रुति शाली ॥ रोष भरे हँसि बाँह उठाई ॥
 आस अलीक नली दिसराई ॥ ३८ ॥ सोरठा ॥ गुणको दोष बखान

करत औरकी और नित ॥ खेलत सहज सुजान, निज गुण दोष विचार
 नहि ॥ ३९ ॥ तारक ॥ नित गावत है जेहिका यश वानी ॥ तडितायुत
 अम्बुज ज्यों सिय रानी ॥ नभ देखत ठाढ़ स्वयंवर साजे ॥ हरि जू
 चढि के खगराज विराजे ॥ ४० ॥ सेनिका ॥ आठ ओर आठदीठि दै
 रह्यो ॥ लोकनाथ आश्चर्य वै रह्यो ॥ भूलि विश्वकर्म हूँ सुचातुरी ॥ राजथान
 दाँख चित्त आतुरी ॥ ४१ ॥ चौपाई ॥ मूरति एक करी हरि लोचन ॥
 दूजी उदयाचल मन रोचन ॥ द्वादश तनु रावेदश तनु धारी ॥ दशहूँ
 दिशि नृप भीर निहारी ॥ ४२ ॥ सोरठां ॥ सुर गिरिकी रजनीश,
 नितप्रति करति प्रदक्षिणा ॥ तहूँ लखयो विस वीश, हरके बाँये नयन
 हूँ ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ सबनभते टंटी परे, छूटी वेणी छोर ॥ अमर वधूटीरि
 सभरी, निराख राज चहुँओर ॥ ४४ ॥ चर्चरी ॥ यक्ष लक्षनि सों
 लसैं सतलक्ष सिद्धनसों भरी ॥ भीर किन्नर कोटि कोटि महर्ष हर्षन
 विस्तरि ॥ वाल्मीकि बखानहीं निज आदिही कविताकरी ॥ गीरवान-
 निसाँचरेस गुरुनिहूँ माहेमा धरी ॥ ४५ ॥ प्रह्लादिका ॥ ये जुरेआइजे
 हैं भुआल ॥ नहिं भीम बुलाये भूमिपाल ॥ निज देखत कौतुक विधिअ-
 पार ॥ रचना सुचारु त्रैलोक्य सार ॥ ४६ ॥ विधि धरतुआनि प्रतिमास
 जोरि ॥ जेघटत सुधाधर तोरि तोरि ॥ तिन मोल रचतु इनके शरीर ॥
 ज्यों झलझलात तन हेम हीर ॥ ४७ ॥ सोरठां ॥ इन भूपनमें आनि,
 मिलै दीजिये दस्रजो ॥ परें न द्वै पहिंचानि, आपसमें किन पचिमरै ४८ ॥
 दोहा ॥ ये जे राजतहैं युवा, परम रूपकी खानि ॥ एक मननके
 जरिगये, कहा होत जगहानि ॥ ४९ ॥ उच्चमंच शिखरन सुथित, किये
 भीम करजोरि ॥ मेरुशृंग बैठे लसत, मनौ देवशत केरि ॥ ५० ॥ चौ-
 पाई ॥ देखीराज भीर बहु धाहीं ॥ भीम भूप सोच्यो मनमाहीं ॥ ये सब
 भूपति देवसरीखे ॥ कौनकहै इनके गुणसीखे ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ कौन
 सुतहि समुझाइहै, गुण कीराते कुल गोत ॥ कीजैकहा उपाइ अब, भयो
 विषाद उदोत ॥ ५२ ॥ तोटक ॥ तिन ध्यानधरचो हरिको जबहीं ॥
 हरिजू परसन्न भये तबहीं ॥ कमलैक्षनि वाणिहिं बोलिकह्यो ॥ उनहूँ मनमें
 अति मोद लह्यो ॥ ५३ ॥ हरिजू ॥ तो० ॥ यह राजसमाज सुहावत

है ॥ गुणगोत तुम्हें कहि आवत है ॥ इनके तुम जाइ चरित्र कहौ ॥ जगसी
 कंबि कौतुक मोदलहौ ॥ ५४ ॥ प्रह्लाटिका ॥ तब चली वाणि करिके प्रणा-
 म ॥ अवतरीसभा बिच बेसबाम ॥ शुभ उदरलसत बलि त्रयोरूप ॥
 साहित्य लखत लोचन अनूप ॥ ५५ ॥ मुख धरत सोम सिद्धांत चारु ॥
 अरु उदर शून्यता बाद सारु ॥ है वर्ण मात्रा दोइ भाँति ॥ सब छंद मनौ
 भुज युगलकाँति ॥ ५६ ॥ सोरठा ॥ जाके चरित अपार, सब शिक्षाके
 ग्रंथ हैं ॥ रचना सहज शृंगार, कल्प ग्रंथ आकल्प विधि ॥ ५७ ॥ गुण
 दीर्घके भाव, मधुर नदत शब्दावली ॥ सुवरणरूप बनाव, रसना र-
 चि व्याकर्णसों ॥ ५८ ॥ दोहा ॥ ज्योतिर्मय तारा रसमि, भई दंत
 द्युति मूल ॥ पूरब उत्तर पंथमत, द्वैरद छंद अनुकूल ॥ ५९ ॥ सोरठा ॥
 ब्रह्म कर्मके भेद, द्वै विधि श्रुति विद्याकरी ॥ उत्तर जानि अखंड, पर सन
 उत्तर चरण द्वै ॥ ६० ॥ प्रह्लाटिका ॥ करलसत विपचोसेतवेश ॥
 निरंदै नरची गहिकै गणेश ॥ उरराजत मुक्तामाल लोल ॥ जनु वेद-
 नके आखर अमोल ॥ ६१ ॥ तेहि कह्यो भीम नृपसों पुकारि ॥ मन
 माँह मोद करिये विचारि ॥ कुल शील दान साहस चरित्र ॥ हों कहि हों
 राजनके पवित्र ॥ ६२ ॥ सुनि मुदित भयो मन भूमिनाथ ॥ उठि दौरि
 लग्यो पगनाइ माथ ॥ करि पूजन वाको उचितरूप ॥ अति उच्च दयो
 आसन अनूप ॥ ६३ ॥ गीत ॥ तब भीम भूप बुलाइके हमलीनसों तुरतै कह्यो ॥
 इत लाइये दमयंतिको उन शीशपै आयसु गह्यो ॥ सब देश देशनते मही-
 पत ऐचिबे कहँ जाल है ॥ गुणराशि रूप रसाल मंजुल काम चंपक माल
 है ॥ ६४ ॥ सब भाँति भाँति शृंगार अंबर साजिकै सखिकै चली ॥
 सुखपालकी असवारिकै चहुँ ओरते किरणै रली ॥ बाजे ताल बीन मृदंग
 मंगल गीत गावहिँ किन्नरी ॥ जयजीव विप्रबधू पढ़ैं भरविर्द वांदिन
 उच्चरी ॥ ६५ ॥ दोहा ॥ लागे मग आगे चले, बनिदासिनके यूह ॥
 करसुंदर हाटक छरी, टारत लोग समूह ॥ ६६ ॥ तारक ॥ पहिले सत
 लाख लखी जब दासी ॥ उमड़ी सब राजनके दगहाँसी ॥ सखियाँ रतिसी
 जब फेरि निहारी ॥ तब तो तनुकी सब शुद्धि विसारी ॥ ६७ ॥ दमयंतिहि
 देखैरहे टकलायो ॥ जनु आनंद सिंधु सुधाहि समायो ॥ चमके अच

अंचलगात घनेरे ॥ रचि चित्रनिमें जनु काम चितेरे ॥ ६८ ॥ तोटक
 सब ओर सुगंधनकी लहरी ॥ अवली अति भौरनकी छहरी ॥ जिनसों
 छिपि नेकु न देखि परै ॥ परभा झर चक्रनि चित्तहरे ॥ ६९ ॥ तारक ॥
 सब ओर गुलाबनको छिरकायो ॥ हंसिकै सखियान अबीर उडायो ॥
 करकंदुक फूलनकी नवलासी ॥ परिहास करैं सुधरै दृगहाँसी ॥ ७० ॥
 दोहा ॥ निज लोचनको फल लह्यो, सब भूपन तेहि देखि ॥ आसव रस-
 श्रृंगार छवि, कछु वर्णत सन्निशेषि ॥ ७१ ॥ देखति टेढी भौंहकै, जहाँ
 जहाँ नरनाह ॥ सखी ओर कर्पूरयों, कस्तूरी परबौंह ॥ ७२ ॥ गीत ॥
 मुस्कयानिकी द्युतिसों दबावति जोन्ह पूरण धारकी ॥ यह आनि
 औनि सुऔतरी निजबामसी हरिद्वारकी ॥ सब अंग अंगनमें
 अभूषण रत्नकांति अपारहैं ॥ जनुलोक लोचन येलगे जहई तहां सुखसार
 हैं ॥ ७३ ॥ मनहरण ॥ रदनकी द्युति निदरत द्युति तारनकी बदन
 की कांति रुचि चंदकां करकरी ॥ केशनसों कुहूकै अँध्यारे निरध्यारे ध्यारे
 शीशफूल परभा प्रभाकरकी लैधरी ॥ अभिरत गिरत अलिक श्रम सीकरहैं
 अलकनि गूंदी मुक्तानकी महालरी ॥ दोऊ ओर चलत चमर अवदात
 मानौ आस पास नाचेंदस बनिता उजागरी ॥ ७४ ॥ गरब सरब वल्यो
 नाकलोगबासिनके देखि अपसरा अयसी ओर गैर नाहिने ॥ याके
 अवतरे अवतरे भयो नाकलोक भूरिभाग भूमि जामें ऐसी निधि चाहने ॥
 याको जैसो जैसो सुनि सुनिरूप दूरिनते आयें हम सब याके गुण अवगाहने
 बाहूते सहस लाख कोटिगुन्यो रूपयाके लखत बनत पै न बनत सरा-
 हने ॥ ७५ ॥ सौरठा ॥ रस श्रृंगार जलराश, कहूँ लसत पीयूष
 मय ॥ ताते भई प्रकाश, यह लक्ष्मी लावण्य निधि ॥ ७६ ॥ मुख
 शशि मुख्य सुयेहु, शशिनभ मैला छनिक पुनि ॥ भौंह चाप गुणगेहु,
 फूलनको नहि कामधनु ॥ ७७ ॥ सवैया ॥ ढारनकी युग कुंडलीकै
 निहचै विरच्यो निज काम निशानो ॥ ओर दुहूँसो कटाक्षछुटै विचहै
 निकसे सुथरे सरमानो ॥ धूरि भरचो घन भौर धरचो तजि फूल दयो धनु
 कामपुरानो ॥ याहकी भौहनसों वशकै जग जीति लयो पचिकै पहि-
 चानो ॥ ७८ ॥ तोमर ॥ विधिकौललै हिमिमास ॥ गदि खंजरीटप्रकाश ॥

तु आनि पावस जोइ ॥ यह दीठिऋषोषतु सोइ ॥ ७९ ॥ कवित्त ॥
 दमयंतीके नयन अरु, कमलन सों कछु होत विशेषसो भौरन बूझै ॥
 जनु जानि यहै विधि आनि लिखी पुतरी मिस भौरन की द्युति सूझै ॥
 रति कामके सौंध रचै कुचपै छवि पुंज छुटै नहिं दीठि अरुझै ॥ जिनकी
 द्युति देखतही चकिकै चकई चकवा झरि आपुस जूझै ॥ ८० ॥ चौपाई
 मानुष लोक न ऐसी और ॥ लखी नकाहू काहूठौर ॥ स्वर्ग उरगके लोग
 निहारे ॥ तहाँ न ऐसे रूप सँचारे ॥ ८१ ॥ सोरठा ॥ यह ऐसी सु-
 कुमारि, मनहीं सों विधि रची ॥ हाथ छुये निरधारि, होतो ऐसी रूप
 क्यों ॥ ८२ ॥ तोटक ॥ नव फूलनसों सब अंग सची ॥ यह काम
 विरंचि बनाइ रची ॥ सुर पंचम कंठ निवास करचो ॥ मुख माँह कपूर
 सुवास भरचो ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ सब ऐसे वर्णन करत, वासव सुरन
 समेत ॥ अचल चषनि सखि लखिरहे, लहे सरस सुख चेत ॥ ८४ ॥
 सोरठा ॥ कारज हेतु बनाव, निज नलको आदेश करि ॥ दुष्ट थानिवर
 भाव, धरचो इन्द्र व्याकरण कर ॥ ८५ ॥ सवैया ॥ भूमिकी मैनका
 आइ गई यह मंजु मनोहर भूषण साजे ॥ राज स्वयंवरको अवलोकत
 मंगलके सब बाजन बाजे ॥ आनंदके अँसुआनि छये नलके दृग देख
 तही अतिराजे ॥ जेजे बखान करें नरनाहते आपनी ओर निहारत लाजे ८६
 ॥ दोहा ॥ हंसचढ़ी आगे चली, श्रीभगवती अनूप ॥ दौरि लगे चर्चन चतुर
 तिहुँ लोकनके भूप ॥ ८७ ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मण्डित भूमंडला
 खण्डित खंडल श्रीखाँसाहब अलीअकबरखाँ
 प्रोत्साहित गुमानमिश्र विरचिते काव्य
 कलानिधौ स्वयंवर वर्णननाम
 एकादशमस्सर्गः ॥ ११ ॥

दोहा—सर्ग बारहमें कथा, वर्णतहैं अतिचारु ॥ द्वीप पुरी नरनाह
 सब, वर्णन करि निरधार ॥ १ ॥ सोरठा ॥ सभा देवता रूप, लखति
 नयन अनमिष विमल ॥ लाभ काज बर भूप, दमयंती ताको भजै ॥ २ ॥

सवैया ॥ तेहि अंग अभूषणमें प्रतिबिंब परें सबराजनके बहुतेरे ॥ मानौ समाइ गये बहुअंगनि मोहितहै निहचै चितचेरे ॥ गाधिकोनन्द मुनीश्वर और कहूँ रचते सुरओक घनेरे ॥ देखत देव विमानचढ़े चहुँओर लसे नभ यों हठिहेरे ॥ ३ ॥ धूपनके परवाह सुगंध हजारन छूटिरे सबघाई ॥ रोंकिरही रव रंगभरी शुभ भौरनकी अवली सबघाई ॥ मंगल तुंग मृदंगनके प्रति शब्द उठैं ध्वज चीर सोहाई ॥ सौधनकी अवली जिमि पातुर चातुर नाचकरैं सुंदराई ॥ ४ ॥ सोरठा ॥ तब भगवती सुजान, वाणि वाणि बोली विहँसि ॥ चढ़ी मराल विमान, दमयंतीके दाहिने ॥ ५ ॥ सरस्वती ॥ सोरठा ॥ आये लखि यहिठौर, कोटि कोटि ये देवता ॥ जित चितकी तुव दौर, मनविचारि करि वाहि पति ॥ ६ ॥ लगत कल्प शतकोटि, एक एकके गुण गनत ॥ मनमें लेह अगोटि, जो सुंदर नीको लगै ॥ ७ ॥ दोहा ॥ तुअ दरशनकी टकटकी, सहज टकटकीसंग ॥ अमृतपान तुव बदन रस, त्यों इनको इक रंग ॥ ८ ॥ तोटक ॥ इनके गिरि आदिहि भूमि दुही ॥ सुर साखिनकी अवलीन पुही ॥ मुक्ताफल भूरि फले बिलसैं ॥ जनु क्षीर पयोनिधि बिंदु लसैं ॥ ९ ॥ दमयंती ॥ कर जोरि दमयंति प्रणाम ठये ॥ जनु कमल मुँदे लखि चंदनये ॥ जिय जानाति यों अपराध भयो ॥ डरि चाहति औरहि ठौर गयो ॥ १० ॥ सोरठा ॥ मैले मुख सुर देखि, जान्यो चरित कहार गण ॥ मृदुल चले सविशेषि, दमयंतीके हुकुम विन ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ असुर भयंकरतासों पागे ॥ विद्याधरतो अधरस भागे ॥ सिद्ध प्रसिद्ध विराग विचारे ॥ मुनिगणके पग, ओरनिहारे ॥ १२ ॥ दोहा ॥ एक गंधरवमें नहीं, नेक गंधरव तास ॥ त्यागि सबनि न्यारे चले, करि कहार भव लास ॥ १३ ॥ भुजंगप्रयात ॥ लख्यो बासुकी नागराजा सुहायो ॥ लसै छत्र सिंहासनै साजि आयो ॥ बने वेष रूरे करैं सेव ठाढ़े ॥ फणीफुकरैं चारु शृंगार बाढ़े ॥ १४ ॥ सोरठा ॥ जाको जग विस्तार, लोक वेद वाणी विमल ॥ बोली करि निरधार, चंद्रमुखी दमयंति प्रति ॥ १५ ॥ है हरको उपवीत, गिरिजा कुंकुम मिलि अरुण ॥ पाट सूत्र परतीत, वासुकि सेवक सार यह ॥ १६ ॥ सवैया ॥ कंकन याहि करैं कबहुँ मणि सुंदर शीश हजार वखानौ ॥ याहीसों बाँधैं जटा-

निके जूटनि औ कबहूँ गुणिकै धनुतानौ ॥ आसन बाँधें समाधि समय
 शिव साधत योग महा मन मानौ ॥ प्राण समान प्रधान भयो हरके
 घर बासुकि एक खजानौ ॥ १७ ॥ छप्पय ॥ एक जीभ हरशीश इंद्र रसको
 अनुरागै ॥ और जीभ सौस्वाद अधररस तेरो पागै ॥ जानै यहै विशेष
 जीभ द्वै जाके सोहै ॥ सुन्दर शूर उदार देखि तरुणी मन मोहै ॥ जियजा-
 नि विषम विष भीतिसों, जनि डराहिं चुंवन समै ॥ विधना विचारि पहिले
 रचे, अधर रावरे अमृतमै ॥ १८ ॥ सोरठा ॥ सुनिकै वचन अपार, और ओर
 हेरन लगी ॥ फन सकुचात हजार, नील कमल मुद्रितमनौ ॥ १९ ॥
 गये कहार तुरंत, जहँ बैठे भूपाल गण ॥ मधुकर निकट बसन्त,
 वनशोभा ज्यों लैगये ॥ २० ॥ प्रह्लादिका ॥ लोकेश नारि बोली वि-
 श्वारि ॥ सखि चन्द्रवदनि थिर रहि सम्हारि ॥ लखि तोहिं चोपसों नृप
 समाज ॥ निज नयन जन्मफल लहहिं आज ॥ २१ ॥ हरि हर विरं-
 चि जिन किये लीन ॥ शृंगार सार रसके अधीन ॥ शर पंच पंच इंद्रि-
 यन छोभि ॥ वह कामकरै आनंदसोभि ॥ २२ ॥ दमयंति देखि ये द्वीप
 नाथ ॥ नवद्वीपनते आये सुगाथ ॥ इनमें विचारि निज व्याहयोग ॥ में
 वर्णतहों करि भोग भोग ॥ २३ ॥ यह सघन नाम भूपति सुठारु ॥ संग्राम-
 शूर सुन्दर उदारु ॥ जल मधुरसमुद्र याके सुदेश ॥ पुष्करसुद्वीपको है नरेश
 ॥ २४ ॥ करिजाइ तहां जलकेलि चारु ॥ वन बाग बीच लीला विहारु ॥ सुर-
 लोक सांच याको सुदेश ॥ तू शची इन्द्र यहै नरेश ॥ २५ ॥ दूतबिलंबित ॥
 लसति मूरति चारु विरंचिकी ॥ वट सुमंडलके तल संचिकी ॥ लखत
 तोहिं अनंदित होइ रहैं ॥ सकल शिल्पिनमें पदबीगहैं ॥ २६ ॥
 चौपाई ॥ राज हंस यह कीरति यांकी ॥ सेत हंसिनी त्रिभुवनताकी ॥
 आश्चर्य एकै चित चाहि ॥ नीर क्षीर विलगावति नाहि ॥ २७ ॥ दोहा ॥
 सुंदर शूर सहाहो, सकल कलाकी खानि ॥ लग्यो न मन दमयंतिको, नाम
 अना पहिचानि ॥ २८ ॥ सोरठा ॥ चित सों चतुरकहार, और
 राज ढिगलै चलै ॥ लखि मैलो निरधार, वा भूपतिको वदन शशि ॥ २९ ॥
 चौपाई ॥ वाणी बिहंसि कही जब बानी ॥ अति विचित्र पीयूष निशानी ॥
 घाहि देखि सखि पंकजनयनी ॥ हव्यनाम राजा मतिपैनी ॥ पढ़त

वंदि याके यशभारे ॥ सकल शब्द जुटे करि डारे ॥ भरे चरण चरणकित
 धरै ॥ अर्थ आनि पुनरुक्ति न परै ॥ ३० ॥ दोधक ॥ साकल
 द्वीप सुदेश बखान्यो ॥ जामहँ शाक महातरु मान्यो ॥ पल्लव जूह दिगं-
 तनराजै ॥ जामु हरी हरितालविछाजै ॥ ३१ ॥ मोदक ॥ जामहँ क्षीर
 पयोनिधि सोहत ॥ वक्र तरंगनि सों मनमोहत ॥ भौंहनकी समता
 मनमें करि ॥ जाइ तहाँ करिलेह बरावरि ॥ ३२ ॥ सोरठा ॥ क्षीर
 पान करि थूल, भुजगराज शय्या सरस ॥ ह्याँ सोवत सुखमूल,
 सिया सहित पंकजनयन ॥ ३३ ॥ तोहिं तहाँ लखापइ, सीयडरै तो रूप
 सों ॥ राखै अधिक सोवाइ, चरण चापि हरिको चतुर ॥ ३४ ॥ सवैया ॥
 उदयाचल शीश विहार सजौ यहि भूपतिके संग कै सुघराई ॥ तहँ गैरिक
 राग करौ दुगुनै पग जावककी मिलिकै अरुनाई ॥ दिनहूँमहँ साँझसि
 जानि पुरै लखि भाल पै कुंकुमकी अरुनाई ॥ चहुँ ओर चकोरनि भीर
 भरै शशि पूरण आनन देत दिखाई ॥ ३५ ॥ सोरठा ॥ तेरो विरह कृ-
 शानु, तहँ आहुति भूपति भयो ॥ करयो साँच अविधानु, हव्य आपनो
 जानिकै ॥ ३६ ॥ प्रमाणिका ॥ मुने सुबैन वाणिके ॥ परे न चित्त आ-
 निके ॥ तहीँ सुदोषु योँदियो ॥ नइंद्र याचनो कियो ॥ ३७ ॥ अधी
 शक्रौँ चद्वीपको ॥ सुरेशहै वनीपको ॥ कुमार बैस मारु है ॥ विरंचि सृष्टि-
 सारु है ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ दधिको उदधि सोहावनो, मधिजन पदके
 जामु ॥ जानौ याको यश जम्यो, तीनौ लोक प्रकाशु ॥ ३९ ॥ प्लवंगम-
 छंद ॥ क्रौँच महीधर महा विचारि विहारको ॥ रम्यबगीचनि विनोद
 अगारको ॥ ४० ॥ षटमुखके रस छिद्रनि बोलत हंसहै ॥ मानहु तव गुण गान
 प्रकाश प्रशंस है ॥ ४१ ॥ नीलस्वरूपक ॥ पूजत जाहि मिलें फल
 चारौ ॥ सागर संसृति होत उधारो ॥ सो भगवान सदा शिव सोहै ॥
 ताकहँ सेवतदेशसजोहै ॥ ४२ ॥ सवैया ॥ तेहि शैल में काम कलोलक
 ला कुलकेलिकरौ पतिके चित चाही ॥ दधिपूर पयोनिधिके तट माह
 महीपतिके संधनीषकी छाही ॥ तुव भाल कपोल उरोजनि पै न
 रहे श्रम सीकर ये बहु धाँही ॥ दधिके कन जाल मिल्यो लगि मारुतहै
 है सुवासु खवास की नाही ॥ ४३ ॥ तोमर ॥ करि भाँति भाँति न भोग ॥

तुव वाम व्याहनयोग ॥ यहि नामहै द्युतिमन्त, बुधिवंत गावत सन्त ॥ ४४ ॥
 तोटक ॥ यहिको यश हंस समान चैर ॥ परि सागर छोरिनिमोहतैर ॥
 परताप दिवाकरको निदरै ॥ परताप करै अरु पापहरै ॥ ४५ ॥ प्रद्ध-
 टिका ॥ सुनि सुनि बखान ताके सभाग ॥ मनभयो नेक नहिं सानु
 राग ॥ लै चले और ढिगको कहार ॥ तब बोली देवी वचओदार ॥ ४६
 दोहा ॥ दर्भद्वीप अवनीप यह, नयन कुशेसय आपु ॥ मोहूको उत्तम
 लग्यो, योगा योग मिलापु ॥ ४७ ॥ तोमर ॥ यहि नाम ज्योतिष
 मान ॥ महि वैरहै जिमि भान ॥ घृतको पयोनिधिचारु ॥ यहि देशमें
 विस्तारु ॥ ४८ ॥ बसंततिलक ॥ स्वच्छंद मंदर महीधर कंदरा है ॥
 यासों मथ्यो युद्ध सागर यों सराहै ॥ श्री शेषनागरजु ऐंचनकी नसेनी ॥
 तामें विहार सजिये चलि कै प्रवीनी ॥ ४९ ॥ सवैया ॥ रावरे देखि
 उरोजनको सुमिरै सुर बानर कुंभ सोहाये ॥ हाथनको लखि कै कलपद्रुम
 पल्लव चित्तलगे छविछाये ॥ आननको लखि पूरणचन्द पियूष मयूष
 मनौ मनभाये ॥ मंदर देखि तुम्हें दविहै पुनि सागर मंथनकी सुधि
 आये ॥ ५० ॥ सोरठा ॥ तासों भई उदास, ज्यों हरिजूसों गिरि
 सुता ॥ तहां कहार प्रकाश, और राज सन्मुख चले ॥ ५१ ॥
 मालिनी ॥ तबहीं वचन बोली दाहिने श्री भवानी ॥ अभिमुख भुज
 कै कै चारु शृंगार सानी ॥ अय सखि दमयंती शाल्मलि
 द्वीप वारो ॥ यह नरपति रुरो तोहिके योग प्यारो ॥ ५२ ॥ चौपाई
 वपुष्मानयाको है नाम ॥ सुरासिंधुयाके अभिराम ॥ विपति सिंधु मुनि
 सागर डरे ॥ निडर एकु यहहै छवि धरे ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ तामें निज
 परिजन सहित, प्राण पियारे संग ॥ करौ केलि मधुपानकी, कल रासरस
 रंग ॥ ५४ ॥ भुजंगप्रयात ॥ तहाँ द्रोण नामालसै शैलनीको ॥
 मनौ द्वीपको द्वीप प्यारो महीको ॥ महा औषधी काँति वाली प्रकाशै ॥
 लगे कज्जलै भेष मानौ प्रकाशै ॥ ५५ ॥ पृथ्वी छंद ॥ तहाँ शल्मली
 तरु लसत आकाशसों ॥ झरै मृदुल तूल यों परमसेतस्यौ पारुसों ॥
 मनौ गिलम ए बिछी सुभग भाँति देखी परै ॥ विहार जब तू करै चरण
 कमलिनीके धरै ॥ ५६ ॥ तारक ॥ यहिके गुणको सुनतै अकुलानी ।

शिविका चरबाहन हू यह जानी ॥ तब और नरेश समीप सिधारे ॥
 परमेश्वरि हूँ हँसि बैन उचारे ॥ ५७ ॥ सोरठा ॥ मेधा तिथि है नाम
 प्लच्छ द्वीप शासक यहै ॥ याके उरलगि बाम, ज्यों हरिके कमला लगी ॥
 ५८ ॥ चौपाई ॥ बड़ो दीह पाकरि तरु हरे ॥ जीह माहँ होइ है मति
 तेरे ॥ झूल डारि शाखा अति ऊंची ॥ खेलकेलिकी अवधि पहुँची ॥ ५८ ॥
 सवैया ॥ इक्षुर सोदय यों निधि राजत या जगतीपतिके अतिनेरे ॥
 वासो उदास होइ जाइगो भूपति स्वादकरे अधरामृत तेरे ॥ देशमें
 भोजन पान करै नहिं कोऊ सुधाकरके बिन हरे ॥ रावरे
 आनन औनष है लखि मावस है महँ चंद घनेरे ॥ ६० ॥ उपेंद्रवज्र ॥
 नदी विपासा जहँ चारुलीला ॥ महोज्ज्वलासार पियूष शीला ॥ सरो-
 जराजी विकसी तहाँहैं ॥ मनौ करौ आरति आपु चाहैं ॥ ६१ ॥ सोरठा ॥
 और ओर मनजानि, हारे चले कहारगण ॥ बोली वाणि सुवानि, ता
 ऊपर तृणतोरिकै ॥ ६२ ॥ वाणी ॥ प्रद्धटिका ॥ जेहि शीश रत्न
 उपजी अमोल ॥ सोइ जम्बुद्वीपको नृप अडोल ॥ यहि द्वीपमाहँ युव-
 राज भूरि ॥ सबरहे सुयशभरि पूरि पूरि ॥ ६३ ॥ नवद्वीपनको यह
 आपु भूप ॥ धरि आतपत्र सुर गिरि अनूप ॥ कैलाश छटा चामर
 चलंत ॥ अयओर संत सेवत अनंत ॥ ६४ ॥ दोहा ॥ जामुनि जम्बू
 मेलगी, सिद्धबधू तेहि देखि ॥ ये हाथी कैसे चढ़े, बूझैं तब सविशेषि ६५
 तोटक ॥ तेहिके फलकी द्रवरूपभई ॥ यमुना सरिता रवि आपु ठई ॥
 जेहिकेतल मृत्तिक स्वर्णमई ॥ उपमा तुव अंगन संघलई ॥ ६६ ॥
 सोरठा ॥ यामें कोटि हजार, नरपति संग सुहावने ॥ मैं वर्णों निरधार,
 आपयोग तू समुझिले ॥ ६७ ॥ सरस्वती ॥ दोहा ॥ अरि युवती
 शृंगार बरं, इन्दीवर तम भान ॥ नृप अवन्तिपुरको अहै, है तेरे मन
 मान ॥ ६८ ॥ सुलक्षण ॥ तहँ लसति अति सिप्रानदी ॥ जनु वरुण बैठ
 ककी गदी ॥ भुज लहरि तोहिं मिलैबसी ॥ नववदन पंकजमें हँसी ॥ ६९ ॥
 सवैया ॥ याकी पवित्र उज्जैनि पुरीमहँ आपु विराजति गौरि गो-
 साँइनि ॥ बामशरीर विभूषण शंभुकी तीनिहुँ लोकनकी ठकुराइनि ॥
 सेवक दीनदयालु सदा तेहिसों सिखिलीजौ पतिव्रत भाइनि ॥ चा-

इनि सों निहचै धरिहो बरदायनिके परिहौ नित पाइनि ॥ ७० ॥
 ॥ सोरठा ॥ करै क्यों न खुटचाल, पतिसों पठै न कटुक तिय ॥ चन्द्रकला
 हर माल, सदा एक परिवार है ॥ ७१ ॥ ॥ दोहा ॥ भूप ओर हेन्योकुं
 अरि, करि रूखे दृग कोर ॥ बिरस देखिबेते भल्यो, नहीं देखनो जोर ॥
 ॥ ७२ ॥ प्रह्लादिका ॥ नृप भूषण की मति शोभ माँह ॥ प्रतिबंब परी
 दमयंति छाँह ॥ तहँ देखि उदासिल चित कहार ॥ लैचले और नृप ढिग
 उदार ॥ ७३ ॥ तब वाणि बिहँसि करको उठाइ ॥ दिय गौड़ देश राजा
 दिखाइ ॥ यहि ओर नेक दमयंति हेरि ॥ मन तोपर दीन्हो वारि फेरि
 ॥ ७४ ॥ मनहरण ॥ भरे भरे कदआनि दुर दावेदारे याके प्रबल
 कृपाण मुक्ता झलर मरतहै ॥ दीरघ परिघ याके भुजके प्रताप तपी मानौ
 राजसीकसेद बिंद पसरत है ॥ जोरि कै सपत तंतु यशके बसन ब्रनबोई
 सबलोकनिको छाँह बितरत है ॥ चक्रको धरे तु याते कोऊ सरबहकहँ
 कोऊ नरवरनरहरिके तरत है ॥ ७५ ॥ सोरठा ॥ दमयंती की
 जानि, चिंता कलु महिपालपर ॥ गही और ढिग आनि, जानत भाव सुजान
 सब ॥ ७६ ॥ तोमर ॥ तब वाणि बोलि सुजान ॥ सखिवाणि मोक
 रि कान ॥ पृथुराजहै गुणगेह ॥ मथुरा महीपति येह ॥ ७७ ॥ किन अं-
 कराजतु जोर ॥ कर मूल में सब और ॥ शर चाप धारण योग ॥
 यहिको कहँ बुधलोग ॥ ७८ ॥ लृप्पय ॥ गोबर्द्धन गिरि माँह मोर
 बहु सोर मचावै ॥ ताते भयको पाइ साँप कहँ दीठि न आवैं ॥ वृंदावन
 में निडर केलिकीजै चित चाही ॥ कुंज कुंज प्रति कुसुमलता पुंजनकी
 छाही ॥ स्रमश्वेत सलिल सीकर सुरत मुक्ता भूषण अंगके ॥ ते हरत
 चोरलौ चलत थकि धीर समीर सुरंगके ॥ ७९ ॥ तोटक ॥ दमयंति
 उदासिल भाँति भली ॥ तेहि ते टरि औरै ओर चली ॥ तब वैन गिरासु
 खपाइ कहै ॥ सब राज सुनै चितलाइ रहै ॥ ८० ॥ सोरठा ॥ राजत
 मानसुरेश, काशिराज काशीपुरी ॥ याको उत्तमदेश, रजधानी है मुक्तिकर
 ॥ ८१ ॥ सवैया ॥ पातक पुंज लखे कलिके करुणामयके करुणामय
 आई ॥ क्यों तरिहैं जगजीव बड़े जलकोटि करै किन दैव सहाई ॥ काशी
 प्रकाशी करी पुहुमी परदेह तजे सुरलोक बड़ाई ॥ योग विराग विना

जप याग सु जामहँ मुक्ति परी जनु पाई ॥ ८२ ॥ सोरठा ॥ भवसा-
गर जल जंतु, काशी मरि हर रूपको ॥ लहत तोरि जगतंतु, अस्तिधातु
भूभाव ज्यों ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ गंगा गौरि गिरीश गुरु, गोविंदके गुण
गान ॥ गीरवानसे गुणिगने, गावत हैं गुणमान ॥ ८४ ॥ सवैया ॥
रतिसी तुम या नृप के उरमें कुसुमायुध सों यहु तौ मिलि सोहै ॥ जनु
आनि लयो अवतार वहीरि कै जोरी बनी रति कामकी जोहै ॥ नख
अंक उरोजन केसरि बंक अनूपम रूप बराबरिको है ॥ शिव
शीशकी चन्द्रकला लजिहै निहचै भजिहै लखिकै मनमोहै ॥ ८५ ॥
मनहरण ॥ याके दड चलत पहलसी हलतभूमि शेषरु हलत कोल क-
च्छप हलतहै ॥ धुंधुरिकी धारासों धूमकि बिधि बिधिजात शूरके तुरंग तुंग
पंगुहै चलतहै ॥ बिधिसे झरतमद दुरद विहद कद निनद मचावै नभ
शुंडनि बलत है ॥ भारे भार भारेसो सहसफन वारे फूटे रुधिर छँछारे
वै पनारेसे लगतहै ॥ ८६ ॥ सोरठा ॥ नेक दीठि नहिं कीन, दमयंती
वा ओरको ॥ वाकी वदन मलीन, भयो अनादर सो नयो ॥ ८७ ॥
एक एक ढिग जाइ, छोड़ि छोड़ि औरै गहै ॥ परमपुरुष चितलाइ,
मनो उपनिषदकी ऋचा ॥ ८८ ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मंडित
भूमंडला खंडल श्री खाँ साहब अली अकबर
खाँ प्रोत्साहित गुमान मिश्र विरचिते
काव्यकलानिधौ द्वीपपति वर्णनं
नाम सप्तमस्सर्गः ॥ ७ ॥

दोहा-सर्ग तेरहें में कथा, देशपती नरनाथ ॥ तिनके गुणगण
वर्णिबो, शुभ वाणी शुभ गाथ ॥ १ ॥ सोरठा ॥ निज तरुणीकी
लाज, करि बिलम्ब अकुलात नृप ॥ आये सहित समाज, समुद वारहू
पारके ॥ २ ॥ ठाढ़े भये कहार, कंध वंश सुखपाललै ॥ दासी सखीह-
जार, देखि भूप विस्मित भये ॥ ३ ॥ उपेंद्रवज्र ॥ सरस्वतीवैन तबै सु-

नायो ॥ महीपनीको निकटै दिखायो ॥ सुवर्णकी केतकिपर्ण जैसो ॥ सु-
 वर्णराजा ऋतुपर्ण तैसो ॥ ४ ॥ दोहा ॥ मिलन तिहारेकी अवधि, मगनभयो
 नरनाह ॥ निज रजधानी अंवधी की, करत न नेकौ चाह ॥ ५ ॥
 ॥ तोटक ॥ यहिके उरमें रसरंग रचौ ॥ जलकेलि विहारन जाइ
 सचौ ॥ सरयू जल बिंदु निहार लसै ॥ तुव उच्च उरोजनि आनि बसै ॥ ६ ॥
 ॥ मनहरण ॥ याके कुल भूपति बनायो पारावार एक दूजे नरनाह
 भरचो गंगाजल धारसौ ॥ बाँधेहैगो अर्णवके कुलको कमल राम
 जोरि वनचर कोरि सघन पहारसौ ॥ झल झल होत याके सुयश हजार
 भारे उलघत पारे पार अगम अगारसौ ॥ मार्तंड वंशको उदंड परभा
 उहोत एक ते सरस एक चंड अवतारसौ ॥ ७ ॥ मोदक ॥ यहि
 भूपति को यश क्षीर पयोनिधि ॥ नहिं पावत पार कवीश्वर की बुधि ॥
 यहिके गुणके गण जो गनि आवतु ॥ अरि कीरति की विरती विनशावतु
 ॥ ८ ॥ सवैया ॥ यहि भूपके तेज दिवाकर सो विधि दीह ते दीह
 बड़ो दिन कीन्हो ॥ वड़वानल याहीको है प्रतिबिंब पयोनिधि
 जारि प्रकाशहि लीन्हो ॥ अरिराजनिको यश तारनिलो कहूँ नैसिक दीठि
 परै नहिं चीन्हो ॥ तम भीतर बाहेरहूँ नरहै नरहै सुख मारग में मन दीन्हो
 ॥ ९ ॥ मनहरण ॥ याके अरिनतौ अप कीरति अधिक बढी यमुना
 नदी सी फैलि चली चहुँ ओरसौ ॥ याके भुजदंडनिसों भई सुरसरि
 रूप कीरति सुहाई मिलि तासों अति जोरसों ॥ संगरके संगम में द्वात
 जे सुभट कोटि कोटि उद्धट तार तू रज के सोरसों ॥ रंभाके सघन
 वननंदन सदंभ मिले रंभा परिरंभन करत साँझ भोरसौ ॥ १० ॥
 ॥ प्रह्वटिका ॥ यहि भाँति परे गुण तासु कान ॥ रहि शिर कँपाय
 कछु सावधान ॥ तब और नृपति दीन्हो दिखाइ ॥ भगवती व-
 चन बोली बनाइ ॥ ११ ॥ यह पाँडु वंश है भूमिपाल ॥ है कीरति रमणी
 भाललाल ॥ यहि ओर नेक दृगकोरहेरि ॥ जनमैन पीर बाधा निबेरि ॥
 १२ ॥ सोरठा ॥ क्षितिमें फिरी बनाइ, चढ़ि अकाश नाच्योचहै ॥
 बड़ो वंश यहु पाइ, नाचाति कीरति नर्तकी ॥ १३ ॥ दोहा ॥ याके डर
 अरिवर फिरैं, वनन वनन करिदौर ॥ निज नगरी बनसीबनी, बनी न एकौ

ठौर ॥ १४ ॥ मनहरण ॥ संगर सों भाजे अपकीरति सों लाजे अरि
 तेंदूके सघन वन तहाँ विकसतु है ॥ अनल प्रताप लागे अनिलनराच
 झूंक ताते चिनगारेनको यूह निकसतु है ॥ जैसो जैसो ईधन जरत
 त्यां बढ़त तैसो कबहूँ घटै न ऐसी अवधिकसतु है ॥ मार्तण्ड मंडल
 ओ पावक तपत भव भालपै नयन वज्र इंद्र इक्षतु है ॥ १५ ॥ तारक ॥
 यहिके दलदंति चलैं जब झुमै ॥ कुलपर्वतसे लखिये रणभूमै ॥ संग
 देवनके पृथु देखन आयो ॥ फिरि चाहत है क्षिति शैल उठायो ॥ १६ ॥
 सोरठा ॥ बोली दासी ढेरि, दमयंतीकी ओर लखि ॥ धरचो चहत
 सखिहेरि, काकपताकापै चरण ॥ १७ ॥ हँसे सभा सब कोइ, भूप बदन
 मैलो भयो ॥ जहाँ श्वेतता होइ, टकटकात तहँ श्यामरंग ॥ १८ ॥
 मालिनी ॥ तबहिं वचन बोली भारती भावलीन्है ॥ चल नयनि दम-
 यंती ओरको दीठि दीन्है ॥ यह नरपति नीको इंद्रके शैलको है ।
 कर गहि सखि याको रूपसों तोहिसोहै ॥ १९ ॥ अरि सकल
 पराने नाम याको सुनेते ॥ विपिन कल न पावैं कीरवाणी गुनेते ॥
 गुणगण गनियाके बेपटै सीखि लीन्है ॥ सुनत भजत आगे भीति
 मांडे मलीने ॥ २० ॥ दोधक ॥ या डर भूपति वेग पराहीं ॥ छांड़िदेइ
 तरुणी मगमाहीं ॥ ब्रह्मतही निज देश वतावैं ॥ शान्तल चंदन चंदगना-
 वैं ॥ २१ ॥ सोरठा ॥ धनुष बाण गुणपाइ, यह भूपति जग वश करत
 केवल गुण परभाइ, तू वशकरि याते सरस ॥ २२ ॥ मनहरण ॥ यासों जे
 भजतअरि तिनकी रमनि गिरि बिलनिमें वासर व्यतांत कारबोकरैं ॥
 चंद्रके उदोत निकरति शिखरनपर खेलकी बदकजानि बाल अरिबो करैं ॥
 रोवन लगहैं जंगी विषम उसासिनसों छतियापे चन्द्र प्रतिबिंब करिबो करैं ॥
 तिनको गहत हर्षित है रहत सुत अद्भुत दुख सुख भाव भरिबोकरैं ॥ २३ ॥
 विजय बजाइ मारू जहां है करत सोइ धरणि सराहै निजभाग सरसाइके ॥
 यहै मेरोपाति मेरो याहीमें सुरति याते कांपतिहैं थर थर सातुकबनाइके ॥
 याके सन्मुखहैं समरमें शरीर छोड़ि जैहैं सुरलोक अरिगण समुदाइके ॥
 सूरयमें बिल अवलोकत प्रबलखल मानो यम साजो दरवाजो चितला-
 इके ॥ २४ ॥ संयुत ॥ गुणराशिको सुनि तासुकी ॥ रद दाबि अंगुलि

हांसुकी ॥ चुप द्वैरही तब ईश्वरी ॥ नृप औरके ढिगको ठरी ॥ २५ ॥
 दोहा ॥ पुरी कांचीको लसै, भूप पुरन्दर येहु ॥ सुन्दर मन्दर सों अ-
 चल, बल गौरव गुणगेहु ॥ २६ ॥ मनहरण ॥ सुभट अटूट कोटि कोटि
 रण जूझवारे याको जूझ देखि मति कौनकी न भरमै ॥ तीर ज्यों कठोर जो
 लचै न सों दिगन्तजात चाप ज्यों मुठीमें थान पावै आनिनरमै ॥ जंगवीर
 धीर पेरपीरको करतभंग रंगसों करत कछू आइकै समरमै ॥ बाजत
 निशान गान जीतको वखानहोत नाचती बजारनमें वैरिनकी हरमै ॥ २७ ॥
 छप्पय ॥ भरे भाल सिंदूर उच्चअति शूर सुहांयो ॥ औररंग सब श्याम तमो-
 गुण ज्यों छबिछायो ॥ नभमें उदित उदार नखत मुक्तागणराजें ॥ शोर
 करत सब ओर भँवर भीरनसों छाजें ॥ जब हूलकरत गजराजरण मनौ
 आइ संध्या गई ॥ सब शूर तेज अथवनलगे जोरिपाणि अंजलिठई ॥ २८ ॥
 सवैया ॥ हरिको उर छोडिदयो लक्ष्मी मकरी मणिके छल पूरचो जराहै ।
 तजि कौलदयो तबते छतिया छिदि छेदि हजारन कौन सराहै ॥ आपने
 लायक वास विचारत टूटिफिरी तिहुँलोक धराहै ॥ तेजकेपुंज प्रकाशि
 तदेखि बसीतिय या भुजके पिंजराहै ॥ २९ ॥ मनहरण ॥ आंखिन
 में मोदको सलिल न धरत याके वैन उनहीसों नित सुनत सुहाइकै ॥
 तनमें न रोम याते मन्में मुदितहोकै रचत न पल पुलकावलि बनाइकै ॥
 याहीते अहीश नेक शीश न कँपावें कहुँ क्षिति गिरिबेके डर हियेमें डरा-
 इकै ॥ कहा धौं करत शेष सुनिकै सुयश याको कौनभांति धावनसों प्रीति
 प्रगटाइकै ॥ ३० ॥ समरमें अरि गज कुंभिनमें हनौतीर फोंकलौं समातवीर
 ऐसो तेजधारीहै ॥ रावरे कुचनिकी बराबरि चहत याते शालतहै तिन्हें
 सेवा करत तिहारीहै ॥ परतहै पांड तेरे करिकै उपाइ तैहीं ऐसो पति
 पाइ अहे कहा बैस बारीहै ॥ मोहूसों दुराइलेहै वातन भुराइ तैंतो
 आपु चतुराइ भरी विधना सँवारी है ॥ ३१ ॥ प्रह्वटिका ॥ दमयंति
 लख्यो मुसुक्काइ नेक ॥ तब और बतायो भूप एक ॥ सखि लखिनै
 पाल महिपाल आप ॥ दिनकर समान जाको प्रताप ॥ ३२ ॥ छप्पय ॥
 तरकस मेते लेत धनुष जोरत नहिं जान्यो ॥ ऐंचत परचो न जानि का
 नलौं धौं कब तान्यो ॥ छुटत परचो नहिं जानि चलत लागत नहिं देख्यो

याको आसुग अवानि माँह अदभुत करि लेख्यो ॥ रणरंग घोर अंगनि
 विजय गावतु हैं गुण गानसों ॥ भिदि भिदि अनेक महिमैं गिरैं जानत
 याअनुमानसों ॥ ३३ ॥ सोरठा ॥ हंसी सखी यक देखि, दमयंतीकी
 भोंहचल ॥ यामें गुणगण लेखि, संकटसों कैसे कहै ॥ ३४ ॥ सुलक्षण ।
 नृप और ढिग करुणा मई ॥ सुखपालकी संग लै गई ॥ मिथिला पुर-
 दरका कह्यो ॥ मनमाहैं मोद वहूँ लह्यो ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ पाहि
 पाहि यासों नहिं कह्यो ॥ तौ ताको ऐसी फल लह्यो ॥ समर माहैं जाके
 अरिराज ॥ याते काढ़त ओठ समाज ॥ ३६ ॥ यासों जग याँचत हैं
 जेते ॥ मन भाये पावत फल तेते ॥ कल्पवृक्ष फल भारनि भरयो ॥
 टूटि टूटि डारनिसों परचो ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ नयनसैन दमयंतीकी
 देखि गिरा गुण भूरि ॥ कामरूप राजा तवै, दयोदिखाई दूरि ॥ ३८ ॥ चर्चरी
 है सखी रतिरूप तू यह कामरूप महीपहै ॥ व्याह लायक रावरे कुलकौल
 दीपति दीपु है ॥ रंग संगरमाहैं वैरिनकी बधू शिरको धुनै ॥ जीतकी
 लिपिज्यो लिखै निज नाथ को संकटु सनै ॥ ३९ ॥ सोरठा ॥ यहि
 सन्मुख रिपु हारि, बूड़े आसुग धारसों ॥ तरनि टूक कै डारि, तऊ तरे
 सागरजगत ॥ ४० ॥ दोहा ॥ खासदान सोलै दर्ई, विरी खवासिन चारु ॥
 परिहरियै यासों जननि, मुखपरिश्रमको सारु ॥ ४१ ॥ चौपाई ॥
 उत्कल भूप और करि हाथ ॥ वाणी वर्णत भयो सनाथ ॥ नयन कोर
 सो नैक कनेखि ॥ गुण अनुरागरूप यहि देखि ॥ ४२ ॥ गीतिका ॥
 जग माहैं याचक यूह जोरि समूह दाननिसों भरे ॥ सुररुख औ सुर
 धेनु की ढिग जात हैं न कोऊपरे ॥ निज दूध सीचत धेनु वाहि सुदेतु
 भोग पतान के ॥ यहि भाँति आपस में करें उपकार को नित दानके
 ॥ ४३ ॥ सोरठा ॥ या प्रताप उर भान, अमृत अग्नि वन में छिप्यो
 धिक बड़वानल मान, निज अरि जल शरणनि बच्यो ॥ ४४ ॥ तोमर ॥
 दमयंति की रुचि जानि ॥ हँसिकै कह्यो तब वानि ॥ सखि देशकीटकराज ॥
 गुण धीर धर्म समाज ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ मुख लौ रच्यो विरांचि यह
 रह्यो न दीपति कोस ॥ अंधकार पुंजनि सज्यो, चिकुरनि कै निर्जोस ४६ ॥

मनहरण ॥ याकी आसि साँपिनि कढ़त म्यान सुखिर सौं
लहलही श्याम महा चपल निहारी है ॥ नेकु न अघात घूट घूटत पियत
नित बैरिन की प्राणवात ऐसी भूख भारी है ॥ विष की लहरि बढै तिसकी अ-
धिक चढै तिन्है नसतावै जिन सुगति विचारी है ॥ बसन गरे में डारि अँगुरीदशन
दाबि भागनिसों ऐसी नाग दवानि सुधारी है ॥ ४७ ॥ छप्पय ॥ पीठदेत जो
समर शत्रुकी ओर अनेसो ॥ जहांरहे तहँ होइ वक्र ताहीसों तैसो ॥ अंग-
नि आपु कठोर शोर ज्यों वज्र करेरो ॥ महादोषको धरै मूठिको बंध घ-
नेरो ॥ यहिभाँति दीहको दंडको गहत एक गुण चाइसों ॥ यहि सरि न
और विधि निर्मयो गुणग्राही परभाइसों ॥ ४८ ॥ याकि शर औ शत्रु
एकसे दो सोहँवै ॥ रणसन्मुख ह्वै गिरें कंप मुखशब्द न जोवें ॥ भये दुओ
जब मुक्त बहुरि आवत नहिं नीके ॥ बड़े बड़े गुण योग जिन्हें गावत सब-
हीके ॥ इमि कलु विशेषनहिं लखिपरै आश्चर्य एकै तैके ॥ तहँ एक अमि-
त्रनिको हनै एक भेदि मित्रहिसकै ॥ ४९ ॥ सवैया ॥ फूलत मंजुल
कअके पुअनि गुअत भौर महा सुखपायो ॥ हीरनकोटग नीर गही रस
तीरवनीरतमालनि छायो ॥ मारगको श्रम पारगहो गुणनागर सागर सों
बनिआयो ॥ जागत जाग करै अनुराग यही बडभाग तडाग खना-
यो ॥ ५० ॥ दोहा ॥ याकी कीरतिसों विमल, श्वेत भये जगजाल ॥
अरि अपकीरति द्वीपकी, छायासी तिहुँकाल ॥ ५१ ॥ दमयंतीकी सह-
चरी, कविता निपुण अपार ॥ याकी अपकीरति वरणि, हौं करिहौं
निरधार ॥ ५२ ॥ चौपाई ॥ या भूपतिके अयश निहारे ॥ गने
परारधते अतिभारे ॥ गावत हैं गंगागण खरे ॥ जिनके वचन समझि नहिं
परे ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ गावत लै सुर आठयों, बहु बांझनके पूत ॥ क्रूर
मरम नीके गहत, सारतंडकसूत ॥ ५४ ॥ सौरठा ॥ हँसी सभा भहराइ, सु
निके अद्भुत वचन ये ॥ भैमी चली लुभाइ, द्युति सागर लखि
निकटही ॥ ५५ ॥ दोधक ॥ पाँच लखे इक रूप सुहाये ॥
भूषण वेष समान बनाये ॥ चारि अलीक न ता मन भाये ॥ एकहि देखत

नयन जुड़ाये ॥ ५६ ॥ सौरठा ॥ नल लखि राजकुमारि, सर्वस
अपने चित्तको ॥ सुधासिंधुमधि वारि, बूढ़ि रह्यो तन मदन मय ॥ ५७ ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मंडित भूमंडला
खंडल श्रीखाँसाहब अलीअकबर खाँ प्रोत्साहित
गुमानमिश्र विरचिते काव्यकलानिधौ देश
पतिवर्णनं नाम त्रयो दशस्तर्गः ॥ १३ ॥

दोहा ॥ सर्ग चौदहें में कथा, पंचनलीको संग ॥ वर्णनश्लेष-
विलास मय, भैमी संशय रंग ॥ १ ॥ सौरठा ॥ ज्योँ सुगंध अलि
माल, नंदन सो ढिग कल्पतरु ॥ त्यों भैमी सुखपाल, चलि कहार जहँ
पंचनल ॥ २ ॥ कह्यो भगवती टेरे, कलु गाथा अश्लेषकी ॥ वासवनल
त्योँ हेरि, लख्यो न काहू भावसो ॥ ३ ॥ दोहा ॥ वीरसेनिउद्भव
असुर, बलजित पौरुषसार ॥ सेनाचर गज मुख सहित, दानवारि विस्तार
॥ ४ ॥ सवैया ॥ भूभ्रत शत्रुनके हाठि काटत कोटिक यक्ष अगोठि
अठाये ॥ देवनि माहँ अवीश यहै गुण रंजित जीव सबे चितलाये ॥
पाइँनमें अनुरागित है शुभ सेवत लेखनिके गण आये ॥ याके संयोग
शची सुखलै विधि एक रची सब अंग सुहाये ॥ ५ ॥ प्रह्लाटिका ॥
सुनि गिरा बैन नल हरि समान ॥ निरधार भयो नहिं परत कान ॥ नहिं
नयननसोँ पायो विशेसु ॥ ज्योँ वासव त्योँ नैषध नरेशु ॥ ६ ॥ पुनि
गिरा गूढ़ बोली विचारि ॥ नल राज अग्रि सोँ एक सारि ॥ सखि यह
प्रताप निधि शुचि स्वरूप ॥ शिर दिपत ज्योति ताके अ-
नूप ॥ ७ ॥ मुख विबुध सभाको यहै देव ॥ सब याग करत याकी सु-
सेव ॥ अति तरल हेति परराथिव तूळ ॥ याकी विभूति फैली अतूळ ॥ ८ ॥
॥ सौरठा ॥ सुनि वाणीकी वानि, मिलि समान नल अनल सोँ ॥
परी न कलु पहिचानि, राजकुँअरि विस्मित भई ॥ ९ ॥ मनहंस ॥
तबहीं हँसी परमेश्वरी सुखपाइकै ॥ दमयंति ओर अनूप भौंह चलाइकै ॥
रविनंदके गुण गान तौ वरणै लगी ॥ नलराजके छलसों प्रकाशनमें

पगी ॥ १० ॥ सोरठा ॥ धरत दंड सब ठौर, याकी रुचिसों अमरकी ॥
 धर्मराज शिरमौर, मित्र परमप्रिय चित्रगति ॥ ११ ॥ सकल भूतगण
 बास, सब याके वशमें रहत ॥ नेकु न होत उदास, तीनिलोकके भोगसों ॥
 १२ ॥ दोहा ॥ गिरा बोलि ऐसे वचन, नेक डोलि पगमंद ॥ नलके छल
 वरणे लगी, जलनायक मुख चंद ॥ १३ ॥ रहत सर्वतो मुख बनी
 अनी ग्राह भटजोर ॥ लसति भूर तरवारि निधि, जासु बाहिनी घोर ॥
 १४ ॥ चौपाई ॥ रतनाकर याके बहुतेरे ॥ समुदै निशिवासर हित हेरे ॥
 काम धान महिमान खढ़ावे ॥ सदा प्रीतिघन रस वर्षावे ॥ १५ ॥ दोहा ॥
 वचन अनेकारथ सलिल, सींचति ज्यों ज्यों वानि ॥ त्यों संशय लतिका
 बड़ी, दमयंती उर आनि ॥ १६ ॥ तोटक ॥ नलके गुण गौरवकी
 रचना ॥ मति देबिकरी मतिकी सचना ॥ यह राजत है सुररंग सभा ॥ छवि अक्ष
 हजारनको परभा ॥ १७ ॥ वह जारत दारुणको सबहीं ॥ झलकै परिताप लगे
 जबहीं ॥ घन फूलन भूषितसी तनु है ॥ भुवनेश्वरनाम सोहावनु है ॥ १८ ॥ पति
 दाक्षिण और न या सरिको ॥ परमारत चोप बचै टरिको ॥ सुनिकै यह
 अद्भुत वात नई ॥ पचहूँ नल ओर चकी चितई ॥ १९ ॥ नहिं पावत है
 निरधारकियो ॥ धरको हियरा अति तापलियो ॥ हरिनी जनु चानक
 जालपरी ॥ जनु सोनचिरी अबहीं पकरी ॥ २० ॥ दोहा ॥ इन्द्र अनल
 यम वरुणसों, नलवर्णन मिलिजात ॥ चारिपक्ष गणिदोष मन, पंचमही
 ठहरात ॥ २१ ॥ एक एक नल लखिलकी, पंचमपै मनमोज ॥ गनती
 बाणनभी सफल, मानौ करी मनोज ॥ २२ ॥ चारिओर हेरै नहीं, लखि
 पंचम बडभाग ॥ मनअन्तर उपज्यो मनौ, जन्मांतर अनुराग ॥ २३ ॥
 लीलाछन्द ॥ हैगई अति विकलतनमें छूटिजात संभार ॥ सुमिरिकै
 मनमाहँ आनति हेमहंस विचार ॥ देवलोक मरालको इत पाइये किन
 आज ॥ आइ देइ बताइ तुरतै कौनहै नलराज ॥ २४ ॥ अन्यच्च ॥
 लखत चन्द्र अनेक जगजन आंखिमें जबरोग ॥ है भयो भ्रम मोहिं अद्भुत
 कौनरोग संयोग ॥ कायव्यूह बनाइकै नल धों करै परिहास ॥ सकल
 विद्यनिको कलानिधि खानिहै सविलास ॥ २५ ॥ तोमर ॥ इनमाहँ
 है नल एक ॥ पुनि एकराज विवेक ॥ अरु तीसरो तहँ काम ॥ युग

दसको अभिराम ॥ २६ ॥ दोहा ॥ पहिले पेखे विरह में
 नल केनैक भ्रमलागि ॥ लखति पाँच, आई मनौ, वहे दशाजियं
 जागि ॥ २७ ॥ तारक ॥ इनमें नल क्योंकरि जानि परैगो ॥ नहिं मानुष
 लक्षणसों उभरैगो ॥ इनमें सुरचिह्न परें लखि नहिं ॥ अकुलाइ गई कल-
 पै मन माहीं ॥ २८ ॥ दोहा ॥ मैं कैसे पाऊँ नलै, जड़ मानुष अज्ञान ॥
 कहि गाथा अश्लेषसों, श्री भगवती सुजान ॥ २९ ॥ मालिनी ॥ अमरस
 दैहूजै याचिहौं रावरे सों ॥ नल नरपति मोको दीजिये पाधरे सों ॥ मदनी
 अनल लागो सुखि केषों तिहारो ॥ करुन जलधिजीको दोषलाग्यो हमारो
 ॥ ३० ॥ चंद्रमाला ॥ भटकायो नलरूप आपुधरि पेखो पुण्य तिहारो ॥
 मूरख हाथ परी पोथी ज्यों पर उपकार बिसारो ॥ जाके करम लिखो ईश्वरै
 जो सोई हो तु सवारि ॥ सूरय तापलगे फूलत हिमिलागत कमल
 पजारि ॥ ३१ ॥ देवीके कर वरन मालदै जो नलको पहिराऊँ ॥ तो दि-
 गीश देवी दुख मानै कैसे तिन्हें लराऊँ ॥ जो इनमें साँचो नल सोई वरन
 माल यह धारै ॥ तो समाज पंचनमें कोऊ कैसे लाज बिसारै ॥ ३२ ॥
 चारि नलनको एक शेष है पंचम अचल बखान्यो ॥ सुधा सलिल सी-
 चति नयननको भैन रूप मन मान्यो ॥ यासों रसवश मेरो चित है
 सरबसु यहै सुहायो ॥ होत कवितके छोर छबीली अनुप्रास छविछायो ॥
 ३३ ॥ प्रह्लाटिका ॥ इमि करि विकल्प संदेह चित्त ॥ पायो न चिह्न-
 नेको निमित्त ॥ अति मुदित होत लखि नलरसाल ॥ विनलाभ अधिक
 अकुलात वाल ॥ ३४ ॥

इति श्रीप्रचंड दोर्दण्ड प्रताप मार्तंड मंडित भूमंडलाखंडलै
 श्रीखाँसाहब अली अकबर खाँ प्रोत्साहित गुमान मिश्र
 विरचिते काव्यकलानिधौ पंचनली वर्णनं नाम

चतुर्दशस्सर्गः ॥ १४ ॥

दोहा ॥ सर्ग पंद्रहें वर्णबो, वर्णमालको ठाटादै अशीश
 सब देवता, लौटे सहित उचाट ॥ १ ॥ सौरठा ॥ नल
 मिलिबेके हेत, सेवन देवनको लगी ॥ सुरभी देवनिकेत, सुर सेवादै

नरसुरभिं ॥ २ ॥ धूपत सलिल चढ़ाई, आल बाल परदक्षिणा ॥ इष्ट
 भिष्ट फलपाई, देत देव सब देवतरु ॥ ३ ॥ सवैया ॥ देवनकी मन
 भावनाकै सुमिरे एक एकके नामसुहाये ॥ आठहुसिद्धि नवोनिधिपावत
 गावत जे इन में चितलाये ॥ साधि समाधि धरचो हियध्यान करचो कल
 स्यानभये मनभाये ॥ भाजन भाग सभाजनराग भरेरस देखि रहे टक
 लाये ॥ ४ दोहा ॥ गीतसहित षट पद जुकुत, कुसुम लताके संग ॥
 पूजनलागी विनय बहु, सब छंदनके रंग ॥ ५ ॥ वंशस्थ ॥ करीवडी
 भक्ति दमयंति दीनहै ॥ रहे सु चारौ सुर आपु लानहै ॥ हरचो महामोद
 दया निकेतहै ॥ करै कृपाताहि सुबुद्धि देतहै ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ जो
 जो गाथा गिरा प्रकाश्यो ॥ ताको अर्थ हियेमें भास्यो ॥ सबमें नल नल
 में सब जोरे ॥ नलकी अधिकाई चित भोरे ॥ ७ सोरठा ॥ व्यंग्य
 वचनकी खानि, जापर यह किरपा करै ॥ सो मुरति धरिआनि, खरी
 भारती आपुहै ॥ ८ ॥ संयुत ॥ नहिं पांइ भूतलमें लगे ॥ सुरचारि
 आनंद सों पगे ॥ नलकेलगे पगमेदिनी ॥ लखिजाति जानि नितंवि-
 नी ॥ ९ सुरके शरीरनमें कही ॥ कणरेणुके लखिये नहीं ॥ नलदेहपै
 द्युति पाइकै ॥ जनुभूमि भेंटत चाइकै ॥ १० तोटक ॥ नलके
 पल्लोइन माँह लगैं ॥ सुर नयननमें न निमेष लगैं ॥ सुर शीश
 न फूल मलीन भये ॥ नलके शिरके कुम्हिलाइ गये ॥ ११ तारक ॥
 इन भेदनसों नलको पहिचान्यो ॥ चित अन्तरसिंधु सुधाहि समा-
 न्यो ॥ तब काम उतायलकै अकुलावै ॥ जयमाल न लाजनते पहि-
 रावै ॥ १२ ॥ अन्यच्च ॥ जबहीं पहिरावन को उमहैरी ॥ तबसा
 तुक तंभु उठै तनवैरी ॥ दग लाज मनोज हिये डरपावै ॥ दुहुँ ओर बंधी
 फिरकी सम धावै ॥ १३ ॥ सवैया ॥ नैसिकु हाथ वरचो पिय त्यो
 पुनि ऐँचिलयो छतिया धरकानी ॥ चंचल दीठि चली उतको हँसि
 कोरनि हालसि बीच बिलानी ॥ आवत जात कटाक्षर हैं नल हैं नल हैं
 जितको अभिमानी ॥ कामकला कुल आकुलहै अबला अबलाजहि पै
 ठहरांनी ॥ १४ ॥ दोहा ॥ अर्ध नयन फेरचो हरे, गिरा वदन की
 ओर ॥ नल मुख कमल लखे दुरे, अर्ध नयन की ओर ॥ १५ ॥

देवी ॥ दोहा ॥ लाज लहरि लीला मई, नई तुहीने आपु ॥ तौहीं
तलगाति लै मिलै, कै शीतल कै तापु ॥ १६ ॥ तब देवीके कान लगि
दमयंती परवीन ॥ अर्धनाम नलको लियो, हँसि मृदु उत्तर दीन ॥ १७ ॥
लै उतारि सुखपालकी, गहे हाथ सोँ हाथ ॥ जरी बिछौनानिपै चली
गिरा लिये ही साथ ॥ १८ ॥ कवित्त ॥ बाहुलता गलमेलिगिरा
दमयंति करी मधवा मगसौहै ॥ नैगइ अंग भई दुगुनी ससवाइ करी
कुटिलै पलभौहै ॥ हाथसों होथ गह्यो हँसिकै मति साथ चली पग
द्वैमनमोहै ॥ लाजलता हिय में उलही झहराइ भजी दुलही सरिसौहै
॥ १९ ॥ चित्रय ॥ आवत देखि दमयंती ॥ रीझत इंद्र इकंती ॥
भाजति पेखि डिरानी ॥ वासव दीठि लजानी ॥ २० ॥ दौरि गही पुनि
वाही ॥ त्योँ झहराइ झुकाही ॥ वासवके ढिग आनी ॥ गूढ़
गिरा मुकुयानी ॥ २१ ॥ गीतिका ॥ यह रावरी अरचा
करै करजोरिकै चितलाइ कै ॥ नहिं माल मेलिसकै गरे नल-
राजसों समुहाइकै ॥ तुम माँहँ एक वरै तबै जब तीनिको अपकारकै ॥
यह जानिकै सुर अंशमें नलमें चहै सुखसारकै ॥ २२ ॥ निज हाथन
सों गहि कंध ग्रीव मिलाइ पाँयन पै दर्ई ॥ करिये कृपा सुरनाह यापर रा-
वरी शरणे गई ॥ मुसुकयाइ नेसुकही सुरेश्वर भौह सैननिसों कह्यो ॥ हरषीं
सखी सिमरी गिरा नल ओरको मारग गह्यो ॥ २३ ॥ दोहा ॥ नलसों
हैं जब लै चली, वदन हँसौहैं वानि ॥ झुके रिसौहै नयनके, लीन्ही भौहैं
तानि ॥ २४ ॥ कवित्त ॥ बाजत नेवर नेकु चलै झिझिकै पुनि पीछेहिको
फिरि आवै ॥ नेकु लखे तिरछेदग कोरन जोरि कथा लजि नारि नवावै ॥
कबहुँ मुरि पीठि दै ठाढ़ी रहै कर ओटदैं मालपियै देखरावै ॥ यह पूरि
मनोज रह्यो नलके वह दूरिहिते छलकै ललचावै ॥ २५ ॥ मालकं ॥
चली गज चालि ॥ लगी ढिग आलि ॥ गई नलपास ॥ भरी सु विलास
॥ २६ ॥ सवैया ॥ चौर पँखा चहुँ ओर सुगंध सजै तिन दासिन त्योँ
चित लावै ॥ त्योँ त्योँ भजै कर ठेलि रिसाइ ज्यों ज्यों मति लै नलसों
नियरावै ॥ पाँइपरैं सखियाँ सिगरी कर जोरि निहोरत बाँह उठावै ॥
ग्रीवनये विहँसै क्षितिपाल खरी नहिं माल पियै पहिरावै ॥ २७ ॥

देखतही उमझ्यो परै वापर तोरति अंगन लेत जम्हाई ॥ लाइरहै टकसी
 थिरहै जनु लेत पिये तियकी सुघराई ॥ वा ढिग घेरि चलैं सखियां. पग
 चारिकलैंकर ऐंचत आई॥अंचल ओट दियेही दिये कर चंचल माल नलै
 पाहिराई॥२८॥दोहा॥ जनु निज प्रीति प्रतीतिकी, बरनावली विशाल ॥
 पाहिराई नलके गरे, नव मधूककी माल ॥ २९ ॥सोरठा॥ पुही द्रुबदल
 श्याम, जन गूंगार रस बेलि यह॥फाँस चलाई काम, भूपतिके गरमें परी३०
 नल उर संगम पाइ, अंकुरसों पुलकित भई॥देखति भौंह चढ़ाइ, दमयंती
 वा मालको ॥ ३१ ॥ सर्वैया ॥ नौबति बाजिउठी इकबारही मंगल
 वीन मृदंग सुहाये ॥ गाइ उठीं सखियां सुखगीत निछावरि भूषण चीर
 लुटाये ॥ वन्दिपैदें विरदावलि नन्दित आशिष विप्रबधूनि सुनाये ॥
 नाचतीहैं चहुँओरनि किनरी भीमके धाम असीम वधाये ॥ ३२ ॥
 तोटक ॥ नलके उर निर्मल माल नई ॥ सब फूलनिसों प्रतिविंबई ॥
 कछु नाहिं कछूक समाइगई ॥ सरधार मनोज मनौ हतई ॥ ३३ ॥
 तोमर ॥ नलमाल सों उरलागि ॥ परसे दुआवत जागि ॥ जनुअर्ध
 साजत काम ॥ तेहि व्याहको अभिराम ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ तूल तूल
 दमयंतिके, कैपतअंग सतिभाइ ॥ आश्चर्य भूभ्रतु कैप्यो, कामबाण वस
 वाइ ॥ ३५ ॥ भुजंगप्रयात ॥ जहीं मालकी ओर राजा निहारो ॥
 गरो पूरिआयो महामोद भारो ॥ भयो रंग पीरो धरो हीय धीरो ॥ कह
 म्बै कली ज्योँ सजोहै शरीरो ॥ ३६ ॥ लखे भाव ऐसे तबै देव
 चारौ ॥ उदासी भये आपको मानमारौ ॥ धरे आपने रूप शोभा
 प्रकासी ॥ हँसे जे जुरे आइ राजा विलासी॥ ३७ ॥ तोमर ॥ प्रगटे
 सुनयनहजार ॥ कर वज्र तीक्ष्णधार ॥ सबराज हेरत नीति ॥ इमि
 इन्द्र आवत दीति ॥ ३८ ॥ चहुँ ओर छूटत ज्वाल ॥ तहँ बैरही छबि-
 लाल ॥ इमि देखि पावकरूप ॥ विस्मय भये सब भूप ॥ ३९ ॥ कर
 दण्ड लोंवनलाल ॥ सब देह राजतकाल ॥ यमराजरूप
 झिहारि ॥ भजिकैं चलीं सब नारि ॥ ४० ॥
 ॥ दोहा ॥ चित्रगुप्त कायस्थगुण, दीति परचो तेहि ठौर॥ मसी लिखै
 इक पत्रपै, मंसी छिपावत और ॥ ४१ ॥ तारक ॥ करपास धरे जल

नायक नीको ॥ तहँ देखिपरो उजरो जगतीको ॥ परमेश्वरिहू निजरूप
 प्रकाश्यो ॥ अति अद्भुत तेज तहाँ तब भास्यो ॥४२॥ दोहा ॥ नल
 दमयंती की लखी, जोरी परम रसाल ॥ तब बोल्यो सुरपाल हैंसि
 सुन्दर वैन विशाल ॥४३॥ प्रह्लाटिका ॥ नल कह्यो हमारो दूत भाउ ॥
 दमयंति लह्यो ताको प्रभाउ ॥ अब मिल्यो तोहिं सरवसु सुचेतु ॥ शृंगार
 सार सुखको निकेतु ॥ ४४ ॥ अग्नि ॥ प्र० ॥ नल करे होम हय मेघ
 याग ॥ बहु दिये लोकपति देव भाग ॥ हम भये सुदित मन पाइभोगु ॥
 दमयंति भयो तेरो सँयोगु ॥ ४५ ॥ नलराज तोहिं वरदान देतु ॥ तू
 सरसरसोई स्वादलेतु ॥ करि सिद्ध शुद्ध परकार भूरि ॥ हम कराहि
 पाक जिमि अमियमूरि ॥ ४६ ॥ धर्मराज ॥ प्रह्लाटिका ॥ हम
 धर्मराज भषित पुकारि ॥ नलराज नेकु इतको निहारि ॥ नहिं कष्टदशा
 तुमको लखाइ ॥ नहिं चित्त धर्मते अंत जाइ ॥४७॥ वरुण ॥ छप्पय ॥
 जहाँ जहाँ तुम चहौ तहाँ निर्जल महसागर ॥ सकल बाहिनी संगरहैं
 तेरे गुण आगर ॥ करत ताप नहिं तेज भानु पावक डरि जाही ॥ देश
 देशके गौनरहौ जस मेघन छाही ॥ कुलि फूलत फूल सोहावने ते सुगंध
 अतिही धरें ॥ दमयंति संग जलकेलिमें महामोद तुमको करैं ॥
 ४८॥ दोहा ॥ मेरी सखि तेरी प्रिया, है प्यारी अति मोहि ॥ मोहि रही
 होंतोहिं लखि, देति तहीं बरुतोहि ॥४९॥ बिन माँगे जो पाइये, ताहि न दीजै
 छोडि ॥ दैव देइ जो करि कृपा, लीजै ओली ओडि ॥५०॥ छप्पय ॥
 नारि पुरुष आकार भेद द्वै भाँति बखान्यो ॥ पारब्रह्मके रूप तेजको
 पुंज प्रमान्यो ॥ आदि अन्तमें प्रणव बीच हरि बीज विराजै ॥ अनल
 संग शुभ रंग लता लक्ष्मी छवि छाजै ॥ शिर मुकुट सुधाकरकी कला
 अमल लसै परकाश सौं ॥ चित सुमिरि भूप मम मन्त्रको होइ सिद्धि-
 सविलाससौं ॥ ५१ ॥ जपतु याहि चित लाइ होत सुरगुरुकी वानी ॥
 मोहत सुर नर नारि कामकी कान्ति लजानी ॥ जो जो मन अभिलाष
 तीनि लोकनमा आवै ॥ सुरहू दुर्लभ होइ वस्तु तुरतै सो पावै ॥
 यहि भाँति भोग संसारके बाढत ज्ञान सुतंत्रहै ॥ नल भूप सुनै मम
 रूपमय यह चिन्ता मणि मन्त्रहै ॥ ५२ ॥ धूप दीप युत पुहुप भोग

पूजा जो साजै ॥ हंसवाहिनी मोहिं ध्यान धरि ज्ञान समाजै ॥ वर्ष
 एक जो जपै मन्त्र चिंतामणि मेरो ॥ पावै मेरो रूप भानु सम परै न
 हेरो ॥ जेहि ओर कृपा करिकै लखै धरै हाथ जेहि शीशपै ॥ सो रचन
 लगै कविता तुरत जैसो बनति अहीशपै ॥ ५३ ॥ सवैया ॥ पुण्य
 श्लोक करै कविता तुम पुण्यश्लोक भये जग जाने ॥ कीरति कीरति
 तीनहु लोक विलोकि तुम्हें जन लेत खजाने ॥ सुन्दरता मणि
 आकर तेज दिवाकर ते झमकैं सरसाने ॥ पाप हरैं सुमिरे कलिके
 तुम श्रीहरिके सरिके मन माने ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ बोलैं देवी देव
 सब, कहा देइ तुहि धीर ॥ जे तो तिय पतिव्रत हरै, होइ भस्म सो वीर ५५ ॥
 मनहंस ॥ तब देवता नभको चले सुखपाइकै ॥ घनघोर दुंदुभि दीह दीह
 बजाइकै उठिकै चले नृप झुंडसों अकुलाइकै गयेयक्षकिन्नर दानवादि लजायकै
 ५६ ॥ चर्चरी ॥ ओर राजनि सों सखीगण व्याहको ठहरा ॥ भीम भूपति सों
 कहाइकै दमयंति यों चित चाइकै ॥ ते सखी सब रूप सुंदरि शील भूषणसों
 भरी ॥ हेरि हेरि निहाल होत महीप ओरानिको खरी ॥ ५७ ॥ चौपाई ॥ इंद्र
 संग सुर तीनि सिधारे ॥ हंस चढ़ी देवी पग धारे ॥ औसरजानि तबै
 आति भल्यो ॥ नल डेरनिको चाहत चल्यो ॥ ५८ ॥ ॥ दोहा ॥
 वरषे फूल अकाशते, शरसे छोड़त मारु ॥ पुंजनि गुंजत ओर चहुँ, भोर-
 निको परिवारु ॥ ५९ ॥ मालिनी ॥ जहँ जहँ निज डेरा हते तहाँ
 भूप आये ॥ नल मिलि दमयंती संग बैठे सुहाये ॥ मुदित चितमहाँ ह
 व्याहके साजसाजै ॥ सब सजत बधाई भेटदै भीमराजै ॥ ६० ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मण्डित भूमंडला
 खण्डित खंडल श्रीखाँसाहब अलीअकबरखाँ प्रोत्साहित
 गुमानमिश्र विरचिते काव्यकलानिधौ देवगमनं
 नाम पंचदशस्सर्गः ॥ १५ ॥

दोहा ॥ सर्ग सोरहमें कथा, नल विवाहको रंग ॥ दमयंती शृंगा-
 रिवो, अंग अंग परसंग ॥ १ ॥ सोरठा ॥ निषधदेश नरनाह, डेरनको
 हर्षित चले ॥ वरन माल उर माह, लागे दूजी दमयंतिसी ॥ २ ॥ दोहा ॥

मारगमें वर्षत चलयो, अरयिनको धनभार॥ करिराखे बहु ढेर उन, ढोवतर-
हि न सम्हार ॥ ३॥ भीमराज भीतर गयो, रानी सों बतराइ॥ जनी सहे-
लिनसों सहित, लीन्ही सुता बोलाइ ॥ ४ ॥ राजा रानीसों कह्यो, बड़ो
तिहारो भाग ॥ नल सों पायो पाहुनो, जामें जग अनुराग ॥ ५ ॥ सजें
साज सब सुंदरी, कुअँरि व्याहके योग ॥ बाहेर आइ बुलाइ लिय, सकल
ज्योतिषी लोग ॥ ६ ॥ प्रह्लटिका ॥ तब व्याह लगन सोधी बनाइ ॥
नहिं सप्तम अष्टम ग्रह लखाइ ॥ गुनराति रहै छतिस अमोल ॥ दशदोष
दूर भजि गयें लोल ॥ ७ ॥ तब दूत वेगि भेजे महीश ॥ नल निकट
जाइ कहियो अशीश ॥ करिये पवित्र हम कोश धाम ॥ तुव चणोंदक
सों सफल काम ॥ ८ ॥ शशिवदन ॥ कहि चारण वानी ॥ नरपति
मानी ॥ हँसि नल बोले ॥ वचन अमोले ॥ ९ ॥ दोहा ॥ मेरो कहौ
प्रणाम चलि, हों आवत यहि बेर ॥ बिदा कियो नृप दूतकी, दिये दान
वसुदेर ॥ १० ॥ तोमर ॥ सुनि भीम दूत सुवधि ॥ मनमाँह आनँ
दमानि ॥ रथ वाजि वारण आनि ॥ पठई तहाँ अगवानि ॥ ११ ॥
दोधक ॥ जे लिखनो करि चित्र प्रबीने ॥ ते अति गर्व करैं रँगभीने ॥
जे पकवान घने करि जानै ॥ ते अपनीसरि और न मानै ॥ १२ ॥
दोहा ॥ करत खुशामाँदि सबनकी, राजरानि गुणग्रेह ॥ पान दान सन-
मान कै, मानति सबन अछेह ॥ १३ ॥ तोटक ॥ सबही मुक्ता मणि-
माल लगी ॥ पुरद्वारन द्वारन रंगरँगी ॥ भरि आनँददीह बिलासतु
है ॥ मुख मंजुल हास प्रकाशतु है ॥ १४ ॥ प्रह्लटिका ॥ कुलिक
तरीजीके बसन चारु ॥ ते सजे पुहुप कीन्हो जूँगरु ॥ निज दै सुगंध रँग
रंग गीन ॥ झालरि वितान झौ झलक लीन ॥ १५ ॥ तनसजे
जराऊ नग • अमोल ॥ पुर प्रजा फिरें भरि ललक
लोल ॥ मणि बँधे खरंजा धाम धाम ॥ प्रतिबिम्ब होत तिन माँह
बाम ॥ १६ ॥ नील ॥ बाजत हें घन बाजनये चहुँ ओर घने ॥
साजतहें तत्काल तहाँ तत्मोदसने ॥ द्वै सुखिरै मुख उच्च सुधाध्वनि टीप
पढ़ै ॥ आनँदकी ध्वनि धीर सुने मन मोद बहै १७॥ सवैया ॥ वीणनकी
ध्वनि ये न छपावत वैननकी ध्वनि गीत छपावै ॥ गीतनकी छबि लोपत

झरझर दुंदुभि झर झरकां सकुचावै ॥ दुंदुभिके रव दूरि करै जठ कूक
 निको हनि दीह बजावै ॥ बेऊ न नैसिक जानि परै जब मर्दल ताल
 बज्जवत गावै ॥ १८ ॥ दोहा ॥ ये कोटिन बाजन बजें, मुखर सोर
 संभार ॥ चीहकरन दिग्गज लगैं, फूटत करन अपार ॥ १९ ॥
 चौपाई ॥ सात कुंभके कुंभ सुहाये ॥ ते सुगंध जलसों भरि लाये ॥
 उबटि कुँअरि चौकी बैठारि ॥ मंगल न्हान सवँरै नारि ॥ २० ॥
 चर्चरि ॥ एक रावरिको चहै दमयंतिके कुचकी सही ॥ कोपसों हित
 सखीही घट ग्रीवसों गहिकै रही ॥ बीरि नवल रसाल पल्लव ओषधी
 अधिकै परी ॥ न्हान साजै मीत सुंदरि गीत गावैं किन्नरी ॥ २१ ॥
 दोहा ॥ न्हाइ वसन पहिरे विशद, रही विहद छवि छाइ ॥ शरद चाँदनी
 सीलसी, निकसी घन विलगाइ ॥ २२ ॥ झहरि झहरि जलकन गिरैं
 छहरि छबीलीवार ॥ मनौ मिले मुकुता नखत, ते उगिलत तम धार ॥
 २३ ॥ बार बने वर्षा सलिल, वसन श्वेत परकाज ॥ मनौ मिली वर्षा
 शरद, अद्भुत बढत विलास ॥ २४ ॥ अंग अंगौछत बडि चले, सब दीपतिके
 जाल ॥ सान धरी गुणमान जनु, हेमं काम करबाल ॥ २५ ॥
 सोरठा ॥ दौरि सखी समुदाइ, साज्यो रत्न चऊतरा ॥ तहँ बैठारी
 जाइ, करन लगी शृंगार सब ॥ २६ ॥ मोदकं ॥ अंग अभूषितसे सब
 लागत ॥ भूषण भार कहाँ रस पागत ॥ या तनु में करिये जब
 मंडित ॥ भूषण पावत ज्योति अखंडित ॥ २७ ॥ सवैया ॥ कुंद कली
 मिलि केश गुँदे बिच बीच भली मुक्तालरसो है ॥ आनिबसे शशिके शिर
 पै रसहास शृंगार मनौ मनमोहै ॥ धूपित धूप सुगंधनिसों मद अंध
 मधुव्रतके अवरोहै ॥ ऐंचिलई हलके बलसों यमुना जलकी लहरी
 कहि टोहै ॥ २८ ॥ प्रह्वटिका ॥ पुनि तिलक भाल में रचि अनूप ॥
 तिहिरूप भूप मुद्रा सरूप ॥ रचि करणफूल काननि सुठार ॥ मिलिक
 रन दिवाकर करत प्यार ॥ २९ ॥ तारक ॥ छहरिं अलकै मुख
 मोतिन गूंदी ॥ जनु भाँदौके घन धारत बूंदी ॥ गनि चंद विरोध गहे
 जनु तारा ॥ दुहुँ ओर फिरैं शशिके तम धारा ॥ ३० ॥ सोरठा ॥
 अंजन रेख सुठार कोर, काढ़ि नयनन रची ॥ पुतरी नीलम सार, तिनकी

साँवल राह जनु ॥ ३१ ॥ कबित्त ॥ पीछे खरी इक केश गुँदै अंलबेस
 भरतिकिया लागि सोहैं ॥ सौहे खरी इक आरसी लै तेहि ओर तकै बि
 हँसै मनमोहै ॥ और दुहू सखि चौर करें तिन्है बोल सुनाइ सुधारस
 लोहै ॥ नंदित होइ उमगै कविता रूचि वंदि वधूनि सों बूझति
 दोहै ॥ ३२ ॥ सवैया ॥ नयनन अंजन एक सजै इकतौ मुक्ता
 नथ लै पहिरावै ॥ एक सँवारत हार हिये इक लाल जरी अँगिया
 कसि आवै ॥ सूरयकी किरणै जनु ओढ़नी घाँघरे में रसना झनकावै ॥
 एक करै पगपायल नेवर एक तिया विछियानि बनावै ॥ ३३ ॥ कोऊ
 रुमाललै पोंछि कपोल फुलेल तिलौछति बार प्रबीनी ॥ केऊ कसैं भुज
 बंदझवा मणिकंकन चारु चुरी मृगनयनी ॥ अँगुरीनमें छापछला मुदरीन
 खकोर रचीमेंहदी सुख देनी ॥ कर मोरति कोऊ बलाइलैलै तिनु तोरति
 कोरि फिरै चितचैनी ॥ ३४ ॥ मनहरण ॥ साँवल कमलको गहतु
 है धनुषकाम पनच करत तहाँ अवली अलीनकी ॥ तीक्ष्ण तरल तामें
 सायक धरतु करि यतन युगुति कोकनंदकी कलीनकी ॥ याके ये नयन
 यई करत कटाक्ष नई इनही सों जीती मयन जगती बलीनकी ॥ कम-
 लको न धनुष भँवरकी न पनच कलीनके न बाण कहैं सुमाति नलीनकी ॥
 ३५ ॥ सवैया ॥ पाँयनमें ठकुरायनिके रचिके शुभजावक बेलि घनेरी ॥
 चाइनि सों करै कौलनिजोरि गोसांइनि सों कस्यो नाइनि चेरी ॥ पीत-
 मकी पगरी लगिकै सिगरी रचना चिगरी यह मेरी ॥ कौलकी देखिहई
 सखिया हँसिनौल बहू तिरछे दृग हेरी ॥ ३६ ॥ केसरि केसरि अंगनि
 में कत लेपनके मिस मैल मिलाई ॥ दीपति दीपककी कलिका दिनरै-
 नि न एकसी देत दिखाई ॥ कामिनिके गुणही न तपै तनदामिनिमें अतिही
 तरलाई ॥ दूबरी और रची न गई विधिपै यहसी यहई बनिआई ॥ ३७ ॥
 दोहा ॥ पंकज केसरसों मिली, ज्यों मिलिंदकी पाँति ॥ सुंदर दशननिपै दिपै
 रेखमिसीकी कांति ॥ ३८ ॥ सवैया ॥ नयन बड़े बड़े मोती बड़े नय
 बार बड़े छहरे सटकारे ॥ पंकज पाँखुरीसी अँगुरी कुच कुंदन कंचुकीकी
 अनुहारे ॥ ये रतिसी दुलही उत वे दुलहारति नाहसे सुंदर प्यारे ॥
 भौनके भाइनहीमें गये मिलि प्राण दुहूँके दुहूँ परवारे ॥ ३९ ॥

दोहा ॥ पेंधी लंबित सतलरी, पुही प्रेम रंगताग ॥ मनौ बिपंची
 कामकी, रागति पंचमराग ॥ ४० ॥ लगेमेन अधरा मृदुल, भये महा
 सुकुमार ॥ तापर रँगबीरीन को, नीको लगत अपार ॥ ४१ ॥
 सौरठा ॥ दुपहरियाको फूल, इंगुरंके रँगसों रँग्यो ॥ रतिकोकिधौ
 दुकूल, रंगिकुसुम सोहोकरचो ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ भूषणकी किरणें
 छुटै, बासव धनु अनुहारि ॥ मनौ सिलीमुख धनुषलै, करतु मैन रखवारि
 ॥ ४३ ॥ दोधक ॥ अंगनमें सब भाँति शृंगारी ॥ देहिं अशीश पति-
 व्रतनारी ॥ जीवहु जागत वर्ष करोरी ॥ गौरि गिरीश बनी जिमि जोरी
 ॥ ४४ दोहा ॥ जलके सरल विलासमय, चातुर खरेखवास ॥ बहु
 बाजन बाजन लगे, साजत भूषण वास ॥ ४५ ॥ दोधक ॥ पीरीरची
 शिरपागं विराजै ॥ शीश सुमेर मनौ रवि छाजै ॥ हीरन मोतिन लाल
 मनीको ॥ मोरि दिपै शिरपै अतिनीको ॥ ४६ ॥ तोटक ॥ झमकै
 पुहुप राजनकी कलंगी ॥ जनु राजशिरी शिर ज्योति जगी ॥
 कल हीरनको सरपें चुलभै ॥ शशि सादर पूरण ज्योति
 बसै ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ जरतारेको झलमल्यो, तुरी
 द्युति दरशाइ ॥ मुख शशि जीती सूरकी, दई किरणि छिटकाइ ॥ ४८ ॥
 पाग मिली झूमै विमल, मुक्तावली विशाल ॥ फूल्यो मानौ अमरतरु
 नवमंजरी रसाल ॥ ४९ ॥ प्रह्लाटिका ॥ लखि खौरि लगे नीकी लि-
 लार ॥ शशिखंड चारु जनु एक सार ॥ परिवेष मनौ विधुको विसाल ॥
 गल राजत मुक्ता नखत माल ॥ ५० ॥ मकराकृत कुण्डल मंडिकान ॥
 जहँ कटत तरल सुकटाक्ष बान ॥ दिय अंजन नयनन माहँ मोरि ॥
 जनु बांधे खंजन श्याम डोरि ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ जग जासों लक्ष्मी
 कटी, परवारनको हेतु ॥ साँचो भयो समुद्रकर, चक्र रत्न संकेतु ॥
 ॥ ५२ ॥ दृढपद ॥ बाहिनमें नरनाहके नवरत्न विराजै ॥ छूटी किरणें
 तासुकी सित लाल समाजै ॥ गंगाधों नदसों न सों मिलिकै उमदी है ॥
 केधों सुयश प्रतापकी तहँ ज्योति जगी है ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ सुधा
 भरे अधरन मिली, रँग तमोल रस रेख ॥ मनौ लाल तोसक विछी
 रतिकी सेज सुवेष ॥ ५४ ॥ मनहरण ॥ व्याहके बरन वर बागों झल

झल होत सूरको उदोत ज्यों लखत दीठि हहरै ॥ पनरत अंक अंक
पाति अनुराग कैसी ऐसी भाँति रतिकी अनूप रूप लहरै ॥ बाम अंग
भूषित तरल करबाल सोहै अन्य दमयंतीसी छबीली छबि छहरै ॥ दूलहु
बनो है प्यारो आनंदको मूल द्वारो देखती अतुल झुंड झुंडनि है थहरै
॥ ५५ ॥ गीत ॥ तब दीह दीह बजे बने सब साज नौबति जोर हैं ॥
नव चंग संग मृदंग मंगल दुंदुभी ध्वनि घोर हैं ॥ बनि नाचती सुर अच्छरी
जिन भाव मोहत सिद्ध हैं ॥ द्विजराज गावत वेद देत अशीश देव प्रसिद्ध हैं ॥ ५६
तब ज्योतिषी सँगलै पुरोहित और जे द्विजराज हैं ॥ गुरु ज्ञान वृद्ध प्रसिद्ध
सिद्ध विधान जानत काज हैं ॥ सब सूत मागध वंदि चारण नेगि यह
अनंत हैं ॥ रवि चारुमोतिन चौकमंडल फूलपत्र वसंत हैं ॥ ५७ ॥ जल
पूरि हाटक कुंभको धरि थापि गौरि गणेशको ॥ दल दूर्वा दधि मेलि कुंकुम
बारिदीप सुदेवको ॥ तहँ लाल आसनकी गदी मणिलाल मोतिनसोलदी ॥
चहुँ ओरते उमड़ी परै अनुराग आनंदकी नदी ॥ ५८ ॥ निज अर्घ्य देत
महर्षि हर्षित दूलहै तहँ लाइकै ॥ करवाई पूजन बाँधि कंकनरीति वा
कुलपाइकै ॥ बनि कै बरात गयंद स्यंदन बाजि बाहन साजिकै ॥ फिरि
छत्र चौर पताक सों चढ़िकै चले अति गाजिकै ॥ ५९ ॥ सुनि सोरको
सिगरी पुरी नवनागरी अकुलाइकै ॥ गृहकाज छोड़ि तुरंत दौरि लगीं गवा-
छनि आइकै ॥ रवपूरि भूषणकी रह्यो अरु भूरि कूकत मोर हैं ॥ अलकै
गुदी मुक्ता गिरें नभकी घटा जनु जोर हैं ॥ ६० ॥ दोहा ॥ अंजन
आँजतते भई, नल दर्शन को लोल ॥ गई भूलि करकंपिकै, साँवल करे
कपोल ॥ ६१ ॥ सवैया ॥ पाँयनमें उरझी रसना करदाबि निबी इक
दौरति ठीली ॥ घेरिलई तहँ हंसनिके अवतंसनि आनिकै जीलरसीली ॥
ठाढीहँसैं सखियाँ सब दूरि भरीरिस भूरि झकै गरबीली ॥ भाज्यो चहै
बँधुवाजिमि छूटि गह्यो रखवारेनदै पगकीली ॥ ६२ ॥ दोहा ॥
मुख सरोज नख आरसी, हंसनिबैनिपीयूष ॥ नयननकी देखत हरै
तलफ प्यास अरु भूख ॥ ६३ ॥ माला गूँदतते चली, बिथुरत
मुक्ताजाल ॥ मनौ लाज मोचन करै, याके गौन रसाल ॥ ६४ ॥
उचकै लाये टकंटकी, छुवै धराणि नहिँ पाँइ ॥ देवनकी रमणी मनौ

जुरित भई सतिभाइ ॥ ६५ ॥ भूषण गिरत न जानही, देहिं सखी
 पहिराइ ॥ चकी विलोकै रसछकी, रही टकटकी लाइ ॥ ६६ ॥
 कवित्त ॥ काननके पर्यंत लैं नैन पसारि विलोकती चाउभरी है ॥
 आवत है सखि सोइ जु वा जेहि ऊपर मोहि रही सिगरी है ॥ बासवको
 न बरचो दमयंति करंचो पन चातुरै चोपधरी है ॥ वासवैको वरणै
 कविता सब गावत या छबिकी लहरी है ॥ ६७ ॥ दोहा ॥ नखते
 शिखि भूषित भयो, झमकत भूषण भार ॥ चल नयननके उडि लगे
 मानौ नैन हजार ॥ ६८ ॥ दमयंती तब अवतरचो, पुहुप बाण
 अवतार ॥ सुन्दरताके देशको, भयो भूप सरदार ॥ ६९ ॥ देवनको परसन्नकै,
 निज चतुराई भाइ ॥ लह्यो स्वाद पीयूष खसु, नल संगम को पाइ ॥ ७० ॥
 सोरठा ॥ कहि कहि ऐसी भाँति, रीझि रही रस भीजि सब ॥ भीर न
 नगर समाति, नारी मय संसार जन ॥ ७१ ॥ छूटत बाण कटाक्ष, कुटिल
 श्रुकुटि धनुसों विकट ॥ राते रतन गवाक्ष, काम भूप तरकस भये ॥ ७२ ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मंडित

भूमंडला खंडल श्री खाँ साहब अली अकबर

खाँ प्रोत्साहित गुमान मिश्र विरचिते

काव्यकलानिधौ वरयात्रा वर्णनं

नाम षोडसस्सर्गः ॥ १६ ॥

दोहा—सर्ग सत्रहें वार्षि बो, नल विवाह आचार ॥ दीबो दैजो
 दानकी, भोजन सहित बढार ॥ १ ॥ सोरठा ॥ रथ वृन्दनिके ठाट, सं-
 गभूप चढ़ि चढ़ि चले ॥ गई रोंकि सब वाट, सुंदर मंदिर भीमके ॥ २ ॥
 नीलसरूपक ॥ गौतम नाम पुरोहितकरे ॥ मंगल साज लिये परि-
 पूरे ॥ लैऋषि वृंद चले चढ़ि आगे ॥ दौरत भूपति पाँयन लागे ॥ ३ ॥
 दोहा ॥ लागे पीरे लाल सब, बागे सजे बरात ॥ केसरि मनौ कुसुम
 बन, फूलिरह्यो दरशात ॥ ४ ॥ सवैया ॥ हाथिनके हलकानिके ऊपर
 कुंजत धूह समुह नगारे ॥ कोटि निशान ध्वजा फहरें नभ ओटि न जा-
 भिये भानु निहारे ॥ चातुर चित्त कवित्त पढ़ें यश चारण वारण पावत

भारे ॥ भार भरी लचकी अचला पचकी परै शेषकी चौदे दरारे ॥ ५ ॥
सारावती ॥ भूषण में प्रतिबिंब परै ॥ श्वेत छटा तिनमें पसरै ॥ ओर
दुहूरमणी चतुरै ॥ चामरचंद्र समानं दुरै ॥ ६ ॥ दोहा ॥ सब रंग रे-
सम कतरिके, तरुता फूल बनाइ ॥ तेहीतेही भाँतिकी दई सुगंध मिठाइ ७
तखतन बाने पै नाचती, चातुर पातुर पुंज ॥ दूरिपरी बनते मनो, परी
करै रस गुंज ॥ ८ ॥ छप्पय ॥ छूटत कर सम सोम भोम रंग श्वेत
सुहाये ॥ गुँदे फूल मखतल तुंग तरुवर छबिछाये ॥ हरित लाल
अरु पीत परम पल्लव लहराहीं ॥ रचे बगीचा चारु हरे छहरें घन
छाहीं ॥ जिमि जोरि कोटि तैंतीस सुर चलतु उषाको कंतु है ॥ इमि
सोहत नल दूलहु बन्यो चहुँवा लसत वसंतु है ॥ ९ ॥
दोहा ॥ दमयंती सों कलु बड्यो, दमन नाम जो भाइ ॥
अगवानी सँगलै मिल्यो, दूरि धरणि शिरनाइ ॥ १० ॥ द्वितीयझूलना
गति मंद मंद बरात जात विनोद बात बखानि ॥ हथ फूल छूटि अनार
चंपक चारखी छुति खानि ॥ छुटिकै सितारनसों हवाइनसों बरयो नभ पूरि ॥
भयमानि पावकको भजे सब देवतागणदूरि ॥ ११ ॥ लीला ॥ राज-
पौरि समीपलौं पहुँची बरात बजाइ ॥ हाथचीर पताक चंचल लेति ताहि
बुलाइ ॥ बांधि वंदनवार पंकज रंभके दलथंभ ॥ रत्नहाटकके भरे घट
हैं विवाह अरंभ ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ भीमधाम भूपति जे आये ॥
कांठि कोटि जे न्योति बुलाये ॥ उमही भीर ननेकु समात ॥ जब द्वारे
परगई बरात ॥ १३ ॥ दोहा ॥ हाँथै हाथ खवास तब, लै उतारि नरनाथ
चौकमाहँ ठाढो कियो, देखत लोग सनाथ ॥ १४ ॥ उठि उठि सब ढाढ़े
भये, भीम भूपके संग ॥ चलि आगे लखि दूलहै, मनमें बढ़त उमंग ॥
१५ ॥ मिल्यो भीम भूपति बरै, घरी भाग शुभं शोधि ॥ ज्यों हरको हि-
मवान औ, हरिको क्षीरपयोधि ॥ १६ ॥ तारक ॥ तब प्रोहित गौरि
गणेश पुजाये ॥ द्विज वंदिनको बहुदान दिवाये ॥ मणि माणिक लाल
अमोल लगाये ॥ नृप भीम नलै कपरा पहिराये ॥ १७ ॥ जहँ खंभ
हजार कहैं कदलीके ॥ बहु वंश प्रशंस लगे अतिनीके ॥ मुक्ता मणि
झालरि लेत झुकायो ॥ अहि की लतिका दलसों सबछायो ॥ १८ ॥

दोहा ॥ रची सर्वतो भद्र तहँ, मणि कपूर रजचौक ॥ मंडित
 आँगन मांडयो, जनु रबिछाँबि अवलोक ॥ १९ ॥ सुग्धरा ॥ ता पीछे भी-
 मराजा विनय युत बरे माँडये मध्य आन्यो ॥ गावैं रानी सुवानी सबमि
 लि हिलिकै आरती कै बखान्यो ॥ बैठारचो चारु चौकी कहत नहिं बनै
 देखि वाकी निकाई ॥ बैठारीलै दमयंती निकटलै नृपतिके आई लगाई
 वधाई ॥ २० ॥ राम ॥ गठिजोरो साखियां करैं, नल पटुकासों साठि ॥
 छुटत गाँठि हियकी अरी, परी वसनमें गाँठि ॥ २१ ॥ तोमर ॥ नल जेइयो
 मधुपर्क ॥ मन देखि आवत तर्क ॥ दमयंति ओठ समान ॥ पहिरे भयो
 रसपान ॥ २२ ॥ सरसी ॥ नलके कर सरोजके ऊपर दमयंती कर
 राखि ॥ पावक चंद्र सूर निशि वासर सुर गुरु द्विज दै साखि ॥ गावैं
 गीत सखी सब सुन्दरि बजत बाजने गूढ़ ॥ कन्यादान भीम नृप
 दीन्हो दीन्ही दासि समूह ॥ २३ ॥ दोहा ॥ नलको कर नीचे परचो
 तियकर ऊपर डेरि ॥ सुधि करि करि विपरीतकी, हँसैं सखी मुख
 फेरि ॥ २४ ॥ शिव जो दीन्ही भीमको, एक नाम हित पाइ ॥ चिं-
 तामणिकी माल सौ, दई नलै पहिराइ ॥ २५ ॥ जासों महिषासुर हत्यो
 तीक्ष्ण धार कराल ॥ गिरिजासों लहि भीमसो, नलै दई करवाल ॥ २६ ॥
 शत्रुनके रक्तै पियै, यम जिह्वाके रूप ॥ म्यान जराऊ में दुरी, दई
 छुरीसो भूप ॥ २७ ॥ अग्रि करचो उपहार रथ, दमयंती हितलागि ॥
 भीमदयो नलको वहै, जल थल गति अनुरागि ॥ २८ ॥ उच्चश्रवादि
 इंद्रको, जलधि छपायो जोइ ॥ वरुणदयो हय भीमको, नलै दयो नृप
 सोइ ॥ २९ ॥ सोरठा ॥ इंद्र ओरते आइ, विश्वकर्मा भीमै दयो ॥ पीकदान
 सुख पाइ, नलको दीन्हो लालमय ॥ ३० ॥ निज मयूष समुदाइ, पूरी रह्यो
 सब ओरसों ॥ धोवत दास बनाइ, मानौ भरचो तमोल रँग ॥ ३१ ॥ मयदा-
 नवरचि काढ़ि, दई भीमको नाम हित ॥ रही हरित द्युति बाढ़ि, थारी
 पन्ननकी दई ॥ ३२ ॥ जामें जेवत भोग, होत न मय विष विषमको ॥
 निकट न आवत रोग, सरस अन्न कंठै पचै ॥ ३३ ॥ दुर्वासाके शाप
 ऐरावत क्षितिमें गिरचो ॥ भीमराज परताप, सोसिंदुर नलको दयो ॥ ३४ ॥
 भजि दिगंतको जात, मेरे सन्मुख होत जे ॥ हाथिनकी यह बात, करन

चलाचल सो कहै ॥ ३५ ॥ निज नृपकीरति दंड, धरत दक्षान द्वै श्वेत
 अति ॥ अरि अपकीरतिखंड, दमकी धारनिसों धरै ॥ ३६ ॥ गीत ॥
 जितनो दयो जेहि भाँति दायज भीम भूपति हेतसों ॥ गणिको सकै रथ
 बाजि वारण रत्नभाजनचेतसों ॥ बहु दास दासि सुगंध वासन भोग
 भाग समानसों ॥ सुरभी अनेकन ग्रामके गण धाम दे शुभका
 जसों ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ बाम हुतो नल व्याह में, पावक चित लल-
 चाइ ॥ ताकी करी प्रदक्षिणा, दक्षिण करी बनाइ ॥ ३८ ॥ सवैया ॥
 पाथरकी थिर रेख रहै जिमि त्यां तुम या पतिके संग हूजो ॥ योंकहि
 प्रोहित राजधरयो शिलपै पगुलै दमयंतिको दूजो ॥ पाथर तूलके तूल
 उड़े करु लाइ लुवै हरिको नहिं जूजो ॥ याकी मनौगति पै न चली हरि
 हारि गयो करिकै पग पूजो ॥ ३९ ॥ तारक ॥ ध्रुवको अवलोकत
 भौंह चढ़ाई ॥ अति सूक्ष्मरूप न देत देखाई ॥ ध्रुव है अनुराग सुहाग
 तिहारो ॥ सखियाँ हंसि बैन कह्यो अति प्यारो ॥ ४० ॥ तोटक ॥
 दमयंति जबै करसों परसे ॥ तब फूलनकी समता सरसे ॥ करते
 छुटि लाज जबै बिथुरे ॥ मुकुतागणसे सुख देत दुरे ॥ ४१ ॥
 मुख पावकके पुनि होमि दिये ॥ तब तौ युतिदंत
 समान किये ॥ नलके संग भामरि लेत लसै ॥ दृगकोरनिही
 अलि ओर हँसै ॥ ४२ ॥ घृत आहुति धूम लतानि करै ॥ लगि
 भाल मनौ अलकैं छहरै ॥ छतिया मृगनाभि सुगंधि रली ॥ दृग अंजन
 कान सरोज कली ॥ ४३ ॥ लखिकै सब दायजु भीम दयो ॥ जनकौन
 रुमंचित जोन भयो ॥ दुलहा दुलही पुलके मिलिके ॥ नाहिं जानि परै
 सबकेरलिके ॥ ४४ ॥ मृदुगति ॥ यहि भाँति करि विधिब्याह ॥
 हरषे पुरोछ उछाह ॥ सब पढ़त विप्र बनाइ ॥ श्रुति विविधि मंगल गाइ ॥
 ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ लै नारी भीतर गई, अद्भुत साजि समाज ॥ दै अ-
 शीष बाहेर गये, सब ऋषीश द्विजराज ॥ ४६ ॥ हरिगमित ॥ सब
 साजिकै कुलरीति विधि विधि दूलहै मुख चाहिकै ॥ रनिवास सिगरी ना-
 गरी बहुरूप राशि सराहिकै ॥ तन मन बिसारहिं प्राण बारहिं करहिं न्यो
 छावरि घनी ॥ मुख नवल दुलहिंनिको विलोकहिं कमलकी जड़ छबि घ-

नी ॥ ४७ ॥ परिहास करहिँ अनेक हँसि हँसि दुहुनि मुख दै दै बिरी ॥
 चलि झमाकि दामिनिसी दिपति चहुँ ओरते कामिनि धिरी ॥ पुनि तीन
 रजनि बधाव संयुत सेज रुचि मिलये तहाँ ॥ ४८ ॥ सोरठा ॥ दमयंती
 संयोग, सपनहूँ नृप लहि छैके ॥ सो साँचो करि भोग ॥ मगन भयो सुख
 सिंधु में ॥ ४९ ॥ प्रह्लाटिका ॥ इत भीम भूप जेउनारसार्जि ॥ जेहि
 देखि जाति पीयूष लाजि ॥ बरनेगि पठै बोली बरात ॥ बनि च-
 ले हर्ष हिय नहि समात ॥ ५० ॥ प्रह्लाटिका ॥ सब छत्र धारि
 नरपति कुमार ॥ सजि वसन रत्न भूषण हथियार ॥ सँगलै खवास
 बाजन बजंत ॥ नव मंडफ तर पहुँचे तुरंत ॥ सन्मानि भीम नृप पग
 पखारि ॥ दिय यथा योग आसन विचारि ॥ ५१ ॥ परसैं विलासमय
 सुघर नारि ॥ परिहास करैं अरु देइ गारि ॥ कोउ माँगत होइ सुनै
 न ठारि ॥ तेहि दयो ऊकको हँसतडारि ॥ ५२ ॥ मम लोचनको तव
 दरश प्यास ॥ इहि ओर नेक लखिकै विलास ॥ इक कह्यो वराती
 सुनि सुनारि ॥ भजि गई नैन जल छीट मारि ॥ ५३ ॥ दोहा ॥
 इनममेसेल्यो हियो, कह्यो वराती चेति ॥ कहत तुच्छ गल मेलि, गल
 माल ऐंचि तिय लेति ॥ ५४ ॥ दोधक ॥ एक परसतिही कमलासी
 जेवनहार करी तहँ हँसी ॥ कै छलको विलुवापग छायो ॥ डारि भजी
 पटसोरु मचायो ॥ ५५ ॥ आसन जे ऋषिकाज बनाये ॥ पूँछ दुरे
 तिन माहँ लगाये ॥ गोंद समेत रंगे तहँ बैठे ॥ ब्राह्मण वृंद पठें श्रुति
 जेठे ॥ ५६ ॥ दोहा ॥ और ठौर उठि बैठिये, महाराज द्विजराज ॥
 उठे विप्र चपटे पटा, पीछे पूँछ समाज ॥ ५७ ॥ चर्चरी ॥ भाँति भाँति
 अनेक सुंदरि मोदसों परसैं खरी ॥ कामकी करतूति मूरति ज्योतिकी विलसैं
 बनी ॥ जेवते तब मंद मंद छतीस व्यंजन षट् सनी ॥ शंख भेरि मृदंग संग तँबूर
 भीरनिसों घनी ॥ ५८ ॥ सोरठा ॥ बार बार नृप भीम, सबनि ओर करजोरि कै
 विनती करी असीम, जेवत भूप सराहि कै ॥ ५९ ॥ रंही थकित होइ मोहि
 सरस परसुन हार तिय ॥ रहे वराती सोहि, मनौ दास नृप कामके ॥ ६० ॥
 हँसी मोरि मुख आन, नईलाज गद गद वचन ॥ सोई भयो जमान, वाके

नेह मिलायको ॥ ६१ ॥ सवैया ॥ चंचल नयननिकी गति रोंकति
 और कह्यो चहै साजति औरै ॥ जे मृगनैनिके भाव लखे मुसक्यात जुवा-
 चित वा ढिग दौरै ॥ तोय परोसतही मुखनै इकु चुंबनको ललचै बर जारै ॥
 ज्यों झपट्यो पगु त्यों रपट्यो चपट्यो तन भात परयो तेहि ठौरै ॥ ६२ ॥
 तोटक ॥ यक बीजनु ढोरतिही अबला ॥ कुचकोर कटै जिमि चन्द्र-
 कला ॥ तेहिको लखि एक युवाथरकै ॥ पिंजरा खगडोरि बँध्यो परकै ॥ ६३ ॥
 नवभाजन पाननके करिकै ॥ छहरी सुहरी किरणें भरिकै ॥ जनु भाजनसों
 भरिराखत है ॥ करडारत सागन चाखत है ॥ ६४ ॥ सवैया ॥ चावर
 खंडित नेक भये नहि मंडित शुद्ध सुगंध समाते ॥ एकते एक छुटै छहरै
 छविमोतिनकी लहरैं सरसाते ॥ कोमलस्वाद सुधाहि मनौ निजदीपति
 खेत हँसै सरमाते ॥ बातनही छवि जात अघात हैं जेवत भूपति भात बफाते
 ॥ ६५ ॥ दोहा ॥ सुरभि दूधनों निर्मये, क्यों न सुरभि घृत लेहि ॥
 पायेंस परसि थरानमें, पूरि समुदसे देहि ॥ ६६ ॥ सुधास्वादते सौ गुन्यो,
 खीरखांड रसजानि ॥ होमकरत अभिरत तजत, भजत याहि सुर आनि ॥
 ६७ ॥ लक्ष्मीधर ॥ राइतो स्वादकै मूँदि आँखें हसै ॥ खातकै कैसि-
 सी यों खटाई रसै ॥ इंदुके बिबसे हैं पससे बरा ॥ तोरिते टूटिआवें रसी-
 ले गरा ॥ ६८ ॥ सोरठा ॥ पहिले शीतल होत, पुनि हीतल गरमी करै ॥
 साँचे चंद उदोत, बरासरा हैं विरहिजन ॥ ६९ ॥ सवैया ॥ एक परसतही
 पकवान भये कछु शीतलही कछु ताते ॥ केलिको औसर बूझत ताहि जु
 वाइ कुले न किये मुसक्याते ॥ शीतल ताते बियोरि दिये हमि दूर करी
 दिन रातिकी बाते ॥ साँझ बताइ दई है ५ही सुधरी अंगुरी अधरा इंग
 राते ॥ ७० ॥ तारक ॥ रचि आमिषके परकार नबीने ॥ नव रंगि-
 तकै अधरां सम कीने ॥ रस सों मुख चूमति ताहि बराती ॥ अवलोकि
 परोसति नारि लजाती ॥ ७१ ॥ यहि भांति नये परकार सवारे ॥ जेहि
 देखत भूतल जेवन हारे ॥ बिन आमिष आमिषसं पहिचाने ॥ जहु आमिष तेन
 परै कछु जाने ॥ ७२ ॥ बहु भांति अकालिक वस्तु वनाई ॥ तिनही तिन रंग
 सुगंधनिछाई ॥ षट हूरसकी रुचिको उपजावैं ॥ चकिकै जेन जेवत जानि न
 पावैं ॥ ७३ ॥ मनहंस ॥ यहि भाँति ते जे मन सजे परबीन है ॥

अतिसै सवाद सुगंध सोँ रस लीन है ॥ तिनको कहाँ लग को सके
 सब जेई कै ॥ गनती गने नहिं पार पावत सेइ कै ॥ ७४ ॥ दोहा ॥
 सोधि फिरायो बरफ में, शुचि सुवासुकी खानि ॥ झारिन सोँ नारि
 न बहुरि, आनि परूसे पानि ॥ ७५ ॥ संयुत ॥ यहि भाँति जेँवत
 भूप हैं ॥ छबि कंठलों सुख रूप हैं ॥ वह बार बार सराहि कै ॥ परिवेषि-
 का मुख चाहि कै ॥ ७६ ॥ दोहा ॥ भै शिवके नीके रचे, नीके पय
 दधिचारु ॥ जम्होँ मनौ पीयूषको, चन्द्रबिंब समसारु ॥ ७७ ॥ चर्चरी ॥
 दूधमें प्रतिबिंबसोँ परिवेषिका मुख देखि कै ॥ ताहि चूमत है युवा तेहि
 और उच्चकनेषि कै ॥ थारमें प्रतिबिंब नागरि हेरि एक जुवारस्यो ॥
 दाबि दै तेहि गोद मोदक दोइ त्यों उनहूँ हस्यो ॥ ७८ ॥ चौपाई ॥
 नाहीं नाहिं बराती कहैं ॥ ओट हाथ थारनि दैरहैं । सब व्यंजनते
 मन परकारा ॥ नारि परोसिदेँइ निरधारा ॥ ७९ ॥ गोपाल छंद ॥
 लेखि विलास अघाने भूरि ॥ भोजन भार रहे सब दूरि ॥ हाटकके
 घट भरे हजार ॥ कर पर छालनको तेहि बार ॥ ८० ॥ धोवत कर
 नख कर सरसात ॥ चन्द्रकला जनु अम्बुज पात ॥ सजि सजि सबै वराती
 लोग ॥ खरे भये तब योगा योग ॥ ८१ ॥ दोहा ॥ भोजन छरस
 प्रसिद्ध हैं, यहं अद्भुत संचार ॥ भोगत भूपति सात रस, भीम भवन
 शृंगार ॥ ८२ ॥ भीम भूप वीरादये, लौंग कपूर मिलाइ ॥ क्रमुक खंड
 एला विमल, मुक्ता चून बनाइ ॥ ८३ ॥ हरिगीतिका ॥ तिनके
 खवासनिकोदये युग रत्न जाति मँगाइ कै ॥ इकु झुटुतामहँ सकल
 छुति निधि साँचु छबि छुटि लाइ कै ॥ तिन गहो झूठो नग छबीलो कि
 रणि गण परभाइसों ॥ सब हँसन लागे लोग तब नृप सकल दीन्हें
 चाइसों ॥ ८४ ॥ इमि करत भोग अनेक विधि विधि रैनि औ दिन होत
 सो ॥ पुनि चलत मृदु जनवास आमहि भीम भूप निकेतसो ॥ भरि
 रजनि देखत निरतरंग तरंग सुखसागर भरी ॥ पारि पूरि ब्याह उछाह
 निज गृह चलनकी चित मति करी ॥ ८५ ॥ शुभ समय जानि विदा
 भये पुनि वाजि वारण साजिकै ॥ मिलि मात करहिं विलाप रहि
 दमयंति नत मुखलाजिकै ॥ मुख चूमि लखि लखि लाइ उर दग

नीरकी सरिता बढी ॥ मन मोदंसों गहि गोद सखि सुखपालकी परलै
चली ॥ ८६ ॥ सोरठा ॥ वह शोभा अभिराम, लखि न परै कितहूँ
कहूँ ॥ भयो भीमको धाम, ज्यों लक्ष्मी बिन क्षीरनिधि ॥ ८७ ॥
दोहा ॥ पहुँचावनको भीम नृप, संग चले अति दूरि ॥ नल फेरे पर
णाम कै, वर्णत वा गुण भूरि ॥ ८८ ॥ तोटक ॥ दमयंति मनै नल मोहि
लियो ॥ दुख माइकको सब दूरि कियो ॥ मृदु बातन में मन मोहि
गई ॥ तनहूँ मनहूँ पति प्रेम मई ॥ ८९ ॥ पहुँची रस रंग वरात
भरी ॥ अभिराम जहाँ नलकी नगरी ॥ ध्वज चीरन तोरन यों छलकै ॥
जनु छूटि रहीं अलकैं झलकै ॥ ९० ॥ मालिनी ॥ सब सचिव
सभागे दूरिही दूरि आये ॥ लचि लचि क्षिति छै छै हाथ माथे बनाये ॥
सजहिं तुरत भेंटैं लै खजाने लुटावैं ॥ घर घर सब नारी व्याहके गीत
गावैं ॥ ९१ ॥ सब नगर श्रृंगारो इंद्रकैसो अखारो ॥ नल संग दम-
यंती मंगलै लै सिधारो ॥ कलु सचिव न बूझै देशकी बात रूरी ॥ नि-
ज चरित बखानै स्वै कथा पाइ पूरी ॥ ९२ ॥ उठि उठि सब धाई
देखिवेको सुनारी ॥ लखि नल दमयंती लोक लाजै विसारी ॥ मगन
मगधि थोरै लाज कै सो नदीसै ॥ जियहु विधि बरीसौ देहि नीकी
अशीशै ॥ ९३ ॥ नरपति गृह आयो मोद सो दान दीन्हे ॥ सकल
सुर विलोकै पुष्पकी वृष्टि कीन्हे ॥ जननि मन अनंदै आरतीलै उतारी ॥
नत वदन दमयंती मोदसों गोद पारी ॥ ९४ ॥ दोहा ॥ पाँइ परी
दमयंति तब, सासु अशीशै हेरि ॥ मणिगण न्योछावरि करहि, तेहि
परचारि घनेरि ९५ ॥ सोरठा ॥ देखत चढे विमान, चारौ सुर सरस्वति
सहित ॥ भये मुदित गुण मान, तब चढ़ि सुरपुरको चले ॥ ९६ ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मंडित भूमंडला
खंडल श्रीखाँसाहब अलीअकबर खाँ प्रोत्साहित
गुमानमिश्र विरचिते काव्यकलानिधौ नल पुर
प्रवेशो नाम सप्तदशस्सर्गः ॥ १७ ॥

दोहा-सर्ग अठारहमें कथा, देव गमन सुरलोक ॥
 मारगमें कलिकालसों, हैहै भेट अटोक ॥ १ ॥ सोरठा ॥
 अमर चारि गत लोल, करि निष्फल परिश्रम धराणि ॥ ज्यों
 वारिधि कल्लोल, ज्यों आये त्योहींगये ॥ २ ॥ प्रमाणिका ॥ दमयं-
 त्रिपै कृपाघनी ॥ न आपनी विथागनी ॥ नलैहदै सुचाइकै ॥ सुभक्ति
 मोद पाइकै ॥ ३ ॥ रहे विमान सोहिकै ॥ दिनेश ज्योति मोहिकै ॥
 चहुँ चलै ध्वजा धरी ॥ नचै सुगान अच्छरी ॥ ४ ॥ स्वागता ॥
 वात वेग साजे रथ जाही ॥ मेघ ओघ धारे तहँ छाही ॥ दीठि नेकु नहिं-
 आवत जो है ॥ सिद्धि एक अति भाजनुसो है ॥ ५ ॥ होत मेघ जब बासव
 संगी ॥ इंद्र चाप विलसै बहुरंगी ॥ धर्मराजकरदंड विराजै ॥ छत्ररूप
 रवि लागत छाजै ॥ ६ ॥ तोटक ॥ चहुँ ओरन छूटि रही लपटै ॥
 लागि वायु बबूलनिसों झपटै ॥ लखि आवत पावक नाचनचै ॥ दमयंति
 बरी इनहीनिहचै ॥ ७ ॥ भ्रमहोत हिये सुर लोगनके ॥ मुसक्यात सुने भव
 भोगनके ॥ यहि भाँति दिगीश चले मगमें ॥ इकसोरसुन्यो अतिही-
 लगमें ॥ ८ ॥ सुनि घोर अघोरिनके रुतकौ ॥ चकिकै दग फेरि करे उत-
 कौ ॥ यक साँवल फौज तहाँ झलकी ॥ जनु आवत धार चढ़ी मलकी ॥
 ॥ ९ ॥ जनु पातक की नगरी उमही ॥ तमराशि मनौ इक ठौर सही ॥
 नभ धुंधुरि मूरति आवति है ॥ चहुँ देवनको समुहावतु है ॥ १० ॥
 ॥ तोमर ॥ मनमथको भागोलु ॥ कलि कीन्ह जाहि हरोलु ॥ पाहिले
 परचो बहु दीठि ॥ तब दैरहे सुरपीठि ॥ ११ ॥ दोहा ॥ शूर अगम्या गमनमें,
 भय न छाज परसंग ॥ दाता दूतिनके बड़े, राजाके भटसंग ॥ १२ ॥ सोरठा ॥
 धरत लोक जित भाउ मनौ बुद्ध अवतार यहु, ईश्वर तूल बनाउ, साजत सृष्टि-
 शरीर विन ॥ चौपाई ॥ आवत और लख्यो सरदार ॥ सबको डाटतु कँपत
 अपार ॥ १३ ॥ ॥ अरुण बदन बहुगारीदित ॥ क्रोध नाम ताको कहि
 लेत ॥ १४ ॥ जाके संग सिपाही घोर ॥ पीसत दंत करत मुख सोर ॥
 झुकुटी कुटिल नयन करिराते ॥ काटत ओठ भूरि रिसमाते ॥ १५ ॥
 सोरठा ॥ जासों काम डेराइ, ताहि क्रोध वशमें करै ॥ हर दुर्वासा
 पाइ, देखि लेहु इनकीदशा ॥ १६ ॥ करत विराग बनाइ, लाल करेहु

देहको ॥ तमको देत बढ़ाई, जऊ जुलित हियमें रहै ॥ १७ ॥
 गोपाल ॥ बाये बदन अर्ध मुख गाथ ॥ धनिकनि ओर पसारे
 हाथ ॥ दीन चेष्टा करे डिरान ॥ लख्यो लोभ देवनि नियरान ॥ १८ ॥
 याचक ठग दंभी अरु सूमा ॥ धूत उपाधि मचाये धूम ॥ निर्धनलै धनि
 कनके पास ॥ बेचत है ज्यों अपने दास ॥ १९ ॥ सोरठा ॥ रहत
 सकल तनमाहि, ये रसनापर प्रीति अति ॥ नाहिं गनत है नाहि, तृष्णा
 रमणीको रमण ॥ २० ॥ मिलि मिलि रोवत दीन, सुनै न गुरु उपदेशको ॥
 सुत दारनसों लीन, मोह लखत सुर छोहसों ॥ २१ ॥ जानत है नित-
 मीच, तऊ न हरिमें चित धरै ॥ कुटिल आसनी नीच, ये चाकर चहुँ ओर
 हैं ॥ २२ ॥ चंद्रमाला ॥ ब्रह्मचारि बनबास यती जिमि गृही आशरो
 आनै ॥ त्यों मनोज अरु क्रोध लोभ ये मोह अधीन बखानै ॥ जागतकी
 जो नीद अंधता देखत में जो गई ॥ सुनतहुमें जो कही बधिरइव उजि
 यारे मँलाई ॥ २३ ॥ पहिचाने लखि चिह्न पाछिले
 कामादिक निरवारे ॥ बदन श्याम नखते शिखलौं कुलि कलुष
 कंचुकनिधारे ॥ देखत भये देव दूखित हिय सूखित बदन मलीने ॥
 करकस शब्द सुने काननिसों कहत पाप परबीने ॥ २४ ॥ कामा-
 दिकनके वचन ॥ छप्पय ॥ वेद धूत संवाद ताहि साँचो जो जानै ॥
 बाजीगरके बाग तोरि फलते गहि आनै ॥ अग्रि सत्र तिवेद भसम
 धारन आछाली ॥ एक दंड तिर्दंड चर्म मृग जटा कपाली ॥ यह ठाँठु
 ठाँठि आजीविका करत धूत जन जगत में ॥ यहि बुधि न पौरुष होत कछु पंथ
 चलावत भगत में ॥ २५ ॥ सोरठा ॥ द्वैकुलकी लहि शुद्धि, हर्षि
 करत संबंध सब ॥ जानत नाहिं कुबुद्धि, पछिले कुलके दोष गुण ॥ २६ ॥
 तारक ॥ जेहि भाँति करै तियकी रखवारी ॥ नरकी नहिं ओट करै
 नहिं सारी ॥ उघरै नहिं बात कलंक मई है ॥ जगदंभिनकी यह रीति
 नई है ॥ २७ ॥ परदाररमे सम पाप न दूजो ॥ तुम क्यों करि
 वासव पाप न पूजो ॥ गुरुदारनके कलुषे तजि देह ॥ द्विजराज कह्यो
 गुरु दार सनेह ॥ २८ ॥ पुनि व्यास वरावरि और न भान्यो ॥ मुनिये
 तिनहूँ यह वैन बखान्यो ॥ जब कामिनिके तनु कामसतावै ॥ नहिं पा-

तक होत जुवाहि रमावैं ॥ २९ ॥ दोहा ॥ जैसी श्रद्धा सुकृत पर,
 क्यों न सुरन पर सोइ ॥ वेद कहत सो काम करि, जहाँ अंत सुख होइ ॥
 ॥ ३० ॥ द्वितीय झूलना ॥ बलसों करौ सब पाप तुमको वे न ला-
 गत फेरि ॥ बलसों करे सब काम निर्फल कहत मनु मुनि टेरि ॥ श्रुति
 अर्थ सों अरु सुमृति सों बहु भेद अर्थ न होत ॥ बल बुद्धि विवरण
 करत ता महँ सो भल्यो सुख सोत ॥ ३१ ॥ जेहि देहमें हम बुद्धिही
 वह देह डारत दाहि ॥ परसाखिं जीव जुदो नहीं यह पाप लागत काहि ॥
 यहि देहके कृत कर्म लागत और देह न पाइ ॥ जब और
 जेवत अन्न है तब और क्यों न अघाइ ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ एक आत्मा
 सबनिमें, लहत पाप सब ठौर ॥ एकपाप तेरो मिले, कौन भारु तहँ
 और ॥ ३३ ॥ एक आत्मा सबनिमें कहाँ पुण्य तैं एक ॥ क्यों करि
 सबके पुण्य बिन, ताकी पुण्य विवेक ॥ ३४ ॥ एक आत्मा सबनिमें
 जो साँची यह बात ॥ पुण्य पाप एकै करै, फल सब में है जात ॥ ३५ ॥
 भुजंगप्रयात ॥ करारे करौ काम केसां सनेही ॥ सबै देव मानै बनैगो
 करेही ॥ कहैं लोभ यों वेद है देव वानी ॥ यहौ विष्णुको पुत्र वेद
 प्रमानी ॥ ३६ ॥ प्रह्लटिका ॥ नहिं जानि परत परलोकनेक ॥
 नहिं आवत वासों पत्र एक ॥ मनु कहे धर्म अपने पुरान ॥ ते सकत
 कौन करिके निदान ॥ ३७ ॥ कुरुराज सभा कवि व्यास देव ॥
 गुणि बर्णै उनके उन अभेद ॥ उनकी पसंद अनुसार पाइ ॥ भाषे
 पुराण बसु दश बनाइ ॥ ३८ ॥ निजबंधु बंधू संग सुरति कीन ॥
 पुनि दासी संगति सों मलीन ॥ तिनको प्रमाण केहि भाँति योग ॥
 जेहि भूले वैदिक सकल लोग ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ विप्रन कीन्हें ग्रंथ सब
 निज जीविका विनोद ॥ बैलनके पायँन परत, बड़ी बुद्धि आमोद ॥ ४० ॥
 जाजक छोड़त सुरत सुख, तिन्है सराहत लोग ॥ चाहत हैं वे स्वर्गमें
 सुरनायका संयोग ॥ ४१ ॥ स्वागता ॥ पाप पाइ खग औ मृग
 होई ॥ वेद बोल सब सांच कहोंही ॥ लेहिं आप जब भोगनितेऊ ॥
 भूपरूप निजकी कहिबेऊ ॥ ४२ ॥ चौपाई ॥ मुक्ति शिला गौतम
 ऋषि भाषी ॥ वेद ऋचा दे दे सब साखी ॥ पाथर बुद्धि

कहा बहु जानै ॥ सुरति मुक्तिके सुखै न मानै ॥ ४३ ॥
 सोरठा ॥ इंद्रादिककी नारि, निज निज पतिव्रतको धरै ॥ मुक्त नहीं
 हिँ विचारि, रहै कामकी कैदमें ॥ ४४ ॥ नीलसरूपकं ॥ कर्म करे
 फलहीत शुभाशुभ वेद कहै ॥ ईश्वर को व्यवहार अकारण कौन गहै ॥
 आपुसमाहँ विवादिनकी मति एक नहीं ॥ दूषणदै अनुमान प्रमाणन
 व्यासकही ॥ ४५ ॥ औरनके उपदेश न नेकु न कोपगहौ ॥ आपकरै
 अतिरोष तिनहँ तुम सिद्ध कहौ ॥ दान दिये दुख होत सियानहिँ प्रीति
 करै ॥ दान दिये बलि मूढ़ गयो बँधि भूमि तरै ॥ ४६ ॥ दौलति को
 लंलाचाइ सबै युगभाव करै ॥ एक खुशामद होत कोऊ जगदण्डधरै ॥ जो
 जनु होत सुबुद्धि सोई सुरसों नडरै ॥ जोजिय जानत शुद्ध बाहि मग-
 पाँउ धरै ॥ ४७ ॥ तिर्भंगी ॥ सुनि यह दुर्वानी पाप निशानी
 वासव मानी रोष कियो ॥ बोल्यो तिनसोंहँ वदन रिसोंहँ टेढ़ी भौँहँ
 बरतदियो ॥ श्रुतिके रखवारे त्रिभुवन प्यारे वज्र अधारे हम ठाढ़े ॥ तहँ
 को मतिभंगी वक्तु कुटंगी यमपुर रंगी डर डाढ़े ॥ ४८ ॥ दोहा ॥
 जाति लोप चारी किये, जबै परीक्षालेत ॥ देखिलेह खल श्रुति बचन
 साधु शुद्ध करिदेत ॥ ४९ ॥ सबको अनल समान है लेत परीक्षाकाल ॥ साँचे
 को जलरूपहै, नेक न करत वेहाल ॥ ५० ॥ ईश्वर की इच्छा विना, कर्म
 करे फल होत ॥ ऋतु पाति नारी योग सों, सदा न गर्भ उदोत ॥ ५१ ॥
 प्रेतदेह लहि पितर निज, चरित ब्रतावत आइ ॥ गया करावत
 आपनी, और लोकको पाइ ॥ ५२ ॥ भ्रम सों लै यमदूत
 इत, फेरि पठावत तासु ॥ सुने कथा परलोककी, क्यों न होत
 विश्वासु ॥ ५३ ॥ जब तू जान विदेशकोउ, तोहि मिलत तेहि
 रीति ॥ आइ चरित तेरो कहै, कौन करै परतीति ॥ ५४ ॥ प्रहृष्टिका ॥ पर
 ज्वलित भयो पुनि जुलन देव ॥ छुटि रही ज्वाल चहुँधा अभेव ॥ अग्नि ॥
 शठ कहा बक्तु हेरे नृसंश ॥ छिन माहँ भस्म है है सर्वश ॥ ५५ ॥
 जे करत पुत्र मष पुत्र हेत ॥ तत्काल ईशफल पुत्र देत ॥ जे देत
 सकल बलिदेव भाग ॥ अभिलाष भोग पावत सभाग ॥ ५६ ॥ यम-
 राज उम्यो कर दंडतानि ॥ हठि कहत कौन शठ द्रष्ट वानि ॥ तुषकंट ओ-

ठको कुंठ जानि ॥ होँकाटत तेरो मंद मानि ॥ ५७ ॥ जब करचो च-
 हत कन्या विवाह ॥ तब बूझत हैं सबसों सलाह ॥ परलोक जानकी
 कौन मूढ़ ॥ नहिं बूझै गुरुसों ज्ञान गूढ़ ॥ ५८ ॥ जे करत बहुत मत-
 सों सनेह ॥ ते सब विरोधके भरे गेह ॥ तेहिते विचारि अविरुद्ध थानु ॥
 मत वेद प्रकाशित सार मानु ॥ ५९ ॥ तब वरुण अरुण मुख उख्यो
 बोलि ॥ करुणा विहीन सुनिकान खोलि ॥ परचंड पाप पाखंड मूल ॥
 मम पास देख नहिं होति शूल ॥ ६० ॥ मोदक ॥ ईश्वरको तुम जो
 नहिं मानत ॥ शालग्राम शिला पहिंचानत ॥ तामहँ कूरम चक्र
 विराजत ॥ को नर जाइ तहाँ तेहि साजत ॥ ६१ ॥ जो शत यज्ञनकी
 परि पावत ॥ सो सुर सहित सु इंदु कहावत ॥ क्यों तुमसों पदवी नहिं
 पावहु ॥ वेदहि छँडि वृथा मग धावहु ॥ ६२ ॥ सोरठा ॥ चारव कों तिन
 माह, करि प्रणाम आयो निकरि ॥ द्वै सन्मुख सुरनाह, बोल्यो अंजलि
 जोरिकै ॥ ६३ ॥ दोहा ॥ हम चाकर कलिराजके, वृथा करत हौ
 दोष ॥ ताकी मरजीको तके, करत रंग औ रोष ॥ ६४ ॥ तौलौ चारौ
 देवता, देखत भैंड उठाइ ॥ आयो द्वारसो सहित, रथ ऊपर कलि
 राइ ॥ ६५ ॥ ज्यों चँडालसों द्विज भजै, विमुख भये दिगपाल ॥ तब
 बोल्यो कलिकाल हंसि; ऊंचे घोष कराल ॥ ६६ ॥ कलिकाल ॥
 तोमर ॥ सुखसों रहे सुरपाल ॥ लहि अग्नि आनंद माल ॥
 यमराज चित्त विनोद ॥ कहि पासि भाषित मोद ॥ ६७ ॥ दमयं-
 तिको सुनि व्याह ॥ हमको बड़ी चित चाह ॥ हम जात हैं तेहि हेत ॥
 सुनिये विनोद निकेत ॥ ६८ ॥ सुनि तामु बैन दिगीश ॥ दृग ऐंचि झारत
 शीश ॥ मुख आप माहँ विलोकि ॥ क्रमसों उठे सब टोकि ॥ ६९ ॥
 विधि तोहिं जानत मार ॥ करि द्रोह औ अपकार ॥ विधिको करचो
 श्रुति सेतु ॥ तुम एक नाथ न हेतु ॥ ७० ॥ दोहा ॥ वह तौ बीती
 बात हम, हुते स्वयंबर ठौर ॥ दमयंती नलको बरचो, जानि राज
 शिरमौर ॥ ७१ ॥ चौपाई ॥ सानुराग नागनिको छोख्यो ॥ देवन
 ओर न लोचन ओख्यो ॥ दमयंती गुण रूप विशाला ॥ नल उर
 डारि ब्रह्म जयमाला ॥ ७२ ॥ सुनतै ऐसे बैन तुरंत ॥ कह्यो कोप अति

ही युग अंत ॥ जो निश्चय कलि नाउँ कहाऊँ ॥ देवनको कारज करि
 आऊँ ॥ ७३ ॥ राज स्वयंवर में दमयंति ॥ नल पाई ज्यों सिय विल
 संति ॥ बढ्यो अनादर भयो तुम्हारो ॥ येही ते जिउ जरयो हमारो ॥ ७४ ॥
 हमै देखि तुम रहे बराइ ॥ हम आये तुमसों नियराइ ॥ असमर्थनके पाइहि
 भाइ ॥ राजहि देखत रहहि पराइ ॥ ७५ ॥ बड़े वंश तुम देव सभागे ॥
 सुंदर शूर महा अनुरागे ॥ तिनको छोड़ि अनादर कीन्हो ॥ नलै
 ब्याहि गुण गौरव दीन्हो ॥ ७६ ॥ दोहा ॥ तुम चारौ बैठे रहे, ब्याहो
 नल निरशंक ॥ शीत भानु में ज्यों लगी, तुम में क्षमा कलंक ॥ ७७ ॥
 तासों चलयो न बल कछु, हमपै कहा रिसात ॥ सुने, अनादर आपने
 मनमें क्यों न लजात ॥ ७८ दोधक ॥ ये कलिके सुनि बैन उदासी ॥
 बोलि गिरा तबही गुणरासी ॥ गिरा ॥ कीरति जाइ नलै इन दीनी ॥
 औ दमयंति दर्ई परवीनी ॥ ७९ ॥ वाणिहि नौसिकु ज्वाब नदीनो ॥
 देवन ओर चलयो मतिहीनो ॥ बोलि कही बहुरौ कटु बानी ॥ गर्ब
 भरी अरु पाप निशानी ॥ ८० ॥ कलि ॥ अन्यच्च ॥ हौं न चहौं
 निजकै दमयंती ॥ आवति मोमन में केहि गंती ॥ हे नलपै करुणा
 नाहि मेरी ॥ इंद्र सुनौ निश्चय चित मेरी ॥ ८१ ॥ दोहा ॥ जो
 हौं जीवत हौं बली, छली छिद्र कछु पाइ ॥ दमयंती औ भूमिको, नलते
 देऊं छोड़ाइ ॥ ८२ ॥ द्वापरहुं हुंकारसों, करी बड़ाई सोइ ॥ कान
 मूदितामें दिये, बासव बैन समोइ ॥ ८३ ॥ इंद्र ॥ दोहा ॥ हम
 चारौ लज्जित बदन, साँच लख्यो कलिराज ॥ थोरो दीजतु बड़ेनको
 होति बड़ी हियलाज ॥ ८४ ॥ चारौफलेके दानि हम, तिनको मनु सकुचात ॥
 नलकी भक्ति समानकै, हमपै दियो न जात ॥ ८५ ॥ सोरठा ॥ कलि
 तोको नहिं योग, करतकोप नलपै अतुल ॥ लोकपाल शुभ भोग, निषध सिंधुको
 सुधाधर ॥ ८६ ॥ क्षमावान नलराज, तेरो कलि अवकाशनहिं ॥ निश्चित धर्म
 समाज, द्वापरहूको उदय कित ॥ ८७ ॥ संयुत ॥ दमयंति रानि विनी
 तहै ॥ पति प्रेमकी चित चीतहै ॥ तुम सारिखे ताकि क्योंसकै ॥ निज
 चित्तमें बलकै बकै ॥ ८८ ॥ युग शेष आपु विचारिये ॥ नल ओर को
 न निहारिये ॥ नाहिं जाइयो तेहि की सभा ॥ घटि जाइगी यह तौ प्र-

भा ॥ ८९ ॥ दोहा ॥ देवकहैं कलिपै कहै, कलि देवनपै सोइ ॥ वचन
 वरावारि हीबढ़ी, बडी लराई होइ ॥ ९० ॥ निज निज पक्ष प्रमाणकै-
 सम पौरुष सरसात ॥ स्वर्ग गये चढि देवता, कलि नलपुर निघरात ॥ ९१ ॥
 दोधक ॥ वैदिक विप्रपठैं श्रुतिरागे ॥ त्योंकलिके श्रुति फूटन लागे ॥ घोष
 सुने क्रमकी चरचाको ॥ छूटि गयो पग को क्रमुवाके ॥ ९२ ॥ दोहा ॥
 नगर सहीतै नहिं सकै, सुनत सहीतै दीन ॥ होम सुगंध नसी नसा, आहुति
 धूममलीन ॥ ९३ ॥ तारक ॥ परसे जहाँ विप्रनके पगपानी ॥ रपटयो नसकै
 चलि कैं अभिमानी ॥ तिलतर्पनमें तिल देखि विथोरे ॥ लाखि काँपतु भाजि
 चलयो मुखमेरे ॥ ९४ ॥ द्विज भालन में तिलकावलि छाई ॥ दरकी छतियाँ त
 वारि अराई ॥ जनु झूठ वखानत देखत रीझो ॥ रमणी प्रति वैन सुने तब
 खीझो ॥ ९५ ॥ स्वागता ॥ यज्ञरूप बनसे करि लेखे ॥ धर्म साध
 जनव्याध विशेषे ॥ दूँढि दूँढि तिथि हीसै चाहै ॥ बार बार झुरिकै उर
 दाहै ॥ ९६ ॥ दोहा ॥ जोपराकव्रत करतु तेहि देखत जरतु बराकु ॥ मूरखके मुखहू-
 सुनहि, कलिको एको आँकु ॥ ९७ ॥ गायत्री रविधामते, विप्रनलई बुलाइ ॥
 देखत नहिं दुरतै बन्यो, तुरतै गयो बिलाइ ॥ ९८ ॥ चौपाई ॥ ब्रह्म
 चारि बैषानस सने ॥ जँवत यती घरै घर घने ॥ तिन्है देखि हिय में
 रिस गहै ॥ चरन धरन को थानु नलहै ॥ ९९ ॥ सोम याग सुरभी वृष
 होम ॥ हिंसा देखि चलयो जिय जोम ॥ सुनत ऋचा श्रुति भाज्यो दूरि ॥
 खरकुबुद्धि भरिकै रिस भूरि ॥ १०० ॥ कवित्त ॥ मौन व्रतीनको मो
 जिय जानतु मोहिं शरापत देत हैं गारी ॥ वंदत देवनको जन जे जनु
 लातनलै शिरकै हनि मारी ॥ अंजलि देत ऋषीश्वर जे चहुँ ओर छुटी
 छिटकी निरधारी ॥ तातेइ तेलनकै कै मनौ छिरकैं जेहिगात जरै इक
 सारी ॥ १०१ ॥ प्रह्लादिका ॥ कटि मुंज रंजु कर दंड देखि ॥ इमि
 ब्रह्मचारि द्विज छल अलेखि ॥ जनु बाँधत जोरीसों बनाइ ॥ अरु चाहत
 मारन दंड घाइ ॥ १०२ ॥ दोहा ॥ स्नान कथा तकसे गनै, पातकसे
 सब वेद ॥ प्यासो पावै अनल ज्यों, लहै न छल औ भेद ॥ १०३ ॥ मं-
 डल को छोड़्योचहै, पंडिलसाइ निहारि ॥ देखि पवित्री करनि में प-
 वित्रास निरधारि ॥ १०४ ॥ दुर्जनको दूँढत फिरै, लहै ऋषिन मुनिवा-

स ॥ छपनक चाहै अक्षपन, दीछित घरनि विलास ॥ १०५ ॥ सोरठा ॥
 अच्छ बीजकी माल, सब फेरत जन रैन दिन ॥ फटत जीव बेहाल
 मानौ मरि अबहीं गयो ॥ १०६ ॥ तोटक ॥ सुनिवे कहूँ देख
 नको नलके ॥ चहुँ ओर फिरैं न कहूँ झलके ॥ शुचि वैरिनसों न कहूँ
 ठहरै ॥ श्रुतिकी ध्वनि अंबरहूँ थहरै ॥ १०७ ॥ दोहा ॥
 जहां वीर हंता सबै, कीऊ विरहत नाहिं ॥ रोष युक्त नहिं जीव
 जहँ, जीवन मुक्त बसाहिं ॥ १०८ ॥ दोधक ॥ जेवत विप्रनको हँसि
 देखै ॥ आपुस माहँ मिलै सविशेषै ॥ जानत सोम महाऋतु भोगै ॥
 मूँदत आँखिनको गनिरोगै ॥ १०९ ॥ कामुकु विप्र लख्यो सबहीको ॥
 मोद भयो मनमें अतिनीको ॥ बामसुदेव उपासक जान्यो
 त्यों रिसकै बहुतै दुखमान्यों ॥ ११० ॥ ॥ दोहा ॥ गो
 हिंसा देखंत हँस्यो, जगी कामकी आगि ॥ देखि याग गोमेधको,
 हाल चलयो खलु भागि ॥ १११ ॥ कबित्त ॥ विप्रहि देखतही
 हृष्यो जेहि नित्त निमित्तक कर्मनि त्यागे ॥ जानि गयो यजमान
 जबै तब दोषदै दै करचो रोष अभागे ॥ जज्वनिकी रमणी अरु ऋत्विज
 आप में गारिनसों अनुरागे ॥ हेरतही इहराइ हँस्यो कहैं वेद विदूषक
 गावन लागे ॥ ११२ ॥ प्रह्लाटिका ॥ कलि लख्यो तबै चलि राज
 भौन ॥ डरि ससकतु नाहिं करि सकतु गौन ॥ नलराज लखे दमयंति
 संग ॥ जनु इंदु शची हरि रमा रंग ॥ ११३ ॥ ॥ तिनको अछेह हेरचो
 सनेह ॥ उर उड़चो शालि अरु बरी देह ॥ तिनके बिलास रस वैन
 चारु ॥ सुनि भयो मरनको भेदु सारु ॥ ११४ ॥ कलि जानतु अपने दोष भूरि ॥
 गुण रहे दुहूँके देह पूरि ॥ नहिं सक्यो नेकु तिन ओर हेरि ॥ हरवाइ
 तहाँ ते चलयो फेरि ॥ ११५ ॥ तहँ एक बगीचाहो नगीच ॥ तेहि माँह
 गयो कलि बुद्धिनीच ॥ तहँ रहत तपोधनकेन वृंद ॥ कीन्हो अनंदसों
 तेहि पसन्द ॥ ११६ ॥ दोहा ॥ फल दल फूलनसहित तरु, जे पूजत
 निज देव ॥ तिनकी ओर न लखि सक्यो, सक्यो जानि जिय
 भेव ॥ ११७ ॥ दोधक ॥ एक महातरु हेरि बहेरो ॥ सौंध समीप
 रहै नल केरो ॥ तापरतौ निज वास विचारो ॥ आपन लायक रूप

मिहारो ॥ ११८ ॥ दोहा ॥ निज शिरपै कलिको दयो, जबै विभा-
सक ठाम ॥ कल्पद्रुम छबिहू भयो, तौते कलिद्रुम नाम ॥ ११९ ॥
बैठि विभीतकपै रह्यो, डरत लखै नल राज ॥ ज्यों कौआ कारो बदन
दहे संक गहि बाज ॥ १२० ॥ सवैया ॥ छलसों नलको अपलो-
कहि आहत काल व्यतीत गयो अधिकायो ॥ पुनि द्वापर दौरौ फिरै पुहु
मीपर वाहीके कारजमें चितलायो ॥ वाही समै विस्मय रसमें करि काम
शरासन कोपि चढायो ॥ संग वसंत लिये हुलंस्यो नलराजके सौंध
समीप सिधायो ॥ १२१ ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मण्डित भूमंडला
खण्डित खंडल श्रीखांसाहब अलीअकबरखां प्रोत्साहित
गुमानमिश्र विरचिते काव्यकलानिधौ कलिसमागमनो
नाम अष्टादशस्सर्गः ॥ १८ ॥

दोहा—सर्ग उनैसेमें कथा, काम विहार विलास ॥ केलि अंग
अंगनि सहित, दीपति पुंज प्रकाश ॥ १ ॥ सोरठा ॥
दार सार नल पाइ, कामसिंधु तारन तरी ॥ भरी वि-
लास बनाइ, रमत रहैं रस आमिय मय ॥ २ ॥ रमत रहे दिन रैनि
दमयंती संग सर्व वित ॥ विषै न लागत ऐनि, जो ज्ञानी परब्रह्ममय
॥ ३ ॥ लीला ॥ राज्य मंत्रिनको दयो सब देश कोष समेत ॥
आपलै दमयंतिको उर हेम सोधनिकेत ॥ भाँति भाँतिनसों रची सब
सेव पूजितकाम ॥ वै रहैं मणिकी प्रभा झर मेरुसों अभिराम ॥ ४ ॥
धूप शुद्ध सुगंध साधित काम सर परकार ॥ दीपिका झमकैं हंजार
न दूरि हो अंधार ॥ मणिसों बँधी सब भूमिमे करपूरको छिरकाव ॥
मृगनाभि केसरिसों लिपी सब रत्न माल बनाव ॥ ५ ॥ कहुँ तीनि
लोकनके विचित्रित चित्र राजत जोर ॥ कहुँ रत्न जाल गवाछ गुंजत
भौर ठौरहि ठौर ॥ नल अंग संगमसों सुगंधित सेज फूल सुरंग ॥ तेहि
भूमिको सम तिलक सुन्दर है शृंगार प्रसंग ॥ ६ ॥ तट निकट
निह कुटसों कटै लहरी भरी सुख वास ॥ मिलि जातहैं रति रंगमें

दमयंतिके सुखवास ॥ गीत ॥ जोहि में लिखे बिन जीव
जीव सजीवसे लखिकै परें ॥ सब भाँति भाँतिनकी लगी मणि
रूप रंगनिसों भैं ॥ जेहि देखि ग्रीवकँपाइ मोहत लोकको करतारहै ॥
जनु रोग वाढत वातको तेहिते भयो विनसारहै ॥ ७ दोधक ॥
भीतिन बीच वने ग्रह रूरे ॥ गावत गीत तहाँ जन पूरे ॥ वेंखतही
विस्मय उपजावै ॥ तारबँधी पुतरनी नचावै ॥ ८ ॥ आवतहू जहँ रेनि अँ-
ध्यारी ॥ फैलि रहै चहुँ ओर उज्यारी ॥ भीतिनमें मणिकोटिन
जेटी ॥ छूटि रहें किरणें श्रुति भेटी ॥ ९ ॥ छूटत हैं जल यंत्र फुहारे ॥ नान्वत
मोर महा छवि वारे ॥ लोंकत चीर ध्वजा रतनारे ॥ साँवन भादोंके घन
वारे ॥ १० ॥ दूत विलंबित ॥ मदन तंत्रनकी कुलि कारिका ॥
पढ़ें पंजरमें शुक सारिका ॥ शुरतमें नल ओ दमयंतिके ॥ रहहिं ये सखि-
या जिमि अंतिके ॥ ११ ॥ मनहरण ॥ मंत्रनिसों प्रतिमा सजीवरति
कामजूकी लखिकै विलास वेऊ सुरत करत हैं ॥ तिनके मणितरैनि छूटत
कपट ओट कोटि जाल रंघनि में द्वै द्वै पसरत हैं ॥ उपवन बोलैं
पिक डोलैं मतवारे अलि नीचे परवीन वीन गान सतरतहैं ॥ मुख मुख
सुख पागे करें बैन अनुरागेरसमेंविवस तरै कानन परत हैं ॥ १२ ॥ छप्पय
हाटक अंक विटंकर लखि कवि चाटु सुहाये ॥ वात्स्यायन मुनि कहे
कोक ऋषि जे कलु गाये ॥ गौतम तिय सुरराज इन्दु गुरु रमनी
लीला ॥ मत्स्योदरी चरित्र लिखे चित्रित शुभ शीला ॥ यहि भाँति
भौन मणि भीतिमें सब मन्मथ पौरुष लिखे ॥ विहरत विनोद दोऊ क
रत सुरत रंग संगम सिखे ॥ १३ ॥ सौरठा ॥ जग उज्ज्वलके हेत
बैजयंतु नीचो कियो ॥ जाकी कीरति श्वेत, कांतिक पून्योकी सुसा ॥ १४ ॥
दोहा ॥ पार पहुँचि भवसिंधुके, भये युवति आधीन ॥ रचे चित्तेरे
चित्र में, ऐसे मुनि परवीन ॥ १५ ॥ दोधक ॥ माति करै वर्षाऋतु-
लासू ॥ आवति मोरनिके दृग अँसू ॥ मोरनिकी वनिता गहि छेही ॥
केलि बिना उपजै सुततेही ॥ १६ ॥ दोहा ॥ याते नाचत मोर जहँ
मेही जीत्यो मार ॥ हम जाके बाहन यहौ, ब्रह्मचारि सरदार ॥ १७ ॥
तारक ॥ नल ओ दमयंति जहाँ छवि छाये ॥ रति मन्मथ औरतिसे

बनि आये ॥ इनको अवलोकतही वह जेरी ॥ मन लागति है अतिही रुचि
 थोरी ॥ १८ ॥ हरिगीत ॥ तेहि सौंध भूधर हेमके गृहमाह रंगनि
 सोंरमै ॥ नहिं नागरी तिय करि सकै नहिं बसन वर्णत कबितमै ॥
 बहु परम पुरुष योषिता यह स्वामि बहु यह वश परी ॥ बहु युवा यह
 सुकुमारबयं सुख सुरतसों अतिही डरी ॥ १९ ॥ जब दूत कारजको
 गयो नल हो तबै बतियां कही ॥ सुधि करतसो निज ढीठ ईश सवाईने
 अँखियाँरही ॥ जहँ लाख लोगनिको समांगम हठि तहाँ नलको बरचो ॥
 तब सुमिरि मन निज चपलता कुल लाजसों जियराजरचो ॥ २० ॥
 सवैया ॥ सेजपै जाइ जहाँ नल बैठत ताढिग हेरि सकै न लजानी ॥
 बूढ़ि रही सरिता कुल कानिकी श्रवण सुनै पियकी मृदुवानी ॥ केलिके
 मंदिर आवति नाहि बड़ी विनती करि भीतर आनी ॥ पाँइ परे हू न
 पौढ़ति है परिकै गाहि पाटी रहै सुरिसानी ॥ २१ ॥ चौपाई ॥
 गौरी गुणवारी सुकुमारी ॥ जे जे भाव करें पिय प्यारी ॥ तिन
 भावनिकोप्यो जब चाहै ॥ सो विनतीहू फेरि न गाहै ॥ २२ ॥ ज्यों
 ज्यों करै रुखाई नारि ॥ झुके हाथ डारै झिझकारि ॥ पिय हियमें त्यों
 त्यों नहिं हानि ॥ दूत समै निहचै पहिचानि ॥ २३ ॥ तारक ॥
 पहिले बहु आलिन संग बुलाई ॥ इक दोइ प्रतीति भयेपर आई ॥
 तेहिको छलसों नल अंत पठायो ॥ निज प्यारिहि पाइ भयो मन
 भायो ॥ २४ ॥ नव सौरभ फूलनकी रचनापे ॥ सिसकी भरि पौढ़तही
 कुंचकापे ॥ गलबाहुलता पिय ऐंचिलतासी ॥ उरहार शृंगार करी
 नवलासी ॥ २५ ॥ सवैया ॥ नै गई नारि गही
 पहिले पिय चुंबति चोप लिलार रसीले ॥ नेकु उचीत्यो
 कपोलनिको रस लेति पिये न अघात अमीले ॥ सोहे प्रती
 ति हसौहे भई पुनि पान करै अधरान रँगिले ॥ मानौ सुधा उदगार
 लई विहँसै दृग कोरनि छैल छबीले ॥ २६ ॥ स्वागता ॥ लाज
 जाहि नियराज भजावै ॥ नयननिमें डर यों डरपावै ॥ बाल भाव जिमि
 मैन डरावै ॥ दौरि दौरि वाके ढिग आवै ॥ २७ ॥ सवैया ॥ हार
 विलोकनके मिथकै रस सार भरचो छतियाँ न निहारै ॥ ग्रीवके ऊपर

छै फुदना त्यों दुरी अँगुरी कुचकोर किनारै ॥ ज्यों तुम मोहि दई प-
हिराइ वही रचिहौ तिमि कंठ तिहारै ॥ द्वै हरये कुचको सहरावत चाव-
नसों पहिरावत हारै ॥ २८ ॥ सोवत पेखि पिया कर कंपत डोरी नि-
वीकी गही खरकौं हे ॥ जनि जगी रिस रंग रँगी भय भूरि पगी
सुलगी थरकौंहे ॥ घाँघरे झीन झपी झलकैं लखि जंघन मै ललकैं लर
कौंहे ॥ जानि लई दुगुने पट झांपि चढी भ्रुकुटी अधरा फरकौंहे ॥ २९
॥ तोटक ॥ तिनही तिन भाँतिन प्रेम करै ॥ जेहिते तियके तन
भीति ठरै ॥ निज चापलता तिय चापलता ॥ करि मैन लचाइ दई
समता ॥ ३० ॥ मनहरण ॥ सखिनसों कसि कसि नोबी बँधावै
ज्यों ज्यों त्यों त्यों मुसकयाति आप आप मुख चाहिकै ॥ उरज उतंग
शृंगमें रुपै उदित चन्द्र बंक नख अंक लाल मालनि सराहि
कै ॥ कबहुँ पलक डारि नयन मुकलित करै कौहुँ विक
सित सुखसिंधु अवगाहिकै ॥ कौंऊ कमल खिले अधखिले बिलसत
कौंऊ पद्मिनि जीती पदुमिनि यों उमाहि कै ॥ ३१ ॥ नल
विनु देखे काम बैठन न देत वाहि देखन न देत लाज ऐसे साँकरे
परी ॥ पीतम पियारो लख्यो रूप उजियारो नैन भरि न निहारो अद्भुत
रचना करी ॥ रतन भीतिनमें परत प्रतिबंब त्योंही छतिया मणीनमें
रँगिन प्रतिमा अरी ॥ तिन तिन ओर तृणतोरति करति दीठि नीठि
बिहरत पीठि दैरहै खरी खरी ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ व्याकुल बासर विरहसों, रै
निरही चित छाड़ ॥ रैन माहँ बासरचहै, लीला सुरत लजाइ ॥ ३३ ॥
नल ॥ तोमर ॥ मृगनयनि दे तजि भीति ॥ करि प्रीति लेह प्रतीति ॥
हमको सखी समजानु ॥ नल यों करै सनमानु ॥ ३४ ॥ सौरठा ॥
तिय हिय मन्मथ आगि, लाज महोषधिसों दबी ॥ दुगुन उठी अब
जागि, पियसनेह रस मंत्रवच ॥ ३५ ॥ पृथ्वी ॥ छुटाइ नलके करै
कुच छिपाइ लीन्हेतही ॥ समेटि छतिया लता सरस बाहु दोऊ गही ॥
मनौ डरति है लाजसों निकट लालको त्यागिकै ॥ बसैजु हियमें सदा
मिलति ताहिसों पागिकै ॥ ३६ ॥ चौपाई ॥ चन्द्रवदनि तेरे पग
लागौं ॥ तोसों एक दान मैं मागौं ॥ तेरो अधर एकही बार ॥ पान

करों पाऊँ सुख सार ॥ ३७ ॥ ऐसो पोटे ओंठु रस लेत ॥ हठसों
 पर समरद नख देत ॥ बार बार वाके गुण गावें ॥ बार बार तरवा स
 हरावें ॥ ३८ ॥ सवैया ॥ रावरे आनन इंदु सुधारस आसवसों छकि-
 मत्त भयो है ॥ सेवकहों जेहि लायकको वह काम करौ मनमोमलयो
 है ॥ कोमल पल्लवसे मृदुहाथनि चापतु जंघनिको उनयो है ॥ झारतु
 पाइनिनैननिसों लाचे नाइनिके राचि रंग रयो है ॥ ३९ ॥ चर्चरी। चुंबनादिकमें
 तजौ तुम लाज तो बिगरचो कहा ॥ त्यों तजौ अबहूँ विलासिनि पाँइ लागत
 हों इहा ॥ चाटु बेन बनाइ सुंदर केलिकी रचनारची ॥ वाम कौतुक कंप में
 अभिलाष मर्दनकी सची ॥ ४० ॥ लाज तोहिं भली लगै पहिले समा-
 गम पाइके ॥ स्वप्न संगम सों बिलज्जित होहु जातुलजाइके ॥ देत जात
 उराहने नरनाहयों रससों छके ॥ लाज छूटि गई नई दमयंतिकी नल
 केतके ॥ ४१ ॥ प्रह्लाटिका ॥ नाग पाश अरु बाहु बंध ॥ पुनि हंस
 चरण स्वस्तिक सुगंध ॥ वृक्षाधि रूढ़ जानौ सभाग फिरिलता वेष्टित सा-
 नुराग ॥ ४२ ॥ इन आदि बंध कीन्हे अपार ॥ पुनि सुरति रंग कीनति
 विचार ॥ अभिलाषित सखी लोचन सरोज ॥ दिन देखि तोहि हमलहैं
 चोज ॥ ४३ ॥ सोरठा ॥ करि ऐसे संकेत, भूपरमें दमयंति संग ॥
 मैन विहार निकेत, लसे दोउ रति मयनसे ॥ ४४ ॥ हरिगीत ॥ रसरंग
 आलससों भरी परभात जानत चोंकिकै ॥ उठि चलत सुरत निकेत सों-
 गहि वसनु राखति रोंकिकै ॥ भरि ललक चाखत अधर रस मुख सुरत
 सुखललचाइके ॥ क्षितिकी शची सम लसति पद्मिनि भूपसुरपति
 लाइके ॥ ४५ ॥ सोरठा ॥ हँसी सखी अनुमानि, लहि विलंब आग-
 मनको ॥ गई कोकमत जानि, भोरे रस पद्मिनि सुरत ॥ ४६ ॥ दोहा ॥
 निज निज निधु वन चिह्न युत, लखी सखी परभात ॥ आप आपनी चितै गति
 नलिन नयन नैजात ॥ ४७ ॥ सवैया ॥ दमयंतिइकंत सखीनके संग पगी
 रति रंग कथा जहँ भाषै ॥ तहँ देवनके बरसों छिपिकै नल काननिबैन पियूष
 निचाखै ॥ पाश खड्गचो सबिलास हँसै वरषै रस रूप जबै धरि राखै ॥ राजहि
 देखिदबीं सखियां सब लाजनि नवल बहू शिर नाखै ॥ ४८ ॥ दोहा ॥
 अवलोकी कोकी डरी, साँझ बिरहभै पाइ ॥ बिरह जनायो आगि लो, पि

यं हँसिलई बनाइ ॥ ४९ ॥ मनहरण ॥ चुंबन करत मुख मोरत न
 मृगनैनी नारि न जवावै गलबाँही बितरतही ॥ त्यों त्यों पिप हियमें
 पियूष वर्षत रस रंग सरसरतरे पाँयन परतही ॥ भुज लतिकानिसों
 छिपावै कुच कलिकानि विनती करते लेति ऐँचि इतरतही ॥ केसरि
 कपटकी बनीही पट कंचुकीसमिति गई अंक पंकरुहके धरतही ॥ ५० ॥
 चंद्रमाला ॥ परि परि पाँइ प्राणपति माँगत नख छत देति ननीके ॥
 बातन मिस करु ऐँचि पिमाको नख छतदे निजहीके ॥ अंचल हिय
 भूषण बाहेरको पीतम सकत छुटायो ॥ लाज बसन भूषण भीतरको
 सोन दूरिकै आयो ॥ ५१ ॥ तोमर ॥ बलवान मन्मथ राज ॥
 हठिकै छुटावत लाज ॥ बिन चीर सोहत भूरि ॥ महतावसी छुति
 पूरि ॥ ५२ ॥ सरसी ॥ हों मागत रतिदान दीन द्वे नाहिं करत तू
 नाहि ॥ भैं जानी तेरी रुचि मीठी सुरत रंग रसमाहि ॥ चाहत सुन्यो
 वचन वनिताके ऐसे करत उपाइ ॥ नैसिकुरुक पाइ सकुचानी उत्तर-
 कयो बताइ ॥ ५३ ॥ तारक ॥ पहिले पियेके कर ओरन हरे ॥
 बहुरोहरये झिझकारति फेरे ॥ परिपूर्ण प्रतीति भई हियमाही ॥ तबने
 कु करै हँसि वैननु नाही ॥ ५४ ॥ सवैया ॥ रूप अभूषणवेष सुगंध नयेई
 नये करि रोज सिधारैं ॥ रोज कवित्त न येई नये पटें रोजनई बतिया विस्तारैं
 एकसी जानि परै पियको नहिं देवनकी वनिता अनुहारैं ॥ वैसनई अरु
 हौसनई नित नेहनई छवि रोज सँवारैं ॥ ५५ ॥ भावनसों प्रगटै पियपै
 निजनेहके सागरकी सरसाई ॥ बातनकी मधुरी महिमा करि देत गहे
 गुणकी गरुभाई ॥ पाँइ पलोटति वै हरिके हरिलेत हियो शुचि सेवक
 ताई ॥ मोल लये जनदास हते वश द्वै प्रियप्राण करी मन भाई ॥
 ५६ ॥ मान मनावतिमें नहिं मानति बातनि जानत लाल रिसाने ॥
 नयन चलाइ हरे मुसक्याइकै लीन्हे मनाइ बनाइ लुभाने ॥ कीन्हे
 हरे हठसों परिरंभन चौपसों चुंबन लेत अघानें ॥ ऐसे छके छबिसों
 ललके नलके चष फेरि नयों ललचाने ॥ ५७ ॥ सोरठा ॥ लपटि
 गई झरधंग, ज्यों गिरिजा मिली गिरीशसों ॥ कोक कला परसंग, अं-
 गरीति ज्यों तरुलता ॥ ५८ ॥ कवित्त ॥ कोनथली न जलाशयकी

नहिं काननको नहिं शैल सुहायो ॥ लोकनको अरु देशनको नहिं काम
 कलाको प्रकार बनायो ॥ रागनको अरु बागनको अनुरागनको सुजहाँ
 जुति आयो ॥ पूजि अनंग पिया गहि संग जहाँ रस रंगन भूप मचायो
 ॥ ५९ ॥ ऐंचत चीर लची दुगुणी झुकि फूँकि हरे दुति दीप, बतायो ॥
 भूपतिके रस पेंच प्रभाझर छूटि रही सब देत देखायो ॥ श्रवण
 तरचोननिते गहिके तहँ अबुज नील मिलाइ दुरायो ॥ मानि मनोभवकी
 अरचारीत राणि मनौ शिरफूल चढायो ॥ ६० ॥ चर्चरी ॥ फूलढाँकि दुराइ दीप
 प्रसन्नज्यो मनमें भई ॥ दीपद्वै दुहुँ ओर और प्रकाशद्वै दीपति छई ॥ एक अंचल-
 सों दुरावतहुँ हरै विस्मय करै ॥ शुद्ध आवति अग्रिको बरु रोषकै पतिसों अरै ६१
 सोरठा ॥ वद्वि बड़ो सुख पाइ, वर दीन्हो नलराजको ॥ चाह रावरी
 पाइ, प्रगटों वेगि बुझाउँ पुनि ॥ ६२ ॥ पगख्यो तम चहुँ ओर, नल
 इच्छाको पाइकै ॥ गहि लीन्ही भरि कोर, मुदित भई अकबरि भरी ॥ ६३ ॥
 दमयंती ॥ मनहरण ॥ चूमत कपोलहीं तिहारे ललकन भरि अलकन-
 हीके भारसोंहे अलसातहौ ॥ करज कलित दुर उरसो ललित लाल मिलत
 तिहारे हार ओझिल रिसातहौ ॥ सेवकिनि जानौ हैं तो कह्योई क
 रौंगी नेकु अब छोड़ि दीजै गहे अंक अकुलातहौ ॥ करौंगी सुरत चित
 चाहसों तिहारी फेरि मैनकीस्यों तुरत मिलौंगी काल्हि रातिहौ ॥ ६४ ॥
 दोहा ॥ दीपक छिन छिन बरि उठै, छिन छिन जाहि बुझाहि ॥ तम-
 धन दामिनि रंगमें, करत केलि चित चाहि ॥ ६५ ॥ सोरठा ॥ भोंहै लई
 चढ़ाइ, काम चढ़ायो चाव त्यों ॥ नयन मूँदि अलसाइ, छूटन लगे हुँकार
 सर ॥ ६६ ॥ दोहा ॥ अधर दसत सीसी करै, कर झारै झुकि जाइ ॥
 रतिको मानौ आपु गुरु, निरत सिखावत गाइ ॥ ६७ ॥ हाटक गेंद स-
 मान कुच, दये नख छत भूप ॥ सौंध सिवर रति कामके, सेज सुरंग
 सुखरूप ॥ ६८ ॥ झलकत जंघन पैलगी, यों नख छतकी माल ॥ हाटक
 खंभनपै बँधी, मयन ध्वजा जनु लाल ॥ ६९ ॥ तोटक ॥ नलके कर कमल
 गहै जबहीं ॥ दमयंति उरोजनको तबहीं ॥ सब ओरन श्वेत छटा छह-
 रै ॥ मिलि हार प्रभा निज जानि परै ॥ ७० ॥ अंगमेद सुकुंकुमबेलि मची ॥
 छलकंचुकिया सखियानरची ॥ नलके उरलागत शोभसने ॥ जनु

किंशुक बाणन कामहनै ॥ ७१ ॥ दुलहा मुखसों मुखलाइ रहै ॥ कबि कौन
तहाँ उपमानकहै ॥ विधु सागरते कछु ये निकस्यो ॥ अपने प्रतिबिंब
समेत लस्यो ॥ ७२ ॥ दोहा ॥ चुंबन करन उरोज पिय, मुख सोहत यहि
भाइ ॥ अमृत भरनको कनकघट, शशिसों धरयो मिलाइ ॥ ७३ ॥
देखि देखि देखन लगै, मिलि मिलिकै लपिटात ॥ चूमि चूमि चुम्बन
करै, हिये न नेकु अघात ॥ ७४ ॥ सुरत केलि दूटोहरा, छिटकत मुक्ता
जाल ॥ परे न कछु पहिचानि मिलि, श्रम सीकरकी माल ॥ ७५ ॥
सोरठा ॥ आप रूपकी खानि, लखत रहै रमणी वदन ॥ अंग अंगमें
सानि, पार भई सुखसिंधुके ॥ ७६ ॥ कवित्त ॥ अंगनिमें पुलकाव-
लिको बहु योजन अन्तर मानत है ॥ नयनन माह निमेष लगे
विधिकी वरषै सम जानत है ॥ बाहुलता गलमें सिथिलात तहीं विरहै
उर आनत है ॥ दोऊ दुहूँन समोवतसे मिलि सोवतमें सुख सानत
है ॥ ७७ ॥ मनहरण ॥ सुरत सलिल कन जानत प्रियाके पीठ
थंभन करत परिरंभन उपाइकै ॥ मणिकी भितीनमें दिखायो प्रतिबिम्ब
कह्यो कौन इत आयो रही प्यारी भय भाइकै ॥ आपनो सुरत रस
मुकुत न होन देत सूर चन्दनादिन कबन्धन बनाइ कै ॥ योगकी
युगति औ संयोगकी भुगति रीति कौनकी प्रतीति दूजो नाशकुन
लाइकै ॥ ७८ ॥ दोहा ॥ एकहि संग दुहूँनके, उपज्यो स्वाद सुगंध ॥
विषम बाण मय विषम रत, गुंजत अलिमद अन्ध ॥ ७९ ॥ हरि
गीत ॥ पुनि करत समरत सुरत सुखरस छाकि चुम्बन लेत हैं ॥
भुज मूल औ कचनाभि सुंदर रहसि आनंद देत हैं ॥ सब सिथिल तनु
मुकुलित विलोचन पुलक मुख शशिमें सिंसी ॥ इभि निखिल निधुव-
नकी कला पियको हँसी तियको खिसी ॥ ८० ॥ सोरठा ॥ सुरत
मोद रसपाइ, सोहत कर रुह दशन छत ॥ ज्यों सर्वत करवाइ, लौंग
मिर्च नीकी लगै ॥ ८१ ॥ सवैया ॥ मंदही भंद बयारि करै
नल झीन जरी दुपटा मृदु छोरसों ॥ स्वेदके बुंद विराजि
रहे मुख इंदु न छत्रनके गन जोरसों ॥ भौंह चला चल
नाक सकोरि भरै सिसकी चितवै दग कोरसों ॥ मोतिनके हरवा निरु-

वारतु प्योतरवा सह्रावतु ओरसों ॥ ८२ ॥ दोहा ॥ प्यारीके तन स्वे-
 दकन, पियत पीयके नैन ॥ नैसिक प्यास बुझाति नहिं, महिमा मानत
 मैन ॥ ८३ ॥ जया पुहुप अलिपाति पति, अधरन कज्जललीक ॥ सकु-
 चीली छिपयो चहै, चाहत हँसी अलीक ॥ ८४ ॥ सोरठा ॥ आपु
 हँसी मुख मोरि, त्यों त्यों बूझत भूष हठि ॥ मुकुरुदयो करजोरि, यहै
 दयो उत्तर तिन्है ॥ ८५ ॥ रथोज्जता ॥ भाल माहँ पतिके निहा-
 रिकै ॥ रेख जावक लगी विचारिकै ॥ मोरिकै वदन कमलसों खिल्यो ॥
 चंद्र सूर परभातसों मिल्यो ॥ ८६ ॥ दूतबिलंबित ॥ हुकुमको गहि
 मयन महीपको ॥ दशनके छत ओठ समीपको ॥ दुखत वेदन जाति
 है कही, अजहँलैं यह भाति नही सही ॥ ८७ ॥ लखि उरोजनकी
 नखरेखको ॥ मदन किंशुक बाण विशेषको ॥ हँसि उख्यो नरनायक
 चाइकै ॥ रिस भरी बिशुकै सरसाइकै ॥ ८८ ॥ पहिरिये उरमोतिन
 हारको ॥ अमृतसीकर विंदु विहारको ॥ करजके छत वेदनको हरै ॥
 हम यही सुखको विनती करै ॥ ८९ ॥ कबित्त ॥ शीतल पौन करै
 छिनमें छिनमें तरवा सह्रावन लागै ॥ पीन पयोधर पै परबीन सजै
 छलकी अँगिया रस पागै ॥ स्वेदके विंदु रुमाललै पोंछति गूदतु केश
 खुले मुख आगे ॥ दीन्ही खवाइ तंबोल विरी मुख बेस बनाइ दये सब
 बागे ॥ ९० ॥ दोहा ॥ अपराधी सरपेंच यहु, तममें करत प्रकाश ॥
 अब तेरे पाँयन परत, कृपा करनकी आश ॥ ९१ ॥ ऐसे कोमल वचन
 कहि, सजनलग्यो सब साज ॥ प्यारीको पाँउनलग्यो, है सबको शिर-
 ताज ॥ ९२ ॥ सवैया ॥ मानिनि मानु मरूकै तज्यो मनभावन पावनपै शिर
 नायो ॥ कै नसकै अँखियां समुहै रिस पाछिलीसों चितकै सरमायो ॥
 त्यों उमग्यो अतिनेहनयो फरकी भुज औ हियरा ललचायो ॥ लोकिकै
 आइ गई उरमें लगि मानहु प्यो परदेशते आयो ॥ ९३ ॥ दोहा ॥
 बढ़त मनोरथ जाति अति, घटति जाति त्यों रैनि ॥ हँसि बोल्यो तब बैन
 नल, सकुचि सुनै मृगनेनि ॥ ९४ ॥ नल ॥ छप्पय ॥ देव दूतके रूप-
 तोहिं निरदै दुख दीन्है ॥ तीछन वचन बिझाई तेइ मै पातक कीन्है ॥
 तिनसों चित्तलजात बात कहसै नहिं आवै ॥ तेरे चर्चन माहँ चातुरी

चाह बतावै ॥ अब ताकी बदलो देत हौं जब लगि प्राणशरीरमें ॥ बिन
मोलदास तेरो भयों माफ भयो तकसीरमें ॥ १५ ॥ सवैया ॥ सो
छनु जामहँ तोहिं लखौं अरु राज गचौ अनुराग तिहारो ॥ सोइ सुधारस
पान हमै चख चुंबन जो परिरंभनवारो ॥ ईश्वरकी किरपा वहई जबतैं
तिरछे हँसि नेक निहारो ॥ सागरसों सरिता परिरंभन चाहत हौं यहि
भाँति विहारो ॥ १६ ॥ दोहा ॥ कौन भाँति वर्ण परैं, तेरे धीर सुभाइ ॥
तिन समान सुरपति तजो, मोको बरो बचाइ ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ एक
द्योस चर्चामें सुनी ॥ तोसों सखी चतुर दूगुनी ॥ जिन जिनसों जेजे
ज्यों डरें ॥ निजभय हेतु बड़ाई करें ॥ १८ ॥ कोऊ सखी ॥ छुये जात
जो सिमिटि विशेषि ॥ मै मन डरौं लजाऊं देखि ॥ और सखी ॥
कच्छपपल चापलता हेरि ॥ मोको लेत तहीं भय घेरि ॥ १९ ॥ अपर
सखी ॥ बहुरंगी सरठा शिर घूमें ॥ मोहिं देखि लगै डरझूमै ॥ निज
निज भीति सबै कहि देत ॥ तू ठकुरायनि डरत केहि हेत ॥ १०० ॥
दमयंती ॥ गोपाल ॥ तीनि लोकमें जो भय होइ ॥ मोहिं सकै लखि
नाहिन सोइ ॥ नलको विरह एक छिन रहै ॥ मरन तूल मोको डरुवहै ॥
॥ १०१ ॥ दोहा ॥ ताते सेवकके वचन, पर करिये परतीति ॥
जीतब भरि तेरे निकट, रहौं अचल वहि रीति ॥ १०२ ॥
छप्पय ॥ विरह विपतिमें गरल हुते तब मोहिं जिवाये ॥ रैन स्वप्नमें
दुहनि अंकलै दुहनि मिलाय ॥ करत रहे रसरंग अंगकी तपतिबुझावैं ॥
जिय मोही अवलंबि रोज मेरे गुण गावैं ॥ भरि रजनि नाम मेरो नहीं
लेत दोऊ द्वै भैन में ॥ इहि रोष पाइ मृगनयनि सुनि नीद न
आवति नैनमें ॥ १०३ ॥ सोरठा ॥ वचन रसीले जागि, कहति
जाति भूपति रसिक ॥ सोइ गई उरलागि, रानी रति आलस भरी ॥ १०४ ॥
सवैया ॥ ओठन ओठ मिलाइ लिये छतियाँ छतियाँ लगि एक
करी है ॥ ऊरुनि ऊरुनि सों रसिकै छबि पुंज प्रभा सब कुंज भरी है ॥
भेंटन जानि परै तिल तूल अतूल लई सुख लूटि खरी है ॥ कामही
की रति हीकि मनौ सुखसेजपै एक लिखी पुतरी है ॥ १०५ ॥ दोहा ॥

मिलि मिलि चलत दुहूँनिके, शुभ नासिका सुवास ॥ एकै प्राण दुहूँनको
कहे देत परकाश ॥ १०६ ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मंडित
भूमंडला खंडल श्री खाँ साहब अली अकबर खाँ
प्रोत्साहित गुमान मिश्र विरचिते काव्यक
लानिधौ नल दमयंती संभोग वर्णननाम
एकोन विंशतितमः स्सर्गः ॥ १९ ॥

दोहा-सर्ग वीसयेंमें कथा, सूर उदैको रंग ॥ वैतालक मुख वार्णि
बो, नल जागन परसंग ॥ १ ॥ सोरठा ॥ भूप जागिवे काज, बोले
वन्दी वैन मृदु ॥ वीत्यो रैनि समाज, सोवत प्यारी अंकले ॥ २ ॥
वन्दीजन ॥ प्रद्धटिका ॥ जै जै जनेश जै महाराज ॥ लखिये
प्रभात शोभा समाज ॥ लहि प्रथम शकुन दमयंति रूप ॥ मंगल पुनीत
प्रिय तनु अनूप ॥ ३ ॥ गीत ॥ यहु जाति पास नितंबिनी दिशको चलयो
सित भानु है ॥ छवि लाज ऐंचि भयो निरंकुश छैल ज्यों हिमवानु है ॥
नव मित्र संगम आशसों सबिलास कीकिल जीलसों ॥ मुसक्यात नैन सरोज
गावतिबासबीदिशि शीलसों ॥ ४ ॥ हरिगीत ॥ मुँदिजात खुलि खुलि स-
कल तारे दीठि झिलिमिलि होतही ॥ चहुँ ओर केसरिसी खिली दिननाहँ
किरणि उदोतही ॥ भरिरजनि जीतिलयो तमोगुण भोर दारिद्योंलख्यो ॥
नहिं अमृत दीधितिमें रही इक छबिछटा चखसों चख्यो ॥ ५ ॥ जगमाह
तिमिर तरंग तुंग प्रपंच पंक समान है ॥ अतिश्याम छवि मधुकर निकर
जनु करत रबिरुचिपान है ॥ तिन अंकुरनि निर ओस बिंदुनिकी विरा-
जति माल है ॥ जनु सुघर सूचि न भिदति मुकतनिको अनूपम जाल है
॥ ६ ॥ प्रद्धटिका ॥ रबि किरणिक्रुचाचै प्रणवरूप ॥ विधिनखतलोपि
विंदुनि अनूप ॥ तहँ रचत आनि सुरसाधि लेतु ॥ गहि इंदु बिंबसो अंशु
देतु ॥ ७ ॥ मनहरण ॥ दुरि चरमाचल में चंदु छिपि छिपि जातु मू-
दती है नैन कुमुदिनि मुरझाइकै ॥ कागनकी काकली कलित बन बाग रही
छाया समंतमकी पटल छटा छाइकै ॥ मायामय जाया रघुपतिकी हरीही

जिमि तिमिरचिकुर ऐंचि रावन उपाइकै॥ अरुण बदन सूर करन पसारै
 देखौ हरतु सरबरी विहीन पति पाइकै ॥८॥ प्रह्वटिका ॥ सुर मिथुन
 केलि शय्या अकास ॥ उडु गलितहार मुकुता विलास ॥ भरि रह्यो श्वेत
 करतूल तूल ॥ गलसोइ रूप विधुभयो कूल ॥ ९ ॥ रविकिरणि कही
 दशशत प्रमान ॥ तेइ चारि वेदशाखा बखान ॥ तेहि उदैपाइ महिदेव
 भूरि ॥ परभात देवध्वनि करत पूरि ॥ १० ॥ आयो शिकार
 दिननाहु भूप ॥ धरि छूटत सरगज किरणि रूप ॥ ते हनत काग सम
 अंधकार ॥ मिलि करत काग ताते पुकार ॥ ११ ॥ ससमार
 नडर शशि भजत जातु ॥ उड़ि तारा पारावत विभातु ॥ सुर सुरत हार
 टूटे अपार ॥ ते दुरके मुक्ता नखत सार ॥ रवि किरणि बुहारीसों बुहारि ॥
 करि पुहुप महीमें दिये डारि ॥ १२ ॥ दोहा ॥ प्रथम अतिथि रवि
 जानि नभ, तिमिर दूरवासंग ॥ ओस सलिल आखत नखत, देत अर्घ्य
 सरबंग ॥ १३ ॥ क्यों न जिवावै असुर गुरु, तम असुरै परभात ॥ संध्या-
 वृत भ्रत जीविनी, विद्या कही न जात ॥ १४ ॥ चेंचु चूमि चटुके लिपटु
 पक्ष हलाइ फुलाइ ॥ मिलत कोकरमणी रमन, लीलाकोक उपाइ ॥ १५ ॥
 सोरठा ॥ पदै कोक जो और, लहै सुरति परवीनता ॥ आपु कोक शिर
 मोर, केलि कलाके सारनिधि ॥ १६ ॥ सवैया ॥ तारा सभा अरु रैनि
 बहू इनको नहिं योग हती यह ऐसी ॥ देखतही अपने पतिकी यहि
 भांति विपत्ति कहूँ छिपि वैसी ॥ चंद्रहूकी छतियाँ अति साँवल पाहनते
 घनपीन अनैसी ॥ क्यों नवटूक भई छिनमें बिलुरी वह प्राणप्रिया
 जब ऐसी ॥ १७ ॥ सरसी ॥ नवत लाज होमति अनुरागी अरुण
 किरण शिषिमाह ॥ व्याहि लई संध्या सरोज दृग बिगसतही दिननाह ॥
 गावत गीत मिलिंद सुघर ध्वनि झरत पुहुप चहुँ ओर ॥ श्रुति सुख पढ़त
 बैठि शाखा द्विज अरु नाचत हैं मोर ॥ १८ ॥ हरिगीत ॥ सुनिये
 तपोमयराज ऋषि महाराज श्रीनलराजजू ॥ करि वेद विधि संध्या
 प्रणति अरु राजके शुभ साजजू ॥ इत इंद्रकी दिशि गर्भ संयुत चहतु
 जन्म्यो बालु है ॥ उत छुटत कंठ कपोतहू कृत वदनराजतुलालु है ॥ १९ ॥
 महाराज रानि दमयंति तैं नलराजको हियराहरयो ॥ नहिं मनतु दूषण बेद

विधिके लोपकोयों वसु परचो॥तू परम पण्डित आपु है नहिं दुरित हेतु करै
 सही॥अपवाद लोगनमें चलै जहँ कामकी चरचानहीं॥ २० ॥ मालिनी ॥
 तट तरु खग जागे, रावके रंग पागे ॥ जगत अधखुलेसे कमलिनी नयन
 लागे ॥ पियत मधुप माते ओठकीं सीधु मानौ ॥ पुहुपरस अमीसे गाइ
 शृंगार गानौ ॥ २१ ॥ मनहरण ॥ केसरि कुसुम सम फूलि
 फैलि रही छबि रविकी तरुण झवि झमकत अरुनाई है॥ बीच बीच दौरत
 जलजमधुपान पुंज गुंजत मधुप मानौ गुंजा झुति पाई है ॥ साँवल
 अहार जो करत पीत मात तौही सुलकेसरीनमै होत श्यामताई है ॥ तम
 को पियत सूरतासों उतपति पाइ यमुना समनमै सरस मलिनाई है
 ॥ २२ ॥ प्रद्धटिका ॥ पति अस्त समय अनुराग कीन्ह ॥ जेहिं अमर
 लोकपति बरत लीन्ह ॥ तजि अधर भुवन चलि गई साँझ ॥ सोइ
 दीपति आई अनल माझ ॥ २३ ॥ अ० ॥ करि कमल मूरछा तिमिर
 दूरि ॥ सुर वेद सूरकर अमिय मूरि ॥ कल्हार मूँदि अप मिरत देत ॥
 तह समन पिता यह जानि हेत ॥ २४ ॥ दोहा ॥ झमझमात रविमणि
 विमल, रवि किरणनिको पाइ ॥ निजपतिकी सम्पति लखे, कोन काँति
 सरसाइ ॥ २५ ॥ चंदु कमलिनीको रहै, रविके विरह सताइ ॥ हँसी
 कमलिनी देखि दिन, विसिनी वरिह बलाइ ॥ २६ ॥ मालति कालतिका
 हँसै, झरत पुहुपकल हाँस ॥ कोक लोककी देखिकै, दिनको केलि विला-
 स ॥ २७ ॥ छप्पय ॥ मलै सानसों खस्यो चलत अतिमंद सुहायो ॥
 शीतल भयो शरीर सजन अलि सोर मचायो ॥ सरसी जात पराग धूरि
 धूरालै धूरचो ॥ मान सरोवर सलिल बिंदु कनलै मुख पूरचो ॥ याहि भाँति
 पौन परभातको आवत सकै वखानिको ॥ परसेदु केलिको हरत हठि जैसे
 पौनु पखानिको ॥ २८ ॥ चंद्रमाला ॥ वासर भयो दिवाकर कीरति सो
 सूरयकर छुरधारै ॥ मुंडतु तिमिर यातिकवरी निशि चोरनिको जुनि
 कारै ॥ डारिदये वै केश सँवारे अवनी तलमें नैसे ॥ छायामिस तरु त-
 रुके तरहरि प्रगट देखिये वैसे ॥ २९ ॥ दोहा ॥ सुयशरावरो शंख
 सम, जाको द्विजपति भाइ ॥ जो याको करछे दुलखि, धरचो कलंकु बनाइ
 ॥ ३० ॥ सौरठा ॥ सूरय करसों भेदि, भयो अरासों अरध बिधु ॥ डारै

कमलानि छेदि, अरकोकनिके विरहको ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ कमला
करको पाहरू, कुमुद सदल दग खोलि॥जगि निशि सोयो दिन उदै, अ-
लिकल रवगल बोलि ॥ ३२ ॥ प्रथम पुरुष मध्यम पुरुष, देत प्रशीज
सिहाइ ॥ तुहीं तुहीं परगट करै, पर प्रत्ययको पाइ ॥ ३३ ॥ द्वितीय
त्रिभंगी ॥ अमल कमल दल विमल सकल थल विललित नल मारग
लागे खग आगेही उठि जागे ॥ मधुर मधुर ध्वनि निगम गुनत मुनि
मिलि तियकोक सभागे सुखपागेही अनुरागे ॥ अरुणकरनिकर कनक
सुरजहर गँगनजु अँगनझारे भुअडारे फूल सितारे ॥ जय जय तमहर
जयद्युति धरलखि उदयाचल वारे निशि न्यारे पापपधारे ॥ ३४ ॥
मोदक ॥ वंदिवने परभात बखानत ॥ जागि दोउ उर आनँद आनत॥
दानदये नल जू कुल पूषण ॥ रानि उतारि दये निज भूषण ॥ ३५ ॥
नंदित पैधत वंदिनके गन । जात सराहत चोपमहामन ॥ माणिक ला-
ल किये जनु लोचन ॥ चाहत याचक दारिद मोचन ॥ ३६ ॥ गीत ॥
सुरबाहिनी अभिषेकको विधिबेद संध्यहि ध्याइकै ॥ करिकै कृतारय वंदि न
यननि सैन वंदन भाइकै ॥ रथवात बेगवनाव सुन्दर दाइजे महँ जो लह्यो॥
चढि सोधते निकरचो सुधाधर मेरुको मारग कह्यो ॥ ३७ ॥
इति श्रीप्रचंड दोर्दण्ड प्रताप मार्तंड मंडित भूमंडलाखंडल
श्रीखाँसाहब अली अकबर खाँ प्रोत्साहित गुमान मिश्र
विरचिते काव्यकलानिधौ सूर्योदय वर्णनं

नाम विंशतित्तमःस्सर्गः ॥ २० ॥

दोहा—सर्ग इकीसेमें कथा, दमयंतीको मान ॥ उत्तर प्रति उत्तर
वचन, नल करिहैं सनमान ॥ १ ॥ सोरठा ॥ शोधि शिखर मणि
धाम, आयो राजा न्हाइ कै ॥ रथ ऊपर विशराम, बात बेगि नभते
उतरि ॥ २ ॥ दमयंती भहराइ, उठी देखि आयो नृपति ॥ उदवत
शशि नियराइ, सिंधु प्रतीची बीचि ज्यों ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ दमयंती
अति आदर करचो॥ भूपति देखि मोद मन भरचो ॥ मंदाकिनि पंकज
छबिजानी ॥ हाथ पाँइ दग बदन निशानी ॥ ४ ॥ सवैया ॥ आनि

दयो पिय हाटक पंकज प्राणप्रिया करसों गहि लन्हो ॥ पंकज नयनि
 प्रकाशि रही कमला समलै करकमलन बीनो ॥ थोरो दयो बहुतै करि मानत
 पीतमके हितको चितचीनो ॥ चाटकसों अभिलाष भरी सतलाखनिमो
 लवराटक कीनो ॥ ५ ॥ दोहा ॥ लखि प्रसन्न ठकुरायनी, विहरनिसों
 अनुमानि ॥ प्राणपियारी चाइसों, तब बोल्यो मृदुवानि ॥ ६ ॥ नल ॥
 दोधक ॥ मज्जित देव नदी हम कीन्ही ॥ संध्याहि अंजलि तामहँ
 दीन्ही ॥ शेष रही करिवे विधि प्यारी ॥ जो नवहै रिसकी उर व्यारी
 ॥ ७ ॥ लोचन ऐंचि रही अरिसौ है ॥ तानि करी भुकुटी सरिसोहैं ॥
 नैसिकुपीय वियोग न भावै ॥ जानियहै नहिं बोलु सुनावै ॥ ८ ॥ दोहा
 भूपति ठिगते नेकटरि, गई सखीके पास ॥ कुमुदिनि तजि कमलनिभिळी,
 ज्यों कमला सबिलास ॥ ९ ॥ करि किरिया परभातकी, सखी रोंकि निज पानि
 पाछेसों दमयंतिके, मूँदि लिये दृग आनि ॥ १० ॥ हँसन लगीं सहचरि सबै,
 देखिहि नयन दुराइ ॥ मानौ मापति लोयननि, कर परसनि फैलाइ ॥ ११ ॥
 तोटक ॥ जिय जानति हैं यह तो सखिया ॥ कर ऐंचि छुड़ावत हैं
 अँखिया ॥ परसे सुख सो नल जानि लई ॥ रहि नारि नवावति मौन
 मई ॥ १२ ॥ नल ॥ तारक ॥ मृगलोचनि योग नहीं तुमको है ॥
 निज दासहि ओर लखौ सरिसौ है ॥ जेहिकी किरपा तुमको हम
 पायो ॥ तपसो तुमको नहिं क्यों मन भाँयो ॥ १३ ॥ भाररैनि करी
 हम सेवकताई ॥ नहिं हाइ करी विनती मनभाई ॥ यहिते अपराध भई
 रिस तेरे ॥ अब वंदति हैं पद पंकज तेरे ॥ १४ ॥ पियके कर पाँयन
 ओर निहारे ॥ दमयंतिसो दूरिहिते झिझकारे ॥ शर छोड़ि कटाक्षनके
 चल पैने ॥ उर पाँइ दयो करि नयन तनेने ॥ १५ ॥ हिंय भेदि
 कटाक्षनसों वश हैंकै ॥ नल बोलि उख्यो तियके पगछैंकै ॥ नल ॥
 तुअ दौरति है अँखिया हरिनीषी ॥ श्रुति कूपनके भयसों उलटीसी ॥ १६ ॥
 रिसहू भिसहौ तुममो उर प्यारी ॥ सियरावति कमलन सूर्य उज्यारी ॥
 नवमोतिनकी समता द्युतिवारे ॥ सुखदायक आखर बैन तिहारे ॥ १७ ॥
 सोरठा ॥ तेरी वाणि पियूष, कटी क्षीरनिधिते मिलित ॥ हरति आव
 रस भूष, दुग्ध बिंदु मुसुक्यात नित ॥ १८ ॥ दोहा ॥ उदया चल

पूरण शशी, उदित चंद्रिका साथ ॥ बैद्यो नल पर्यंकपै, गहे प्रियाको
 हाथ ॥ १९ ॥ लक्ष्मीधर ॥ अंगमें अंग वाके समोवै हँसै ॥ दूरिकै
 वियोगै बढ़ावै रसै ॥ गोदलै बारही बार चूमै मुखै ॥ भानु ज्यों
 कमल त्यों चित्त पावै मुखै ॥ २० ॥ बोलि लीन्ही कलानाम प्यारी
 सखी ॥ आप सोहैं खरीकै कृपासों लखी ॥ रूपओ बैसमें अप्सरी
 यक्षनी ॥ नर्मकी केलिलीला करी साक्षिनी ॥ २१ ॥ नल ॥ सोरठा ॥
 सुनहि कले मृगनयनि, रोष भरी तेरी सखी ॥ रंगी खेल रंगऐनि, नाहिं
 करुणा हमपै करै ॥ २२ ॥ तोटक ॥ रसके परिरंभनदै रजनी ॥
 पति मोल लयो हमतौ सजनी ॥ नितहों तुमसों यह बातक-
 है ॥ सब झूठ भई न सदा निबहै ॥ २३ ॥ नल छोड़ि न और
 बसै मनमें ॥ रुचि पूरि रही तेहि की-तनमें ॥ यहिके हियकी परतीति नई ॥
 नव योवनसों विपरीति भई ॥ २४ ॥ मौक्तिक दाम ॥ नयो मुख
 कमल विलोचन लाल ॥ लखै इतको करि दीठि कराल ॥ लख्यो तब मोहिं
 करयो जब दूत ॥ यहौ सुधि भूलि गई इक सूत ॥ २५ ॥ अलीन सु-
 नावति बैन पुनीत ॥ हमें लखि ठानति मौन विनीत ॥ सखीन बुला-
 वति नाम पुकारि ॥ लेति न लेति हमें निरधारि ॥ २६ ॥ उरोज रहे
 उर मंडित पीन ॥ कठोर भई छतियाँ दैहीन ॥ गयो रुकिचित्त रह्यो
 नाहिं ठौर ॥ धरै हमको कितलै शिरमौर ॥ २७ ॥ सोरठा ॥ देत
 उराहन भूप, नरम केलि लीला नरम ॥ बोली बैन अनूप, कला कला
 धरकी कला ॥ २८ ॥ कला सखी सवैया ॥ साँच विचारति हौ
 पुहुमीपति ऐसी दुहुनकी प्रीति नई है ॥ पाछिली प्रीति बड़ी हमसों
 यहि ते हमही महँ रंगरई है ॥ मयनके तंत्रनि मंत्रनिके मत जानत हौ
 मति मोद भई है ॥ नवल वहू रतिको पति तीक्ष्ण ज्यों तरवारि कि धार
 भई है ॥ २९ ॥ प्रह्लाटिका ॥ ना सत्य वचन तुम सुर समान ॥ तेहि
 भौंति चतुर रानी सुजान ॥ धरि मन्मथके सो रूप लेत ॥ तुम पूरि रहे
 हियके निकेत ॥ ३० ॥ तुम माहँ चित्त चिहुन्यो निदान ॥ नाहिं ऐंचत
 आवै कदत प्रान ॥ यह राज धूरि ताते रिसाति ॥ दग मोरि छोरसों लख-
 ति जाति ॥ ३१ ॥ मनहंस ॥ जब ते लखे तुम मै न चंचल कोरसों ॥

पुतरीनमों मिलिकै बसे तुम ओरसों ॥ मम बैनपै परतीति जो नहिं हो
 ति है ॥ लखिये विलोचन आइ आपुन ज्योति है ॥ ३२ ॥ दोहा ॥
 निज कुच कुंकुम रावरे, हिय में देति लगाइ ॥ कहे देत अनुराग निज
 है तोमें यहि भाइ ॥ ३३ ॥ तोटक ॥ जब ते तुम आनि वसे
 मनमो ॥ परिपूरि रहे सब ही तनमो ॥ कुच दो हिय मोन समाइ
 सकै ॥ छतियाँ मग बाहेर को ललकै ॥ ३४ ॥ यहि भाँति कला
 कल बैन कहे ॥ दृग भूपतिके मुसुक्याइ रहे ॥ रमणी परबूझतु है नि-
 जुकै ॥ चिबुकै गहि आनन उन्नतु कै ॥ ३५ ॥ पियके करसों मुख मोहत है ॥
 युत पंकजसों शशि सोहत है ॥ बहुरौ नरनाह कह्यो हँसिकै ॥ सखियाँ
 हरषीं सुनतै रसिकै ॥ ३६ ॥ नल ॥ यहिके मुखको शशि मित्रभयो ॥
 अरि बासर ताहि निकारिदयो ॥ लखि कमलनमें समता सिगरी ॥ ति-
 नमें कमला कुल आनि भरी ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ अधर दशत रसरंगमें
 मोपै योग नरौष ॥ कीर बिंबफल छतकरत, ताहि देत कहूँ दोष ॥ ३८ ॥
 पद अंकुश कुच कुंभकी, लक्ष्मीलई चुराइ ॥ तिन्है पीडिकै भूपहों, साजों
 क्यों न सजाइ ॥ ३९ ॥ संयुत ॥ मृदुकंद ओठनिको दसै ॥ अपरा-
 धमों मुखमों बसै ॥ शिरको कहा बलि पापुहै ॥ पगछै सकै न सतापुहै
 ॥ ४० ॥ यह बूझितैं करुणा भरी ॥ तकसीरको हमसों परी ॥ जेहि ते न
 बोलति चाइसों ॥ बरभौंह ऐंठति भाइसों ॥ ४१ ॥ सोरठा ॥ कान
 आपनो लाइ, दमयंतीके वदन ढिग ॥ छलसों सुमुख लगाइ, दमयंतीके
 कानसों ॥ ४२ ॥ तब बोली मुस्क्याइ, कला मनोज कलावती ॥ तिरछे
 नयन चलाइ, दमयंतीसों सरिस होइ ॥ ४३ ॥ लीला ॥ मैन मंत्रनकी
 कला हमहीं पढ़ाई सोधि ॥ भाँति भाँतिनसों सिखाइ दई तबै बुधि बोधि ॥
 ते सबै दमयंति तैं हियते दई विसराइ ॥ तैं करचो विपरीति दंपति भाव
 यों उलटाइ ॥ ४४ ॥ बैन ये सुनिकै कलाके मौन देति हुँकार ॥
 ऐंचि कौलु दयो तहीं सखि साँझकी बहुवार ॥ ४५ ॥ कलासखी ॥
 सोरठा ॥ महाराज नलराज, मैं विनती बहुतै करी ॥ भई अधिक
 इतराज, दईकोलकी ऐंचिकै ॥ ४६ ॥ लीला ॥ मोहिं बूझति तैं ग-
 न्यो नलको न बिद्व न पाइ ॥ रूपकै नलको चलयो छल गेहु है सुर-

राइ ॥ स्वर नदी जल जातले सुरलोकते इत आइ ॥ मोहि चाईतु
 है छल्यो करि नेहके सब भाइ ॥ ४७ ॥ होगयो जब काम मोहित है
 अहल्या तीर ॥ स्वाँगु कुरकुटको करयो तब बुद्धि बंचक वीर ॥ यों
 भयो दमयंतिके भ्रम इंद्र तुमको जानि ॥ साँच हो नल देहु तौ परछन्न
 चिह्न बखानि ॥ ४८ ॥ शशिवदना ॥ यह कहि बानी ॥ चुपकि
 सयानी ॥ नरपतिबोल्हो ॥ अमिरतु खोल्हो ॥ ४९ ॥ नल ॥ सोरठा ॥
 प्रेम पियारी रानि, निज मनमे किन सुधि करै ॥ मैं वणों पहिचानि
 अपनी तेरी आगिली ॥ ५० ॥ सवैया ॥ लाज भरी डरसों थहरी
 जब वा निशि केलि कला विस्तारी ॥ आधिकही रसरंग समय हम
 तोहिं दयो तजिकै मनुहारी ॥ नेकु वियोग लह्यो न परै जब मानु करै कबहूँ
 रुचिवारी ॥ सो सुधि भूलि गई निजकै वह देखतही तसबीर हमारी ॥ ५१ ॥
 दोहा ॥ सदनख छत तो कुचनिके, उपटे मो उर आइ ॥ सुधि करिमें
 हैंसिके कह्यो, दीन्हे सखिन बनाइ ॥ ५२ ॥ सवैया ॥ खेलमही
 सखियानके संग तहाँ हम ये कछुरोषु कह्यो ॥ याँचत है सबके ढिग
 हौरपटयो मिसुकै तुअपाँइ परयो ॥ वादिनहीं जब आइ गयो रति
 लालचसों ललचातु खरयो ॥ तें परिहास सज्यो सजनी मुख चूमि
 भुजागहि अंक भरयो ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ अधरनिमें अधरनि मिलै
 दीन्ही विरी खवाइ ॥ मति भूलै मानिनिजु हो, जाती हो परिपाइ ॥ ५४ ॥
 सवैया ॥ लोचन फेरि करयो बदलो निशि लेत करोट रहे मिलिसौं
 हैं ॥ नेकु वियोग सह्यो न गयो गुरु लोग रिसाइ चढ़ावत भौहें ॥
 मांगत मोहिं विरी करसों कर लागत भाजि गई अलगौहें ॥ सोइक बार
 सबै बिसरी जब सों इक बार करी हमसौहें ॥ ५५ ॥ चौपाई ॥ प्रथम
 सुरत मेही कुम्हिलाइ ॥ वार वार रति सही न जाइ ॥ मैं तब तोहिं
 उराइनुदयो ॥ सो बलि भूलि भलोपन लयो ॥ ५६ ॥ झूठ वचनमें रस-
 सों रूसी ॥ चली सखी न संग कोऊसी ॥ मोहिं देखि आगे रस पगी ॥
 सुभिर वहै तृण तोरन लगी ॥ ५७ ॥ सोरठा ॥ चिबुक साँवरो बिंदु
 प्रतिबिंबित मुख हारमै ॥ मनौ नखत में इंदु, सुधि करि प्यारी सुरति
 श्रम ॥ ५८ ॥ सरसी ॥ सुधि करि शरद कोकनदलोचनि विलसित

विपिन विहार ॥ बल दलकी दल दूटि परयो महि लागत पवन झुका-
 र ॥ ५९ ॥ सोरठा ॥ ऐसी भाँति बखानि, सकल भेद भूपति कहै ॥
 दमयंती सकुचानि, मूँदि रही सखिके श्रवण ॥ ६० ॥ दोहा ॥ मयन
 कमलकी गति हतै, जानि कानकी बानि ॥ ॥ राजरानि मीढ़ति तिनहै
 गहे कोकनद पानि ॥ ६१ ॥ हरिगीत ॥ यह लखत केलि विलास
 तियके हाँससों पिय मुखलसै ॥ जनु सरग नवल प्रवालके दल दुग्धकी
 लहरी रसै ॥ नहिं रहसि भेदनिषों विदित सखियाँ सबै विहँसैं खरी ॥
 जनु पुहुप वर्षे हर्ष हिय महि अवतरी नभसों परी ॥ ६२ ॥ सोरठा ॥
 नल मुख हाँस उदोत, अली हँसी सोहन लगी ॥ प्रगट सुधाधर होत
 कुमुद पाँति जैसे खुलै ॥ ६३ ॥ पहिचान्यो सुरहाँस, सखी पक्ष निज
 पाइकै ॥ अबलालै बलपांस, कला विज्ञ बोली कला ॥ ६४ ॥ कला सखी ॥
 सोरठा ॥ अहेरानि गुण खानि, नेक आइ इत हंस गति ॥ पिय मुख
 मधुरस सानि, सुनि सुंदरि सुंदर वचन ॥ ६५ ॥ सवैया ॥ पीछे
 खरी बहराइ सुनै पियकी बतियाँ छतियाँ सुख देनी ॥ भूपतिके शिरपेंच
 मणीन भई प्रतिबिंब सरोरुह नयनी ॥ जानि गई जिय भावक-
 लाचित चावभरी चितवै करि सैनी ॥ आँखिनके बिन साखिन हू लहिहेत
 करै अनुमामति पैनी ॥ ६६ ॥ कलासखी ॥ प्रह्लाटिका ॥ मम
 श्रवण अभूषण मणि कठोर ॥ तुअ हाथनमें सखि गड़तकोर ॥ निज
 पट्टरानि कर ऐंचिलेह ॥ मैं करत आपसों अर्ज येह ॥ ६७ ॥ नलराज
 कह्यो सुनि रानि रानि ॥ निर्फल अयासतजि श्रवणपानि ॥ तप तुरत
 कला करदिये झारि ॥ दमयंति गई तजि सोरुपारि ॥ ६८ ॥ तब
 कलासखी चलिगई डोलि ॥ दुरिनेह मंजरी लई बोलि ॥ कला ॥
 सुनि दोउनके सखि रहसबैन ॥ जेहि भाँति भये भरिरैनिसेन ॥ ६९ ॥
 दोहा ॥ मैं तोसों वर्णन करचो, अपनी जानी बात ॥ तैंहूँ कहि जो
 कछुलही, सही रही अलसात ॥ ७० ॥ मौक्तिकदाम ॥ कही उनहूँ
 अनजानत बात ॥ भये तब दंपति कंपित गात ॥ कह्यो तब भूपति
 बोलि कलाहि ॥ पुनि भूपति नेहलताहि सराहि ॥ ७१ ॥ नल ॥
 कही तुम झूठ सिख्यो कोहि ठाम ॥ दुहून सिखी माति मोहन काम ॥

नेहमंजरी ॥ कहा विनही ठिकदेत कलंक ॥ सखी नहिं झूठ कहैं यक
 अंक ॥ ७२ ॥ पिय मिलि आपु ठगौ सब आलि ॥ नयोग हमै तुमसों
 झूठ बालि ॥ कहै लगि कानन काननबैन ॥ हंसै करि अद्भुतसों चित
 बैन ॥ ७३ ॥ कलासखी ॥ दमयंति हमै जनिलावाहि दोष ॥ करै
 बिनकाज कहा बलिरोष ॥ कहैं हम बात छिपाइ निदान ॥ सुनै जेहि माह
 द्वितीय न कान ॥ ७४ ॥ नल ॥ लखी मृगलोचनि आलि तुम्हारि ॥
 सबे छल साहसकी अनुहारि ॥ करै इनको जनि चित्त विलास ॥ सुनै
 सखियां कुहकैं कलहाँस ॥ ७५ ॥ दोहा ॥ हंस गवानि निज
 भवनमें, आवन इहै नदेह ॥ दुर विनीत कतमीत है, चरचि चित्त
 चितलेह ॥ ७६ ॥ चुलिआला ॥ दमयंती शिरनाइकै सैनक
 री सकुचाइ सुलक्षण ॥ जानि गयो भूपाल सब भेद रह्यो मुस्काइ
 ततक्षण ॥ ७७ ॥ मालाधर ॥ वरुण वरसोंतहीं कर समेटि छीटै
 दर्ई ॥ बसन सबभीजिकै लखत आश्रयैं भई ॥ विघनु नमि दीठिको द्युति
 उरोज देखी परै ॥ दीपति जनु दामिनि युगल तोयसों अंबरै ॥ ७८ ॥
 नंदा ॥ जानतु जग तुवसनको अंबरु नामु ॥ नखत सलिल कन
 सुंदर नित विशरामु ॥ ७९ ॥ श्लोक छंद ॥ देखि देह दशादोऊ
 लाजसों बहुतै भरी ॥ आइ भीतरते तौही दौरि बाहेर को टरी ॥ ८० ॥
 देखिके निकसे दोऊ ओरजे सखियां हुती ॥ ते सबै तुरतै दौरिं बाहरीहैं
 इक सुती ॥ ८१ ॥ प्रह्लादिका ॥ दमयंति करी करसैन आइ ॥ तब
 लई दुवो सखियां बोलाइ ॥ वै बोलीं बाहेरते पुकारि ॥ किनि देहु इन्हैं
 अजहूँ निकारि ॥ ८२ ॥ दोहा ॥ भूपदरीची बीचहैं, बोल्यो आनन
 खोलि ॥ बाहेरही सब सहचरी, करी दीठि हगडोलि ॥ ८३ ॥ नल
 त्रिभंगी ॥ जे जे हम बातैं रस रस सातैं करी सुहातैं रजनिजगे ॥
 ते इन सुनि लीन्ही अब सुधि कीन्ही कहि दीन्ही हिय प्रेमपगे ॥ इनकी
 रति पतिकी और सुरतिकी गति निज नयननि हम देखी ॥ तेहि पै
 वै ठीठैं भई बसीठैं छलईठैं यह मति लेखी ॥ ८४ ॥ सोरठा ॥ जिन
 के चरित पुनीत, कीरतिसों उज्ज्वल दिपै ॥ दूषण देत अमीत, मृषामषी
 मैले करत ॥ ८५ ॥ सखी दोऊ ॥ हम न करैं कछु दोष, कहैं न

चर्चारावरी ॥ जालगि आनत रोष, ये हम जाती बाहरी ॥ ८६ ॥
 तोमर ॥ लजिकै रही दमयंति ॥ पिय पेषि ताहि इकंति ॥ मुख चूमिलै
 उरलाइ ॥ नव नेहसों समुझाइ ॥ ८७ ॥ गहि पीन उच्च उरोज ॥
 करनीवि ऐंचत चोज ॥ नख अंक सोहतलाल ॥ शिवशीश किंशुक माल
 ॥ ८८ ॥ नल दोहा ॥ कुच नितंब ऊरु विमल, मिलततिहारो बास ॥
 उज्ज्वल गुनमें शुभदशा, ताको लहत प्रकाश ॥ ८९ ॥ सहि नसकै
 मन्मथव्यथा, तनु कोमल चल नयनि ॥ हहा पाँइ तेरे परो, तन मन वारों
 ऐनि ॥ ९० ॥ सोरठा ॥ पतिकी हठ गति जानि, झमकि उठी पर्यंक
 ते ॥ नेवर झनक सुहानि, चली अलीकी ओरको ॥ ९१ ॥ कुच नितंबके
 भार, पग आगे नहिं पगि सकें ॥ पाछे बिथुरत बार, टूटी कटि लचकी
 परै ॥ ९२ ॥ तोटक ॥ नलपै चलि ताहि गहो न गयो ॥ लहिसाखि
 कितंभ समान भयो ॥ दमयंति लजाइ सखी गनमें ॥ नहिं जाइ रहै
 नससै मनमें ॥ ९३ ॥ गीत ॥ तब वंदि सुंदर द्वारपै नलराजसों
 विनती करी ॥ दिनमध्य आवत जानिकै गुनमान भावनसों भरी ॥
 वंदिवधू ॥ जै जीव श्रीनल भूमि वासव मध्य वासर है भयो ॥ जल
 न्दानके क्षितियान चाहत गऊ पूजनको ठयो ॥ ९४ ॥ जलश्वेत शुद्ध
 सुगंधि सुंदर केश पुंजनि रावरे ॥ छहरात होत मनौ मिले यमुनातरंगानि
 साँमरे ॥ जगशीश पै दिननाहतापतु आपको परतापुंजू ॥ शिवपूजि दान
 विधान संयुत आनिये उरजापुजू ॥ ९५ ॥ सुनि बैन वंदिनके तहीं नल
 भूमिनायक चाइसों ॥ जेहि ओर प्राणप्रिया गई तेहि ओर हेरत भाइसों
 गिरिराज जापति जापको हित मानि आनंदसों भरयो ॥ निजराज भौन
 गयोचहै पर्यंकते उठिकै स्वस्थो ॥ ९६ ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मंडित भूमंडला
 खंडल श्रीखाँसाहब अलीअकबर खाँ प्रोत्साहित
 गुमानमिश्र विरचिते काव्यकलानिधौ नल
 विलासो नाम एकविंशतितमःसर्गः ॥ २१ ॥

दोहा-सर्ग बीस द्वैमें कथा, वर्णन वासर कृत्य ॥ पूजन
हरि हर देवको, वंदन परिजन भ्रत्य ॥ १ ॥ सोरठा ॥ उदयत नल
महि इंद, खंड सातयें सोंधपै ॥ जोरत करनि नरिंद, साँचे कर दाता
भये ॥ २ ॥ सवैया ॥ चीनके चीर नबीननिसों गिलमै गुलजार हजार
बिछाई ॥ पैनलके तरवातलके समद्वै न सकै कुलि कोमल ताई ॥ झुंडजुरे
सिगरे नरनायक मंडिप नाम करें बहुधाई ॥ शीश अभूषण माल मिली
सुगली जनु कमल कलीनसों छाई ॥ ३ ॥ मनहरण ॥ निज निज
देशनिके रतन विशेष वेश करत नरेश भेंट दूरि शिरनाइकै ॥ बोलत पुकार
चोबदार हेमछरीवार वारन तुरंग रथराजत बनाइकै ॥ काहू ओर सनै
कहूँ विहंसत नयन काहूँ सों कहत वैन मृदुल सुहाइकै ॥ दौरि दौरि
सजत अशीश तसलीम तेई धन्यद्वै धराभे पावैं भोगभाग भाइकै ॥ ४ ॥
दोहा ॥ निज निज लायक थान थित, नृप चितवत तेहि ओर ॥ पूजन
शारद चंद ज्यों, ऊरध नयन चकोर ॥ ५ ॥ करि करि लोचन भौंहकी
सैनभेंट धरणीश ॥ लेत एकसों औरको, वहै करत बकसीस ॥ ६ ॥
चौपाई ॥ तिनसों भूप कुशल हंसि बृक्षी ॥ देश रीति पुनि प्रेम अरुक्षी ॥
रागरंग रण चरचाखरी ॥ भैभीपाति तिनसों ते करी ॥ ७ ॥ ते अति
मुदित भये नरनाह ॥ थिति आपनी गनी जगमाह ॥ वार वार चर्णन
शिरधारैं ॥ करैं अरज निज भवन सिधारैं ॥ ८ ॥ नल तिनके पूजे अ-
भिलाष ॥ झलकति दई खिलति सतलाख ॥ हरषि गये ते भूप अवास ॥
नृप मज्जनको सज्यो विलास ॥ ९ ॥ तोमर ॥ चहुँ ओरते नवनारि ॥
घट पूरि हाटक वारि ॥ छुटि फैलि जात सुबास ॥ अलिपुंज गुंज वि-
लास ॥ १० ॥ मृग भेद केशरि सानि ॥ उवटै नृपै मृदुपानि ॥
दाधि और तेल सुगंध ॥ शिरमीजि केश निबंध ॥ ११ ॥ सोरठा ॥
भूभृत घन तप कीन्ह, ताहि न्हावत सरसशुचि ॥ जलधरघट
भरिलीन्ह, तीरथ जल लहरी विमल ॥ १२ ॥ प्रह्लादिका ॥ रचिस्वर्ण
रतन चौकी अनूप ॥ ता ऊपर राजत न्हात भूप ॥ बहु पढ़त गंग वि-
नती बनाइ ॥ कर जोरि चित्त थिर माथनाइ ॥ १३ ॥ सवैया ॥ हे
सुरबाहिनि दाहिनि दीननितो पगलीन जो दास कहावै ॥ द्वारदेवे तिहिके

शिषके सब बासव तौ नित जान न पावै ॥ जात पुरी पुरुषोत्तमकी विल
 सात तहाँ सुकहा कहि आवै ॥ गूँदै शची सियके हरवा तरवा यमलोक-
 नको दिखरावै ॥ १४ कवित्त ॥ औरको कपूत कूर कायर कलंक युत
 जाकी प्रीति रीति पर दोष चरचाकीसों ॥ कालदंड दानकी गुमान
 जू बुलायो ताहि ताके किंकरनि आनि गह्यो शिरताकीसों ॥ गंगकी तर-
 गसों कहूँते कोऊ अंग मिल्यो देव अंगननिसों उठायोले चलाकीसों ॥
 सुरपुर जाइ वैद्यो बोलै सतराइ देखौ पाँयन दबावै दुलहिनि मघवा
 कीसों ॥ १५ ॥ प्रह्लादिका ॥ कर नरम तऊ विधि करम जानि ॥ तब
 हरित पवित्रा धरत पानि ॥ जनु प्रिया विरह तन अनल झार ॥ तेहिकी
 अपार ये धूम धार ॥ १६ ॥ हरिगीत ॥ आचमनीयको जल गंगको
 करसों लयो ॥ तहँ चुलक निर्मलमें झलकनभ लोक प्रति बिंबित भयो ॥
 जनु सकल भूतलके पदारथ दान में नल हैं दयो ॥ १७ ॥ सोरठा ॥
 दमयंतिहि अलगाइ, निर्जपति पायो भूमि तिय ॥ अंग अंग लपिटाइ, गई
 भस्म मिस यज्ञकी ॥ १८ ॥ साधत प्राणायाम, कटिलो ठाढे सलिलमें ॥ मनौ
 वरुणके धाम, कमल मुँदे द्वै शशि खुल्यो ॥ १९ ॥ अभ्र विशद द्युति तार
 धोती पहिरी मारछवि ॥ दश दिशि बसन उदार, हरकी करि जनु ईर-
 षा ॥ २० ॥ संयुत ॥ दमयंतिके ढिगको चलै ॥ चितकी लही गति
 चंचलै ॥ उर ऊतरी परिधानसों ॥ नृप ताहि रोकत ज्ञानसों ॥ २१ ॥
 घट बारिके कुच पीन हैं ॥ शिर दर्भ केशनबीन हैं ॥ सब अंग शीत
 करै तिया ॥ नलकी भजै जलकी सिथा ॥ २२ ॥ उपेन्द्रवज्र ॥
 करे उपस्थान दिनेशजूके ॥ अखंड धारा जल अर्धहूके ॥ जपै महा-
 मंत्रन देव गाये ॥ सरोज श्री खंड मिले चढ़ाये ॥ २३ ॥ दोहा ॥
 फटिक माल करमें लसै, झल झलात छबि जास ॥ बीज बरन वश
 भगति रस, जनु कर करत निवास ॥ २४ ॥ लीला ॥ पाणि पंकज
 पौरमें जब देव तर्पण युक्ति ॥ पितर तर्पण तिल मिलति तिल हाथमें
 पुनरुक्ति ॥ धाममें निज त्यों लसै प्रभु अंभुपति सुखधाम ॥ क्षीर
 स्नामरमें रमै जनु देव वासव नाम ॥ २५ ॥ दोहा ॥ न्हाइ बिमल
 धोती पहिरि, छहरि चाँदनी चहु ॥ पूजा मंदिरमें गयो, आसन लयो

अमंदु ॥ २६ ॥ द्वितीय झूलना ॥ दंडी व्रती ऋषिराज राजत
 चारु आसन साजि ॥ जहँ दिव्य धूप सुगंध बंधित भौर गुंजत राजि ॥
 चहुँ ओर फूलनसों भरीं फल झूमि वंदनवारि ॥ नाशि अंधकार गयो
 हजारन दीप राखत वारि ॥ २७ ॥ मुकुतानेके बिछुरे मनौ निज देह
 पावक दाहि ॥ धरि घोरि केसरिसों सिंसी भरि रूप रूप सराहि ॥
 मणि साँवरे चकरेक चोरनि माँह चन्दनपंक ॥ जनु राहुके मुखमें परचो
 धुरिकैं ससंक ससंक ॥ २८ ॥ कस्तूरिका चयसों भरे मय रजत सुंदर
 थार ॥ क्षिति इंदु मंडल अवतरे उर कृष्ण सार अपार ॥ नव मालती
 कुलमाल पर्वत फूल राजत ढेर ॥ गिरि देव देव निवासको तेहि तूल है
 बहु फेर ॥ २९ ॥ चौपाई ॥ भाँति भाँति नैवेद्य बनाये ॥ उज्ज्वल
 शुचि चीरनसों छाये ॥ भरी भूमि तिल परै न हेरि ॥ उत्तम कामिनि
 लाज घनेरि ॥ ३० ॥ प्रथम भूमिपति पूजत भानु ॥ जाको वेद करै गुण
 गानु ॥ भक्ति भाव देखत संपन्न ॥ सावत्तर रवि भये प्रसन्न ॥ ३१ ॥ माल करी
 रचि चंदनलाल ॥ तासों जपत भानु मनुजाल ॥ मानौ चहत अधिक अरुणाई ॥
 करै तासुकर सेवक ताई ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ कनक कुसुमसों पूजि
 शिव, सोहत अति अभिराम ॥ सायक दयो चढ़ाई जनु, मानि हारि
 हिय काम ॥ ३३ ॥ मनहंस ॥ नव नागकेसरि फूल देव चढ़ाई कै ॥
 भव भाल होत कपाल भूषण भाइकै ॥ पुनि नील नीलज कंठ माल
 मिलाइकै ॥ तब है गये शिवनील कंठ बनाइकै ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ कलु-
 षहरण करिहैं कृपा, मर्दन मयन अनूप ॥ शुभ सौरभ आगे रची, भूप-
 काम सरधूप ॥ ३५ ॥ सवैया ॥ दमयंति तियै बिछुरो न परै न पियेक-
 लनेक परै छतियामै ॥ शिव शीश कलानिधिसों सकुचै निहचै न रहै गति
 औ मति यामै ॥ मिसुकै उर ध्यान धरो हरको धरको हियरा फरको मति यामै ॥
 तब मूँदे रह्यो अँखिया पुहुमीपति पूरि रह्यो बतिया बतियामै ॥ ३६ ॥
 सोरठा ॥ परचो दंडवत पाँइ, मनौ मदन आयो शरण ॥ दीने बाण
 चढ़ाई, कमल कोरि शिव चरणपै ॥ ३७ ॥ प्रह्वटिका ॥ नृप जपन
 लग्यो शत रुद्रजाप ॥ जेहि हीन होत जगतीनिताप ॥ कर लसत अच्छ
 अवली विशाल ॥ नव पल्लवमे जनु भौर माल ॥ ३८ ॥ तारक ॥ पुरुषो-

तमको पुनि पूजन कीन्हो ॥ पढ़ि पूरुष सूक्त संयम लीन्हो ॥ जपि
 द्वादश अक्षर मंत्र नवीनो ॥ हरि द्वादशमूरतिको चित चीनो ॥ ३९ ॥
 लक्ष्मीधर ॥ मल्लिका फूलकी दीह माला गुदी ॥ आसन स्थानमें
 छापि दीन्हो जुदी ॥ भक्तिके भावसों विष्णु जूसों रस्यो ॥ नाग राजा मनौ
 आइ ह्यौई वस्यो ॥ ४० ॥ प्रमाणिका ॥ सरोज निल जोरिकै ॥ हरा गरे
 निहोरिकै ॥ चढ़ाइ भूप जो दयो ॥ सिया कटाक्ष सो भयो ॥ ४१ ॥ गीत ॥ सब
 दिव्य शुद्ध सुगंध लेपित बारि दीप कपूरसों ॥ नव स्वर्ण केतक पुंडरीक
 चढ़ाइ देत अदूरसों ॥ करि अन्न पक्क पियूष पोषित स्वाद देत निवेद
 है ॥ बहु भाँति धूपति धूपसों जेहि देखि नाशत खेद है ॥ ४२ ॥
 मौक्तिकदाम ॥ अमोल मणीन रचे बहु दाम ॥ सबै अंग अंग किये
 अभिराम ॥ लसैं हरिजू थिर आसनश्वेत ॥ मनौ पयसागर माहँ
 निकेत ॥ ४३ ॥ करचो परणाम गयो लंचिमाथ ॥ गही पुष्पाँजलि श्री
 नृप हाथ ॥ धरी शिरपै सुख शोभ उमंग ॥ महेश्वर मौलि विराजत
 गंग ॥ ४४ ॥ मनमोहन ॥ जलनिधिसुता हियमें बसति ॥ हरिकी
 सुरति तेहिमें लसति ॥ तेहि उच्च थल सरस्वति रहति ॥ अनुराग कंठहिमें
 बहति ॥ ४५ ॥ तोटक ॥ तेहिते घन पूजन योग नही ॥ समुझाइ
 दियो बुध लोगनही ॥ मुकुतावलि शीश बदावलिकै ॥ हरिकी विनती
 विनयी चलिकै ॥ ४६ ॥ नल ॥ लीला ॥ रावरी महिमा न आवति
 वैन औ मनमाहि ॥ जो कछू कहिनासुटेरतु योग जानतु नाहि ॥ हौं
 करौं परलाप या परि पाँय पंकज नयन ॥ सो क्षमा करिये कृपानिधि
 जानिये जड़ वैन ॥ ४७ ॥ सोरठा ॥ हौं जड़ जीव अज्ञान, चहतु
 बढ़ाई रावरी ॥ जैसे भासत भान, तम ताको प्रगटन चहै ॥ ४८ ॥
 चर्चरी ॥ जो न आवत वैनमें मनमें न लागत ध्यानसों ॥ तौ हूँ
 सुख लाभ होत विचारि देखत ज्ञानसों ॥ मेघ ज्यों नियरात है नहिं कोटि
 घातक टेरसों ॥ देखि जात जुड़ात लोचन प्यास नास सबेरसों ॥ ४९ ॥
 सवैया ॥ मीन स्वरूप धरचो छलको छलको लगि सागर पूछतरारे ॥
 क्षीरतरंगनि सों मिलिकै सुरगंग भई अवदात निहारे ॥
 मंडित कै क्षिति मंडलको निज पीठि अखंड धरी

निरधारे ॥ मंदरके किन चक्र विराजत साजत कच्छपरूप विचारे ॥
 ॥ ५० ॥ मनहरण ॥ चारौ खुर खूँदि खूँदि खनिके अवनि तल
 जलधि बनाये चारि अतुल अपार हैं ॥ एक डाढ़ आई दै उठाई
 महिकौल रूप शशिकी कलापे शशि समता विचार है ॥ दानव गहन
 सिंह अरध मनुजतनु विकट कुटिल सटा निपट करार है ॥ अंकुश नखन
 ऐंचि हरिणकशिपु अने डोरि ऐसि छोरि तोरि लीन्ही निरधार है ॥
 ५१ ॥ सवैया ॥ आवतही पुरके धुरते सुमिले बहु बालक घेरि लि-
 यो ॥ बावन जानि महा मन कौतुक चेरिन भीतर टेरि लयो ॥ बाले
 राज वधू हुलसी कन दानको चून जबै कर फेरि लयो ॥ पावतही पगती
 निके भूमिहि तीनहु लोकहि नापि लियो ॥ ५२ ॥ जिन
 बाहनसों उपजे जग क्षत्रिय लोकनकी रचना जब कीनी ॥ तिनहीं सबते
 तिन तूल हने निर्मूल उखारि सबै क्षिति छीनी ॥ पंसुल भामिनि भूरि-
 नकी नवखंड करी द्विज देव अधीनी ॥ अर्जुनके भुज दंडनि खंडित की
 राति राम ऋषीश्वर लीनी ॥ ५३ ॥ मनहरण ॥ लीनो अवतार अज
 तनुजते महाराज दुखन तुम्हें न खर दूषणके अरि हौ ॥ ज्ञान हों न
 चहों मोहु याऊ कहै यासों लखों रावण चमू ज्यों सब ओर रहे भरि हौ ॥
 सुयंशकी राशि तीनौ भवन प्रकाशिये निकासि दीनी सीता लोक बाद-
 निसों डरिहौ ॥ विश्रवासों भई शूषनेखाकरी ताहि रूप पितर समान
 ताके काननिकतरिहौ ॥ ५४ ॥ दारिद हरति मेरे वारिदसे बसुदानी
 चारौ भुजदंड मार्तंड तेज चटके ॥ अल्प कलप तरु जरसों उखारचो
 निज ईर्ष्यासों पागे अनुरागे दान रटके ॥ जीतके निधान उपधान
 सियरानी जूके वाणी जूके विमल विहारक निकटके ॥ जय अभिराम तन
 छबि कोटि काम वारों भादौंकरे श्याम घन यादव कपटके ॥ ५५ ॥
 करन सकत रण विफल करन काज अर्जुनरथ साजिं सारथी सुहाये हौ ॥
 पारथ कृतारथकै भारथ जिताये जोर शूर सुत शूरको हराये वेद गाये
 हौ ॥ वाम विहंसत नयन दाहिनो दुखित ऐन ऐसी अद्भुत गति सुमति
 बताये हौ ॥ करत हौ शेष वास जगत अशेष वास दैत्यनको त्रास देत
 देवनको भाये हौ ॥ ५६ ॥ धरत हौ धरणि धर्म हेत धनि धनि धी-

रज धुरंधर सहस्रफन वारे हौ ॥ माधुरी पियत मधु साधुरीति साधितकै
 वाधित करत भव वाधानि उधारे हौ ॥ मूशलसों कुशल सजत तीनौ
 लोकनकी सहल सहल यमुनाके मद गारे हौ ॥ प्रबल प्रचारे दैन्य अबल
 उबारे देत रोहिणीके प्यारे नीके नन्दके दुलारे हौ ॥ ५७ ॥ दोहा ॥
 एक रूपद्वै भेद विन, तीनिकाल थिरचारि ॥ गावत पंच अधीश षट्, हंता
 सात सवारि ॥ ५८ ॥ छप्पय ॥ सुयशरूप तुम विष्णु जन्म जानतसों लीन्हो ॥
 विष्णु जसा द्विजदेव जगतमें गौरव दीन्हो ॥ सकल मल्लेक्षण काल
 हेतु करवाल भयंकर ॥ रुधिर कुंडगहि मुंड मुंड हरषे हिय शंकर ॥ इमि
 दुःख दशा हरि धरिणीकी हरिदश विधि अवतार धरि ॥ कलिकी सुरूप
 सुर भूप प्रभु, चित मलकी गति पार करि ॥ ५९ ॥ स्वागता ॥ राम
 भानुसुतसों हित मान्यो ॥ इंद्र पूत तुरतै हति आन्यो ॥ कृष्ण इन्द्र
 सुतके रखवारे ॥ भान सुवनके खंडनवारे ॥ ६० ॥ ज्यों त्रिविक्रम
 भये तुम रुरे ॥ तीनि लोक पद पंकज पूरे ॥ तीनि वार ताक्यो चित
 चीन्हो ॥ जाम्बवंत परदक्षिण कीन्हो ॥ ६१ ॥ छप्पय ॥ लसत एक
 कर शंख शंख निधिको नित दायक ॥ जलज सहस्र दल कहत बास
 जल जाके लायक ॥ चक्र सराहत शक्र वक्र शिशुपाल विहंडन ॥
 गदा अगद संसार दरत गद दैयत खंडन ॥ उर दिपत ललित वन
 माल छवि मनौ बालित रुक्मिणि भई ॥ नव नील जलदतनु साँवरी
 सदा रहौ हिय ओनई ॥ ६२ ॥ बसत चरणतल गंग जलज कर हिय
 चिंतामनि ॥ सागर सोवत तुम्हें मिले मानौ परिचय गनि ॥ धर्म बीज
 कर सलिल सरित लक्ष्मी उर राजै ॥ कामदेव फल फल्यो देत तुम
 मुक्ति समाजै ॥ पुनि तीनि लोक तुव उदरमें लखत मारकंडेयमुनि ॥
 निजरूप और एकु हेरिके अति अद्भुत गति चित्त चुनि ॥ ६३ ॥
 सोरठा ॥ नाम रावरो लेत, लीलाहूमे नरकहू ॥ नरक भीति नहिं
 देत, वे इनके भवसों भजै ॥ ६४ ॥ नाम तिहारो राम, परम पतित
 पावन विमल ॥ वहे एक अभिराम, लयो तीनि अवतार धरि ॥ ६५ ॥
 दोहा ॥ भानु नयनसों तम हरौ, देखि दासकी प्रीति ॥ विधु लोचनसों
 लीजिये, तीनि ताप तन जीति ॥ ६६ ॥ हरिगीत ॥ मम चित्त है

अति अल्प तो गुणराशि क्यों गहिकै सकै ॥ जिमि कनक मेरुहि पाइ
निर्धन पोट हाटककी तकै ॥ नहिं करत हौ विधि वेद कछु सब भाँति
खेदन सोभसों ॥ मन चहत हौ करि कृपा तिहारी निजजहै अब
पापसों ॥ ६७ ॥ सोरठा ॥ प्रगट भये हरि आय, भक्ति भाव पूजा
लई ॥ दै अशीष सुखपाइ, तुरत गये निजधामको ॥ ६८ ॥ दोहा ॥
देव पितरके काजसजि, वंदि व्रती ऋषिराज ॥ द्विजन अनेकन दान
दै, चलयो निकेत समाज ॥ ६९ ॥ सोजन परिजन साथलै
भान ओज आकार ॥ भोजन मंदिरमें गयो, योजनको विस्तार ॥ ७० ॥
मनहरण ॥ एक ओर किन्नर भरत मतहित गान पंचम भरत तान
करत तरेपिकै ॥ ठौर ठौर जगर मगर मणि दीपनिसों अगर सुवास ॥ हे
अगर धूप पेषिकै ॥ केसरि कपूर चूर चन्दन मिलाय चारु चोवालै चतुर
चौका चाँदनीसों लेपिकै ॥ भोजन मलूल भारे भाजन जराऊ तहाँ राजत
थरा हैं छपाकर छबि छेपिकै ॥ ७१ ॥ सवैया ॥ कोऊ सलोने कोऊ
मधुरे तुरसाइनके सुरसाइनराचे ॥ लेत सुवास छकें सुर किन्नर रंगभरे
रसना बसनाचे ॥ कंचन थारनसैं परसे सरसे रुचिसों पकवान अजाचे ॥
शीतल नीर समेवत जेवत भूप अमीर अमीरससाँचे ॥ ७२ ॥ स्वागता ॥
भूरि भूप मिलि भोजन कीन्हे ॥ पाणि धोइ शुचि पानन दीन्हे ॥ सेज
भौन आयो रंग भीनो ॥ रास रंगको कौतुक कीन्हे ॥ ७३ ॥ वसंत
तिलक ॥ न्हाइ सु पूजि सुर भीमसुता सयानी ॥ पाछेहि भोजन किये
नल राज रानी ॥ आइ समीप पतिके अति लाजकीनी ॥ गामैं नचैं अ-
मर अप्सरिया नवीनी ॥ ७४ ॥ चंचु प्रभादलित बिंब फलानुरागी ॥
पत्रामई हरित पच्छन ज्योति जागी ॥ लीन्हे सरोज शुक पंजर एक आली ॥
आई तहाँ ललित चालि मनौ मराली ॥ ७५ ॥ सोरठा ॥ साँवल
तनपर भाइ, कुहूँ शब्द साँचे कहत ॥ पिक करकोलसुहाइ, और अली आई
चली ॥ ७६ ॥ प्रह्वटिका ॥ तब निरत कला संगीत चार ॥ गंधर्वतिया उधटैं
अपार ॥ सुर मधुर वीन ध्वनि बजत जात ॥ दमयंति गानसों जनु लजात
॥ ७७ ॥ सोरठा ॥ दमयंतीके गान, मधुर मनोहर जे सुनत ॥ करि परिवाद
प्रमान, वीन भई परिवादिनी ॥ ७८ ॥ दोधक ॥ दम्पति कीरति की-

रति हेरी ॥ शक्र शची समता निरवेरी ॥ कीरु पग्यो म्रतुपे मणि पाग्यो
 भूप सराहत बोलन लाग्यो ॥ ७९ ॥ कीर ॥ त्रिभंगी ॥ तुम
 म्या तिय लायक गुण निधि नायक मन भायक मिलि रजनि जगे चित-
 प्रेमपगे ॥ भव मैन सुहायो तुम द्वै आयो रतिपति पायो भागलगे अ-
 नुराग रंगे ॥ सुरसरि तुअरानी स्वच्छ सयानी पावन मानी सरस लसै
 तुअ अंक बसै ॥ मुख शशि हुलसावत तुम सुखपावत हरष मंगावत
 सुमतजसै दशदिशि निकसै ॥ ८० ॥ प्रहृष्टिका ॥ दमयंति कपट कंचुकि
 तिहारि ॥ रतिराज राजधानी विचारि ॥ तुव नयन मीन ध्वजद्वै सुधा-
 रि ॥ तहँ भौहँ बाँधी बँदनवारि ॥ ८१ ॥ गीत ॥ रावरी पर प्रीति
 कळे लखि कौलरागनिसों रंग्यो ॥ मिलि वारुणी दिशि बामसों सबैरनि
 चाहत है जग्यो ॥ सखियां सैबै टरि जाहिं बाहेर चोज जाहिर चातुरी ॥
 नख दंतसों रण रंग जीतत मैनके डर आतुरी ॥ ८२ ॥ यहि भाँतिके-
 लि बिलासको सकुचोजसों तिरिया पढी ॥ मुसक्याइ नैननही अली इक एक
 द्वै बाहिर कटी ॥ पिक कूँकि कूँकि तुहीं तुहीं करि आपु उक्ति विलासकै ॥
 नृप ओर औ शुक ओर हेरति कमल लोचन लालकै ॥ ८३ ॥ चर्चरी ॥
 बावली इककेलि सौंध समीप दीपतिसों रची ॥ रत्न हाटक बेलि बूट
 निसों सिठी सबही सची ॥ नये गये न अकास हेरत त्रास बासरके मुदे ॥
 कोक शोक समै भये बरजोर जोरनसों जुदे ॥ ८४ ॥ दोहा ॥ बिछुरिरहत
 नहि सहत सकि, तकि तिनकी यह रीति ॥ रानी कुम्हिलानी
 बदन, पियसों कह्यो सप्रीति ॥ ८५ ॥ रानीमोदक ॥ पंकजलोचनि
 आव यहाँ लग ॥ देखहु ये अबहीं बिछुरे खग ॥ भेदत हैं दुखसों जन
 मोदर ॥ कौन इन्हें लखि होतु न आतुर ॥ ८६ ॥ दोहा ॥ काल
 सहावै जो दशा, सोई सहै निदान ॥ युगल विहंगम जगतके, उदाहरण
 अनुमान ॥ ८७ ॥ कवित्त ॥ स्नानके समान भानु मंडल बनायो कर
 चिनगी झरत सबहींसो भयो लालु है ॥ ऐंचत अरुणदाम भामरि परत
 जात तेजकी तरल दंड मंडित बिलासु है ॥ भेदन बहुत रथ चरण
 युगल खग करत अविधि विधि कुपित करालु है ॥ विरह कृशानु धूम
 मलिन महा सुधरचो बाढ़ि धरिबेको साँझ काल करबालु है ॥ ८८ ॥ दोहा ॥

शशिवदनी मुख सों कढ़े, आसव वचन पियूष ॥ छेलु पियतु श्रवणनि
छक्यो, रसकी रही न भूष ॥ ८९ ॥ राजा ॥ सोरठा ॥ यह इनकी
सतिभाइ, तैं जैसी देखी दशा ॥ क्यों न सुमुखि बिलखाइ ॥ करुणाकी
तस्वीर तू ॥ ९० ॥ सवैया ॥ कै बिछुरे रमणी मनभावन चावनसों
चित चाहति जीत्यो ॥ चापलता भ्रुकुटी कुटिलै करि रावरी ये सहसों
बलचीत्यो ॥ नावककी नलिका सम नासिका श्वासनिको शुभ सोर-
भसीत्यो ॥ पौनके अच्छय बाणनिसों रणरंग अनंगरहै नहिरीत्यो ॥ ९१ ॥
दोहा ॥ तेरे सुवरणसों रह्यो, नहिं सुवरणको नाम ॥ रूपराज राजत
भयो, लाजत तनु अभिराम ॥ ९२ ॥ छप्पय ॥ मधुराईकी लता खाँड़के
खेत लगावै ॥ वर्षै घन पीयूष अल्प पल्लव सरसावै ॥ दाख घोरिकै दूध सीषि
कै अधिक बढ़ावै ॥ चंदकलाके फूल फूलि बहुतै मन भावै ॥ तहँ फलै
कहँ जब परम फल, मुक्ति मुक्ति जासों कहत ॥ तब अधर मधुर ये रावरे
छबि वारी उपमालहत ॥ ९३ ॥ सवैया ॥ भारती आइ बसी मुखमें
अरबिंद मई रसना तव कीनी ॥ ताहीकी बीन बजावनकी उपजी यह
रावरी वाणि प्रवीनी ॥ ताहीको रंग विहार कि बैठक ओंठनकी रुचि है
रँग भीनी ॥ ताहियकी मुक्तावलि है बलि तो रसना वलिमें उतिदीनी ॥
॥ ९४ ॥ मनहरण ॥ मन्मथ तीरथ तिहारी सुरसरि वाणि ताहीको
पुलिन खाँड़ मिसिरी बखानीहै ॥ सलिल पियूष पूर पूरण रहत चोज
चातुरी छिपत जलचर सरसानीहै ॥ सोहत कनारे रतनारे रद छद दोऊ
भौरनिसों कमल सुवासलैकै सानी है ॥ याहीते समूह सजि सेवत सकल
द्विज जपकी परममंत्र तपकी निशानी है ॥ ९५ ॥ ऊरध अधर जपा
पुहुपकी माल ताहि करत शरासन असमसर रावरो ॥ साँवल चिबुक
बिंदु गुठोकै पनचकैकै रदन शरण आयो शरण उतावरो ॥ वचन तिहारो
साँचे निहचै धनुष धरै वेद चातुरीनसाजि सीखै चित चावरो ॥ कोकिल
मराळ मोर सारिका कपोत भौर विदित बिघार थीव उदित उछावरो ॥
॥ ९६ ॥ छप्पय ॥ सो गँवारु सो चतुर पाति नहि बैठन पावै ॥ काम
बाणकी धार नेक तेहि ओर न धावै ॥ अधर कहै मधुनाहि कहै तनु स्वरनु
न मानै ॥ बदनकहै नहिं इंदु नाम कहि सुधा न जानै ॥ गजगौनिकोक

युग सौकसौं मति उदास मनको करै ॥ हों जातु जोहि अंजलि
विनै राखौं रोंकि दिवाकरै ॥ ८७ ॥ दोहा ॥ सरसीरुह लोचनि तुहूँ
सखियनके ढिगजाहि ॥ हों बाहरको जातु हों, संध्या विधि
निरबाहि ॥ ९८ ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मण्डित भूमंडला
खंडल श्रीखाँसाहब अलीअकबरखाँ प्रोत्साहितगुमान
मिश्र विरचिते काव्यकलानिधौ वासर कृत्य
वर्णनं नाम द्वाविंशतितमस्सर्गः ॥ २२ ॥ •

• दोहा—कथा सर्ग तेईस में, शशिको उदै बखान ॥ वर्णन भूपति
तिय करति, परिपूरण परमान ॥ १ ॥ सोरठा ॥ नृप संध्या विधि
बंदि, राग वारुणी अधर रुचि ॥ मंदिर गयो अनंदि, खंड साँतयें सौंध
पर ॥ २ ॥ चौपाई ॥ सेज चाँदनी सी छबिछाई ॥ बैठि तहाँ नल
प्रिया बोलाई ॥ बैठारी तापै सनमानी ॥ संध्या दई दिशेष बखानी
॥ ३ ॥ राजा ॥ लीला ॥ नयनसों करिये कृतारथ पासिकी दिशि-
रानि ॥ धोइ यावक रंगसों सब अंग कुंकुमसानि ॥ तुंगशैल अकासते
रवि शृंगसों दुरकात ॥ चूर गौरिक साँझहै परिपूर धूर उडात ॥ ४ ॥
द्रूतविलंबित ॥ चरम भूधर भीलनिसों पल्यो ॥ अरुण चूड दिवा-
करहै भल्यो ॥ शिर उठाइ करै रवसाँझको ॥ अरुण सजत पश्चिम
माझको ॥ ५ ॥ भुजंगप्रयात ॥ प्रतिहारिनीसी करै साँझ बासा ॥
गहे शूर शोभा मई हाथ आसा ॥ निकारे दिनै देति है रोष कीन्हे ॥ प्रवेसै
भली भाँतिसों राति चीन्हे ॥ ६ ॥ मनहरण ॥ महानट नचत निरखिकै
सभानु राग साँझ कुनटीसी पार्वती रूप चाहिकै ॥ लसत अकाशतन
विमल नखत गण रंग भरि अंगहार सजत सराहिकै ॥ हनत
किरात कालु कलित कराल वेष दिवस दुरद पदुमक अवगा
हिकै ॥ ताहीकी रुधिर धार करत पसारा साँझ तारागण
रहे कुंभ मुक्तानिवाहिकै ॥ ७ ॥ सोरठा ॥ रहे साँझ सों फूल
दशहू दिशिनि बिभाग सब ॥ मानौ लाल दुकूल, गहे व्याहको दिग

बसन ॥ ८ ॥ सवैया ॥ साँझ सराफ अकास भयो रवि हाटकको
 गुटिका छबि छायो ॥ पश्चिम शैल कसौटी करचो तेहिमाह भली बिधिसों
 कसिलायो ॥ बंचनको निहचै करि ताकहँ त्रोलन काज अमोल
 उठायो ॥ तैहीं दये छिटकाइ बटा जनु तारेनको गण देत दिखायो १
 सोरठा ॥ पाके दाढ़िम रवि बिब, हरी साँझ याकी तुचा ॥ काल
 चाबि बिधि निंब, उगिलत तारा अस्थिगण ॥ १० ॥ दोहा ॥
 साँझ समय तंडव करत चंडीपति गतिलोल ॥ नभ अखंड मंडित लसै
 फटिक चटानि अमोल ॥ ११ ॥ पद्धटिका ॥ निज वर्णनके
 सुनतै लजाइ ॥ जनु साँझ गई तुरतै बराइ ॥ नभ नखत दंततमरह्यो
 छाइ ॥ तब कह्यो प्रियासों निषधराइ ॥ १२ ॥ नल ॥ पद्धटि-
 का ॥ जब राम बाण संधान कीन ॥ उछरचो उदन्व भयसों अधीन ॥
 तब फैलि शंख मुक्ता अपार ॥ सौ नाकलोक में चमत्कार ॥ १३ ॥
 दोहा ॥ सुरसरि कूल कुलाय कुल, कोक बिरह अकुलाइ ॥ आंसुनकी
 धारातजी, नभतारा समुदाइ ॥ १४ ॥ मंदाकिनके जंतु जल, झलकत
 नभतलपाइ ॥ झख कुलीर गोधा मकर, मिथुन मोद सरसाइ ॥ १५ ॥
 रानी ॥ कबित्त ॥ फूल्यो अकाश दिखावति है यह योगिनिसी जिय
 यामिनिजागी ॥ मार मेरेहु जिवावति है अरु कमलनके दगबंधन
 पागी ॥ मोहन अंजनि दै कुहकै कुहकै पिक मंत्रनिसों अनुरा-
 गी ॥ शंखन छत्रनि छत्र धरे पल नील सरोरुह नथननलागी
 ॥ १६ ॥ राजा ॥ सोरठा ॥ तम मिससों इत चेतु, शची सौ-
 ति दिशिते बड़ी ॥ टूटत वास रसेतु, ऐरावतकी मदनकी ॥ १७ ॥
 दोहा ॥ राम सेतु रोमावली, दिशिपति वाहन रूप ॥ धावत तम
 देखत भजे, रविके वाजि अनूप ॥ १८ ॥ चन्द्रमाला ॥ कर सहस्र
 सौलै उठाइ रवि ऊरध नभकरि राख्यो ॥ याहियते नियराइ गयो तम
 रवि अथवत मन माख्यो ॥ उलट्यो गगन कराहु करचो विधि इन
 दीपक अध बारचो ॥ अंधकार छलसों क्षिति ऊपर फैल्यो कज्जल
 भारचो ॥ १९ ॥ रानी ॥ मनमोहन छंद ॥ मृग मेद तम तनमें
 दिपति ॥ टुरि नील अंबरमें छिपति ॥ अभिसारिका गतिसों चलति ॥

यह रैनि त्यों तुमको छलति ॥ २० ॥ चौपाई ॥ जग लोचन गो
 नाम कहा मै ॥ सूर किरणि पुनि गोप दुपामै ॥ भिछे लई हरिकै रवि
 साँझ ॥ अंधकार छायो जग माँझ ॥ २१ ॥ राजा ॥ दोहा ॥
 तमकै तत्त्व विचारमें, वैशिष्टिक मत सार ॥ तेहि उलूक दर्शन कहत,
 लहत साँचु अधिकार ॥ २२ ॥ चलत चोर चाकर चतुर, बोलत विरद
 उलूक ॥ आवत लखि तमराजको, भाजि भये द्विज मूक ॥ २३ ॥
 वासर दोष विचारको, पठई तम नरनाथ ॥ दूतीसी लागी फिरै, छायां
 सबके साथ ॥ २४ ॥ आभीर ॥ भूपतिमां गुण गान ॥ रोष करयो सित
 भान ॥ आइ उदय तहँ कीन ॥ त्यों नल वर्णन लीन ॥ २५ ॥ नल ॥
 सवैया ॥ मेरु शिखाणि कनातनिसों छिपि चन्द्रनयो छलकै छवि
 छायो ॥ चंचु चकोरनिके चुलकानि भैरि निज रूप सुधानि समायो ॥
 नील निचोल उतारि चली सजि भाँति भली तियकै मन भायो ॥
 चाँदनिसे तन चीर अभूषण हीरानि चित्रपटी रल गायो ॥
 ॥ २६ ॥ चर्चरी ॥ रावरे मुख सामुहें शशि आरसी
 परमान है ॥ नीलकंज विशाल लोचन संगदै गुणवान है ॥ आपने
 लघुभाइ वासव वाहनै मिलिकै रह्यो ॥ शीश पूरण पूरि सिंदुर रूप सिंधु-
 रको गह्यो ॥ २७ ॥ सोरठा ॥ मंदी किरणि सब और, विधि साँचो वि-
 धना कह्यो ॥ ताइरूप अति गौर, भरि भरि काढ़त बदन शुभ ॥ २८ ॥
 राजा ॥ तोमर ॥ सुरराजकी द्विशिरानि ॥ तनुलाल अंबर तानि ॥
 मुखचंद चारु उदोत ॥ जन सज्ज वास कहोत ॥ २९ ॥ राजा ॥
 हरिगीत ॥ अभिराम सीतै लखत लाजत लखति हिय मंति बंकसी ॥
 तब कान नाक विहीन लक्ष्मण कीन इयाध ससंकसों ॥ शुपनखा मुखकी
 लही सुखमा शशी यह अव जानिये ॥ सब श्रवत रुधिरसो लाल अंबर
 बलित गति मनु मानिये ॥ ३० ॥ रानी ॥ सरसी ॥ चन्दरजतको
 हेम कूटकै साँझ छली छलकीन ॥ दयो रैनिके कर बदली करि आपुन
 दिनमणि लीन ॥ वासव सुत चकई गहि फेंकी टूटि अरुण छबिडोरि ॥
 गिरत जात मुखसों वह चंचल छुटत छपाकर छोरि ॥ ३१ ॥ राजा ॥
 सालूरा ॥ जे अछिर नखतनि लिखत तिभिरतति सुयश सरस नि-

सि कलम धरे ॥ कैव्यीम असित सिल मसित कुसिक गन लसित सिलि
 पिवर समय परे ॥ तेलोपि जरद रँग विबुध सिसिर कर पढ़त असम
 सर मत-पसरे ॥ दैमेटि रमनि मन पिय जन दिसिरिस भुक्ति मुक्ति करि
 युगति तरे ॥ ३२ ॥ रानी ॥ सवैया ॥ पूर पयोधि बढ़ावनको श-
 शि लै अपनी मणिसों जलमेलै ॥ कोकनकी वनिता विलपै दृग आँसुनके
 परवाह सकेलै ॥ रैनि कलिंदसुता लहरी तम सूखतही छहरी
 छबि लैलै ॥ ताहीकी रेतनकी सिकता सन देत अनंदनि चांदनि
 फैलै ॥ ३३ ॥ सोरठा ॥ एक कुमुद कुल हाँस, करत साँच सबसों
 तुजगु ॥ दिन ये होत-उदास, इतो न शशि उज्ज्वल करै ॥ ३४ ॥ लीला ॥
 ईश शिश जटानिमें बसिकै शशी तपकीन ॥ एक सो सु उदोत होत न
 नीच मीच अधीन ॥ पान पाइ पियूष जीवत, राहकी शिरमाल ॥ देखिकै
 भव भालपै भयसों बढ़ै न बिसाल ॥ ३५ ॥ तारक ॥ निजकांति
 चकोरनको अँचवाई ॥ अपनी कलिका शिव शिश चढ़ाई ॥ सब देवन
 दिव्य सुधा भुगुताई ॥ शशि-सोच सुरद्रुमको लघु भाई ॥ ३६ ॥
 छप्पय ॥ मृगमद अंकित इंदु गरल गत अंकित शंकर ॥ सुधा धवल
 तनु इंदु भसम युत शंभु भयंकर ॥ नखत अभूषण इंदु अस्ति भूषण शिव
 सोहै ॥ गायो द्विजपति इंदु उग्र पशुपति मनमोहै ॥ निज भाल मल्लि कलिका
 करचो जटा बल्लिमें मिलित शशि ॥ महि लहत कला हरसों रही रहत
 तहीं संसार हँसि ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ काम अस्तिलै अधजरे, इवेत
 श्याम शशिकीन ॥ वहै जानि भूषित करचो, शिरपै शंभु प्रवीन ॥ ३८ ॥
 चौपाई ॥ मृग आमिष रुचिसों शशि तोरै ॥ दौरि सिंहिका सुअनस
 जोरै ॥ साधनको पाछो जे गहैं ॥ निज त्यों दै ताको निरबहैं ॥ ३९ ॥
 राजा ॥ तोमर ॥ सुरकै सुधारस पान ॥ किय चन्दु तुच्छ निदान ॥
 पुरिखानकी परसस्ति ॥ लिय सिंधु शोकि अंगस्ति ॥ ४० ॥ दोधक ॥
 जोन्ह कलानिधिकी पटरानी ॥ सागरकी बढ़ती सनमानी ॥
 मीत चकोरनकी मन भाई ॥ पै कुमुदै हित कौमदि गाई ॥ ४१ ॥
 स्वागता ॥ हानि वृद्धि अपने पितु तलै ॥ क्यों न चंद्र सरसै अनुकूलै ॥
 शीतल आप पिये शशिमें परहीतलकी तब ताप ब्रझानी ॥ ५४ ॥

सोरठा ॥ है आदर शशरूप, दर्शन देत न दरशको ॥ अत्रिनेत्र अनुरूप
 शशि त्रिनेत्र शिरपै चढ़्यो ॥ ४३ ॥ करत सकल सुरभोग, सुधा किर-
 णि मखरूप लखि ॥ वामैं हिंसा योग, यामैं मलिन कलंकु है ॥ ४४ ॥
 मनहंस ॥ रथते छुट्यो मृग प्याससों ललचाइकै ॥ जलहीन अंबरमे
 रह्यो अकुलाइकै ॥ तब दौरिके निशिनाहकै उरमें लग्यो ॥ रस पान
 पोषि पियूष पंकिलमें पग्यो ॥ ४५ ॥ रानी ॥ मोदक ॥ बालक
 चंद न रंक विराजत ॥ होत युवा छतियां छवि छाजत ॥ मानहु भामिनि
 ओषधिको गन ॥ है पठ्यो कहि नेह सँदेशन ॥ ४६ ॥ नाराच ॥
 महेश बाणसों डिरात ऐनतार जानिकै ॥ रह्यो निशीश आसरो महेश
 प्यार मानिकै ॥ संसार है जहाँ तहाँ शशी कहै सब भले ॥ मृगीकहै
 नताहि क्यों पद प्रयोग बावले ॥ ४७ ॥ हरिगीत ॥ पूरि पूर
 पियूषके रस सारसों थकिकै रह्यो ॥ चन्द बिम्ब रसाल फल जिमि काल
 चाखनकी गह्यो ॥ राहके मुख यंत्रमें धरि पैरिकै रसलै लियो ॥ नभ
 छुटत पीन छता भयो जनु देखते मन भसि लियो ॥ ४८ ॥ प्रमाणिका ॥
 शशी सखा अनंगको ॥ नयोगुजानि अंगको ॥ कपूर काम मित्तु है ॥
 जरे बढ़ातु वित्तु है ॥ ४९ ॥ तारक ॥ अथवा यहि भाँति सुहाति
 मित्ताई ॥ शिवके दृगमें तनु मैं जराई ॥ विधुहू हियमावसनेह
 विचारयो ॥ हरिके दृग सूरयमें तनु जारयो ॥ ५० ॥ राजा ॥ मोदक ॥
 चन्द भयो पर पूरुष लोचन ॥ अंबुज जाहि कहैं दुखमोचन ॥
 साँवल अंक मिलिंद मनोहर ॥ है पुतरी सुथरी अति सुन्दर ॥ ५१ ॥
 सोरठा ॥ विधु औ गरुड़ उदार, द्विजपति दोऊ पक्षधर ॥ हरि
 नायक आधार, नयन क्रिया इनसों उचित ॥ ५२ ॥ दूत विलांबित ॥
 शिशिर में लखि पंकज छारको ॥ गनत पावक रूप तुषारको ॥ उठत
 धूम तहाँ अति साँवल्यो ॥ ससक अंक कहै शशिमें भल्यो ॥ ५३ ॥
 रानी ॥ सवैया ॥ देश प्रवाहनकी सरिता सब ओर बहैं बहुतै
 सरसानी ॥ कानन कोठि अकोठि कुलाचल भार भरी धरणी अकु-
 लानी ॥ सूच्छम छाँह स्वरूप भई चितचाह नई निहचै बियरानी ॥
 शीतल आप पिये शशिमें परहीतलकी तब ताप बुझानी ॥ ५४ ॥

समानिका ॥ अंक में ससा बसै ॥ कौन चन्दको हँसै ॥ बापके
 शरीरमें ॥ बाजि औ करीरमें ॥ ५५ ॥ रानी ॥ कमला ॥ असितरु
 सित रजनी ॥ शशि ग्रह युग रमनी ॥ तिनहि मिलतु मनुकै ॥ असित
 सुकुल तनुकै ॥ ५६ ॥ मनहरण ॥ दिनको अथोतै सभै बूढ़त तरणि
 रहि तमकी विपति नदी नैननिलैं आइकै ॥ पूरबके पुण्य परसादते उडूप
 पायो भयो मन सुमन सुगंध पार पाइकै ॥ ओषधि नपतिको सुरसकै
 निरुज करै क्षय होत द्विजन बचामै मंत्र भाइकै ॥ समुदन सुतको समुद्र
 करै रत्नननि सुधा जतननि क्यों न सींचत बनाइकै ॥ ५७ ॥ बिंबा ॥
 शशिकर पीयूषनाही ॥ हरि भिरतु नोजराही ॥ निशि निशि चकोर पीवै ॥
 युग युग हु क्यों न जीवै ॥ ५८ ॥ मालिनी ॥ सरस वचन भैमी
 पीवसों बोलिनीके ॥ नयन विकसि आये मोद सों प्राण पीके ॥ धनि
 धनि पिकबैनी चोजकी उक्ति तेरी ॥ चिबुक गहि उठाई चूमि लीन्ही
 घनेरी ॥ ५९ ॥ दमयंती ॥ मालिनी ॥ निज मुख नहिं सोहै आप
 नी जो बडाई ॥ बदन शशि तिहारो मै तहीं काँति गाई ॥ नल ॥
 शशि वदनि न जानै आपने दिव्य रूपै ॥ वर्णतु अब हों हों तो मुखै
 दिव्य भूपै ॥ ६० ॥ संयुत ॥ तुअगीत सों वश होइ रह्यो ॥ मुख रावरो
 निहचै गह्यो ॥ यहि लोभते मृग नेकहूँ ॥ महि चंद्र छोड़ि टरै कहूँ ॥
 ६१ ॥ सवैया ॥ चंद्र सुधारस पान करै तम पाननकी घन छांह
 छयो है ॥ बासरको न चलयो परै तापर तापर है तन धाम छयो है ॥
 बैठा कहै अधरा मगसों पगसों परसै न सनेह नयो है ॥ बोलु चलाकु
 उलारतसों तेहिते निशिमैं चलि दूरि गयो है ॥ ६२ ॥ नीलस्व-
 रूपक ॥ देखि परै न बनाइ छुटाइ ॥ अंबर माहँ चढ़ी मलिनाइ ॥
 धोवत ताहि सुधा जल लैलै ॥ यों रजनी रजकी हति मैलै ॥ ६३ ॥
 चित्रपद ॥ मेघनकी मलिनाइ ॥ शारद मास छुड़ाइ ॥ शारदहूँ
 शशि भेख्यो ॥ जात कलंक न भेख्यो ॥ ६४ ॥ सरसी ॥ एकादश
 रुद्रनके शिर इक इक कला बांति शशिदीन ॥ कलापांच सौपंच बाण शर पैनी
 गासी कीन ॥ कूटि कूटि तारागण लाखन और चन्द जब होइ ॥
 अकलंकित तब वदन रावरे करै बराबरि सोइ ॥ ६५ ॥ वदन शरद

अंकम सस धरता अधर पियूष समान॥चाहि रह्यो वासव सब छल करि
 बल करि रह्यो न पान ॥ गगन भयो यह उदित शीतकर मुदित भयो
 चित चाहि ॥ सुधादेव जूठनि गनि धिनसों पियतन ताहि सराहि
 ॥ ६६ ॥ सोरठां ॥ औषधीशको पाइ, निरुज भयो विहरत गिरिस ॥
 कालकूटको खाइ, अंग लगावै गरल धर ॥ ६७ ॥ मनहरण ॥ द्विज
 पति देव गुरुदारसों सनेह करचो नयननकी तारासम तारा रूप
 रानी है ॥ अद्भुत गति देखि याकी गजराज गति पतितन भयो यह
 साँची वेद वानी है ॥ आतम प्रकाशकी युगीत ज्योति जानति जे तिनमें
 लगति नाहिं मुकुति निसानी है ॥ जैसे प्रतिबिम्ब सब ठौरनिमें
 परत है मैले ऊजरेकी कलू भाँति ना विचारी है ॥ ६८ ॥ चौपाई ॥
 सुधा बोलि तिल जल सुत देहीं ॥ हर्षित होत पितर ते लेहीं ॥ सुधा
 रूप तिल साँवल अंक ॥ शशिमें देखि परै निरसंक ॥ ६९ ॥ केलि
 सौंध कुल्पा जल माहीं ॥ शशि मण्डलकी छलकत छाहीं ॥ हंस जानि
 हंसिनि नियराति ॥ पाँख झारि झपटत नियराति ॥ ७० ॥ दूतविलंबित ॥
 कुमुदिनी हरिणी वनमें रहै ॥ पुहुप लोचन खोलि उताल है ॥ लखति
 ऊपरको रसरती सों ॥ हरिणको विधुमे पति प्रीतिसों ॥ ७१ ॥ अलप पुंषपि
 यूषनिसों रली ॥ मदनकी सरसी विधु मंडली ॥ अमर मीन सुधा जल
 पानसों॥करत ताहि ध्वजा सन्मानसों ॥ ७२ ॥ चर्चरी ॥ यह जो जनु
 जोन्ह राजत तार अस्तितनसों लसै ॥ लीक जो नभ मध्य सो फणिहारकी
 छबिसों बसै ॥ अष्ट मूरति शंभुकी इक साँच देखि अकाशहै ॥ अंक.
 फूलि उमारहौ शशिमें वहै परकाश है ॥ ७३ ॥ स्वागता ॥ श्वेत गोल
 रवि चंद्र बनायो ॥ कामराज शिर छत्र सुहायो ॥ जो कहूँ रजनीमें
 छबि छीनो ॥ छत्रभंग निश्चय तम दीनो ॥ ७४ ॥ सवैया ॥ तीनिहु
 लोकन जीति दशानन नेकहु जाहि न जीतन पायो ॥ रावरे आनन एक
 वहौ निशिनायक नेसुक हेरि हरायो ॥ सोई लगी शशिके मुख कारिख
 औ तेहि सारिख कौन बतायो ॥ कोऊ कहौ क्षिति छाँह छई मृग अंक
 सशंक कहूँ ठहरायो ॥ ७५ ॥ बंधु ॥ राम करे सब क्षत्रिय छीने ॥
 क्षत्रिय रामकरे मददीने ॥ त्यों शशि पंकजको निशि जरै ॥ तो मुख

पंकजसों निति हारै ॥ ७६ ॥ दोहा ॥ सागरते मुनि नयनते, उद्भव
द्विज यहि नाम ॥ विधु साँचो अब अवंतरचो, सब शोभा विशराम ॥ ७७ ॥
चंद्रमाला ॥ तार विहार भूमि मय हिम मय चंद्र मंडली कीनी ॥ लसत
जहाँ मृगनाभि वाससो है सब द्युति भरि दीनी ॥ स्वर्ग लौकमें तिलक भयो
विधि इन सुकृत न सरसाई ॥ जिन जिन सुनी गुणी साँची तिन
जिन मतहू वनि आई ॥ ७८ ॥ मनहरण ॥ हर पतनीसों भयो सिं-
हके स्वरूप शशि सस औ हरिणको उदर माह आन्यो है ॥ तेरे मुख
पद्महंसों मनमें डरत कहूँ एकसों जगतमें न काहू भय मान्यो है ॥ गगन
विपिनमें विहार निशि निशि करै तम गज घंटानि घटावत बखान्यो है ॥
केसर करनि झहरावत निपट याको सिंहिका तनूज दूजो प्रति भट जा-
न्यो है ॥ ७९ ॥ छप्पय ॥ लोचन कमल चढ़ाई कमल आसन नित
पूजै ॥ तो मुख कमल बनाई वास कमलाको दूजै ॥ वचन न वर्णी
जाति जासु रुचि राशि सुहाई ॥ लसत कला चौगुनी कौन गावै सुघ-
राई ॥ तह कहत कौन समता महत चहत चन्द चित चावरो ॥ शिव शीश
जटा तंतिनी निकट वनवासी बक बावरो ॥ ८० ॥ नेहमंजरी सखी ॥
सोरठा ॥ यह सखि सोई चन्द, विरह पाइ जेहि हों दही ॥ मनमो-
हत मतिमन्द, तौहीं लह्यो कलंक जग ॥ ८१ ॥ दमयंती ॥ मनहरण ॥
साँझहों अटा पै अन जानत गईही मोहि देखतही दौरि चारों ओर उमडतसी ॥
हों तौ डरपाइ भाजि भौनमें लुकाई सोऊ पीछे लागी आइ घरहाई हुमडतसी ॥
जगर मगर घर बाहेर विवर करि सोरनि चकोरनिकी झुंड झुमडतसी ॥ कैसि
नकसैरी विरहिनि वैरी बोरिबिको चाँदनी वहैरी येरी घेरे घुमडतसी ॥ ८२ ॥
लीला ॥ वासवः दिशिमें भयो शशि पुंडरीक प्रमान ॥ लैकला अव
दात निर्मल आरंसी अभिराम ॥ इंदु सिंधुर दान संगत चंचरी कर-
साल ॥ हैं लगे उरमाँहवे उड़ि अंक अंकतमाल ॥ ८३ ॥ राजा ॥
छप्पय ॥ शशिको षोडश अंश कलाकहि वेद बखाने ॥ घटत बढ़तते
नित असित सित पक्ष प्रमानै ॥ परिवासों इक एक कला पंद्रह तिथि
तेई ॥ पूरणमासी होति पूरि आवैं सब तेई ॥ वह एक कला जो सोर-
हीं लै उखारि हर शीश धरि ॥ बहु दुखतरहो बहु खोसलौं गयो ठौर

वह श्याम परि ॥ ८४ ॥ मनहरण ॥ रावरे बदन छबि सदनकी
 समतासों चौहै करचो शशि निज नयन अनिअरे हैं ॥ मानिकै मिताई
 करी भाई पचिकोरमसों जोन्ह अचवाई जाको देव पचिहारे हैं ॥
 अंकसों मयंक कहूँ रंकको न जान देत नील कमलनि धर करै उजियारे
 हैं ॥ भ्रमि भ्रमि हारचो होत भीर तनु गारचो क्षीर सागरमें पारचो
 मनही में मान मारे हैं ॥ ८५ ॥ सकल लोनाईकी लहरिसों छहरि
 छबि बदन तिहारचो विधि रच्यो चितलाइकै ॥ वासवको पोंछि मैल
 मिलत अगोंछनिसों चिकिनो छपाकरु छपा पटरानी पाइकै ॥
 दोउनि सँवारि सुरसरि वारि धोवै हाथ तिनमें लगत काँति कनक
 बनाइकै ॥ कमलाके वास कमलगै और कीरी द्युति उपजतवेई
 कुल कमल चलाइकै ॥ ८६ ॥ सर्वैया ॥ आसवसार सुधाधर मंडल
 है मद कोमल वा छबिछायो ॥ देवबधू तेहि पीवत छीव छकै सब जीव
 करै चितलायो ॥ छूटत सौरभ शोभ सने तेहि लोपत तारेनबीच
 बसायो ॥ प्यालो लगो माणि नीलमको उर अंक कलंक नरंक बतायो ॥
 ८७ ॥ सोरठा ॥ शशिके गुण गहिलीन तिन सों मुख तेरो रच्यो ॥
 दोषाकरु विधि कीन, विधि चातुर चित विविध विधि ॥ ८८ ॥ मदन
 माला ॥ गगन लगत रबिरथहै खुरचय ॥ तहँ बिल परतभरतजल
 अभिय मय ॥ मिलत सिसिर करसरस सबुद बुद ॥ जलजनयनि
 नभ नरवत करत मुद ॥ ८९ ॥ सोरठा ॥ विधु पापरके रूप, तिल
 कलंक उड पुहुपयुत ॥ दै नैवेद्य अनूप, करिये काम उपासना ॥ ९० ॥
 छप्पय ॥ लगत दशन-सुर भानु झीन झांझरि समसोंहैं ॥ झरत अभृत
 सब और झलक झालरि मन मोहैं ॥ मुक्तानखत अपार हार उपकंठ
 विराजैं ॥ सुरत हनीकर नवल लल्ल पल्लव छबिछाजैं ॥
 रति मयन भूपके व्याहमें रूप राशि अभिषेक रस ॥ विधुभर
 त भांवरी शीश जनु सहसधार मंगल कलस ॥ ९१ ॥ अथ श्रीहर्ष
 कविराज राजको वर्णन ॥ छप्पय ॥ कबि कुल मुकुटनिमाह हीर
 समकीराति राजै ॥ पिता हीर परसिद्ध जासु मति सुरगुरु लाजै ॥
 मामल देवी माय पुण्य पति व्रत गिरिजासी ॥ सकल मुक्ति की दानि

साधु सेवकको कासी ॥ तेहि तनय भयो श्री हर्षकविहरष भारती तंत्र
को ॥ भव भाजन परम प्रसाद मय जो चिंतामणि मंत्रको ॥ ९२ ॥
जपि चिंतामणि मंत्र ब्रह्म सन्मुख जिन कीन्हो ॥ निर्जन साधि समाधि
तेज निर्गुण चित दीन्हो ॥ कविता करी अनेक ग्रंथ नवरस रससाने ॥
बहुरि करचो दिग्विजय जीति पण्डित सन्माने ॥ जेहि भवन अवतरी
ईश्वरी कला रूप तनया सुछवि ॥ जिन गौड़ पाठ दुर्गा रची ज्ञान वर्ष
श्रीहर्ष कवि ॥ ९३ ॥ कनवजपति नरनाह जाहि उठि आसन साजै ॥
सभा माहँ सन्मानि पानदै सुयश समाजै ॥ चर्चा मम्मट भट्ट संघ षट
मास सोहाई ॥ जिन बुरिकै बहु भाँति वागदेवी लडवाई ॥ शुचि पुण्य
पिगूष विचित्र रस व्यासदेव वरणी भली ॥ नलराज कथा नैषध वहे
तिहुँ लोक कीरति चली ॥ ९४ ॥ रचे सर्ग बाईस जाहि कविईश
सराहै ॥ अति पद व्यञ्जक मंजुरीति गुण गण उतसाहै ॥ पूरव अर्ध
अनूप गणत द्वै सहस सलोने ॥ ईश लोक सैंतीस अधिक पावैं जन
टोने ॥ द्वै सहस चारि श्लोकसों उत्तर अरध सँवारिकै ॥ सब सहस
चारि इसलोक औ इक तालीस विचारि कै ॥ ९५ ॥ दोहा ॥ खाँ
साहेबके सुयश वर, श्रीगुरु चरण सहाइ ॥ सो विचारि अनुसार मति
भाषा रच्यो बनाइ ॥ ९६ ॥ रचे अर्थके भँवर बहु, कठिन जोर सब
ठौर ॥ खलको जलके भौर सत, जनन कमलके भौर ॥ ९७ ॥
सरल देखि हर्षत सुजन, निंदत कुजन अपार ॥ दाख मधुर जुर
बावरो, कहत कंटुक निरधार ॥ ९८ ॥ साधु सरलसों कटुकको, करत
बड़ा सन्मान ॥ शंभु धरचो गलमें गरल, तजो सुधाको पान ॥ ९९ ॥
ताते में कर जोरि कै, कहत सबनि शिरनाइ ॥ सुकवि चतुर तिहुँ
लोकमें, विनती तिन्हें सुनाइ ॥ १०० ॥ मेरी तौ सब चूक है,
वाको ठक तुम आप ॥ सो सवाँरि करिये कृपा, परगट परम प्रताप ॥
१०१ ॥ गौरिनन्द गिरिजा गिरिश, गुरु गोविंद गुमान ॥ युग

तौ लगि अविचल रहौ, अकबर अली सुजान ॥ १०१ ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मंडित
भूमंडला खंडल श्री खाँ साहब अली अकबर खाँ
प्रोत्साहित गुमान मिश्र विरचिते काव्यक
लानिधौ चन्द्रोदय वर्णनं नाम त्रयोविंश
स्सर्गः समाप्तम् ॥ २३ ॥

माघमासे कृष्णपक्षे तिथौ पञ्चम्यां भौमवासरे सम्वत् १९४५
शुभम् भूयात् ॥

सोरठा ॥

संवत् शर अरु वेद, ग्रह शशि तपसा पंचिमी ॥
यामे नहिं कछु भेद, कृष्णपक्ष कुज बार है ॥ १ ॥

श्लोक ॥

शरवेदाङ्कचन्द्रे द्वे नक्रमासाऽसिते दले ॥
अहि तिथ्याम् भौमसंयोगे ग्रंथोयम् पूर्णतामगात् ॥ १ ॥

इति नैषधकाव्य समाप्त ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

“ श्रीवेङ्कटेश्वर ” छापाखाना (मुंबई.)

जाहिरात ।

श्रीमद्बालमीकीय रामायण ।

संस्कृत मूल और भाषाटीकासहित खुलापत्रा ।



कविकुलतिलक आदिकवि महर्षिबालमीकिकृत रामायण समग्र ग्रंथ माहात्म्य और अनुक्रमणिका टिप्पणी शंकासमाधानसहित परमपुष्ट मोटे और चिकने कागजपर सुवाच्य मनोहर अक्षरोंमें छपकर विक्रयार्थ प्रस्तुत है-हिन्दुस्थानमें आजपर्यंत इसका ऐसा भाषानुवाद नहीं हुआ था. इसकी टीका अत्युत्तम बहुत सुगम और ललित मनरंजन शब्दोंमें विद्वद्वरशिरोमणि श्रीयुत पं० ज्वालाप्रसादमिश्रजीने अत्यन्त ही उत्तम की है. पदपदका अर्थ दर्पणवत् झलकाया है. सकल गुणआगरी नागरीकी पूरी लालित्यता सर्वांगरूपसे दर्शायी है. यह बालसे वृद्धतकको परमोपयोगी है. कथा बांचनेवाले विद्वानोंको इससे बहुत ही लाभ प्राप्त होवेगा. केवल अक्षर मात्रका बोध होनेसेही सज्जनजन इस रामायणका पाठ्य सहाजमें कर सकेंगे और कथा बाँचकर धन यश लक्ष्मीके भागी होंगे. ऐसा सुंदर मनोहर रमणीयग्रंथ होनेपरभी सबके सुगमार्थ समग्र ग्रंथ उनके मकानपर २१ रु० भेजनेपर पहुँचाया गया. ग्रन्थकी अद्भुत छवि और आन्तरिक विद्वत्ता देखकर ब्राह्मकण परम-प्रसन्न होजायेंगे ॥ ग्रंथसंख्या अं. ९०००० होगी.

मनुस्मृति ।

पं० केशवप्रसाद प्रोफेसर आगरा काले कृत

भाषाटीकासहित ।

इस उत्तम ग्रंथका सान्वय भाषा अत्युत्तम हुआ है, यह पुस्तक प्राणि-मात्रको परमोपयोगी है, राजा महाराजा भी इसीके अनुसार धर्मपूर्वक शासन करते हैं यह ग्रंथ देखनेहीके योग्य है, भाषा अत्यन्त सुगम और रसीली है. कीमत २॥ रु० इफका २ रु० ॥

जाहिरात ।

सामुद्रिक शास्त्र बड़ा।

यह पुस्तक प्राणियों के शरीरावयव तथा हस्तरेखाओं के फलाफल कथन में परमोपयोगी है; इसके द्वारा आयुज्ञान, संतानादि, धनी, निर्धनी, पंडित, मूर्ख, कामी, चोर, साधु और असाधुका ज्ञान केवल पठन-मात्र से सर्वसाधारण मनुष्य जिसको कुछभी समझ होगी कहनेमें समर्थ होसکتा है. इसकी भाषा परम मनोहर और सरल है; विशेष रोचकता. इस में यह है कि प्रत्येक मूलके श्लोकोंका सान्वय सरल हिन्दी-भाषा में टीका किया गया है, जिससे भारीसे भारी पंडित और छोटेसे छोटे अल्पज्ञ अपने नेत्रोंसे अवलोकन कर इसका स्वाद पासकते हैं, विलायती कपड़ेकी जिल्द बँधी है. मूल्य केवल १। रु० है ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

“श्रीवेङ्कटेश्वर” छापाखाना—खेतवाड़ी—मुंबई.

